

# हिंदी में रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अभिग्रहण

Hindi Mein Reynolds Ke Upanyason Ka Abhigrahan  
(The Reception of Reynolds Novels in Hindi)

पीएच डी. की उपाधि हेतु शोध प्रबन्ध

शोध निर्देशक  
डॉ. गंगा सहाय मीणा

शोधार्थी  
स्वाति डाँगी



भारतीय भाषा केन्द्र  
भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान  
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय  
नई दिल्ली – 110067

2018



जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय  
JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY

भारतीय भाषा केन्द्र

Centre of Indian Languages

भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान  
School of Language, Literature & Culture Studies  
नई दिल्ली-110067, भारत NEW DELHI-110067, INDIA

Date: 23-July-2018

DECLARATION

I hereby declare that the research work done in this Ph.D. Thesis entitled "Hindi Mein Reynolds Ke Upanyason Ka Abhigrahan" (The Reception of Reynolds Novels in Hindi) by me is the original research work and it has not been previously submitted for any other degree in this or any other university or institution.

Swati Dangi

(Research Scholar)

Dr. Ganga Sahay Meena

(Supervisor)

CIL/SLL&CS/JNU

Prof. Gobind Prasad

(Chairperson)

CIL/SLL&CS/JNU

## आभार

प्रस्तुत शोध प्रबंध “हिंदी में रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अभिग्रहण” डॉ. गंगा सहाय मीणा के निर्देशन में लिखा गया है। शोध के दौरान मुझे हमेशा ही उनका समर्थन प्राप्त हुआ। मेरे शिक्षक के अलावा मेरे जीवन में आये अनेक लोगों के उत्साहवर्धन, प्रेरणा और स्नेहपूर्ण व्यवहार के कारण ही मैं इस शोध को पूरा करने में समर्थ हो पायी हूँ। शोध ग्रन्थ को पूरा करने के इस सफ़र में जिन लोगों के अमूल्य सुझाव मुझे मिले उन सब के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ इस श्रृंखला में सबसे पहला स्थान मेरे गुरुओं का है।

जे एनयू के भारतीय भाषा, संस्कृति एवं साहित्य के केंद्र में मौजूद कुछ प्रोफेसरों की सहायता और मार्गदर्शन से मेरा कार्य आगे बढ़ता गया। किसी भी प्रकार के असमंजस में फंसने पर हमेशा मेरे गुरु मेरे साथ रहे। शोध कार्य के दौरान अपना अमूल्य समय देने वाले इन मार्गदर्शकों का नाम भी मैं लेना चाहती हूँ। सबसे पहले भारतीय भाषा, संस्कृति एवं साहित्य केंद्र के डॉ. गंगा सहाय मीणा जिन्होंने धैर्य के साथ हमेशा मेरा साथ दिया। डॉ. रमण प्रसाद सिन्हा जी का जिन्होंने मेरे शोध में हमेशा मेरा साथ दिया। कम समय में बहुत अधिक कैसे सीखा और सिखाया जा सकता है वो मैंने सिन्हा सर से सीखा। मेरे सेंटर के प्रो. देवशंकर नवीन जी ने भी मुझे एक शोध कार्य को करने के वो पाठ पढ़ाये जिनसे मैं वंचित थी। मेरे ही केंद्र के प्रो. सुशांत मिश्रा जो फ्रेंच सेंटर से हैं, मेरे शोध के केंद्र को समझने में जब मैं असमर्थ थी तब उन्होंने मुझे उस विषय को समझने में सहायता की। मेरे इन गुरुओं में न केवल मेरे ही केंद्र के अपितु अन्य केन्द्रों एवं विश्वविद्यालयों के विद्वान प्रोफेसरों का भी आशीर्वाद मेरे साथ रहा है। इन सब के बाद मैं नाम लेना चाहती हूँ इग्नू के अनुवाद केंद्र के प्रो. ए. के. सिंह जी का। मेरे शोध का विषय सुन उन्होंने बहुत सराहना की। बिना मेरे कोई प्रश्न किये ही उन्होंने मेरे शोध से सम्बंधित इतने

महत्त्वपूर्ण बिंदु मुझे बतायेजिन पर मैंने कभी विचार ही नहीं किया था। फिर हैं, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रो राजकुमार इनका नाम मुझे सबसे पहले लेना चाहिए था। अब से पहले, दिल्ली से मैं कभी बाहर ही न निकली थी, स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय सब कुछ तो यहीं मिल गया था। फिर शोध के काम के लिये बनारस जाने में थोड़ा डर भी मुझे था। इस डर को खत्म करने में प्रो. राजकुमार ने मेरा साथ दिया। नागरी प्रचारिणी सभा से मेरे शोध के मूल ग्रन्थ एकत्र करने में प्रोफेसर साहब ने मेरी बहुत सहायता की। ऊपर मैंने अपने शोध निर्देशक से लेकर अन्य जिन गुरुओं का भी नाम लिया है, बिना इनके मेरा शोध पूरा नहीं हो सकता था। उन सभी के लिए मेरे मन में श्रद्धा है, इस सफ़र के दौरान उन सभी का मार्गदर्शन मेरे लिए वरदान साबित हुआ।

मेरे गुरुओं के बाद मेरे जीवन में मेरे परिवार का स्थान आता है। जिसमें सबसे पहला स्थान मेरी माँ का है जिनका सपना था कि मैं पी एचडी करूँ। उन्होंने कभी अपने बच्चों को आगे बढ़ने से नहीं रोका हमेशा एक प्रेरणा बनकर मेरे साथ चलती रहीं हैं। मेरे भाई-बहनों ने पढ़ने के बाद नौकरी कर घर की जिम्मेदारी उठायी। मेरी माँ, मेरा भाई और बहनों ने मुझ पर घर की कोई जिम्मेदारी या नौकरी का दबाव नहीं डाला। पीएच. डी. लिखने में बहुत समय लगा और इतने अधिक समय तक मेरा परिवार आर्थिक समस्याओं से जूझते हुए भी मेरे सपने के साथ खड़ा रहा मेरे ही परिवार का एक और हिस्सा मेरे चाचा का परिवार है। मेरे परिवार में चाचा-चाची की भूमिका मेरे माता-पिता से कम नहीं है। वे साथ न देते तो पीएच. डी. कभी पूरी न हो पाती।

अब मेरे दोस्त जिनके बिना मेरा जीवन अधूरा है। मेरे दोस्तों में दो दोस्त ऐसे हैं जो अकादमिक रूप से तो मेरे साथ नहीं थे, लेकिन मानसिक रूप से हमेशा मेरे साथ रहते हैं। पहला नाम रुचि श्रीवास्तव और दूसरा जितेन्द्र जाटोलिया। अपना काम

करने के लिए जिस संतुलन की आवश्यकता मुझे थी वह इन दोनों के साथ से बन पाया। इसके बाद जे एन यू में क्षे. धन की रानी जिसने मेरे अकादमिक काम को पूरा करने में मेरी बहुत सहायता की और हमेशा मेरा सहारा बनकर खड़ी रही। रमेश सोनी जिन्होंने हमेशा मेरे शोध कार्य में होने वाली गलतियों का सुधार किया। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से सुकेश सर और आलोक वर्मा जिन्होंने नागरी प्रचारिणी में मेरा साथ दिया। शोध के दौरान मिले डॉ. सुनील कुमार सुमन और अशोक जांगिड़ इन दोनों ने कलकत्ता से ही मेरी बहुत सहायता की। इस सफ़र में अशोक जैसा भाई मिलना भी मेरे लिए सौभाग्य की बात थी। नागरी प्रचारिणी सभा के राजकुमार जी को भी मैं नहीं भूल सकती जिन्होंने मूल ग्रन्थ एकत्रित करने के समय धैर्य के साथ मेरा काम कराया। मेरी सहायता करने के बीच वे मुझसे चाय की डिमांड करना न भूलते थे। शोध के अंतिम दिनों में मिला अजय जिसने मेरा स्वास्थ्य अत्यधिक खराब रहने पर इस शोध को पूरा करने में मेरी सहायता की।

इस सफ़र में ऐसे बहुत से लोग भी मुझे मिले जिनका नाम तक मुझे नहीं मालूम था। कभी कहीं कोई रास्ता बता गया तो कहीं कोई सही सलाह दे गया। जिन पुस्तकालयों की मैंने सहायता ली वहां मिलने वाले अनेक कर्मचारियों ने भी मेरी सहायता की। जे एन यू का पूरा स्टाफ जो शुरुआत से लेकर अंतिम दिन तक मेरी सहायता करता रहा उनको भी मैं कभी नहीं भूल सकती हूँ

अंत में प्रस्तुत शोध प्रबंध को पूरा करने में मैंने जिन पुस्तकालयों की सहायता ली है उनका उल्लेख करना भी आवश्यक है। जिनका नाम इस प्रकार है - जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय पुस्तकालय, त्रिमूर्ति भवन पुस्तकालय साहित्य अकादेमी पुस्तकालय, दिल्ली विश्वविद्यालय पुस्तकालय, कलकत्ता की नेशनल लाइब्रेरी, नागरी प्रचारिणी सभा पुस्तकालय, इग्नू विश्वविद्यालय पुस्तकालय, दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, इसके अलावा इन्टरनेट पर उपलब्ध कुछ पुस्तकालय जैसे सोआस,

डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ़ इंडिया से कुछ-कुछ सामग्री भी मैंने एकत्रित की है। इन सभी पुस्तकालयों की मैं हमेशा आभारी रहूंगी बिना इनके विस्तार और स्पष्टीकरण सहित मैं अपना शोध इतनी गंभीरता से पूरा नहीं कर सकती थी।

मेरे शोध के पूरा होने और मेरे इससे विचलित न होने में इन सभी की बहुत बड़ा योगदान रहा है। अपने परिश्रम और सभी के सहयोग से मैं अपने शोध को इतने वर्षों की तारतम्यता से पूरा कर पायी हूँ। इन सभी की मैं बहुत आभारी हूँ।

क्र.स.	अनुक्रमणिका	पृ. स.
1.	भूमिका	1-7
2.	पहला अध्याय : हिंदी में अनूदित उपन्यासों का आरंभ	9-53
	<ul style="list-style-type: none"> <li>• बांग्ला से हिन्दी में अनूदित आरंभिक उपन्यास</li> <li>• अन्य भाषाओं से हिंदी में अनूदित आरंभिक उपन्यास</li> </ul>	
3.	दूसरा अध्याय : आलोच्य उपन्यासों का परिचय	54-118
	<ul style="list-style-type: none"> <li>• लंदन रहस्य</li> <li>• जोसफ विल्मोट</li> </ul>	
4.	तीसरा अध्याय : रेनॉल्ड्स के हिंदी में अनूदित उपन्यासों का	119-196
	भाषिक विश्लेषण	
	<ul style="list-style-type: none"> <li>• शाब्दिक स्तर पर</li> <li>• लिप्यन्तरण और हिंदीकरण</li> <li>• समतुल्यता के स्तर पर</li> <li>• पाठ्यपरक सीमायें</li> </ul>	
5.	चौथा अध्याय : रेनॉल्ड्स के हिंदी में अनूदित उपन्यासों का	197-250
	सांस्कृतिक विश्लेषण	
	<ul style="list-style-type: none"> <li>• पाद-टिप्पणी</li> <li>• मुहावरे और लोकोक्तियाँ</li> <li>• खान पान और ब्रिटिश विलासिता</li> <li>• रहन-सहन और जलसे</li> </ul>	

6. पांचवा अध्याय : हिंदी में रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अभिग्रहण 251-349
- अभिग्रहण सिद्धांत का अर्थ
  - रेनॉल्ड्स के विषय में लिखने वाले आलोचकों के विचार
  - रेनॉल्ड्स के उपन्यासों से प्रभावित होने वाले हिन्दी के उपन्यासकार
  - रेनॉल्ड्स के उपन्यासों से प्रभावित होने वाले उर्दू के उपन्यासकार
7. उपसंहार 350-357
8. ग्रंथानुक्रमणिका 358-364
- आधार ग्रन्थ
- सन्दर्भ ग्रन्थ
- इन्टरनेट सहायक ग्रन्थ



## भूमिका

एक अनुवादक जब एक विदेशी साहित्य को अपनी मूल भाषा में अनूदित करता है तो वह अनूदित रूप में उस देश से जुड़े कुछ अन्य तत्वों की जानकारी भी साथ लेकर आता है। जैसे एक देश की सभ्यता, उसकी मानसिकता, संस्कृति और साहित्य में निहित सन्देश आदि। ये सभी तत्व मूलभाषी पाठकों तक अनुवाद के माध्यम से ही पहुँचते हैं। इस प्रकार एक विदेशी साहित्य और विदेशी पाठक के बीच एक सम्बन्ध बन जाता है। जिसमें अनुवाद कला एक सम और विषम संस्कृति के बीच सेतु का काम करती है।

एक अनूदित साहित्य को जब किसी भिन्न संस्कृति और सभ्यता में पढ़ा जाता है तो वह अपने साथ अनेक संभावनाएं भी लेकर आता है। जैसे एक देश का साहित्य दूसरे देश के लोगों को एक अन्य स्तर पर प्रभावित करने की क्षमता रखता है। वह लक्ष्यभाषी पाठकों की मानसिकता और उनके साहित्य में बदलाव करने की क्षमता भी स्रोत भाषा में हो सकती है। इसे सरल शब्दों में ऐसे समझा जा सकता है कि जब किसी साहित्य का अनुवाद होता है तो वह भविष्य में आने वाले कुछ वर्षों में पाठकों की सोच के दायरे और लेखकों के द्वारा लिखे जाने वाले साहित्य में परिवर्तन कर सकता है। आवश्यक नहीं है कि ऐसा ही हो परंतु इसकी संभावना अवश्य रहती है। अब जिस परिवर्तन की संभावना है जरूरी नहीं है कि वह दृश्य ही हो। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह से इस बदलाव को देखा जा सकता है।

इस प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष के परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए 'हिंदी में रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अभिग्रहण' विषय का चयन मैंने अपने शोध के लिए किया है। मेरा शोध कार्य रेनॉल्ड्स के उपलब्ध हिन्दी में अनूदित कुछ उपन्यासों पर आधारित है। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अनुवाद जब हिंदी में हुआ तो हिंदी के पाठकों

ने उसका अभिग्रहण कैसे किया यह इस शोध का मूल बिंदु है इसमें अनुवाद की दृष्टि से उनके चयनित उपन्यासों का अध्ययन किया गया है।

एक ब्रिटिश उपन्यासकार की रचनायें जो अंग्रजी के पाठकों के बीच अठारहवीं सदी में लोकप्रिय थीं, क्यों वे उन्नीसवीं सदी के हिंदी के पाठकों का भी समान रूप से आकर्षण प्राप्त करती हैं? इस शोध में इस प्रश्न के उत्तर के लिए मैंने अभिग्रहण सिद्धांत को आधार बनाया है। रेनॉल्ड्स के उपन्यास जब हिंदी भाषा में पढ़े गये तो उस समय उनकी रचनाओं का पाठकों पर क्या प्रभाव पड़ा, उन्होंने क्या प्रतिक्रियाएं दीं, उसका विश्लेषण करना ही अभिग्रहण कहा जायेगा। साधारण शब्दों में उनके उपन्यासों पर हिंदी के पाठकों की वर्षों बाद कैसी प्रतिक्रिया रही यह इस शोध का महत्त्वपूर्ण पहलू है।

किसी साहित्य के विषय में जब भी प्रतिक्रिया का प्रश्न उठता है तो एक बात हमेशा ध्यान रखनी चाहिए कि कोई भी साहित्य या रचना अपने समय के साथ किसी भी प्रकार की विचारधारा को अन्तर्निहित करके नहीं आती है। विचारधारा का सम्बन्ध पाठक की तत्कालीन स्थिति में उत्पन्न होने वाले विचारों से होता है। इसे ऐतिहासिक रूप से भी समझा जा सकता है। ऐतिहासिक रूप से समझने का अर्थ यह है कि किसी प्राचीन साहित्य को जब तत्कालीन लेखक पढ़ रहे थे तो उन पर उस साहित्य का क्या प्रभाव पड़ रहा था? उस प्रभाव का अध्ययन करना ही अभिग्रहण में सम्मिलित होता है।

अभिग्रहण सिद्धांत को समझने के लिए कुछ प्रश्नों के उत्तर ढूँढने का प्रयास किया जाता है। जैसे, क्या पाठक जो ग्रहण कर रहे हैं उसी विचार के साथ लेखक ने साहित्य को लिखा था? या किसी अन्य विचारधारा के बहाव में बहकर किसी भिन्न प्रभाव के साथ उपन्यास आदि लिखे गए थे? क्या लेखक ने जो लिखा पाठक ने वही ग्रहण किया? ऊपर लिखे हुए प्रश्नों में एक ही उत्तर ढूँढने का प्रयास किया गया है

इन सब प्रश्नों के बाद कुछ अन्य प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण हैं जैसे उनके उपन्यासों की संख्या कितनी थी? वे उपन्यास कितनी भाषाओं में अनूदित हुए? एक ही उपन्यास के कितने संस्करण निकले और कितने प्रकाशकों ने उन्हें प्रकाशित किया? लोग उनके विषय में क्या सोचते थे? साहित्य के किस वर्ग में उन्हें रखा गया है? उदाहरण के लिए सामाजिक साहित्य, ऐतिहासिक साहित्य और काल्पनिक कथाएँ आदि किस लेखन के लिए वे जाने जाते हैं? यदि किसी लेखक के साहित्य का अभिग्रहण एक समाज विशेष ने किया है तो उसकी लोकप्रियता कितनी रही होगी? उदाहरण के लिए साहित्य के एक विशेष वर्ग 'लोकप्रिय साहित्य' में ही रेनॉल्ड्स के साहित्य को स्थान प्राप्त है। इसे अंग्रेजी में पोपुलर कल्चर कहा जाता। तो जितनी अधिक भाषाओं में वे अनूदित हुए उतना ही अधिक उन्हें पढ़ा गया। इन सब प्रश्नों के उत्तर आलोचकों के विचारों का विश्लेषण करके ही प्राप्त किये जा सकते हैं।

अभिग्रहण सिद्धांत को इतिहास के अनुसार समझने का तात्पर्य भी यही है कि इतिहास में आलोच्य लेखक कितने प्रचलित थे? वर्तमान में उनका कितना प्रभाव है? इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए लिविऊ पापादामी ने जौस के विचारों को उद्धृत किया है, जो इस प्रकार हैं "एक साहित्य को पढ़ने के लिए पाठक किस कलात्मक रूप में किसी पात्र को देखना चाहते हैं और किस कोण पर जाकर वे उसे प्रभावित करने वाले हैं यह पाठकों की उम्मीदों का निर्धारण करता है। इसे समझने के लिए पहले से स्थापित पाठकों की उम्मीदों और नए साहित्य से उत्पन्न होने वाली उम्मीदों के बीच अंतर खोजा जाता है। पाठकों की उम्मीदों के बीच यह अंतर पाठकों की प्रतिक्रिया और उन पर हुई आलोचनाओं के आधार पर निर्णित किया जाता है"<sup>1</sup>

---

<sup>1</sup> Bennett, Susan, *Theatre Audiences : A theory of production and reception*, London: Newyork, Routledge, 1990, p -52

इस पर लिविऊ पपदामी कहते हैं कि “साहित्य और समाज के बीच का सम्बन्ध 180 डिग्री पर काम करता है। इसीलिए साहित्य के सम्बन्ध में जो विचार पहले से ही उत्पन्न हो चुके हैं उन्हें भविष्य पर भी अनायास रूप से लागू नहीं किया जा सकता है। साहित्य को आने वाले समय की सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार ही समझा जाना चाहिए।”<sup>2</sup>

इस शोध में इसे समझने के लिए रेनॉल्ड्स के अनूदित उपन्यासों की संख्या, कितने लोगों ने अनुवाद किये, कौन-कौन सी भाषाओं में अनुवाद हुए भारत के कितने पुस्तकालयों में उनके उपन्यास उपलब्ध हैं और यदि उपलब्ध हैं तो इसका अर्थ हुआ कि इन्हें पढ़ा भी जा रहा था। इसके अतिरिक्त हिंदी के किन उपन्यासकारों ने इनका अभिग्रहण किया, किन उपन्यासकारों की रचना पर इनका प्रभाव रहेगा, यह इस शोध का महत्त्वपूर्ण हिस्सा रहा है।

रेनॉल्ड्स एक अति संवेदनशील और लोकप्रिय लेखक थे। अपने उपन्यासों में वे अपने समाज का यथार्थ वर्णन करते दिखते हैं। लंदन में रेनॉल्ड्स के उपन्यास पैनी सिरीज़ के नाम से प्रकाशित होते थे। अपने उपन्यासों में रेनॉल्ड्स फ्रांस के साहित्यकार यूजीन सु का अनुकरण करते नज़र आते हैं। यूजीन सु फ्रांस के प्रसिद्ध तथा सबसे अधिक पढ़े जाने वाले उपन्यासकारों में से एक थे। व्यवसाय के क्षेत्र में रेनॉल्ड्स के पैनी संकलन ने अन्य समकालीन साहित्यकारों को पीछे छोड़ दिया था। कर्मचारी और मजदूर वर्ग इनके उपन्यासों को सबसे अधिक पढ़ते थे। जो अधिक पढ़े लिखे भी नहीं थे और अपने मनोरंजन के लिए अधिक पैसा भी खर्च नहीं कर सकते थे। वे लोग रेनॉल्ड्स के पैनी संकलन को सस्ते होने के कारण खरीदते थे। हजारों लाखों की संख्या में इनके उपन्यासों के प्रतियां बिकती थीं। अंग्रेज आलोचक उनके उपन्यासों के सन्दर्भ में ‘गॉथिक सोप ओपेरा’ (Gothic Soap Opera) पद का प्रयोग

<sup>2</sup> <http://www.dacoromanialitteraria.inst-puscariu.ro/pdf/02/10PAPADIMA.pdf>, p -144

करते हैं। रेनॉल्ड्स ने अपने उपन्यासों में समाज की सम और विषम दोनों परिस्थितियों का यथार्थ वर्णन मिलता है। आलोच्य लेखक के उपन्यास विक्टोरियायुगीन समाज के इर्द-गिर्द ही घूमते हैं। रेनॉल्ड्स के विवादित रहने का सबसे बड़ा कारण यह था कि वे अपने समय और समाज की परतें खोल रहे थे जो उनके समकालीन अन्य लेखक नहीं खोल पाए थे। कट्टरपंथी राजनीति का सनसनीखेज़ रूप में खुलासा, अराजकतावादी समाज का चित्रण और अपराधी और वंचित वर्ग का बेबाकी से वर्णन उन्होंने किया है। इतना ही नहीं वे कभी भी कामुकता या उस कामुकता से सम्बंधित अहिंसा का प्रदर्शन करने में पीछे नहीं हटते थे। उनके इसी बेबाकी से भरे चित्रण के कारण उनको अंग्रेजी साहित्य का हिस्सा कभी नहीं बनने दिया गया। यही कारण रहा होगा कि इक्कीसवीं सदी के बाद ही उन्हें साहित्य में स्थान प्राप्त हुआ था।

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को इस शोध में अनुवाद की कसौटी पर परखा गया है। जिस प्रकार रेनॉल्ड्स ने अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन सरल अंग्रेजी में किया है। उसी प्रकार अनुवादकों ने भी आमबोलचाल की हिंदी का प्रयोग कर पाठकों के लिए इनके उपन्यासों को रुचिकर बनाया है। अनुवादकों ने भी लेखक के समान ही एक रंगमंचीय दृष्टिकोण से रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को अनूदित करने का प्रयास किया है। अनूदित उपन्यासों को पढ़ना साहित्य पढ़ने जैसा कम और आँखों के समक्ष चल रहे दृश्य जैसा अधिक लगता है। अनूदित होने पर रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में संप्रेषणीयता, संदेश की गति, भावों की उत्सर्जना, विशिष्ट शब्दों का प्रयोग, लेखक की अंतर्दृष्टि और प्रसंग विशेष में किस प्रकार की भाषा की मांग कर रहे हैं, इन सब आधारों पर उपन्यासों का विश्लेषण किया गया है।

किसी देश के सांस्कृतिक मूल्यों, परम्पराओं, मान्यताओं, आस्थाओं, विचारों और चिन्तन को उसी रूप में स्रोत भाषी पाठकों को समझाना जैसी कि वे मूल में थीं

वह भी अभिग्रहण का ही एक हिस्सा है। प्रत्येक देश की संस्कृति विशेष की अपनी पहचान होती है। यह संस्कृति देश के प्रतिनिधि के रूप में काम करती है। ब्रिटिश संस्कृति की इसी प्रतिनिधि परम्परा का रूपांतरण भारतीय परम्परा के संदर्भानुसार करना अनुवादकों का कर्तव्य था। जिसमें अंग्रेजी समाज के सांस्कृतिक आयामों को अनुवादकों ने अपने समाज के अनुसार गढ़ने का प्रयास किया है।

अनुवाद को अभिग्रहण की दृष्टि से समझा जाए तो एक विशिष्ट देश या प्रदेश के पाठक जब समान सांस्कृतिक वातावरण को साझा करते हैं, तो उनके विचार भी लगभग एक समान हो जाते हैं। लेकिन यह प्रश्न साहित्य को पढ़ने की उनकी रुचि पर निर्भर नहीं करता है। जो साहित्य पढ़ा गया और उसका जो प्रभाव लोगों पर पड़ा उसकी आलोचना करने पर ही किसी विशेष लेखक के साहित्य के अभिग्रहण का अध्ययन सम्भव है। अन्य दूसरी ध्यान देने योग्य बात यह भी है कि जितना कोई पाठक किसी विदेशी रचना को पढ़ेगा उतना ही वह उस लेखक के सन्देश से दूर होता जाएगा। इसका कारण भिन्न वातावरण होगा। इसीलिए समान देश की भाषाओं से अनूदित हुई रचनाओं को ही महत्त्व दिया जाता है क्योंकि एक ही भूमि पर और देश में लिखी गयी भाषा और उसे पढ़ने और बोलने वाले पाठक समान विचारों को साझा करते हैं। लेखक और पाठक के अनुभवों में जितना अंतर होगा उतना ही रचना के अभिग्रहण में भी रहेगा। लेकिन रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का जैसा अभिग्रहण अंग्रेजी पाठकों ने किया वैसा ही हिंदी के पाठकों ने भी किया है। उसी कारण उन्हें भारत में भी इतना अधिक पढ़ा गया। संसार की दो भिन्न ध्रुवों पर स्थित दो भिन्न सभ्यताओं में कैसे एक ही लेखक समान रूप से पाठकों को आकर्षित करता है यह आश्चर्य की बात है।

यहाँ पर लिविऊ पापादामी की एक छोटी-सी पंक्ति को उद्धृत किया जा सकता है जो जौस के विचारों का समर्थन करती है। इसमें जौस पाठकों की उम्मीदों को

ध्यान में रखते हुए कहते हैं कि “साहित्य की सामाजिक भूमिका उसकी वास्तविक संभावना को तब स्पष्ट करती है जब वह पाठकों के साहित्यिक अनुभव तक पहुँचती है। इतना ही नहीं उस सीमा तक भी उसे पहुँचना होता है जहां तक पाठक संसार को समझने की समझ रखता है। क्योंकि इसका प्रभाव उसके सामाजिक व्यवहार पर भी पड़ता है।”<sup>3</sup>

प्रत्येक देश विशेष के पाठकों की उम्मीदें अपने साहित्य को लेकर भिन्न होती हैं। यही भिन्नता किसी विदेशी साहित्य के लेखक की रचनाओं के अभिग्रहण में अंतर उत्पन्न कर देती है। इसी दूरी की भरपाई करने का कर्तव्य अनुवादक का होता है।

**23 जुलाई, 2018**

स्वाति डाँगी

नई दिल्ली

---

<sup>3</sup> <http://www.dacoromanialitteraria.inst-puscariu.ro/pdf/02/10PAPADIMA.pdf>, p - 53





## पहला अध्याय

### हिन्दी में अनूदित उपन्यासों का आरंभ

- बांग्ला से हिन्दी में अनूदित आरंभिक उपन्यास
- अन्य भाषाओं से हिन्दी में अनूदित आरंभिक उपन्यास



## पहला अध्याय

### हिन्दी में अनूदित उपन्यासों का आरंभ

कथा साहित्य का आधार प्राचीन आख्यायिका है। कथा मनुष्य की सहज और जन्मजात प्रवृत्ति से जुड़ी हुई है प्रारम्भ में यह श्रोता और श्रावयिता के रूप में उपलब्ध थी। मौखिक से मुद्रित रूप में आने में इसे बहुत अधिक समय लगा। प्राचीन आख्यायिका के रूप में विष्णु शर्मा की 'पंचतंत्र', बाणभट्ट की 'कादम्बरी' और दंडी की 'दशकुमारचरित' नामक आदि कथाओं का नाम लिया जा सकता है। इन कथाओं के लिखे जाने के बाद दसवीं सदी तक कोई अन्य कथा उपलब्ध नहीं हुई है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि अगले कई सौ वर्षों तक कथा रचना की भारतीय परम्परा आगे नहीं बढ़ी। इसके पीछे का कारण यह भी था कि दसवीं सदी तक आते-आते संस्कृत केवल राजदरबारों की ही भाषा बन कर रह गयी थी। इस सदी के बाद धीरे-धीरे संस्कृत का राजाश्रय समाप्त होने लगा। इसके बाद मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई। मुगल साम्राज्य में फारसी केंद्र में आ गयी। परन्तु 1757 के प्लासी के युद्ध के बाद "जनता को न तो फ़ारसी से लगाव था और न ही संस्कृत से।"<sup>4</sup> ऐसे में उत्तर भारत की जनता ने लोकाश्रय की भाषा अपनाई। ब्रजभाषा और अवधी को सूफियों और संतों का आश्रय प्राप्त हुआ। इन्हीं भाषाओं में काव्यरचना का अभूतपूर्व विकास भी हुआ। लेकिन 1857 में अर्थात् प्लासी युद्ध के सौ वर्ष के बाद हिन्दी क्षेत्र में आधुनिक काल का आगमन हुआ। इसी काल में ब्रजभाषा और खड़ी बोली में संस्कृत और फारसी में लिखी गद्य कथा पुस्तकों के रूपांतर होने शुरू हुए। लेकिन उपन्यास लेखन से पूर्व कथा कहने की जो परम्परा थी उसी ने मौलिक उपन्यास लेखन के द्वार खोले।

<sup>4</sup> राय, प्रो. गोपाल, *उपन्यास की संरचना*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2006, पृ-32

“अष्टाहरवीं शताब्दी में ब्रजभाषा और खड़ी बोली में *संस्कृतयोग वाशिष्ठ*, *बैतालविंशति* और *सिंघासनद्वात्रिंशतिका* आदि गद्य कथा पुस्तकों के रूपांतर हुए और उनका लोक में प्रचार भी बहुत हुआ पर कोई मौलिक गद्य कथा पुस्तक ब्रजभाषा या हिन्दी की किसी दूसरी घटक भाषा में नहीं लिखी गयी। *दस अवतार भाषा* (1744) *पद्मपुराण* का भाषानुवाद, *किस्सा चहार दरवेश* का अनुवाद *नौतर्ज* *मुरस्सा* आदि इसी काल में लोकप्रिय हुई थीं। उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्व खड़ी बोली हिन्दी में केवल दो मौलिक गद्य कथा पुस्तकें मुल्ला वजही कृत *सबरस* (1636) और इंशा अल्ला खां कृत *रानी केतकी की कहानी* (1700) उपलब्ध होती हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ऐतिहासिक कारणों से ही खड़ी बोली के आधार पर विकसित ‘हिन्दी’ गद्य का विकास हुआ और उसके साथ ही ‘गद्यकथा’ भी नए अंदाज़ में प्रकट हुई। इसी ने ‘उपन्यास’ का भी रूप गृहण किया। पर आश्चर्य की बात यह है कि गुणाढय, विष्णुशर्मा, सुबंधु, बाणभट्ट, दंडी आदि की भारतीय कथा परम्परा से इसका सम्बन्ध नहीं जुड़ा। इसे एक साहित्यिक त्रासदी ही समझना चाहिए।”<sup>5</sup> किसी भी साहित्यिक रूप की उत्पत्ति आकस्मिक घटना नहीं होती है। उसके लिए पहले से ही भूमिका बनती चली जाती है। ऐसी ही भूमिका हिंदी साहित्य के लिए भी बन रही थी।

कथा, कहानी साहित्य का व्यापक और मनोरंजक हिस्सा है और आख्यान लेखन तो गद्य का एक प्रारंभिक नमूना है। जब इस प्रक्रिया में समय के साथ कुछ परिवर्तन आते चले गए तो कविता ने आगे चलकर कथा का रूप धारण कर लिया। जब इस कथा का रूप लम्बी कहानियों में परिवर्तित हो गया तो उसे उपन्यास बनने में देर न लगी। उपन्यास साहित्य का प्रवर्तन भी कथा साहित्य से ही हुआ है। इंशा अल्ला खां की ‘*रानी केतकी की कहानी*’, सदल मिश्र का ‘*नासिकेतोपाख्यान*’ और लल्लू लाल का ‘*प्रेमसागर*’ नवीन गद्य में लिखित पुराने ढंग की अमर कथाएँ हैं।

<sup>5</sup> राय, प्रो. गोपाल, *उपन्यास की संरचना*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2006, पृ- 29

कथा साहित्य के विकासात्मक अध्ययन के लिए रानी केतकी की कहानी का ही नाम सर्वप्रथम लिया जाता रहा है। इसका एक कारण यह भी है कि जहाँ अन्य गद्य लेखन करने वाले प्रारंभिक अनुवादकों ने अन्य कृतियों से प्रभावित होकर कथा लेखन का प्रारम्भ किया वहीं दूसरी ओर इंशा ने स्व-प्रेरणा से इसकी रचना की थी। यहाँ तक तो इंशा की कहानी की बात है, दूसरी ओर यदि देखा जाए तो आधुनिक काल के आरंभ में अधिकतर कथाएँ शिक्षा देने के उद्देश्य से ही लिखी जाती थीं। शुरुआत में कथा लिखने वाले अनेक लोग थे, जिन्होंने स्वयं लिखा और दूसरों से भी लिखवाया उदाहरण के लिए वंशीधर, नवीन चन्द्र राय, भारतेन्दु हरिश्चंद्र और राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द ने हिन्दी के भावी कथाकारों को तैयार इन कथाकारों की कथाओं का विस्तृत रूप आगे चलकर उपन्यास बन गया। हिन्दी साहित्य में लिखे गये उपन्यास आधुनिकता की देन हैं। औद्योगीकरण, बौद्धिकता और नवीनता के कारण या कहा जाए की ज्ञान-विज्ञान के कारण आधुनिक काल मध्यकाल से अलग हुआ है।

बच्चन सिंह का मानना है कि “आधुनिक काल का श्रेय अंग्रेजी उपनिवेशवाद को है। जिस प्रकार भक्ति आन्दोलन के बारे में प्रश्न उठाया जाता है कि यदि मुसलमान न आये होते तो भक्ति आन्दोलन की लहर न उठती, उसी प्रकार कहा जाता है कि यदि अंग्रेज़ न आये होते तो आधुनिक काल न आता। ऐतिहासिक प्रक्रिया के तहत उसे आना ही था। किन्तु अंग्रेजी उपनिवेश ने इस प्रक्रिया को तेज़ कर दिया।”<sup>6</sup>

“वास्तविकता तो यह है कि पश्चिमी संपर्क के पूर्व हमारे देश में आधुनिक ढंग के उपन्यास और कहानी नाम से दो भिन्न साहित्यांग नहीं थे।”<sup>7</sup> दो भिन्न साहित्यांग नहीं थे इसीलिए कहानी का विकास हुआ और उपन्यास बन गया। इस बात का

<sup>6</sup> सिंह, बच्चन, *आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास*, इलाहबाद, लोकभारती प्रकाशन, 2007, पृ-277

<sup>7</sup> बद्दीदास, *हिन्दी उपन्यास पृष्ठभूमि और परम्परा*, कानपुर, ग्रंथम, 1966, पृ- 57

उल्लेख मैंने ऊपर भी किया है कि कथा का विस्तृत रूप ही आगे चलकर उपन्यास बन गया। बद्दीदास जी के भी अनुसार यह बात मान्य है।

उपन्यास विधा का जन्म कहाँ और कैसे हुआ यहाँ पर यह जान लेना आवश्यक है। उपन्यास यंत्र युग की उपज है और आधुनिक यूरोप में विकसित हुआ है। संस्कृत, हिन्दी के प्रकांड विद्वान् और अनन्य प्रेमी आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का मानना है कि अंग्रेजों के आने से पहले उपन्यास का अस्तित्व भारत में था। द्विवेदी जी तो उपन्यास के विषय में स्पष्टरूप से कहते हैं कि - “यह संस्कृत भाषा के प्राचीन गद्य साहित्य में भी पाया जाता है। पर अंकुर रूप में ही उनके दर्शन होते हैं। प्रकृत उपन्यास-साहित्य के जनन, उन्नयन और प्रचलन का श्रेय पश्चिमी देशों के लेखकों को है।”<sup>8</sup> हालाँकि उसके विकसित रूप को भारत में लाने वाले अंग्रेज़ शासक ही थे।

उपन्यास का अविर्भाव साहित्य के इतिहास की एक आधुनिक देन है, यह एक स्वतंत्र विधा है। भारत में इसे आधुनिक सभ्यता की देन माना जाता है। आधुनिक सभ्यता की देन मानने का कारण यह था कि इसका पदार्पण भारत में पश्चिम से हुआ था। इस नवीन विधा की विशेषता ही इसका आकर्षण है। उपन्यास को अंग्रेजी में ‘नावेल’ कहा जाता है। ‘नावेल’ शब्द का हिन्दी पर्याय नवीन होता है। ‘नावेल’ शब्द की उत्पत्ति इटैलियन शब्द ‘नोवेल्लो’ (Novello) से हुई है। कुछ भारतीय विद्वानों के अनुसार जब संस्कृत साहित्य में उपन्यास शब्द की उत्पत्ति देखी गयी तो उसमें ‘उपन्यास’ शब्द का प्रयोग भिन्न अर्थ में हुआ था। अंग्रेजी के आधुनिक काल में उपन्यास शब्द का प्रयोग संस्कृत से बिल्कुल भिन्न था। हिन्दी भाषा में ‘उपन्यास’ शब्द के प्रयोग होने का काल भारतेंदु काल था। यही काल भारत में उपन्यास की स्थापना कर गया। यह काल भारत के इतिहास में न केवल साहित्य की दृष्टि से

---

<sup>8</sup> वही, पृ- 57

बल्कि लोगों के जीवन में आने वाले बदलाव की दृष्टि से भी सबसे महत्त्वपूर्ण रहा है।

चौदहवीं से सोलहवीं शताब्दी के बीच यूरोप में बहुत से क्रांतिकारी बदलाव हुए यह काल यूरोप के नवजागरण का काल था। इस समय सामंतवाद का समापन और पूँजीवाद का आरम्भ हो रहा था। नवजागरण की यह लहर इटली से शुरू हुई थी सबसे पहले नवजागरण इटली में आया फिर ये धीरे-धीरे पूरे यूरोप में स्पेन, फ्रांस और इंग्लैंड में फैल गया। “चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दी में यूरोप में मध्यवर्गीय पाठक वर्ग पैदा हो गया था, जिसने वहाँ पर उपन्यास के उदय के लिए बुनियादी संरचना के निर्माण में योग दिया। फलस्वरूप सत्रहवीं शताब्दी के पूर्व ही में यूरोप में ‘उपन्यास’ अस्तित्व में आ गया।”<sup>9</sup> यूरोप का पुनर्जागरण इतना विशाल था कि उसने न केवल वहाँ के लोगों के जीवन की बल्कि पूरे यूरोप की ही तस्वीर को बदल कर रख दिया था। इस काल को ही ‘यूरोप’ तथा ‘उपन्यास’ दोनों का आधुनिक काल माना जाता है। यूरोप का पुनर्जागरण वह महान क्रांति थी जिसने व्यक्ति को अपने समाज और परिस्थितियों के प्रति सचेत किया। उसे धार्मिक रूढ़ियाँ, अंधविश्वास और जड़ता के कुएं से बाहर निकाल कर आत्माभिव्यक्ति करने की ओर अग्रसर किया। सामन्ती व्यवस्था को खत्म किया और राष्ट्रीय भावना को प्रतिष्ठित कर दिया था। वैज्ञानिक दृष्टिकोण, व्यापार और उद्योगों के विकास ने लोगों को बन्धनों से मुक्त कर दिया। इसी दिशा में शिक्षा के मार्ग भी खुले और समाज को लेखन और पाठक को उसके आस्वादन के लिए साहित्य मिला।

‘आधुनिक उपन्यास’ की झलक डीफो, फील्डिंग, रिचर्डसन, स्मोलेट और स्टर्न जैसे प्रभृति विद्वानों में ही देखने को मिलती है। अठारहवीं शताब्दी में पत्रकारिता के विकास ने इंग्लैंड के शिक्षित मध्यवर्ग को लेखन के लिए बढ़ावा दिया। इस शताब्दी

<sup>9</sup> राय, प्रो. गोपाल, *हिन्दी उपन्यास का इतिहास*, प्रथम संस्करण, राजकमल प्रकाशन, 2002, नयी दिल्ली, पृ-13

में ऐसा शिक्षित समाज विकसित हुआ जिसकी दृष्टि यथार्थवादी थी यह समाज अपने ही समाज को जानना चाहता था। आधुनिक उपन्यासों में भी उसे वही सब देखने को मिला। “आधुनिक उपन्यास यथार्थवाद से इतना अधिक आक्रांत रहा कि उसमें किसी भी मानवेत्तर अनुभव से भिन्न प्रसंग के लिए स्थान नहीं होता था”<sup>10</sup> उपन्यास के विकास ने समाज के इसी यथार्थ का प्रदर्शन किया था। उपन्यासों ने अपना ही समाज लोगों को आड़ने में दिखाया। इस प्रकार अठारहवीं शताब्दी तक ‘नॉवेलो’ की रचना ने पूरे यूरोप में अपना प्रभाव जमा लिया। उन्नीसवीं शताब्दी में पूरे यूरोप में ‘नॉवेलो’ की रचना जोरों पर रही। इस प्रक्रिया में ग्रीक और लैटिन के अनुवादों ने भी यूरोपीय पुनर्जागरण में लिखे जाने वाले उपन्यासों के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका तैयार की थी।

उन्नीसवीं सदी में उपन्यास के विकास से पहले भारत में संस्कृत कथा साहित्य, फारसी कथा साहित्य, लोक साहित्य अवश्य ही उपलब्ध था। पौराणिक नीति कथाएँ तथा मनोरंजन प्रधान कथाएँ भी हस्तलिखित और मौखिक रूप में उपलब्ध थीं। औपनिवेशिक शासन से पहले भी भारत में गद्य का अस्तित्व अवश्य ही था लेकिन वह केवल मौखिक रूप और हस्तलिखित रूप में उपलब्ध था। इस मौखिक साहित्य को लिखित रूप में सामने लाने के लिए प्रिंटिंग प्रेसों ने सहायता की। आधुनिक काल और साहित्य ही प्रिंटिंग प्रेसों को लाने में सहायक था।

अंग्रेजों के आगमन से पहले लोग पाठक कम और श्रोता अधिक हुआ करते थे। लेकिन जब भारत ब्रिटिश शासन का उपनिवेश बना तब इन कथाओं का विषय परिवर्तित हो गया और देश, समाज और परिवार की समस्याएं इनका विषय बनकर रह गयीं। जब एक संस्कृति पर किसी अन्य संस्कृति का प्रभाव पड़ता है, जब एक देश किसी दूसरे देश का उपनिवेश बन जाता है तो न केवल राजनीतिक बल्कि सामाजिक, आर्थिक और मानसिक अन्य सभी प्रकार के बदलाव उस उपनिवेश में

<sup>10</sup> राय, प्रो. गोपाल, *उपन्यास की संरचना*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2006, पृ- 28



देखने को मिलते हैं। ब्रिटिश शासन से पहले यहाँ पर मध्यकालीन सामन्ती व्यवस्था थी और सामन्ती व्यवस्था में उपन्यास का जन्म होना संभव नहीं था। क्योंकि “सामन्ती व्यवस्था उपन्यास के उदय के लिए अनुकूल समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि का निर्माण करने में असफल थी।”<sup>11</sup> जब मध्यकाल का समापन हुआ तभी नवजागरण का उदय हुआ यह यूरोपीय नवजागरण के स्तर से बिल्कुल भिन्न था। यदि भारत में सन 1857 के संघर्ष के बाद उपन्यास का जन्म न हुआ होता तो अगले कुछ वर्षों में तो अवश्य ही हो जाता। इस बात में भी कोई संदेह नहीं है कि भारत में उपन्यास का आगमन केवल ब्रिटिश शासन के कारण हुआ जिसमें अंग्रेजी शिक्षा नीति ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। जिस प्रकार यूरोप में सामन्ती व्यवस्था के अंत ने उपन्यास के उदय में योगदान दिया उसी प्रकार भारत में अंग्रेजों के अत्याचार के विरुद्ध मध्यवर्ग ने गद्य का विकास किया।

उपन्यास के जन्म के पीछे हिन्दुस्तानियों और अंग्रेजों का द्वन्द उत्तरदायी था। इस संघर्ष का आरंभ बंगाल में ईस्ट इंडिया कंपनी और मुगल सल्तनत के अंत से हुआ था। सविनय अवज्ञा, लखनऊ अधिवेशन, भारत छोड़ो आन्दोलन, नमक कानून, सिविल नाफरमानी, गोलमेज़ सम्मलेन, पूर्ण स्वराज, देश में अकाल, महामारी, ब्रिटिश शासन के अत्याचार, बढ़ती हुई गरीबी इन सभी ने हिन्दुओं को प्रभावित किया। ये सभी 57 में हुई क्रांति का हिस्सा थे। इन सभी आंदोलनों और संघर्षों ने भारत के इतिहास को पूरी तरह से बदल कर रख दिया। इसी बदलाव से साहित्यिक किस्सों और कहानियों का रुख मनोरंजन से बाहर निकलकर लोगों के जीवन का हिस्सा बन गया। इसी साहित्यिक बदलाव से उपन्यास लेखन को बल मिला। यह वह समय था जब हिन्दी साहित्य में न केवल नए साहित्य का जन्म हुआ, अपितु नए देश भारत का भी जन्म हुआ। मीनाक्षी मुखर्जी कहती हैं “1857 में जब भारत एक

<sup>11</sup> सत्यकाम, *भारतीय उपन्यास की दिशाएँ*, नयी दिल्ली, सामयिक प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2012, पृ - 13

स्वायत्तशासी देश भी नहीं था। हमें उस समय के लिखे हुए उपन्यासों को याद करना चाहिये जो इस महत्त्वपूर्ण वर्ष के आने के बाद ही लिखे गये थे<sup>12</sup> मधुरेश ने भी भारतीय उपन्यास के उद्भव के पीछे ब्रिटिश संपर्क को ही उत्तरदायी माना है उनका कहना है कि “उपन्यास के लिए जिस संक्रान्तिकालीन समाज की अनिवार्यता की ओर संकेत किया जाता रहा है, जिसमें व्यक्ति और समाज के द्वन्द की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है - भारतीय नवजागरण समाज उस संक्राति की देहरी पर खड़ा था। ब्रिटिशराज की स्थापना के बाद मध्यवर्ग का विकास तेज़ी से होने लगा था। उपन्यास इसी मध्यवर्गीय समाज की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं से जुड़ा साहित्य रूप रहा है। इसी वर्ग के पढ़े-लिखे लोग इस नवविकसित गद्य-रूप के पाठक रहे हैं और उन्हीं में से कुछ अपने या अपने आस-पास के जीवन को अंकित करने की लालसा से उत्प्रेरित होकर ही उसमें रचनात्मक हस्तक्षेप की दिशा में अग्रसर हुए हैं”<sup>13</sup> अंग्रेजों की प्रशासनिक और आर्थिक नीति के फलस्वरूप भारत में लोग अपने आत्मसम्मान, आत्मगौरव और राष्ट्रप्रेम के प्रति सजग हुए और इसी सजगता ने मध्यवर्ग को जन्म दिया। अपने संघर्ष की कहानी को अपने शब्दों में परिवर्तित कर लोगों ने लिखा।

1857 के फलस्वरूप लोगों की विचारधारा में परिवर्तन हुआ मीनाक्षी मुखर्जी का कहना है कि “1857 में भारत की स्वतंत्रता की पहली लड़ाई लड़ी गयी थी। हिंदी भाषा का इस समय भी महत्त्वपूर्ण स्थान था। क्योंकि इस राजनैतिक घटना के बाद ही भारत में हिंदी उपन्यासों की रचना आरम्भ हुई थी”<sup>14</sup> अंग्रेजों की प्रशासनिक और आर्थिक नीति के फलस्वरूप भारत में लोग अपने आत्मसम्मान, आत्मगौरव और राष्ट्रप्रेम के प्रति सजग हुए और इसी सजगता ने मध्यवर्ग को जन्म दिया। अपने

<sup>12</sup> Mukehrjee, Meenakshi (Ed.), *Early Novels in India*, New Delhi, Sahitya Akademi, 2002,

<sup>13</sup> मधुरेश, *हिन्दी उपन्यास का विकास*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, 2014, पृ-11-12

<sup>14</sup> Mukehrjee, Meenakshi (Ed.), *Early Novels in India*, New Delhi, Sahitya Akademi, 2002, P- 04

संघर्ष की कहानी को अपने शब्दों में परिवर्तित कर लोगों ने लिखा। मैकाले की शिक्षा नीति से जो शिक्षित वर्ग भारत में उत्पन्न हुआ उसने समयानुकूल शिक्षित लोगों का बौद्धिक और सामाजिक दोनों प्रकार का विकास किया। नवजागरण के समय शिक्षा गद्य के विकास का बहुत बड़ा कारण बनी। हालांकि भारत में शिक्षा का प्रचार करने के पीछे अंग्रेजों ने रोमनों के नीति अपनाई थी। रोमन जिस भी देश पर आक्रमण कर उसे अपने अधिकृत करते थे वहीं पर अपनी भाषा, संस्कृति और साहित्य का प्रचार-प्रसार भी करते थे। रोमनों की इसी नीति को अंग्रेजों ने भी अपनाया “सन 1835 की मैकाले नीति के बाद भारत में अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार अनिवार्य बन गया।”<sup>15</sup> मैकाले की शिक्षा नीति केवल उच्च वर्ग तक सीमित थी निम्नवर्ग का उससे कोई सरोकार नहीं था। इस कारण अंग्रेजों की सभ्यता और संस्कृति का प्रभाव ही उच्च वर्ग पर अधिक पड़ा। मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा की नीति के पीछे का उद्देश्य शम्भुनाथ के शब्दों में ‘काले अंग्रेज़’ तैयार करना था। इस सन्दर्भ में सुन्दरलाल के इतिहास का हवाला देते हुए शम्भुनाथ कहते हैं कि “अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव अंग्रेजी राज के लिए हितकर हुए बिना नहीं रह सकता। जो भारतीय युवक हमारे साहित्य द्वारा हमसे भली-भांति परिचित हो जाते हैं, वे हमें विदेशी समझना प्रायः बंद कर देते हैं।”<sup>16</sup> अपने साहित्य का प्रचार करने के पीछे अंग्रेजों की नीति यह थी कि वे भारतीयों को यह समझा सकें कि वे उनसे भिन्न नहीं हैं। उनका उद्देश्य था कि भारतीयों को अपने शासकों और उनके शासन को स्वीकार कर लेना चाहिए।

शिक्षित मध्यवर्गीय समाज यूरोप में विकसित नवीन गद्य विधा ‘उपन्यास’ का पाठक बना। गद्य के इस नवविकसित रूप से हिन्दी के क्षेत्र में जो अब तक केवल पाठक थे लेखक भी बने। अपनी ही कलम से अपने समाज और जीवन को अपनी

<sup>15</sup> मधुरेश, *हिन्दी उपन्यास का विकास*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, 2014, पृ-16

<sup>16</sup> शम्भुनाथ, *हिन्दी नवजागरण और संस्कृति*, कलकत्ता, आनंद प्रकाशन, 2004, पृ-68

भाषा में लिखने के लिए प्रेरित हुए जिन राज्यों में अंग्रेजों का और उनके साहित्य का आगमन पहले हुआ उन राज्यों में शिक्षा का विकास भी पहले हुआ इस शिक्षा ने उपन्यास की विधा को जन्म दिया। उन्नीसवीं शताब्दी में हिन्दी में गद्य का अपेक्षित विकास न हो सका था। कारण ब्रिटिश राज का केंद्र उस समय बंगाल था, उत्तर भारत नहीं जहां पर हिन्दी भाषा बोली जाती थी। एक ओर जहां पश्चिमी हिस्सों में अब तक अस्थिरता बनी हुई थी, वहीं बंगाल में राजनीति के साथ-साथ साहित्य में स्थिरता आ चुकी थी। बंगाल का कलकत्ता ब्रिटिश साम्राज्य की राजधानी बन चुका था, जहाँ पर ब्रिटिश शिक्षा और साहित्य, संस्कृति का विकास स्वाभाविक था। यही प्रमुख कारण था कि हिन्दी क्षेत्र को साहित्य आदि की दृष्टि से बंगाल से पूर्व लाभान्वित होने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ।

सन 1847 में जब सैयद इंशा अल्लाह खां द्वारा रचित *रानी केतकी की कहानी* का मुद्रण हुआ इस कहानी के विषय में गोपाल राय कहते हैं कि “बहुत लोगों को इन दिनों ठेठ हिन्दी बोली में कहानी पढ़ने की चाह रहती थी।”<sup>17</sup> जिसके लिए वे हिन्दी के पाठक बनना चाहते थे। इस कहानी ने नागरी के लिए एक भूमिका तैयार कर दी थी, इसके बाद सन 1869 तक कोई दूसरी मौलिक कथा नहीं लिखी गयी। इसके बाद गद्य का रूप सीधे सन 1855 के आसपास मिलता है। सन 1855 से ही बांग्ला और मराठी में उपन्यासों के अनुवाद किये जाने लगे थे। बांग्ला और मराठी भाषा में इसका पदार्पण पहले हो चुका था। आधुनिक काल के शुरू होते ही भारत में अचानक से ही उपन्यास की शुरुआत नहीं हो गयी थी। “उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ से लेकर लगभग आगामी सात दशकों तक हिन्दी पाठक वर्ग के निर्माण की प्रक्रिया बहुत धीमी रही और उपन्यास एक विधा के रूप में लगातार दस्तक देता रहा था। अलंकृत भाषा में यह भी कहा जा सकता है कि वह लगभग सत्तर वर्ष तक

---

<sup>17</sup> वही, पृ- 20

परिस्थितियों के गर्भ में कुलबुलाता रहा और सन 1870 में *देवरानी-जेठानी* की कहानी के रूप में प्रकट हुआ<sup>18</sup> हिन्दी में सन 1870 में *देवरानी जेठानी* की कहानी से हुआ इसके बाद हिन्दी में उपन्यासों के अनुवाद की परम्परा सामने आने लगी।

उपन्यास लिखने की पहल तो भारत में भी उपन्यासों के अनुवाद से ही हुई है गोपाल राय के अनुसार भारत में अनूदित कथा पुस्तकें सन 1840 के लगभग ही प्राप्त होने लगी थीं। हिन्दी में पहला अनूदित उपन्यास '*रोबिन्सन क्रूसो*' था। पंडित बद्रीलाल ने इसका अनुवाद किया था। यह प्रत्यक्ष रूप से नहीं बांग्ला से हिन्दी में अनूदित हुआ था। बांग्ला में छपने के आठ वर्षों के बाद यह हिन्दी में अनूदित हुआ वे कहते हैं "खड़ी बोली का इस नयी साहित्यिक विधा 'उपन्यास' से परिचय डेनियल डिफो (1660 -1731) के अंग्रेजी उपन्यास '*द लाइफ एंड स्ट्रेंज एंड सरप्राइजिंग एडवेंचर्स ऑफ रोबिन्सन क्रूसो*' (1719) के हिन्दी अनुवाद से सन 1860 ई. में हुआ यह उपन्यास काशी पाठशाला के चीफ रीडर पंडित बद्रीलाल ने बांग्ला से अनूदित किया था।<sup>19</sup> इस उपन्यास से यूरोप में उपन्यास साहित्य की नींव पड़ी थी। इसी के अनुवाद ने भारत में भी अपना प्रभाव बनाया। "डेफो के बाद जॉन बुनयन (1628-88) के उपन्यास '*पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस*' (1676) का अनुवाद एक ईसाई मिशनरी ने '*यात्रा स्वप्नोदय*' के नाम से सन 1865 में किया। डेफो की साहसिक और बुनयन की नैतिक कथा के बाद हिन्दी में रेनॉल्ड्स के रहस्य एवं रोमांच से ओत-प्रोत मनोरंजक उपन्यासों का अनुवाद हुआ है।<sup>20</sup> हिन्दी के अनुवाद साहित्य के सम्बन्ध में हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास में कहा गया है कि "अलोच्यकालीन हिन्दी अनुवाद साहित्य के सम्बन्ध में दो बातें ध्यान रखने की हैं। एक तो यह कि उस समय अंग्रेजी से

<sup>18</sup> राय, प्रो. गोपाल, *हिन्दी उपन्यास का इतिहास*, प्रथम संस्करण, राजकमल प्रकाशन, 2002, नयी दिल्ली, पृ-13

<sup>19</sup> सिन्हा, रमण प्रसाद, *अनुवाद और रचना का उत्तरजीवन*, नयी दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2002, पृ-51

<sup>20</sup> गोस्वामी, कृष्ण कुमार, *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2008, पृ- 456

अधिक अनुवाद हुए अन्य विदेशी भाषाओं से कम। ज्ञान पिपासा की शांति के लिए उस समय ऐसा करना भी उचित ही समझा गया था। दूसरी बात यह कि हिन्दी में अनुवाद साहित्य का घनिष्ठ सम्बन्ध खड़ी बोली गद्य (गौणतः काव्यक्षेत्र में खड़ी बोली के प्रयोग) से है और स्वतन्त्र रूप में किये गए कुछ प्रयासों को छोड़कर, उसे उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश सरकार की शैक्षणिक और प्रशासकीय आवश्यकताओं के फलस्वरूप प्रोत्साहन प्राप्त हुआ<sup>21</sup> परन्तु यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि सबसे अधिक अनुवाद बांग्ला से तथा उसके बाद अंग्रेजी से देखने को मिलते हैं। उस समय केवल साहित्यिक अनुवाद ही नहीं होते थे प्रशासकीय कागजातों के अनुवाद भी किये जाते थे। दूसरी ओर लोगों को शिक्षित करने के लिए कुछ पाठ्य पुस्तकों का अनुवाद भी किया गया। मैकाले की शिक्षा नीति ने भारत के भिन्न हिस्सों में जिन स्कूलों को स्थापित किया था उनमें तो यह कहा गया कि देश की क्षेत्रीयता के अनुसार आधुनिक भारतीय भाषाओं में लोगों को शिक्षा दी जाणी, परन्तु यह नाममात्र को ही हुआ सन 1837 में जो अदालती भाषा अधिनियम स्वीकृत किया गया था उसने हिन्दी की स्थिति को और अधिक खराब कर दिया। जिसमें केवल अंग्रेजी और उर्दू को ही वरीयता दी गयी थी।

सन 1841 में सरकार ने स्कूल बुक सोसाइटी के पूरक के रूप में वर्नरियुलर लिटरेचर समिति की स्थापना की थी। इसका उद्देश्य बांग्ला भाषा के माध्यम से शिक्षाप्रद और मनोरंजक पुस्तकों का प्रकाशन करना था। परन्तु ये मनोरंजक पुस्तकें बहुत अधिक समय तक नहीं चल पायीं थीं। एक पत्रिका 'विविधार्थ संग्रह' इस समिति से निकलने वाली पहली पत्रिका थी। जो लोगों के बीच बहुत अधिक लोकप्रिय हुई इसकी तुलना में अन्य प्रकाशन उतनी लोकप्रियता प्राप्त नहीं कर पाए जिसके वे

---

<sup>21</sup> जैन, निर्मला (संपादिका), *हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास*, नयी दिल्ली, नागरी प्रचारिणी सभा, द्वादश भाग, 1984, पृ- 311

अधिकारी थे। इसके बाद इस समिति से अंग्रजी के कुछ अनूदित और कुछ रूपांतरित ग्रन्थ भी प्रकाशित हुए थे। इसकी सूची डॉ. सुकुमार सेन ने दी है, उनके अनुसार कुछ प्रारम्भिक अनुवाद और रूपांतर इस प्रकार हैं - “जॉन रोबिन्सन” का अनुवाद ‘रोबिन्सन क्रूसो’ (सन 1842), डॉ. एडवर्ड रोमर द्वारा ‘लैम्ब्स टैल्स फ्रॉम शेक्सपियर’ का अनुवाद (सन 1843), आनंदचन्द्र वेदांतवागीश द्वारा ‘कथा सरित्सगार’ का रूपांतर प्रकाशित हुआ था।<sup>22</sup> सुकुमार सेन ने जिन अनूदित ग्रंथों की सूची दी है वे केवल एक समिति के द्वारा नौकरी पर रखे गये कुछ अनुवादकों ने अनूदित किये थे। उपर्युक्त ग्रंथों का अनुवाद अनुवादकों ने अपनी रुचि से नहीं किया था। लेकिन पाठकों ने इन ग्रंथों को बड़ी रुचि के साथ पढ़ा था। जिससे भविष्य में होने वाले अनुवादों का मार्ग प्रशस्त हुआ। इन अनुवादों ने ही बाद के रचनाकारों के लिए भूमिका तैयार की थी।

भारत में उपन्यासों के अनुवाद का आरम्भ शिक्षा के लिए हुआ था लेकिन आगे चलकर यह साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण शाखा बन गयी। भारत में फैली नव चेतना और कुछ सुधारवादी आन्दोलनों ने भारतीयों को आंतरिक और मानसिक दोनों तरह से आवाज़ उठाने पर मजबूर कर दिया था। इसी से उनकी आवाज़ साहित्य में मिल गयी और गद्य का रूप बनकर उभरी। उपन्यास और अनुवाद दोनों के विकास के साथ मुद्रण यंत्र की भूमिका भी जुड़ी हुई है यदि मुद्रण कला नहीं होती तो किसी प्रकार के साहित्य का अस्तित्व भविष्य या एक काल विशेष के बाद बचा न रह जाता। ईसाई धर्म प्रचारकों ने भारत में बाइबिल का प्रचार करने और अपने धर्म को फैलाने के लिए प्रेसों की स्थापना की थी। सन 1801 में फोर्ट विलियम कॉलेज में संस्कृत और बांग्ला के प्रोफेसरों के रूप में हिन्दुओं की नियुक्ती की गयी। इतना ही नहीं इनसे बाइबिल के भिन्न भाषाओं में अनुवाद भी करवाए गए। उपन्यास के जन्म के समय प्रिंटिंग प्रेस के माध्यम से शिक्षा का प्रसार हो चुका था। हिन्दी साहित्य के

<sup>22</sup> सेन, डॉ. सुकुमार, *बांग्ला साहित्य का इतिहास*, नयी दिल्ली, साहित्य अकादेमी, प्रथम संस्करण, 1978, पृ-173

लिए यही एक सौभाग्य की बात थी कि लेखन और पठन के लिए लोगों के बीच एक व्यापक दृष्टिकोण विकसित हो रहा था।

साहित्यिक लहर का उपन्यासों की ओर उन्मुख होने का प्रमुख कारण अंग्रेजी से बांग्ला में और बांग्ला से हिन्दी में अनूदित होने वाले उपन्यास थे। इतना ही नहीं कथा साहित्य के अनुवाद भी किये जाते थे। उत्तर भारत में बांग्ला और पश्चिम में मराठी भाषा में उपन्यासों का उदय लगभग एक साथ ही हुआ था। सन 1918 तक जिन उपन्यासों का अनुवाद अंग्रेजी, बांग्ला या उर्दू से हुआ था वे ऐय्यारी, तिलिस्मी और जासूसी या ग्राह्यस्थ जीवन के मार्मिक प्रसंगों जैसे आदि विषयों पर आधारित थे जिनसे केवल पाठकों का मनोरंजन किया जा सकता था। शिक्षा देना या जीवन के प्रति कोई नैतिक समझ देना इनका काम नहीं था। लेकिन वृहद् स्तर पर बांग्ला के उपन्यासों ने ही हिन्दी के उपन्यासों की ईमारत को खड़ा करने में सहायता की है, जिसका विस्तृत विकास निम्नलिखित है -

## **बांग्ला से हिन्दी में अनूदित आरंभिक उपन्यास**

हिन्दी के महान लेखक बांग्ला साहित्य और उपन्यासों के प्रशंसक थे, उन्होंने हिन्दी में भी ऐसे ही उपन्यास लिखे जाने का स्वप्न देखा था। इस दिशा में पहल भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने की, उनकी इच्छा थी कि हिन्दी साहित्य भी महान उपन्यासों का भण्डार बन जाए। इसमें भी कोई संदेह नहीं था कि हिन्दी साहित्य का कोश उपन्यास के नाम पर रिक्त पड़ा था। भारतेंदु ने स्वयं तो किसी उपन्यास का पूर्ण अनुवाद नहीं किया लेकिन अपनी टोली में अनेक अनुवादक, साहित्यकार और संपादक जोड़े जैसे गदाधर सिंह, मल्लिका देवी, राधाकृष्ण दास, रमाशंकर दास, राधाचरण गोस्वामी आदि ऐसे कई अन्य अनुवादकों के नाम उल्लेखनीय हैं। इसके लिए उन्होंने अपने प्रयासों में कोई कमी नहीं छोड़ी थी, “उन्होंने पंडित संतोष सिंह को दीप



'निर्वाण' के अनुवाद के लिए एक पत्र लिखा था और 'हरिश्चंद्र चंद्रिका में कुछ बांग्ला उपन्यासों के नाम देकर उनको अनुवाद के लिए सुझाव दिया था"<sup>23</sup> इसके बाद उनके अनुवाद का कार्य तेज़ी से चलने लगा। भारतेंदु हरिश्चंद्र किसी भी प्रकार से हिन्दी साहित्य के पाठकों और लेखकों को समृद्ध करना चाहते थे। जिसके लिए उन्होंने अपने प्रयासों में कोई कमी नहीं छोड़ी।

बांग्ला के अनुवादों का वास्तविक महत्त्व उस समय से माना जा सकता है, जब से शरतचंद्र के उपन्यासों का अनुवाद होना शुरू हुआ यह भी सर्वस्वीकृत है कि हिन्दी में अनुवादों का ही अनुवाद हुआ है अर्थात् अंग्रेजी से बांग्ला और बांग्ला से हिन्दी में अनुवाद हुआ। हिन्दी के लेखकों की अंग्रेजी भाषा की तुलना में अन्य भारतीय भाषाओं पर अच्छी पकड़ थी। माना जा सकता है कि इसीलिए बांग्ला से ही अनुवाद अधिक हुए जहां एक ओर बंकिम चन्द्र और रमेश चन्द्र ने अंग्रेजी के ऐतिहासिक उपन्यासों को भारतीय पीठिका प्रदान की वहीं दूसरी ओर हिन्दी के उपन्यासकारों को यही पृष्ठभूमि बांग्ला भाषा से विरासत में प्राप्त हुई।

हिन्दी के उपन्यासों को बांग्ला के उपन्यासों की अद्भुत देन है। बांग्ला से पहले किसी भी भारतीय भाषा में उपन्यास प्रचलित नहीं थे। आरंभ में मनोरंजन प्रधान उपन्यास ही लोग पढ़ा करते थे। अंग्रेजी के उपन्यासों में भी लोगों को तिलिस्मी, ऐय्यारी, जासूसी और रोमानी के ही प्रधान तत्वों की प्राप्ति हुई। लेकिन बांग्ला के लेखकों ने मूल उपन्यासों में इन तत्वों का अनुकरण नहीं किया है। बांग्ला के लेखकों को पाठकों की रुचि को परिमार्जित करने का श्रेय जाता है। अंग्रेजी उपन्यासों की तर्ज पर लिखे गए बांग्ला उपन्यासों ने मनोरंजन प्रधान तत्वों से आगे सोचने का मार्ग खोल दिया। कहने का तात्पर्य है कि मन बहलाने वाले उपन्यासों से आगे बढ़कर उनका ध्यान अपने देश के इतिहास और सांस्कृतिक संपदा तथा संघर्ष की ओर गया।

<sup>23</sup> बंदीदास, *हिन्दी उपन्यास पृष्ठभूमिकी परम्परा*, कानपुर: ग्रंथम, 1966, पृ-434

लेकिन ऐसा शत प्रतिशत नहीं हुआ था। कुछ लेखक ऐसे भी थे जिन्होंने अपने पांडित्य का प्रदर्शन करने के लिए संस्कृतनिष्ठ और अलंकृत गद्य का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार प्रौढ़ भाषा के प्रयोग के जाल में फंस कर अनुवादकों और साहित्यकारों ने अपनी ही भाषा के स्वरूप को विकृत कर दिया जिसमें हिन्दी की कम और बांग्ला की अधिक झलक मिलने लगी थी।

बांग्ला से अधिकतर जिन उपन्यासकारों के उपन्यास हिन्दी में अनूदित हुए उनके नाम हैं - रवीन्द्रनाथ, चंडीचरण सेन, स्वर्णकुमारी देवी, दामोदर मुखोपाध्याय, अविनाश चन्द्र दास, हरी साधन मुखोपाध्याय, प्रभात कुमार मुखोपाध्याय, पचकौड़ी दे और प्रियनाथ मुखर्जी आदि के उपन्यास अधिकतर बांग्ला से हिन्दी में अनूदित हुए हैं।

बांग्ला से हिन्दी में अनुवाद करने वाले कुछ अनुवादकों के नाम गोपाल राम गहमरी, बलदेव प्रसाद मिश्र, ब्रजनंदन सहाय, रूपनारायण पाण्डेय, ईश्वरी प्रसाद शर्मा, जनार्दन झा 'द्विज', पारसनाथ त्रिपाठी, रामचंद्र वर्मा, कृष्ण कुमार देव शर्मा और राम लाल आदि प्रमुख अनुवादक रहे हैं।

आधुनिक काल में उपन्यासों की परम्परा बहुत अधिक समृद्ध रही है इनमें अलौकिकता कम और लौकिकता अधिक देखने को मिलती है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में उपन्यास की दो प्रमुख धाराएं देखने को मिलती हैं। एक धारा तिलिस्म, ऐय्यारी और कल्पना से सम्बंधित है और दूसरी में मानव-चरित्र का अध्ययन किया जाता है। इन उपन्यासों में एक तरफ मनोरम कहानियों और दूसरी तरफ चरित्र-चित्रण द्वारा लोगों का मनोरंजन किया जाता था। जिसमें समाज के ही स्त्री-पुरुषों को घटनाओं का हिस्सा बनाया जाता है। साधारण स्त्री-पुरुषों का सम्बन्ध और उनसे जुड़ी घटनाएं ही उपन्यास की मौलिक प्रवृत्ति रही हैं। उपन्यास की परम्परा में पाप-पुण्य,

ईर्ष्या-द्वेष, संघर्ष-आनंद, संयोग-वियोग, अपमान-सम्मान ये सभी तत्त्व विद्यमान रहते थे।

उस समय सामाजिक, ऐतिहासिक और नारी विषयक उपन्यास अधिक अनूदित होते थे। नीचे कुछ महत्त्वपूर्ण उपन्यासकारों एवं उनके अनुवादों के नाम दिए गए हैं। इन अनुवादकों ने बाद के दिनों में मूल लेखन भी किया।

### **भारतेंदु हरिश्चंद्र (सन 1850-1875)**

भारतेंदु युग को हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल के नाम से जाना जाता है। इस काल में ऐसे बहुत से लेखक प्रकाश में आये जिन्होंने उपन्यास साहित्य में अपना योगदान दिया। इसमें कोई शक नहीं है कि हिन्दी के लेखकों को उपन्यास लिखने की प्रेरणा अनुवाद के माध्यम से ही प्राप्त हुई। इस क्षेत्र में हिन्दी के आधुनिक उपन्यासों के जन्मदाता के रूप में सबसे पहला नाम हम भारतेंदु हरिश्चंद्र जी का नाम ले सकते हैं। भारतेंदु ने सबसे पहले उपन्यास लेखन शुरू किया था परन्तु उसे पूरा करने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गयी। इनका पहला मौलिक उपन्यास 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती' है। भारतेंदु का उपन्यास हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास है। उनकी आकस्मिक मृत्यु के कारण यह उपन्यास अधूरा ही रह गया था। जिसे बाद में उनके पुत्र ने पूरा किया था। "कुछ आप बीती कुछ जग बीती" के अपूर्णाश से प्रकट होता है कि वह कहानी न होकर सरल शैली में लिखा गया संस्मरण है।<sup>24</sup> यह अर्धकथात्मक शैली में लिखा गया है। सन 1890 ई. में खड़गविलास प्रेस बांकीपुर से जब इसका प्रकाशन हुआ तब इस संस्करण पर 'भारतभूषण भारतेंदु श्री हरिश्चंद्र

<sup>24</sup> शर्मा, विनय मोहन (सम्पादक), *हिन्दी साहित्य का वृहद्इतिहास: अष्टम भाग*, वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, 1972, पृ-239

लिखित<sup>25</sup> विशेष रूप से उल्लिखित किया गया था। फिर भी हिन्दी का सबसे पहला उपन्यास 'परीक्षा गुरु' को ही माना जाता है।

इतना ही नहीं अनुवाद के क्षेत्र में भी उनका योगदान है - भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'चंद्रप्रभा और पूर्णप्रकाश' नामक उपन्यास का अनुवाद किया। यह मराठी में लिखा गया उपन्यास है, जिसमें पूर्णप्रकाश नायक और चंद्रप्रभा नायिका हैं। इन उपन्यासों से ज्ञात होता है कि हिन्दी से पहले मराठी में उपन्यास लेखन आरम्भ हो चुका था। इसके अतिरिक्त बांग्ला से बंकिम बाबू के उपन्यास 'राजसिंह' का अनुवाद भारतेंदु ने किया था जो सन 1894 में प्रकाशित हुआ था और यही 'हिन्दी प्रदीप' पत्रिका के नवम्बर के अंक में सन 1880 में प्रकाशित हुआ था। राधा कृष्ण दास ने भारतेंदु हरिश्चंद्र के विषय में कहा है कि "उपन्यासों की ओर इनका ध्यान पहले कम था। इनके अनुरोध पर 'कादम्बरी' और 'दुर्गेशनंदिनी' का अनुवाद हुआ.. राधारानी स्वर्णलता आदि का उन्हीं के अनुरोध से अनुवाद हुआ"<sup>26</sup> उनके स्वर्गीय होने पर उनके कार्य का भार लाला श्रीनिवासदास ने संभाला लेकिन वे भी इसे पूरा न कर पाए उनके भी स्वर्गीय होने पर यह सब कार्य प्रताप नारायण मिश्र की देखरेख में चला। यह अवश्य था की भारतेंदु बाबू अपने जीवन काल में अनुवाद और उपन्यास के क्षेत्र में बहुत अधिक काम नहीं कर पाए लेकिन उन्होंने अपने परवर्ती लेखकों के लिए एक स्वर्णिम मार्ग प्रशस्त कर दिया था। इनके बाद नाम आता है राधा कृष्ण दास का।

### **राधाकृष्ण दास (सन 1865-1907)**

राधाकृष्ण दास का 'निस्सहाय हिन्दू' सन 1881 में लिखा गया था परन्तु इसका प्रकाशन सन 1890 में हुआ। यही कारण था कि इसे परीक्षा गुरु से पहले लिखा हुआ नहीं माना गया है। 'गोवध' की समस्या को केंद्र में रखकर लिखा गया

---

<sup>25</sup> वही, पृ-238

<sup>26</sup> वही, पृ-239

यह उपन्यास भारतेन्दु हरिश्चंद्र की प्रेरणा से लिखा गया था। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि में काशी के जनजीवन को जीवन्तता से प्रदर्शित किया गया है। इसमें गोवध को रोकने के लिए प्रयत्नशील हिन्दू और मुसलमान दो मित्रों के बलिदान की कथा है। इस उपन्यास के दो मुख्य नायक हैं एक मदन मोहन और दूसरा अब्दुल अजीज जो एक साथ मिलकर इस समस्या को जड़ से खत्म करना चाहते हैं। राधा कृष्ण दास ने सामाजिक समस्या को अपने उपन्यास में स्थान दिया है। उपन्यास 'निस्सहाय हिन्दू' में समाज में चलने वाली एक अंतहीन समस्या गोहत्या को विषय बनाया गया है। इसमें लेखक ने किसी प्रकार की स्थूल उपदेशात्मकता का सहारा नहीं लिया है, इसकी कथा में दो मित्रों का करुणापूर्ण बलिदान कहीं अधिक प्रभावशाली बन पड़ा है। इस उपन्यास के अंत में दोनों नायकों की मृत्यु हो जाती है। यथार्थ की नग्नता का चित्रण लेखक ने किया है। इसके साथ ही उन्होंने बनारस के उस जीवन का चित्रण किया है जो वहां के जीवन को दर्शाता है जैसे वहां के गंगातट की संध्या, बनारस का पान, जगह जगह पर मिलने वाली गंदगी आदि का जीवंत दृश्य मिलता है।

'मरता क्या न करता' नामक उपन्यास राधाकृष्ण दास ने बांग्ला से सन 1884 में प्रकाशित किया था। तारकनाथ गांगुली ने सन 1893 में 'स्वर्णलता' नामक उपन्यास लिखा है, इसमें ग्रामीण जीवन का प्रशंसनीय वास्तविक चित्रण किया गया है। राधा कृष्ण दास ने इसका अनुवाद भी किया है।

### **किशोरीलाल गोस्वामी (सन 1865-1932)**

किशोरीलाल गोस्वामी जी का जीवनकाल केवल हिन्दी साहित्य की सेवा में ही बीता है। गोस्वामी जी ने हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने में बहुत अधिक योगदान दिया है। साहित्य की दृष्टि से देखा जाए तो गोस्वामी जी के उपन्यास यथार्थ से कम संबंधित हैं। उनके उपन्यास केवल ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर अधिक लिखे गए हैं इनके उपन्यासों का सामाजिकता से कोई सरोकार नहीं है। उनके ऐतिहासिक उपन्यासों

में रोमानी प्रवृत्ति अधिक देखने मिलती है। इनके उपन्यासों में एक ओर जहां हिंदुत्व और उसके इतिहास का वर्णन देखने को मिलता है वहीं दूसरी ओर मनोरंजन के नाम पर अश्लीलता का भी समावेश उनमें किया गया है। उन्होंने अपने उपन्यासों को लिखने के लिए जिस काल खंड का चुनाव किया है वह मुसलमानों और राजपूतों के संघर्ष का काल है जो 13 वीं से 18 वीं शताब्दी तक फैला है। उन्होंने इतिहास और कल्पना को मिलाकर अपने उपन्यासों की रचना की है। उनके दोहरे शीर्षक उनकी विषयवस्तु को स्पष्ट करते चलते हैं। उनके उपन्यासों में राजपूत नायिकाएं बहुत ही मजबूती से मुसलमानों के अत्याचारों का विरोध करती दिखती हैं। जो समय आने पर अपने शौर्य का परिचय देकर स्त्री धर्म की रक्षा करने के लिए अपने प्राणों की बलि भी दे देती हैं। किसी-किसी स्थान पर उनके उपन्यास इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटनाओं के प्रति गंभीर नहीं दिखते हैं, क्योंकि कहीं-कहीं ये अपने विषय से भटक भी जाते हैं, जैसे 'रजिया' की प्रशासनिक क्षमताओं को भूल कर गोस्वामी जी की कहानी उसके सौन्दर्य पर ही अटक जाती है। गोस्वामी जी ने राजदरबारों, महलों, मुसलमान नवाबों और राजाओं को तो सिर्फ काम-क्रीडा में ही फंसा हुआ दिखाया है।

उपर्युक्त उपन्यास के अतिरिक्त किशोरीलाल गोस्वामी जी का 'त्रिवेणी वा सौभाग्य श्री' सन 1890 में लिखा गया जो विशेष रूप से उल्लेखनीय है। 1917 में लिखा गया 'लखनऊ की कब्र', लखनऊ के नवाब नसीरुद्दीन हैदर को केंद्र में रखकर लिखा गया था। इस उपन्यास में नवाबों और बेगमों की विलास लीलाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। सन 1907 में लिखा गया 'पुनर्जन्म व सौतियाडाह' तथा 'अंगूठी का नगीना' उनके सामाजिक उपन्यास कहे जाते हैं।

गोस्वामी जी ने अनुवाद के क्षेत्र में भी अपनी कला का प्रदर्शन किया है। वे बांग्ला के कुछ उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं। लेखक ने सन 1889 में 'प्रेममयी' नामक रचना का हिन्दी रूपांतर प्रस्तुत किया था। परन्तु इसकी कोई मूल

रचना की प्रति प्राप्त नहीं हुई है। उन्होंने बहुत अधिक उपन्यासों के अनुवाद तो नहीं किये हैं लेकिन बंकिम चन्द्र चटोपाध्याय और रमेशचन्द्र दत्त जैसे बांग्ला लेखकों से पूरी तरह प्रभावित दिखते हैं। बांग्ला के जिन उपन्यासों के अनुवाद उन्होंने किये थे उनकी स्पष्ट रूप से कोई सूची प्राप्त नहीं हुई है सन 1888 में रची गयी 'लावण्यमयी' रचना पर सामाजिक उपन्यासों का ही नहीं कुछ ऐतिहासिक अनूदित रचनाओं का भी प्रभाव देखा जा सकता है। स्पष्ट कहा जाए तो इनके मूल उपन्यासों पर 'बंगभाषा' का प्रभाव मिलता है।

किशोरी लाल गोस्वामी द्वारा रचित कुछ प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यास हैं - 'प्रणयिनी-परिणय' सन 1890, 'हृदय हारिणी व आदर्श रमणी' सन 1890, 'लवंगलता व आदर्श लवंगलता' सन 1890, 'तारा व क्षात्रकुल कमलिनी' सन 1902, 'सुल्ताना रजिया बेगम व रंगमहल में हलाहल' सन 1904, 'सोना और सुगंध व पन्नाबाई' सन 1911, 'लखनऊ की कब्र वा शाही महलसरा' सन 1917, 'अंगूठी का नगीना' 1918 आदि मुख्य रूप से उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार उन्हें ऐतिहासिक उपन्यासकार की श्रेणी में गिना जा सकता है।

### **अयोध्यासिंह उपाध्याय (सन 1865 से 1947)**

अयोध्या सिंह उपाध्याय का 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' सन 1891 में बहुत अधिक प्रसिद्ध हुआ था। इस उपन्यास के शीर्षक के अनुसार मिलती जुलती कथा इस उपन्यास में नहीं मिलती है। उपन्यास में देवबाला और देवन्दन के उदात्त प्रेम की कहानी है। देवबाला का पिता उसका विवाह उसके प्रेमी से न कर किसी अन्य व्यक्ति से कर देता है। वह अत्यंत दुराचारी और अशिक्षित होता है। नायिका उसके बिल्कुल विपरीत दिखायी गयी है और उसे सुधारने का पूरा प्रयास करती है। परन्तु परिस्थितियां उसके प्रयासों के विपरीत जाती हैं और वह उसे गर्भावस्था में ही छोड़ कर चला जाता है। अंत में देवन्दन उसे ढूँढ कर लाता है, उसे सुधारता भी है।

लेकिन उसके वापस आते ही देवबाला अपनी नव जन्मा पुत्री को अपने पति के हाथ में सौंप कर मर जाती है। देवबाला के रूप में आदर्श हिन्दू स्त्री को दिखाया गया है। जो पति के चरित्रहीन होने और उसके दुर्व्यवहार करने के बावजूद एक संयमशील स्त्री का परिचय देती है। इस उपन्यास में लेखक ने भाग्यवाद और धर्म का सहारा लिया है। उपन्यास में सामाजिक रूढ़ियों की आलोचना भी दिखती है। इसकी नायिका को जिस व्यक्ति से प्रेम होता है उसकी कहानी कुछ भिन्न दिखाई गयी है नायिका अपने विवाह के पूर्व जिस आदमी को प्रेम करती है वह उसके पति को सही राह पर ले आता है लेकिन नायिका अपने ही प्रेमी के विरह में अपना बलिदान दे देती है।

अयोध्यासिंह उपाध्याय ने बंकिम बाबू के 'कृष्णकान्तेर बिल' नामक उपन्यास का कृष्ण 'कान्त का दानपत्र' नाम से अनुवाद किया था। इसका प्रकाशन सन 1895 में हुआ था। यह खड़गविलास प्रेस बांकीपुर से प्रकाशित हुआ था। इसका दूसरा संस्करण भी खड़गविलास प्रेस बांकीपुर से 1915 में पटना से प्रकाशित हुआ था।

सन 1888 में अयोध्या सिंह उपाध्याय ने अंग्रेजी में लिखित 'मर्चेट ऑफ़ दी वेनिस' का अनुवाद 'वेनिस का बांका' नाम से किया है। लेखक ने इसे अनुवाद का नाम नहीं दिया है लेकिन इसकी कथावस्तु और अंग्रेजी के 'मर्चेट ऑफ़ दी वेनिस' में इतनी समानता है कि यह उसका रूपांतरण ही ज्ञात होता है। वास्तव में यह शेक्सपीयर का नाटक है, जिसे उपाध्याय जी ने उपन्यास का रूप दे दिया है।

### **गोपाल राम गहमरी (सन 1866-1946)**

हिन्दी साहित्य में तिलिस्मी और जासूसी उपन्यास लिखने वालों में गोपाल राम गहमरी का नाम देवकीनंदन खत्री के बाद आता है। हिन्दी उपन्यासों के आरंभ में यदि इनके उपन्यासों का उल्लेख न किया जाए तो उल्लेख अधूरा रह जायेगा। इन्होंने तिलिस्मी और ऐय्यारी उपन्यासों की रचना की है। यहाँ पर तिलिस्म और ऐय्यार शब्द को समझ लेना आवश्यक है - 'तिलिस्म' शब्द की मूल उत्पत्ति ग्रीक भाषा में



‘टेलिस्मा’ से हुई थी। इस शब्द का प्रयोग मन्त्र-तंत्र के अर्थ में किया जाता था। इसी से यह शब्द अंग्रेजी में ‘टेलिस्मन’ और हिन्दी में ‘तिलिस्म’ से प्रचलित हुआ। इसे अद्भुत और आश्चर्यजनक कल्पना में भी शामिल किया जाता है। दूसरा शब्द है ‘ऐय्यारी’ इसका अर्थ है चालाक या दूर तक गति से दौड़ने वाला व्यक्ति जो बार-बार भेस बदलता है। ऐसे ही तत्वों का समावेश कर गहमरी जी ने अपने उपन्यासों की रचना की है।

गोपाल राम गहमरी घटनाप्रधान उपन्यासों की रचना के लिए जाने जाते हैं। जिस वक्त गहमरी जी लिख रहे थे उस समय पाठकों की संख्या बहुत अधिक बढ़ चुकी थी। गोपाल राम गहमरी भी अंग्रेजी के उपन्यासों से प्रभावित थे। उन्होंने अपनी रचना करने के लिए अंग्रेजी के कौतूहल प्रधान उपन्यासों को आधार बनाया है। इसी कौतूहल का प्रयोग वे जासूसी प्रधान उपन्यासों में भी किया करते थे। इसके कारण उनके उपन्यास हिंदी पाठकों के बीच इतने अधिक लोकप्रिय हुए थे। इतना ही नहीं कुछ प्रकाशक तो चोरी से उनके उपन्यासों को छापने लगे थे। गोपाल राम ने ‘जासूस’ पत्रिका के सन 1900 के जून के अंक में प्रकाशित गहमरी जी की ‘भूमिका’ का उद्धरण देकर उनके उपन्यासों में पाठकीय रुचि का प्रमाण प्रस्तुत किया है। वे कहते हैं कि “उनके उपन्यास ‘अजीब लाश’ पुस्तक पढ़ते हुए कुछ लोग रेल में सफर के दौरान, पढ़ने में इतने डूब गए की अपने निर्दिष्ट स्टेशन से सात-आठ स्टेशन आगे निकल गए और बाद में ध्यान आने पर किसी से पूछने पर उन्हें वस्तुस्थिति का पता चला।”<sup>27</sup> उनके कहने का तात्पर्य है कि जिस प्रकार के तत्वों का प्रयोग गहमरी जी ने किया था वे ही उनके उपन्यासों के आकर्षण का कारण थे।

जिन उपन्यासों में तिलिस्म और जासूसी जैसे तत्वों का प्रयोग लेखक ने किया है वे इस प्रकार हैं - ‘जमुना का खून’ सन 1901, ‘खूनी की खोज’ सन 1903,

<sup>27</sup> मधुरेश, हिन्दी उपन्यास का विकास, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, 2014, पृ-29

'मेरी और मेरीना' सन 1905, 'रहस्य-विप्लव' सन 1905, 'भयंकर भेद' सन 1907, 'जासूस की डायरी' सन 1912, 'जासूस की बुद्धि' सन 1914, 'चक्करदार खून' सन 1915, और 'गाड़ी में लाश' सन 1920 लिखे गए हैं।

गोपाल राम गहमरी ने जितने भी उपन्यासों की रचना की है वे सभी अनुवाद मात्र माने जाते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो जितने भी उपन्यास आलोच्य लेखक ने रचे हैं उसे आलोचकों ने अनुवाद ही माना है मूल नहीं। क्योंकि इन उपन्यासों को अनूदित माना गया है तो इस बात का भी अनुमान लगाया जा सकता है कि ये अनुवाद अंग्रेजी और बांग्ला से ही हुए थे। इसके पीछे कारण यह था कि गहमरी जी ने अब तक जितने भी उपन्यास लिखे थे उनमें चरित्रों के नाम बांग्ला में तथा स्थानों के नाम भी बांग्ला प्रदेश के ही मिलते हैं। इसीलिए इनके सभी उपन्यासों को आलोचकों ने केवल अनुमान के आधार पर ही अनुवाद मान लिया है। उन रचनाओं को मूल मानना भी गहमरी जी के साहित्य के साथ न्याय करना नहीं होगा। इस बात का अनुमान लगाने का कारण यह भी है कि उन्होंने अपने अनूदित उपन्यासों में भी मूल उपन्यासकार का उल्लेख नहीं किया है।

इनके लिखे उपन्यासों के विषय में अन्य आलोचकों के मत कुछ इस प्रकार हैं। गहमरी जी का 'भानमती' जो सन 1894 में प्रकाशित हुआ था इसे श्री शिवनारायण और आचार्य शुक्ल ने अनुवाद मान लिया है, परन्तु यह भी प्रमाणित नहीं है कि वास्तव में यह अनुवाद है या मूला गहमरी जी का 'नेमा' नामक उपन्यास 'जासूस' नामक पत्रिका में दो अंकों में प्रकाशित हुआ था, इसके मूल होने का भी कोई प्रमाण नहीं है। 'बड़ा भाई' नामक उपन्यास बंग भाषा से अनूदित है और इसके लेखक का नाम प्राप्त नहीं हो सका है। इसका प्रकाशन सन 1818 के अंत में या सन 1819 के जनवरी में हुआ था। आचार्य शुक्ल के अनुसार इसका प्रकाशन काल सही नहीं है। गोपालराम गहमरी ने शिवनाथ शास्त्री के जनप्रिय उपन्यास 'मेजवऊ' का रूपांतर

‘सास पतोद्द’ नाम से सन 1898 में किया था। इस उपन्यास की कथा में एक भद्र परिवार का चित्रण है जिसमें एक कर्कशा सास और एक पढ़ी-लिखी बहु का चित्रण मिलता है।

इसके बाद नाम आता है ‘जादूगरनी मनोरमा’ या ‘पांच खून’ नामक उपन्यास का जो सन 1921 में लिखा गया था। गहमरी जी ने बांग्ला के जासूसी कथाकार बाबू पचकौड़ी दे की जासूसी कथा ‘मनोरमा’ का अनुवाद ‘जादूगरनी मनोरमा’ या ‘पांच खून’ नाम से अनूदित किया था। इसके लेखन का समय स्पष्ट नहीं है। हिन्दी के कुछ विद्वानों ने इसे इनका मौलिक लेखन माना है लेकिन इसकी भूमिका में लेखक ने उद्धृत किया है “यह ‘जादूगरनी मनोरमा’ बंगभाषा ‘मनोरमा’ का अनुवाद मात्र है” यह कथा पुस्तक पांच संस्करणों में प्रकाशित हुई है जो मौलिक तो नहीं साबित हो पाए हैं लेकिन इनके अनूदित होने की पूर्ण सम्भावना है।

इनके उपन्यास भी देवकीनंदन जी के उपन्यासों की तरह इस आग्रह से मुक्त नहीं हैं कि बुराई करने वाले को अंत में उसके पाप कर्मों का दंड अवश्य मिल जाता है। षड्यंत्र रचने वाले या अपराधी और हत्यारे को गहमरी जी के उपन्यासों के अंत में दंड मिल ही जाता है और अंत में पाठक के कौतूहल की समाप्ति यहीं पर हो जाती है। जो पाठक के लिए आनंदमयी अंत भी बन जाता है।

### **कार्तिक प्रसाद खत्री (1852-1904)**

कार्तिक प्रसाद खत्री ने अंग्रेजी से अनूदित ‘सतीत्व रक्षिणी’ नामक उपन्यास सन 1883 में प्रकाशित किया था, इसको अनुवाद केवल अनुमान के आधार पर ही कहा जा सकता है, कारण यह है की इस उपन्यास में उपलब्ध स्थानों और पात्रों के नाम अंग्रेजी में मिलते हैं। इसके पीछे एक कारण यह भी है कि इसमें यूरोप के सम्राट एडवर्ड तृतीय के जीवन से संबंधित वर्णन मिलता है। अनुमान तो यह भी

लगाया जा सकता है कि अंग्रेजी के ही किसी उपन्यास से प्रभावित होकर उन्होंने एडवर्ड के जीवन काल की घटनाएं इससे जोड़ दी हैं।

कार्तिक प्रसाद खत्री ने बहुत से ऐतिहासिक उपन्यासों का रूपांतरण किया है। जिनमें से सबसे प्रसिद्ध उपन्यास 'जया' था। इसका अनुवाद सन 1893 में हुआ था। इस उपन्यास की कहानी में एक हिन्दू वीरांगना के चरित्र पर प्रकाश डाला गया है, जिसमें वह अल्लाउद्दीन के विवाह के प्रस्ताव को ठुकरा देती है। कथा में साधारण घटनाओं का कम और अतिरंजित घटनाओं का प्राधान्य अधिक है। इस उपन्यास के विषय में यह ज्ञात नहीं हो पाया है कि यह किस भाषा में अनूदित किया गया है। अनुमानतः यह बांग्ला से ही अनूदित हुआ होगा।

इस प्रकार कार्तिक प्रसाद खत्री के अनूदित उपन्यासों की सूची में केवल उपर्युक्त दो ही उपन्यास उपलब्ध हो पाए हैं।

### गदाधर सिंह (1869-1918)

बांग्ला के ऐतिहासिक उपन्यासकारों में दूसरे महान उपन्यासकार रमेशचन्द्र दत्त हैं। रमेशचन्द्र दत्त के उपन्यासों के अनुवादों की शुरुआत भी गदाधर सिंह ने ही की थी। गदाधर सिंह ने रमेशचन्द्र दत्त के उपन्यास 'बंगविजेता' का अनुवाद किया था, जो 'सारसुधानिधि पत्रिका' में सन 1879 में दो अंकों में प्रकाशित भी हुआ था। पुस्तक रूप में यह अनुवाद सन 1886 में प्रकाशित हुआ था। "बाणभट्ट कृत कादम्बरी का (बांग्ला) से अनुवाद गदाधर सिंह ने सन 1873 के लगभग किया था, जिसके कुछ अंश 'हरिश्चंद्र मैगज़ीन' के सन 1873-74 के अंक में छपे थे। सन 1879 में यह अनुवाद 'कादम्बरी' शीर्षक से इंडियन प्रेस काशी से प्रकाशित हुआ जिसे उसके मुखपृष्ठ पर 'प्राचीन संस्कृत उपन्यास' कहा गया था।"<sup>28</sup> इसके बाद सन 1879 में

<sup>28</sup> राय, प्रो. गोपाल, *हिन्दी उपन्यास का इतिहास*, प्रथम संस्करण, राजकमल प्रकाशन, 2002, नयी दिल्ली, पृ-62-63

इंडियन प्रेस लिमिटेड प्रयाग से 'कादम्बरी' पुस्तक रूप में प्रकाशित हुआ। इसका दूसरा संस्करण सन 1920 तथा तीसरा संस्करण सन 1922 में प्रकाशित हुआ था। 'कादम्बरी' उपन्यास का प्रभाव गोस्वामी जी के उपन्यासों में भी स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। 'सारसुधानिधि पत्रिका' के 26 मई सन 1879 और 11 अगस्त सन 1879 के दो अंकों में शेक्सपीयर के 'ओथेलो' नामक नाटक का रूपांतर गदाधर सिंह ने सन 1894 में प्रकाशित किया। "पुस्तक के मुख्य पृष्ठ पर इसे यूनान देश का उपन्यास कहा गया है"<sup>29</sup> यह भारत जीवन प्रेस काशी से मुद्रित तथा प्रकाशित हुआ था। जिसका मुद्रण और लेखन स्वयं लेखक ने किया था। बाबू गदाधर सिंह ने 'कादम्बरी' का संक्षिप्त अनुवाद किया था।

बांग्ला के एक और लेखक बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा लिखित ऐतिहासिक उपन्यास 'दुर्गेशनंदिनी' का गदाधर सिंह ने हिन्दी में अनुवाद किया था जिसका क्रमशः पहला और दूसरा खंड सन 1882 और सन 1884 में प्रकाशित हुआ था। इसी उपन्यास का अनुवाद लक्ष्मी नारायण सरोज ने भी किया था। जिसका शीर्षक मुझे उपलब्ध नहीं हुआ है।

### **कुछ अन्य उपन्यासकार**

योंगेंद्र चन्द्र बसु ने सन 1888 में एक उपन्यास रचा था 'मडेल भगिनी'। यह उपन्यास बंगालियों के समाज का चित्रण करता है। इसका हिन्दी में अनुवाद बालमुकुन्द गुप्त ने किया है। जिसका शीर्षक मुझे उपलब्ध नहीं हुआ है।

एक दूसरा उपन्यास चंडीचरण सेन का 'गंगागोविंदसिंह' नाम से है। यह गणेश पांड्या द्वारा हिन्दी में से अनूदित हुआ है। इसका विषय ईस्ट इंडिया कंपनी के अत्याचार हैं, अंग्रेजी शासकों के विरुद्ध आक्रोश और देश के लिए राष्ट्रीय भावना का

<sup>29</sup> राय, प्रो. गोपाल, हिन्दी उपन्यास कोश, पटना, गन्थ निकेतन, प्रथम संस्करण, 1968, पृ-276

चित्रण इसमें मिलता है। इस उपन्यास में भारत के इतिहास की अत्यंत लोमहर्षक घटनाओं का चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में भारतीयों का आक्रोश नृशंस्तापूर्ण और अत्यंत हृदयविदारक घटनाओं के चित्रण के माध्यम से दिखाया गया है। इस उपन्यास में अंग्रेज़ शासकों के विरुद्ध भारतीयों का क्रोध है।

उदित नारायणलाल ने स्वर्ण कुमारी देवी के रचित ऐतिहासिक उपन्यास 'दीप निर्वाण' का अनुवाद सन 1891 में किया था। इस कथा का केंद्र पृथ्वीराज की वीरगाथा है। श्रीमती स्वर्णकुमारी देवी द्वारा रचित उपन्यास 'दीपनिर्वाण' एक ऐतिहासिक उपन्यास है, जिसमें पृथ्वीराज के पराजय की कहानी का वर्णन है। इसका अनुवाद मुंशी उदित नारायण लाल वर्मा ने हिंदी में सन 1891 में किया था, यह भारत जीवन प्रेस काशी से प्रकाशित हुआ था।

बांग्ला से अनूदित 'चित्तौर चातकिनी' नामक उपन्यास का अनुवाद सन 1895 में बाबू रामकृष्ण वर्मा ने किया था। "यह उपन्यास चित्तौर के राजवंश की मर्यादा के इतना प्रतिकूल समझा गया कि लोगों ने इसके विरुद्ध आन्दोलन किया और इसकी सभी प्रतियां गंगा में डुबो दी गयीं। सौभाग्य से चैतन्य पुस्तकालय में इसकी एक प्रति उपलब्ध है।"<sup>30</sup> इस उपन्यास के विषय में और अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं हुई है। हिंदी उपन्यास कोश से केवल यही दो वाक्य मुझे उपलब्ध हुए थे। इसके मूल लेखक का उल्लेख भी पुस्तक में नहीं है।

बांग्ला से अनूदित होने वाला एक और उपन्यास प्रभात कुमार मुखोपाध्याय का 'जीवन का मूल्य' नामक उपन्यास है। इसका अनुवाद देवी प्रसाद ने किया है, इसमें एक अप्रौढ़ कन्या की स्थिति का चित्रण मिलता है। बांग्ला में शुरुआत में नारी पर आधारित उपन्यास ही रचे जा रहे थे। इन उपन्यासों में तत्कालीन समाज की नारी का ही चित्रण किया जाता था। इसमें कुछ विशिष्ट मुद्दों को ही उठाया जाता था

<sup>30</sup> राय, प्रो. गोपाल, *हिन्दी उपन्यास कोश*, पटना, ग्रन्थ निकेतन, प्रथम संस्करण, 1968, पृ-320

उदाहरण के लिए विधवा विवाह, दहेज प्रथा, स्त्री पर होने वाले अत्याचार, परिवार के लिए उनका त्याग, मर्यादा पालन दाम्पत्य जीवन की समस्याएं आदि तत्वों को लेखक ने अपनी लेखनी से दिखाने का प्रयास किया है।

महादेव साह ने शरत के 'आरक्षणीया' का अनुवाद किया है। इसमें हिन्दू समाज में नारी के प्रति निष्ठुर विधि विधानों का चित्रण किया गया है। नारी के प्रति समाज में उस वक्त अनुकूल परिस्थितियां नहीं थीं। जिन परिस्थितियों में वे जी रही थीं उनमें अनेक समस्याओं का सामना उन्हें करना पड़ता था। अपने समाज की ऐसी दशा से प्रभावित होकर कुछ अन्य उपन्यास भी लिखे गये थे जिनका नाम लिया जा सकता है। जैसे स्वर्णकुमारी देवी के उपन्यास 'अधखिली कली' और 'टूटी कली' इसके उदाहरण हैं। ये उपन्यास उस समय के समाज की स्त्रियों की दयनीय स्थिति को पूर्णरूपेण अपने से व्यक्त कर रहे थे।

बांग्ला से अनूदित उपन्यास 'सच्चा सपना' सन 1890 में विजयानंद द्वारा अनूदित किया गया था। "बांग्ला में इस उपन्यास की रचना श्रीयुत भूदेव मुखोपाध्याय ने एक अंग्रेजी ग्रन्थ 'रोमांस ऑफ हिस्ट्री' के प्रथम उपाख्यान के आधार पर की है।"<sup>31</sup>

बंकिमचन्द्र का बांग्ला का एक प्रसिद्ध उपन्यास 'राजसिंह' है। जिसका अनुवाद हिन्दी में ठाकुर रामाशीष सिंह ने किया था। इसकी उपन्यास की कथा मेवाड़ के राजसिंह और औरंगजेब के युद्ध से जुड़ी हुई है। इस उपन्यास के विषय में निर्मला जैन कहती हैं कि "राजपूतों के शौर्य पराक्रम, इनके बलिदान और त्याग, राजपूत वीरांगनाओं का जौहर और सतीत्व रक्षा के लिए प्राणदान की उनकी मार्मिक गाथा ही

---

<sup>31</sup> वही, पृ-318

इसमें चित्रित की गयी है।”<sup>32</sup> भारत के इतिहास को लेकर वीरता भरे अनेक उपन्यास उस समय लिखे जा रहे थे जिनका अनुवाद भी लोग बड़े शौक से करते थे।

एक अज्ञात लेखक के द्वारा लिखा गया ‘सौन्दर्यमयी’ नामक उपन्यास सन 1887 में बांग्ला में लिखा गया था। इसका अनुवाद मल्लिका देवी के द्वारा किया गया। इस उपन्यास में एक विधवा के प्रेम की दर्दमयी कहानी का चित्रण है।

सन 1891 में राधा चरण गोस्वामी ने ‘विरजा’ नामक एक बांग्ला उपन्यास का अनुवाद किया था। जो भारत जीवन प्रेस काशी से प्रकाशित हुआ था।

‘स्वर्णलता’ नामक उपन्यास सन 1893 में बांग्ला से अनूदित हुआ था। भारत जीवन प्रेस काशी से इसका प्रकाशन हुआ। इसके अनुवादक का नाम उपलब्ध नहीं है।

डेनियल डीफो के ‘रोबिनसन क्रूसो’ का अनुवाद सर्वप्रथम सन 1860 में पंडित बद्री लाल पाठक ने किया था। यह बांग्ला अनुवाद का हिन्दी अनुवाद था।

पचकौड़ी दे ने सन 1900 में एक उपन्यास लिखा था। जिसका अनुवाद बाबू राम कृष्ण वर्मा ने ‘कुलटा वा स्त्री बुद्धि प्रलयंकरी’ नाम से किया था। इस उपन्यास का मूल नाम उपलब्ध नहीं है।

‘राधारानी’ नामक उपन्यास की रचना बंकिम बाबू ने की थी। इसका अनुवाद सन 1893 में मल्लिका देवी ने किया था। इसका प्रकाशन चंद्रप्रभा प्रेस बनारस से हुआ था। इसका दूसरा अनुवाद प्रताप नारायण मिश्र ने सन 1894 में किया था। यह खड़गविलास प्रेस बांकीपुर से प्रकाशित हुआ था। अयोध्या सिंह उपाध्याय ने इसे संशोधित कर तीन वर्ष के बाद फिर से प्रकाशित किया था।

बंकिम बाबू के लिखे हुए ‘इंदिरा’ नामक उपन्यास का अनुवाद प्रताप नारायण मिश्र ने खड़गविलास प्रेस से प्रकाशित किया था। इसका प्रकाशन वर्ष सन 1894 है।

---

<sup>32</sup> जैन, निर्मला (संपादिका), *हिन्दी साहित्य का वृहद्इतिहास*, नयी दिल्ली, नागरी प्रचारिणी सभा, द्वादश भाग, 1984, पृ-144



उन्नीसवीं शताब्दी तक बांग्ला के लगभग सभी उपन्यास हिन्दी में अनूदित हो चुके थे। बांग्ला के बाद मराठी भाषा से हिंदी और अंग्रेजी में अनूदित होने वाले उपन्यासों का स्थान आता है।

## अन्य भाषाओं से हिंदी में अनूदित आरंभिक उपन्यास

### मराठी भाषा से हिंदी में अनूदित उपन्यास

भारत में बांग्ला के बाद मराठी के उपन्यासों का अनुवाद हुआ था। सबसे पहले जिस उपन्यास के मराठी में अनूदित होने की सूचना प्राप्त होती है, वह विलियम केरे ने किया था। सन 1805 में विलियम केरे ने 'मैथ्यू के गोस्पेल' का मराठी अनुवाद किया था। सन 1814-1815 में उन्होंने 'सिंघासन बत्तीसी', 'पंचतंत्र' और 'हितोपदेश' के मराठी अनुवाद प्रस्तुत किये। मराठी में होने वाले अनुवादों में एक ओर जहां पंचतंत्र, हितोपदेश और सिंघासन बत्तीसी के अनुवाद सन 1814-1815 में प्रकाशित हुए थे, वहीं मराठी की एक पुस्तक 'बालबोध मुक्तावली' प्रकाशित हुई। जिसे मराठी के प्रथम गद्य होने का श्रेय प्राप्त है, राजा सरफरोज़ी ने इसाई धर्म प्रचारकों की सहायता से ईसप की नीति कथाओं के रूपांतर के रूप में प्रकाशित किया था। "सन 1806 में तंजौर के राजा सरफरोज़ी ने इसाई धर्म प्रचारकों की सहायता से ईसप की नीति कथाओं का 'बालबोध मुक्तावली' शीर्षक से मराठी रूपांतर प्रकाशित किया।"<sup>33</sup> मराठी में उच्च कोटि के उपन्यासों का अभाव नहीं था। निम्नकोटि के उपन्यासों का अनुवाद मराठी में बहुत कम हुआ था। 'बालबोध मुक्तावली' भी उच्च कोटि का ही उपन्यास है। इस उपन्यास में अनमेल विवाह की समस्या का समाधान दिखाया गया है।

<sup>33</sup> सत्यकाम, *भारतीय उपन्यास की दिशायें*, नयी दिल्ली, सामयिक प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2012, पृ - 16

अन्य उपन्यासों में मनोरमा बाई के दो उपन्यास आते हैं। पहला है 'सरस्वती' और दूसरा है 'लवंगलता'। इन दोनों उपन्यासों का अनुवाद प्यारेलाल गुप्त ने किया है। 'लवंगलता' की कहानी एक शिक्षित युवा स्त्री की प्रेम कहानी है। इस कहानी में युवती अपने प्रेमी के प्रेम से वंचित होकर धूर्त युवक के पंढे में फंस कर गर्भवती हो जाती है और बाद में उसके द्वारा ठुकरा भी दी जाती है। बाद में उसे अपनी नियति को स्वीकार कर अपने पिता की उम्र वाले व्यक्ति के साथ विवाह करना पड़ता है और विधवा होने पर वह समाज की सेवा में अपना सारा जीवन व्यतीत कर देता है।

कुछ वीरगाथाएं भी मराठी में लिखी गयीं जैसे गंगाप्रसाद गुप्त ने सन 1903 में 'पूना में हलचल' और 'झाँसी की रानी' का अनुवाद किया था। 'वीरमालोजी भोंसले' का अनुवाद रामजीवन नागर ने सन 1907 में किया और 'शिवाजी का आत्मदान' नाम से अनुवाद काशीनाथ शर्मा ने सन 1912 में किया। मराठी के एक और उपन्यास का अनुवाद दुर्गाप्रसाद खेवरिया और बाबूराम सर्वटे ने मिलकर किया था। यह उपन्यास 1913 में 'सलीमा बेगम' नाम से रचा गया था। इसमें सलीमा बेगम के गुप्त और अवैध प्रेम का चित्रण है। इसे पढ़कर मुगल हरम के रहस्य के छुपे हुए किस्सों की जानकारी मिलती है। इसके अलावा बालचंद्र नेमीचंद्र शहा के महान ऐतिहासिक उपन्यास 'छत्रसाल' और 'अशोक' का अनुवाद रामचंद्र वर्मा ने किया था।

मराठी के एक उपन्यासकार श्री काशीनाथ रघुनाथ मित्र ने 'रामा अणि माधव' नामक उपन्यास लिखा था। इस उपन्यास का अनुवाद श्री स्वरूप चंद्र जैन ने सन 1899 में 'रामा और माधव' शीर्षक से किया था। यह सन 1903 में बम्बई के लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस से प्रकाशित हुआ था। इसके बाद अंग्रेजी उपन्यासों का स्थान आता है।

इस समय में हिन्दी भाषा को जानने वाले लोग सबसे अधिक अनुवाद बांग्ला से हिन्दी में कर रहे थे। हिन्दी पाठकों और लेखकों की अन्य भाषाओं के प्रति उदासीनता को देखकर ही आधुनिक मराठी साहित्य के सुविख्यात उपन्यासकार और

नाटककार मामा वरेरकर ने लिखा था - 'हिन्दी वालों से मेरी एक शिकायत है, उन्हें बांग्ला के सिवाय किसी दूसरे प्रान्त के साहित्य में कोई दिलचस्पी नहीं है'<sup>34</sup> बांग्ला से अनुवाद होने का एक कारण यह भी था कि उस समय का लिखित साहित्य सबसे अधिक बांग्ला में ही उपलब्ध था। बांग्ला के उपन्यासों के प्रति दूसरा आकर्षण संभवतः यही रहा होगा कि अनुवादकों और पाठकों को अपने प्राचीन साहित्य से भिन्न उस साहित्य में कहानियां मिल रही थीं और यदि वीर गाथाओं की ओर देखा जाए तो पाठकों को अपने शासकों के बारे में बांग्ला साहित्य से जानकारी भी मिल रही थी। लेकिन फिर भी मराठी के उपन्यासों का अनुवाद कुछ समय बाद आरम्भ हो गया था।

इसके बाद की शृंखला में अंग्रेजी से हिंदी में अनूदित होने वाले उपन्यास आते हैं।

### अंग्रेजी से हिन्दी में अनूदित उपन्यास

पश्चिमी और भारतीय विचारधारा के फलस्वरूप भारतीय उपन्यासों का जन्म हुआ। इसमें कोई दोराह नहीं है कि ये उपन्यास नवजागरण काल के आन्दोलनों के परिणामस्वरूप लिखे जा रहे थे। उस समय जो उपन्यास लिखे गये उन्हें केवल मनोरंजन से तो नहीं जोड़ा जा सकता है। क्योंकि जब एक शिक्षित समाज का उदय हो रहा था, उस समय बौद्धिक विकास की भी आवश्यकता थी उस बौद्धिक विकास को उपन्यासों से सहारा मिल रहा था। इन उपन्यासों में मिलता है। उस समय लेखक न केवल मनोरंजन ही करना चाहते थे बल्कि अपने ही समाज की सच्चाई और गहराई से लोगों को परिचित भी करवाना चाहते थे।

लार्ड मैकाले ने कहा कि भारतीयों के बीच अंग्रेजी के माध्यम से ही यूरोपीय साहित्य और विज्ञान का प्रचार प्रसार किया जाए। इसी नीति को आगे बढ़ाते हुए लार्ड

<sup>34</sup> जैन, निर्मला (संपादिका), *हिन्दी साहित्य का वृहद्इतिहास*, नयी दिल्ली, नागरी प्रचारिणी सभा, द्वादश भाग, 1984, पृ-142

ऑकलैंड ने भी भारत में अंग्रेजी भाषा के माध्यम से ही यूरोप के साहित्य, दर्शन और विज्ञान का प्रसार किये जाने का समर्थन किया। सरकार ने इस नीति को बिना किसी संशोधन के स्वीकार किया, जिसमें यह भी कहा गया कि यह शिक्षा केवल उच्च स्तरीय लोगों को ही दी जाएगी। स्वाभाविक रूप से मध्यवर्ग और निम्नमध्यवर्ग इससे वंचित रह गया। पश्चिमी प्रान्त की शिक्षण संस्थाओं का नियंत्रण सन 1840 में प्रान्तों को सौंप दिया गया। जिसके तहत 'थॉमसन योजना' तैयार की गयी। इसके लिए कम्पनी सरकार ने निर्देश दिए की लोगों को उनकी मातृभाषा में शिक्षित किया जायेगा परन्तु यह बहुत ही सीमित क्षेत्र तक रहेगा। थॉमसन योजना की इसी विचारधारा के फलस्वरूप हिंदी भाषा का विकास भी हुआ।

हिन्दी के उपन्यासों पर जितना प्रभाव अंग्रेजी की शैली, शिल्प और उर्दू की भाषा शैली के उपन्यासों का पड़ा है उतना अन्य किसी भाषा का नहीं मिलता है। "इसके फलस्वरूप पढ़े-लिखे मध्यवर्ग का, जिसकी तादाद अभी बहुत ज्यादा नहीं थी का संपर्क अंग्रेजी साहित्य, सभ्यता और जीवन पद्यति से हुआ, विशेषतः कलकत्ता, मुंबई और मद्रास जैसे बड़े नगरों में और गौणतः अन्य छोटे नगरों में नवोदित मध्यवर्ग के बीच अंग्रेजी का ज्ञान फैल रहा था। नए शिक्षित वर्ग के बीच शेक्सपीयर, डीफो, जॉनसन, लैम्ब, स्कॉट और लिटन की रचनाएँ लोकप्रिय हो रही थीं। बर्टन कृत 'अरेबियन नाईट्स' और जी डब्ल्यू एम् रेनॉल्ड्स के घटना प्रधान उपन्यास इस काल के भारतीय पाठकों के बीच बहुत लोकप्रिय हुए। विक्टोरियाकालीन इंग्लैंड की नीति कथाएँ बंगाल और महाराष्ट्र के पढ़े-लिखों के बीच काफी लोकप्रिय थीं। धीरे-धीरे पढ़े लिखे लोग अंग्रेजी 'नॉवेल' से परचित हुए जो भारतीय साहित्य के लिए सर्वथा नया काव्य रूप था। 'नॉवेल' में लोगों की रुचि पैदा हुई<sup>35</sup> यह रुचि अंग्रेजी शिक्षा पद्यति का ही परिणाम थी कि लोगों की रुचि अंग्रेजी साहित्य में बन रही थी। पूरे भारत पर

<sup>35</sup> सत्यकाम, *भारतीय उपन्यास की दिशायें*, नयी दिल्ली, सामयिक प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2012, पृ- 20

अपना शासन करने के उद्देश्य से ही अंग्रेजों ने अपने शासन की शुरुआत बंगाल से की। लोगों में अपने धर्म का प्रचार करने के लिए स्कूलों और कॉलेजों में अंग्रेजी का प्रचार आरंभ किया। उपन्यास का पाठक बनना इसी का परिणाम था और यह स्वाभाविक भी था जब एक विधा में लोगों की रुचि पैदा हुई तो उसी को उन्होंने अपनी भाषा में लिखना आरम्भ किया। पाठक वर्ग के उदय के साथ-साथ उपन्यास का विकास जुड़ा हुआ है।

भारत कहानियों की जन्मभूमि है और यूरोप उपन्यास की। एक नवीन विधा होने पर भी पाठकों को उपन्यास अजनबी जैसा नहीं लगा। भारत में इसका प्रवेश होते ही लोग इसकी ओर आकृष्ट हो गए। सामाजिक परिस्थितियों और वैयक्तिक विचारों की अनुभूति को उपन्यास में जगह मिली। इससे साधारण पाठक और लेखक दोनों ही आकृष्ट हुए। भारतीय समाज के लिए अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजों का संपर्क जितना कष्टकारी रहा उतना ही लाभकारी उसका साहित्य बन पड़ा। उन्नीसवीं शताब्दी तक अंग्रेजी उपन्यासों का प्रभाव हिन्दी साहित्य पर अप्रत्यक्ष रूप से पड़ा। “शिक्षा और शासन में अंग्रेजी भाषा के प्रवेश से हिन्दी गद्य के विकास में अंतहीन बाधाएं उपस्थित हुईं किन्तु अंग्रेजी साहित्य के संपर्क से उसमें नवीनता और विविधता का समावेश हुआ। हिन्दी में उपन्यास अंग्रेजी साहित्य की सबसे बड़ी देन है और उसकी इस देन को हिन्दी ने जिस रूप में ग्रहण किया उस रूप में दूसरी देन को नहीं।”<sup>36</sup>

भारतेन्दुकालीन साहित्यकार विशाल प्रतिभा के धनी थे जिन्हें भारत की बहुत सी प्रादेशिक भाषाओं का ज्ञान था। जितना ज्ञान उन्हें भारत की प्रादेशिक भाषाओं का था उतना ही वे अंग्रेजी में भी निपुण थे। भारत में अंग्रेजी के महान साहित्यकारों का प्रभाव अधिक नहीं पड़ा था। सस्ते बिकने वाले साहित्य और साहित्यकारों का प्रभाव अधिक था। अंग्रेजी उपन्यासों का स्वर्णकाल विक्टोरियाकाल था जिस समय डिकेंस,

<sup>36</sup> बद्दीदास, *हिन्दी उपन्यास पृष्ठभूमिकी परम्परा*, कानपुर: ग्रंथम, 1966 पृ-422

थेकरे, ट्रोलोप, ब्रांते, जोर्ज इलियट, मेरेडिथ और हार्डी की रचनाएं आर्यीं, परन्तु भारतीय पाठक इस प्रकार के महान उपन्यासकारों की रचनाओं से वंचित रह गये थे। इसके पीछे का स्वाभाविक कारण यह था कि उस समय उपन्यास को केवल मनोरंजन मात्र की वस्तु समझा जाता था। साथ ही दूसरी दृष्टी से देखा जाए तो जब अंग्रेज़ अधिकारी भारत में जहाज यात्रा करके आते थे तो वे अपने साथ रेनॉल्ड्स जैसे मनोरंजक समझे जाने वाले उपन्यासकारों के उपन्यास उठा लाते थे। इससे एक तो यात्रा में उनका समय आसानी से बीत जाता था और दूसरा भारत आकर उनके ये उपन्यास भारतीयों को उपलब्ध हो जाया करते थे। शासक और व्यापारी या मध्यम शिक्षा प्राप्त किया हुआ शिक्षित समाज उस समय केवल मन बहलाने के लिए ही उपन्यास पढ़ते थे। कुछ विशिष्ट उपन्यासों को ही उच्च शिक्षा देने के लिए स्कूलों में पढ़ाया जाता था। इसी प्रक्रिया में अंग्रेजी से हिंदी के कुछ उपन्यास अनूदित हुए-

हिन्दी में कुछ अंग्रेजी उपन्यासों के अनुवाद हुए हैं जैसे बनयन का एक उपन्यास 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' के नाम से प्रसिद्ध है। इसका अनुवाद सन 1885 में क्रमशः बांग्ला और उर्दू में हुआ था बनयन के इस सुप्रसिद्ध रूपात्मक उपन्यास का अनुवाद 'यात्रा स्वप्नोदय' नाम से मिशन प्रेस ने हिंदी में प्रकाशित किया था।

राजा भोज का स्वप्न सुश्री सी एम् टक्कर द्वारा लिखित 'राजाज़ ड्रीम्स' का अनुवाद है जो राजा शिवप्रसाद ने किया है। यह 'राजा भोज का स्वप्न' नाम से नवल किशोर प्रेस लखनऊ से प्रकाशित हुआ था।

'मरहठा सरदार और रोशन आरा' नाम से एक अनुवाद हिन्दी में उपलब्ध है इसका अनुवाद सूर्यनारायण सिंह ने सन 1898 में किया था, इसके मूल अंग्रेजी लेखक श्रीमान पादरी ह्युबर्ट कान्टर हैं। यह बम्बई के लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस से प्रकाशित हुआ था।

सूर्य नारायण ने अंग्रेजी के एक और उपन्यास का अनुवाद सन 1899 में 'मनहरण' नाम से किया था। इसका मूल नाम अप्राप्य है, यह बम्बई के लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस से प्रकाशित हुआ था यह स्वतंत्र रूपांतर मात्र है।

रामकृष्ण वर्मा द्वारा सन 1890 में 'पुलिस वृत्तांत माला' नामक उपन्यास भारत जीवन प्रेस से काशी प्रकाशित हुआ था। यह अंग्रेजी में लिखे गए किसी उपन्यास का अनुवाद है। अंग्रेजी संस्करण का मूल नाम उपलब्ध नहीं हो पाया है।

डॉ. जॉनसन के उपन्यास 'रासेलास' के भी दो अनुवाद मिलते हैं। यह एक दार्शनिक उपन्यास है जो पुस्तक की तरह प्रकाशित नहीं हुआ था। इसकी कथा नील नदी के किनारे अब्सीनिया प्रदेश में बुनी गयी है। कहानी का मुख्य पात्र एक राजकुमार है जो संसार में दुःख ही दुःख देखने के बाद अपनी बहन के साथ सुख की तलाश में निकल पड़ता है। सन 1879 में इसका अनुवाद पं. केशवराम भट्ट ने किया था। इसका प्रकाशन पुस्तक रूप में तो नहीं हुआ परन्तु पत्रिका में हुआ था। यह 'सारसुधानिधि' में सन 1879 के मई अंक में प्रकाशित हुआ था। दूसरा अनुवाद 'हरीश चन्द्र चन्द्रिका और मोहन चन्द्रिका' में सन 1880 के अप्रैल के अंक में प्रकाशित हुआ था। इसका अनुवाद बाबू दीप नारायण सिंह वर्मा ने किया था यदि यह उपन्यास है तो इसे कई अंकों में प्रकाशित होना चाहिए था जिसकी जानकारी उपलब्ध नहीं हो पायी है।

हिन्दी में अंग्रेजी उपन्यासों के अनुवादों को देखते हुए "बाल कृष्ण भट्ट ने 'हिन्दी प्रदीप' में 'उपन्यास' (सन 1882) का विवेचन करते हुए लिखा है कि हम लोग जैसे और बातों में अंग्रेजी की नकल करते जाते हैं उपन्यास का लिखना भी उन्हीं के दृष्टान्त पर सीख रहे हैं।"<sup>37</sup> यह बात वास्तव में सत्य थी क्योंकि अंग्रेजों के कदमों

<sup>37</sup> जैन, निर्मला (संपादिका), *हिन्दी साहित्य का वृहद्इतिहास*, नयी दिल्ली, नागरी प्रचारिणी सभा, द्वादश भाग, 1984, पृ-14

पर चलना भारतीयों की मजबूरी तो थी ही लेकिन उनका साहित्यिक अनुसरण करने में भी हमने अपने कदम पीछे नहीं हटाये। इस बात की केवल सम्भावना ही नहीं है बल्कि इसका पूर्णतः विश्वास है कि उस समय के लेखक जिन्होंने हिन्दी में आरंभिक उपन्यास लिखे हैं, कहीं न कहीं अंग्रेजी में लिखे गए उपन्यासों से भी बहुत अधिक प्रभावित हुए थे। देखा जाए तो प्रेमचंदोत्तर काल से पहले और प्रेमचंद काल में जिन उपन्यासकारों को अनूदित उपन्यासों से प्रेरणा मिली होगी उसमें केवल बांग्ला के ही अनूदित उपन्यास कारण नहीं रहे थे, अंग्रेजी के यथार्थवादी उपन्यासों का भी उन पर अधिक प्रभाव देखने को मिलता है।

### संस्कृत से हिन्दी में अनूदित अनुवाद

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य और अंत के दशकों में विद्यासागर अत्यंत विशिष्ट व्यक्ति थे। उन्हें संस्कृत का गहरा ज्ञान था। उनमें प्रखर आलोचनात्मक विदग्धता भी थी। विद्यासागर की आरंभिक पुस्तकें फोर्ट विलियम कॉलेज की पाठ्यपुस्तकें थीं। उनकी पुस्तक 'बेतालविंशति' पूर्णतः संस्कृत पर आधारित नहीं थी बल्कि आंशिक रूप से हिन्दी अनुवाद थी। विद्यासागर ने सन 1869 में 'शेक्सपियर के कॉमेडी ऑफ़ एरर्स' का 'भ्रान्तिविलास' शीर्षक से रूपांतर किया। इतना ही नहीं उन्होंने 'महाभारत' का गद्यानुवाद आरम्भ किया, जो 'तत्वबोधिनी' पत्रिका में धारावाहिक रूप में प्रकाशित होता था। इसका पहला पर्व पूरा हो जाने के बाद उन्होंने इसका कार्यभार कालीप्रसन्न नामक व्यक्ति को सौंप दिया।

आरम्भ में संस्कृत कॉलेज के आरंभिक लेखकों में ताराशंकर बहुत प्रसिद्ध रहे थे, उन्होंने गद्य रोमांस 'कादम्बरी' का संक्षिप्त रूप में मुक्तानुवाद किया है। संस्कृत कॉलेज के अध्यापकों में एक नीलमणि बसक नाम के व्यक्ति भी थे, उन्होंने अंग्रेजी के 'पर्शियन टेल्स' का छन्दोबद्ध रूपांतर (सन 1834) में किया था। संस्कृत जानने वाले विद्वान् केवल संस्कृत से हिन्दी में ही अनुवाद नहीं करते थे अंग्रेजी पर भी



उनकी पकड़ अच्छी थी। बाद में बसक ने 'अरेबियन नाइट्स' (अंग्रेजी से) का अनुवाद बांग्ला गद्य में किया, जिसका पहला खंड सन 1840 में प्रकाशित हुआ था।

## यूरोपीय भाषाओं से हिंदी में अनूदिता उपन्यास

जहां एक ओर कुछ विद्वानों का यह मानना है कि हिन्दी उपन्यास का जन्म पाश्चात्य साहित्य की देन नहीं है बल्कि बांग्ला के उपन्यासों के अनुवाद का प्रभाव है, वहीं दूसरी ओर कुछ विद्वान ऐसे भी हैं कि जो यह मानते कि अंग्रेजी तथा उसके साथ अन्य यूरोपीय साहित्य का प्रभाव भी हिन्दी साहित्य पर देखने को मिलता है।

उस समय यूरोपीय भाषाओं में लिखे गए कुछ उपन्यास भारत में उपलब्ध थे जिनका अंग्रेजी अनुवाद पहले ही हो चुका था। इन्हीं अंग्रेजी उपन्यासों का अनुवाद और रूपांतरण हिन्दी में कुछ अनुवादकों ने किया है। जिनकी सूची इस प्रकार है -

पोन लिमबर्ग ब्राऊमर लिखित 'अखबर' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का अनुवाद रामकृष्ण वर्मा ने किया था। सन 1891 में भारत जीवन प्रेस काशी से प्रकाशित हुआ था। "यह उपन्यास सर्वप्रथम सन 1872 में होर्लेंड के हेग नामक नगर में डच भाषा में प्रकाशित हुआ था। सन 1877 में इसका अनुवाद लिपजिक से प्रकाशित हुआ। रामकृष्ण वर्मा ने अपना अनुवाद जर्मन अनुवाद के अंग्रेजी अनुवाद से प्रस्तुत किया है। यह एक स्वतंत्र अनुवाद या रूपांतर है।"<sup>38</sup> डच भाषा में लिखे जाने के बाद जब यह अंग्रेजी से हिंदी में अनूदित हुआ तब भी इस उपन्यास ने अपनी जीवंतता नहीं खोयी। इस उपन्यास की एक विशेषता यह है कि इसमें अकबर के शासनकाल का वर्णन बहुत ही सजीव ढंग से किया गया है। यह वर्णन रामकृष्ण वर्मा की अनुवाद कला का प्रदर्शन करता है।

अन्य यूरोपीय उपन्यास जो अंग्रेजी में लिखे गये थे, राधा विनोद ने इटली की एक लोकप्रिय लेखिका ग्रेजिया डेलेडा के एक मर्मस्पर्शी उपन्यास 'मदर' का अनुवाद

<sup>38</sup> राय, प्रो. गोपाल, हिन्दी उपन्यास कोश, पटना, ग्रन्थ निकेतन, प्रथम संस्करण, 1968, पृ-318

'बेचारी माँ' के नाम से सन 1898 में किया था। सुप्रसिद्ध फ्रेंच उपन्यासकार विक्टर ह्यूगो की सुप्रसिद्ध रचना 'ला मिसरेबल' का अनुवाद दुर्गा प्रसाद खत्री ने 'अभागे का भाग्य' (1914-15) नाम से किया था। इसी रचना का अनुवाद 'अभागा' नाम से रामानायारण प्रसाद ने भी किया था। एक अन्य फ्रेंच लेखक जून वर्ल का उपन्यास 'अराउंड द वर्ल्ड इन ऐट्टी डेज' का अनुवाद मेदू लाल शर्मा ने 'पृथ्वी परिक्रमा' नाम से सन 1809 में किया था। पाल डी कॉक का मनोरंजक सामाजिक उपन्यास 'वैम्पायर' का रूपांतर जैनेन्द्र किशोर ने 'चुड़ैल' नाम से 1910 में किया। इस अनुवाद के विषय में यह माना गया है कि यह इसका यदि अनुकरण कर दिया जाता तो यह उतना अच्छा प्रतीत नहीं होता। लेकिन क्योंकि अनुवादक ने इसका स्वतंत्र अनुवाद किया है तो यह अनुवाद मूल के समान है।

## तमिल से हिंदी में अनूदित उपन्यास

ईसाई धर्म प्रचारकों ने तमिल और मलयालम भाषा में अपने धर्म प्रचार का कार्य बहुत पहले से आरंभ कर दिया था। साथ ही तमिल और मलयालम में बाइबिल के अनुवाद करने आरम्भ कर दिए थे। "इटैलियन जेसुईस्ट पादरी बेशची, जिन्होंने 40 वर्षों तक दक्षिण भारत में रहने के बाद 1747 ई. में मरा, तमिल व्याकरण की रचना की थी। उसने तमिल में कुछ गद्य कथाएँ भी लिखी थीं।"<sup>39</sup> इसके बाद 1783 में 'पिल्लिग्रम्स प्रोग्रस' का तमिल अनुवाद प्रकाशित हुआ। तमिल में ये जो प्रकाशन हुआ था उसके बाद से और उन्नीसवीं शताब्दी के बीच में गद्य लेखन का कोई प्रयास या प्रमाण उपलब्ध नहीं हुआ है।

<sup>39</sup> सत्यकाम, *भारतीय उपन्यास की दिशायें*, नयी दिल्ली, सामयिक प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2012, पृ - 15

## गुजराती से हिंदी में अनूदित उपन्यास

गुजराती भाषा में भी बाकी भाषाओं के समान ही धार्मिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, वीरगाथा आदि विषयों से सम्बंधित उपन्यास लिखे गये। गुजराती से हिन्दी में अनूदित होने वाला पहला उपन्यास 'कुलीन अने मुद्रा' है। इसके लेखक जहाँगीर शाहजी आरदेशरजी ताल्यार खां हैं, इसका रूपांतर 'मुद्रकालीन' नाम से सन 1892 में किशन लाल ने किया था। यह गुजराती से हिन्दी में किया गया पहला अनुवाद था। इसमें मुस्लिम शासन की पृष्ठभूमि को आधार बनाकर हिन्दू शौर्य का चित्रण किया गया है। यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इसका अनुवाद बम्बई के लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस से प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास में मैसूर राज्य में हिन्दुओं पर किये गए अत्याचारों का वर्णन है।

गुजराती के दो महान उपन्यासकार रहे हैं, इच्छाराम सूर्यराम देसाई और गोवर्धनराम माधवराम इनके क्रमशः दो उपन्यास हैं 'कलाविलास' सन 1894 और 'सरस्वती चन्द्र' सन 1916 में प्रकाशित हुए हैं। वल्लभ दास वर्मा ने 'सरस्वती चन्द्र' का अनुवाद हिन्दी में किया है। यह एक महाकाव्यात्मक उपन्यास है, जिसमें सामंती वातावरण में प्रेमभाव का विकास दिखाया गया है और अविस्मरणीय पात्रों का चित्रण किया गया है। इसके अलावा 'लीवे जान नो दोस्त' का रूपांतरण लज्जाराम शर्मा ने 'कपटी मित्र' के नाम से सन 1900 में किया है। छगनलाल नारायण भाई ने 'गृहलक्ष्मी' की रचना की थी। यह रचना किसी राय परिवार को आधार बनाकर की गयी है। सन 1917 में इसका प्रकाशन अनुवाद के रूप में इसी नाम से मोतीलाल नागर ने किया था।

अंग्रेजी और गुजराती में अनूदित कुछ उपन्यासों की सूची इस प्रकार है -  
'अकबर' सन 1891, 'मुद्रकालीन' सन 1892, 'मरहठा सरदार' और 'रौशन आरा' का अनुवाद सन 1898 में हुआ था।

## उर्दू से हिंदी में अनूदित उपन्यास

सन 1837 में उर्दू भाषा को अदालती भाषा घोषित कर दिया गया। यही कारण था कि आम जनता हिन्दू या मुस्लिम या किसी अन्य धर्म से सम्बंधित लोग उर्दू को अनिवार्य रूप से पढ़ने लगे थे। उर्दू के साहित्य को भी इस परिस्थिति से बल मिला। “उर्दू की पहली मौलिक गद्य कथा मौलाना वजही लिखित ‘सबरस’ (सन 1635-1636) मानी जाती है।”<sup>40</sup> उर्दू गद्य कथा के विकास की दृष्टि से सबसे महत्त्वपूर्ण कथा ‘फसाना ए अजायब’ है, इसके लेखक रजब अली बेग सरूर हैं। इस गद्य कथा के कई खंड सन 1838-1842 की अवधि में प्रकाशित हुए थे। कथाओं के बाद उर्दू भाषा में उपन्यास भी रचे जाने लगे थे।

उर्दू भाषा में उपन्यास की उत्पत्ति हिन्दी से पहले हुई थी देवकीनन्दन खत्री ने सरशार की एक रचना ‘बिछुड़ी दुल्हन’ का रूपांतरण सन 1904 में ‘खोयी दुल्हन’ के नाम से किया था। बाद में जगन्नाथ प्रसाद ने सन 1903 में प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यासकार अब्दुल हलीम ‘शरर’ लिखित ‘बद्रुन्निस्सा की मुसीबत’ का अनुवाद इसी नाम से किया था। एक अज्ञात लेखक द्वारा रचित उपन्यास ‘एक अजीब किस्सा’ सन 1907 में महाराजदीन दीक्षित के द्वारा अनूदित किया गया है। पारसी रंगमंच की विशेषताएं लेकर भी कुछ उपन्यास लिखे गए थे, जिनमें नाटकीयता के तत्व अधिक देखने को मिलते हैं। इस प्रकार के नाटकीय उपन्यासों का अनुवाद रामलाल वर्मा ने किया था। इनके कुछ अनूदित उपन्यास हैं, ‘खूनी औरत’ सन 1859 (1916 वि. स.) ‘गुलबदन’ सन 1908 और ‘अदल-बदल’ सन 1916 आदि। रामलाल वर्मा ने ही हिन्दी पाठकों को रंगमंचीय उपन्यासों से परिचित करवाया।

## ओड़िया से हिंदी में अनूदित उपन्यास

<sup>40</sup> सत्यकाम, *भारतीय उपन्यास की दिशायें*, नयी दिल्ली, सामयिक प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2012, पृ - 19

ओड़िया से हिन्दी भाषा में अनूदित होने वाले उपन्यास हालांकि संख्या में कम हैं परन्तु फिर भी विशिष्ट रहे हैं। कामता प्रसाद गुरु ने 'मालती ओ भाग्यवती' का रूपांतर 'पार्वती और यशोदा' नाम से सन 1911 में किया था। यह उपन्यास स्त्रियों के लिए उपयोगी था। फ़कीर मोहन सेनापति ने अपने उपन्यास 'लच्छमा' जो सन 1915 में लिखा गया था में नवाब अलीवर्दो खां के साथ मराठों का संघर्ष दिखाया गया है। इसका अनुवाद पंडित मुरलीधर ने किया था। एक और उपन्यास 'समाज कंटक' है इसमें भांजे के प्रति मामा के मार्मिक दुर्व्यवहार की मार्मिक कथा है इसका अनुवाद मुकुटधर पाण्डेय ने किया है।

हिन्दी साहित्य में एक काल आया जब लोग अनुवादक अधिक बनना चाहते थे। यह था द्विवेदी काल जब हिन्दी साहित्य में अनुवादकों की बाढ़-सी आ गयी थी। इस काल में इस बात का कोई फरक नहीं पड़ता था कि रचना कैसी है और अनुवाद कैसे किया जा रहा है। लोग भले-बुरे के विचार को पीछे छोड़ केवल अनुवादक बनना चाहते थे। हिन्दी के खाली पड़े भंडार को हिन्दीतर साहित्य की उत्कृष्ट रचनाओं से भरने का उद्देश्य अब शायद पीछे छूट गया था। आचार्य द्विवेदी ने इस प्रवृत्ति का उपहास करते हुए एक कविता ही लिख डाली है जिसकी कुछ पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं -

“भला बुरा छपवाए सिद्ध, धन न सही नाम ही प्रसिद्ध”<sup>41</sup>

उस समय के अनुवादकों को इस बात की कोई चिंता नहीं थी कि वे किस प्रकार की कृति का अनुवाद कर रहे हैं, वे सिर्फ अनुवाद करना चाहते थे। धन का कोई लोभ भी उनके मन में नहीं था, केवल अनुवादकों के वर्ग में अपना नाम शामिल करना ही उनका उद्देश्य था। इस ओर उनके विचार ही नहीं जाते थे कि हिन्दी भाषा में भी उन्हें कुछ अच्छी कृतियों की रचना करनी चाहिए।

<sup>41</sup> बद्दीदास, हिन्दी उपन्यास पृष्ठभूमिकी परम्परा, कानपुर: ग्रंथम, 1966 पृ- 437

संसार की किसी भी भाषा का साहित्य तब तक पूर्ण नहीं माना जाता है जब तक कि वह अन्य देशों के साहित्य के संपर्क में न आ जाए। अंग्रेजी और भारतीय साहित्य की परम्पराएं एक-दूसरे के विपरीत थीं परन्तु फिर भी एक-दूसरे के संपर्क में आयीं। ऐसे में पुनर्जागरण काल में दो विजातीय भाषाओं के बीच हिन्दी की अनूदित साहित्यिक प्रणाली का विकास हुआ। अनेक महान विद्वान सुकरात, प्लेटो, रूसो, साथ ही कुछ विचारक जैसे कार्ल मार्क्स, ह्यूगो सभी को आज संसार केवल इसीलिए जानता है क्योंकि अनुवाद ने इन्हें इनकी वास्तविक पहचान दी है। यदि एक सीमित दायरे में रचना सिमट जाए तो उसकी महत्ता का ज्ञान नहीं हो पाता है। भारत में संस्कृत में लिखी गयी अनेक रचनायें हैं जिनमें ब्राह्मण धर्म, बौद्धधर्म और जैन धर्म से जुड़ी विशेष जानकारी है उनसे विश्व के लोग परिचित हो पाए हैं और उनका अनुशीलन कर पा रहे हैं उसका कारण अनुवाद ही है। यह सब केवल अनुशीलन और अनुवाद से ही नहीं आधुनिकीकरण से भी यह संभव हो पाया है। मीनाक्षी मुखर्जी का कहना है - "व्यक्तिवाद की इस अवधारणा को औद्योगिकीकरण ने संभव बनाया जो नयी सामाजिक गतिशीलता से भी सम्बंधित है। इसने व्यक्ति को अपनी सुरक्षित पारंपरिक उपयुक्त जगह से हटाया है और उसे यह एहसास दिलाया है कि प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता उसके सामाजिक समूह से बाहर निकल कर भी होती है। जो उसे दूसरों से अलग बनाती है।"<sup>42</sup>

मानव के प्रयासों के बिना अनुवाद और साहित्य की बहुमुखी दिशाओं का होना संभव नहीं था। आधुनिक काल में जितने भी उपन्यास लिखे गए उनसे यह पता चलता है कि उनमें कहीं न कहीं समाज सुधार, परिवार एवं चरित्र का कल्याण, धर्मान्धता, नवीन शिक्षा की ओर समाज का आकर्षण, वैज्ञानिकता और मानवीय दृष्टिकोण के बीच संघर्ष आदि को लेखकों ने अपने लेखन का विषय बनाया है।

<sup>42</sup> Mukehrjee, Meenakshi (Ed.), Early Novels in India, New Delhi, Sahitya Akademi, 2002, P- 04

परिवार और समाज उस समय के लेखकों के केंद्र में रहते थे। साथ ही कुछ उपन्यासकार ऐसे भी हुए जिन्होंने इतिहास को अपने लेखन में समेटने का प्रयास किया। प्रत्येक अनुवादक अपने इन्हीं प्रयासों के कारण भारत के अनुवाद साहित्य को समृद्ध बना पाया है। यही प्रयास तत्कालीन समय में भी दृष्टिगत है।





## दूसरा अध्याय

### आलोच्य उपन्यासों का परिचय

- लंदन रहस्य
- जोसफ विल्मोट



## दूसरा अध्याय

### आलोच्य उपन्यासों का परिचय

18वीं सदी में लन्दन के शहरी समाज में हो रही व्यापक हलचलों को आधार बनाकर रेनॉल्ड्स ने अपने उपन्यासों की रचना शुरू की। दरअसल 19वीं सदी का लंदन उस समय तमाम तरह के आंदोलनों, बदलावों और जीवन में परिष्करण के दौर से गुजर रहा था जब रेनोल्ड्स ने उपन्यास की दुनिया में कदम रखा उस दौर में तमाम उपन्यासकार जैसे चार्ल्स डिक्केन्स और थैकरे जैसे महानतम लेखकों से भी ज्यादा रेनॉल्ड्स को पढ़ा गया था। उनका बेहद लोकप्रिय उपन्यास *'मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन'* (1848-56) लोगों के बीच बहुत अधिक चर्चित रहा है। इसी क्रम में उनके अनेक उपन्यास आए जो अंग्रेजी के गॉथिक उपन्यासों के बहुत नजदीक रहे हैं। अपने उपन्यासों के माध्यम से रेनॉल्ड्स ने समकालीन लन्दन के समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं और जीवनशैलियों को बारीकी से उकेरने का प्रयास किया है।

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उनके उपन्यास लन्दन के शहरी जीवन से प्रभावित हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में अराजकतावादी समाज को स्थान दिया है। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में उनके अपने अनुभव और उनकी अपनी परिस्थितियां ही उनके लेखन के दृष्टिकोण का निर्माण करती नज़र आयी हैं। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में चित्रित समाज उनके स्वयं के अनुभव की गहराई और गंभीर सोच का प्रदर्शन करता है। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में अठारहवीं शताब्दी का अंत और उन्नीसवीं शताब्दी का लन्दन तथा उसके आसपास के इलाकों का वर्णन मिलता है। लन्दन और उसके आसपास के शहरों में रहने वाले लोगों के निजी जीवन का सच लेखक ने अपने नज़रिये से पाठकों तक पहुंचाया है। वहां रहने वाले लोगों की जीवन शैली का बारीकी से उन्होंने वर्णन किया है। उनके उपन्यासों को सबसे अधिक

इसीलिए पढ़ा गया क्योंकि वे मानव संवेदनाओं की गहराई तक पहुंच रहे थे। जिसमें शासक वर्ग के लिए कमजोर वर्ग का गुस्सा भरा था। इस प्रकार प्रताड़ित वर्ग की पीड़ा को समझने वाला एक लेखक भी उन्हें मिल गया था। डेलजियल उनके पाठकों के विचारों पर टिप्पणी करते हुए कहती हैं कि मैं प्रश्न करती हूँ कि “क्या हो यदि आधुनिक पाठकों को समाज में व्याप्त अभिजात वर्ग के खिलाफ तर्क-वितर्क करने वाला कोई लेखक मिल जाए? किसी समाज विशेष की वास्तविकता यह होती है कि कोई देश एक बड़ी संख्या में विलासी जीवन जीने वाले और अकर्मण्य या निष्क्रिय लोगों का भार नहीं उठा सकता है। ऐसे ही कुछ लोगों की ओर रेनॉल्ड्स के उपन्यास इशारा करते हैं। हालाँकि उनके उपन्यासों का उद्देश्य यही था कि वे समाज में बदलाव देखना चाहते थे। वे जानते थे कि लोगों के दुःख का कारण क्या है? उनका विचार था कि एक तंत्र विशेष पर कभी उंगली नहीं उठानी चाहिए है बल्कि व्यक्ति विशेष के आचरण पर ही सदा उंगली उठनी चाहिए। क्योंकि एक पूरे तंत्र में दोष कभी भी नहीं हो सकता है।”<sup>43</sup> उनके उपन्यासों में इसी तंत्र पर जगह-जगह प्रश्न चिन्ह लगे हुए मिलते हैं। रेनॉल्ड्स को इतना अधिक पढ़े जाने का सबसे महत्त्वपूर्ण कारण यही था। परत दर परत रेनॉल्ड्स इंग्लैंड के तानाशाही रुख को उघाड़ते (uncovered) हुए नज़र आते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि ये अपने समय के सबसे अधिक विवादास्पद और सबसे अधिक पढ़े जाने वाले लेखक रहे हैं। उनकी इसी लोकतंत्रवादी सोच ने ही उन्हें लोगों के बीच महत्त्वपूर्ण बना दिया।

उन्नीसवीं सदी में रेनॉल्ड्स के उपन्यासों की बिक्री की संख्या को देखकर उनकी लोकप्रियता का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है। अभिजात वर्ग के विरुद्ध निम्नवर्ग के मस्तिष्क में नए प्रश्न उत्पन्न कर देना ही एक विवादित लेखक को सबसे अधिक पढ़े जाने का कारण था। उनके कुछ लिखे हुए उपन्यासों में से

<sup>43</sup> Dalziel, Margaret, *Popular Fiction 100 Years Ago*, London, Cohen and West, 1957, P -142

‘लन्दन रहस्य’ और ‘जोसफ विल्मोट’ नामक उपन्यासों का आलोच्य परिचय इस अध्याय में दिया गया है। मेरा शोध-कार्य उपर्युक्त उद्धृत उपन्यासों के हिंदी अनुवादों पर आधारित है।

पहला उपन्यास है ‘लन्दन रहस्य’ जो *Mysteries of the Court of London* (1849-1856) का हिंदी अनुवाद है। सदानंद शुक्ल ने इसका अनुवाद किया है। साप्ताहिक पैनी श्रृंखला में अंकों में प्रकाशित होता था। बाद में यही पैनी श्रृंखलाएं ‘मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन’ के नाम से खण्डों में प्रकाशित होने लगीं। ‘लन्दन रहस्य’ में जॉर्ज चतुर्थ और उनके बेटे प्रिंस ऑफ़ वेल्स (प्रिंस रीजेंट) को केंद्र में रखकर अनेक कथाओं और उपकथाओं को जोड़ा गया है। अभिजात वर्ग के परिवारों और निम्न तथा मध्यम वर्ग के परिवारों का जीवन लन्दन शहर में कैसा था, इसका वर्णन इस उपन्यास में है। इनके लेखन में रहस्य, षड्यंत्र, स्त्री-पुरुष के नैतिक-अनैतिक सम्बन्ध, नौकरों का संभ्रांत परिवार के लोगों के साथ सम्बन्ध, प्रेम का चित्रण, भौतिकतावादी दृष्टिकोण, जॉर्ज तृतीय और चतुर्थ का शासनकाल जिसका राजनीतिक हिस्सा कम और उनका नीजी जीवन ज्यादा दिखता है, इन सब का उल्लेख इस उपन्यास में मिलता है। इसके अलावा भूत-प्रेत, रहस्य, स्वप्न, हत्या, तिलिस्म, वैश्यावृत्ति, नारी शोषण, नारी स्वावलंबन, उसके सम्मान का प्रश्न, पुरुष नपुंसकता, अवैध संतान, कामुकता, विवाहेतर सम्बन्ध, चोर-डाकू, लुटेरे, पुलिस आदि विषयों को उन्होंने अपने उपन्यासों में स्थान दिया है। लन्दन के संभ्रांत परिवारों से लेकर हाशिये के समाज तक को उन्होंने अपने कथानक का आधार बनाया है। इन सभी घटनाओं का वर्णन रेनॉल्ड्स ने अपने उपन्यास में बारीकी से किया है। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों की एक अन्य विशेषता यह है कि उन्होंने अपने उपन्यासों में मानवीय मूल्यों का विखंडन और राजनीतिक शक्तियों का दुरुपयोग, प्रेम में धोखा, अपने फायदे के लिए विवाह और सामाजिक अन्तर आदि कथाओं को अपने उपन्यासों के

पात्रों से जोड़ दिया है। लन्दन के राजमहलों से लेकर गंदे मोहल्लों में रहने वाले लोगों का व्यवहार, उनकी जीवन शैली और उनसे जुड़ी संवेदनाओं तक का वर्णन 'लंदन रहस्य' में मिलता है।

दूसरा उपन्यास 'जोसफ विल्मोट' है जो 'Joseph Wilmot or The Memoirs of the Man Servant' (1849) का हिंदी अनुवाद है। 'जोसफ विल्मोट' एक ऐसे लड़के की आत्मकथा है जो जीवनभर एक नौकर की तरह अलग-अलग स्थानों पर कार्य करता है। हर स्थान पर उसे अलग तरह के लोग मिलते हैं। इसी बीच उसे दो बार प्रेम भी होता है। इस प्रेम के कारण वह अपनी नौकरी को वह छोड़ देता है और लेकिन अंत में अपने अच्छे व्यवहार और ईमानदारी के कारण उसे एक ऊँचा पद भी मिल जाता है। जिससे वह अपने जीवन के सारे सुख भोग सकता है। इस उपन्यास में भी लेखक ने मानवीय संवेदनाओं, प्रेम, अविश्वास, प्रेम संबंधों में उलझन और नौकर और मालिक के बीच की विषमता तथा जोसेफ की विवशता और कहीं-कहीं पर अपराध को कथानक का आधार बनाया है।

रेनॉल्ड्स ने अपने उपन्यासों का केन्द्र लंदन और उसके आस पास के शहरों और गाँवों को बनाया है। दोनों ही उपन्यासों में लेखक ने मानव जीवन की विडम्बनाओं को है। अपने जीवन के समक्ष आने वाली परिस्थितियों के सामने हर एक पात्र विविध नज़र आता है। रेनॉल्ड्स के उपन्यास इंग्लैंड के जिस आधुनिक दौर पर लिखे गये हैं, उस समय वह संसार के अन्य सभी देशों से आगे था। लन्दन में सुख-सुविधाओं की कोई कमी नहीं थी और दुनिया की नज़र में वह संसार का सबसे संपन्न देश भी था। लेखक ने दिखाया है कि ऐसे देश में रहने वाले लोगों के जीवन में भी सुख नहीं है। दोनों ही उपन्यासों का हर एक पात्र अपने नीजी जीवन में इतना अधिक व्यस्त है कि किसी अन्य में उसकी रुचि ही नहीं है।

'लन्दन रहस्य' और 'जोसफ विल्मोट' में जितनी भी कथाएँ जोड़ी गयी हैं वे सब एक केंद्र से जुड़ी हुई हैं 'लन्दन रहस्य' की कथाएं प्रिंस रीजेंट और 'जोसफ विल्मोट' की कथाएँ जोसफ से जुड़ी हुई हैं 'लन्दन रहस्य' की कथाएँ अनेक परिच्छेदों में विभक्त है। प्रत्येक परिच्छेद में शीर्षकों से सम्बंधित कहानियाँ लिखी हैं। यह एक वृहद् फलक पर लिखा हुआ उपन्यास है जिसमें समाज की सच्चाई है और लन्दन का वह दृश्य जो तत्कालीन समय के किसी भी लेखक के लेखन में नहीं मिलता है। इनके उपन्यासों में मानवीय जीवन की व्यापक झलकियाँ हैं। जिनमें पात्रों की संख्या बहुत अधिक है। सभी की कहानी एक-दूसरे में गुंथी हुई है।

## लन्दन रहस्य

रेनॉल्ड्स के इस उपन्यास में कामगार वर्ग एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इस कामगार मध्यम वर्ग से निम्न मध्यम वर्ग में आने वाला मेलमथ है। मेलमथ राजदरबार में काम करता था। जहां पर एक विषय पर होने वाली चर्चा में उसने अपना मत प्रकट कर दिया, उसके बाद उसे नौकरी से निकाल दिया गया। अपना मत प्रकट करने की केवल इतनी ही सजा उसे नहीं मिलती है पूरे लंदन में अब उसे नौकरी देने को कोई तैयार नहीं है। कारण यह नहीं है कि उनके पास काम नहीं है। कारण है कि देश का कानून जो आम नागरिकों को न्याय दिलाने के लिए बना है, वर्तमान अधिपति इंग्लैंड के राजा और भावी राजा प्रिंस ऑफ वेल्स के साथ मिला हुआ है। मेलमथ के माध्यम से लेखक ने शासक वर्ग के एक ऐसे रूप को दिखाया है जो न केवल उसे नौकरी से निकालता है अपितु उसके परिवार को भूखो मरने के लिए भी छोड़ देता है।

इस व्यवस्था का मारा हुआ मेलमथ अपनी आँखों के सामने ही अपने बीवी बच्चों को भूखा मरते देखता है। प्रिंस का एक बार किया हुआ निर्णय ही उसके आने वाले जीवन का निर्धारण कर देता है। रेनॉल्ड्स ने उसके परिवार के हृदय विदारक दृश्य का वर्णन इस प्रकार किया है : “लन्दन की हाड़ कंपा देने वाली ठंड में वह अपनी एक बीवी के साथ रहता है। लन्दन में भयानक हृदय विदारक ठण्ड है जिसमें उसके घर में लकड़ी जलाने के लिए भी नहीं है। उसका मुंह सुन्दर होने पर भी अब जर्द और सूखा हुआ दिखायी देता है। उसका मुख देखने से साफ़ मालूम होता है कि दारुण मानसिक यंत्रणा और विषम क्लेश उसे सता रहा है। उसकी बीवी अपनी एक दो वर्षीय लड़की को एक कोने में गोद में लेकर बैठी है। अन्न के अभाव में और गरीबी के कारण उसके स्तन का दूध सूख गया है। फिर भी उसका वह अबोध बालक उसे चूसने में लगा हुआ है। उसका मुख भूख के अभाव में सूख चुका है शरीर केवल हड्डी मात्र बच गया। गाल पूरी तरह से पिचक चुके हैं शरीर में खून भी नजर नहीं आता है। उसको देखकर ऐसा लगता था मानो स्वयं दरिद्रता ने स्त्री का रूप धारण कर लिया हो। उसका एक आठ वर्ष का लड़का है जिसकी देह पर पहनने के लिए कपड़ा भी नहीं है। मैले कुचैले, फटे-पुराने कपड़े से आधी देह ढांके, भूख से व्याकुल, उदास मुंह और कातर-दृष्टि से वह बालक टुकुर-टुकुर माँ का मुंह देख रहा है। इसके अलावा एक और तेरह वर्ष का लड़का अपनी सात वर्ष की बहन को धैर्य दे रहा है। पेट की ज्वाला से वह रो रही है।”<sup>44</sup> यह दयनीय दृश्य मेलमथ के घर की आर्थिक स्थिति का वर्णन कर रहा है।

मेलमथ अपने घर का सारा सामान बेच कर अपने परिवार का पेट भरता है। जब वह धन भी खत्म हो जाता है तो मेलमथ की आर्थिक स्थिति बहुत अधिक खराब हो जाती है, अपराध करने के सिवा उसके पास कोई ओर रास्ता नहीं बचता है।

<sup>44</sup> लन्दन रहस्य, खंड -2, पृ-381



पिछले कुछ महीनों से मेलमथ अपने मकान का किराया तक नहीं चुका पाया था। परिस्थितियों ने भी उसकी गरीबी का मजाक उड़ाने के लिये एक मौका न छोड़ा था। उसकी मकान मालकिन किराया मांगने के लिए आती है, कहती है कि “तुमने अपने हाथों से अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारी है। सभा में बुद्धिमानी दिखाने गए थे। टोपी वाले हमेशा तुम्हारे ऊपर संदेह करते हैं”<sup>45</sup> मकान मालकिन भी उसे किराया न चुका पाने की स्थिति में आधी रात में ही घर छोड़ने के लिए कह देती है। अपनी इस समस्या से बाहर निकलने का कोई उपाय उसे नज़र नहीं आया। इस पर वह लूटमार करने के लिए निकल पड़ता है। जाने से पहले वह अपने बच्चों को बोल रहा था कि “यदि मैं तुम लोगों कि प्राण रक्षा की चेष्टा न कर सकूँ, तो मैं मनुष्य कहे जाने योग्य नहीं हूँ लोग मुझे कुत्ता कहकर पुकारेंगे”<sup>46</sup>

लूटमार करने का ये फैसला कर जब मेलमथ एक आदमी को आधी रात में सड़क पर देखता है तो उसको धक्का मार उसका सामान और पर्स लेकर भाग जाता है। इस घटना के बीच रोज़ फॉटर भी उस आदमी मीगल्स के साथ थी जो धक्का खाकर गिर जाता है। होश में आने पर रोज़ फॉटर स्वयं उसके परिवार की सहायता करना चाहती है। लेकिन अपने और अपने बच्चों की क्षुधा शांत करने की इस उलझन में वह रोज़ को वापस उसी मुसीबत में ढकेल देता है जिससे वह उसे बचा कर लाया था। घटनावश जब मीगल्स और रोज़ सड़क पर बेहोश पड़े थे तब ब्रेस वहां से गुज़र रही थी। मीगल्स को होश आने के बाद जब वह देखता है कि रोज़ वहां नहीं है। ब्रेस उसे उठा कर ले जाती है और एक बार फिर रोज़ फॉटर उसी गड्ढे में जा गिरती है जिससे वह बचकर निकली थी। ब्रेस वैश्यावृत्ति के लिए उसे मजबूर करती है। जब उसे एक बार से उठाकर ले जाती है। होश आते ही वह अपने आप को एक कमरे में बंद

---

<sup>45</sup> लन्दन रहस्य, खंड -2, पृ - 389

<sup>46</sup> लन्दन रहस्य, खंड-2, पृ - 397

पाती है। मेलमथ के सर पर खून सवार था वह किसी कीमत पर अपने परिवार का पेट भरना चाहता था, लेकिन इस अपराध करने के जुनून ने उसे एक बड़े अपराध का भागी बना दिया। परन्तु इस एक अपराध की आड़ में वह इससे भी भारी अपराध कर बैठता है। जिस अमानवीयता का सहारा ले वह अपने परिवार का पेट भरता है, वही रोज़ फॉटर को उस अमानुषिक मुसीबत में डाल देती है। मेलमथ की इस हालत पर रेनॉल्ड्स के उपन्यासों के सन्दर्भ में ऐसी घटनाएं आने पर 'गेस्टीओप्रोबिनहुड की एक टिप्पणी उद्धृत की जा सकती है, उनके विचार में उस समय: "वंचित लोगों के पास हिंसा, अपराध और स्वेच्छाचार से भ्रष्टता फैलाने जैसे कुछ ही उपाय अपना उद्धार करने के लिए उपलब्ध थे।"<sup>47</sup> होश आने पर वह आदमी मेलमथ के घर जाता है और चोरी का सामान देख पाठक के सामने आधी कहानी स्पष्ट हो जाती है।

रोज़ फॉटर का असली नाम कामिल मार्टिन है। वह भी उसी मध्यवर्गीय समाज का हिस्सा है, जिसका हिस्सा कभी मेलमथ हुआ करता था। उसके जीवन की भी यही विडम्बना थी कि उसके माता-पिता गुज़र जाने के बाद वह अपना जीवनयापन करने के लिए सहारा ढूँढ रही थी। जीविका चलाने के लिए वह नौकरी करना चाहती थी। उसे ब्रेस के यहाँ नौकरी भी मिल जाती है, इस नौकरी से वह सम्मान का जीवन जीना चाहती है। लेकिन वह नहीं जानती कि मिसेस ब्रेस अमीर लोगों के लिए महंगे और नए कपड़े बनाने की आड़ में अपने ही घर में वैश्यावृत्ति का धंधा चलाती है। रोज़ के जैसी न जाने कितनी ही लड़कियों के सम्मान का सौदा ब्रेस अपने अमीर ग्राहकों से कर चुकी थी। रोज़ नहीं चाहती थी कि वह किसी भी पुरुष की ब्याहता बनकर अपना जीवन चलाये। वह अपने अस्तित्व की रक्षा करने के लिए समाज के कामकाजी वर्ग का हिस्सा बन पेट भरना चाहती थी। लेकिन ब्रेस उसकी खूबसूरती के आधार पर ही उसको नौकरी पर रखती है। एक स्त्री होने पर भी ब्रेस किसी लड़की की मजबूरी

<sup>47</sup>[https://gesteofrobinhood.com/2016/11/30/society-gets-the-criminals-it-deserves-the-resurrection-man-from-g-w-m-reynolds-the-mysteries-of-london-1844-45/#\\_edn7](https://gesteofrobinhood.com/2016/11/30/society-gets-the-criminals-it-deserves-the-resurrection-man-from-g-w-m-reynolds-the-mysteries-of-london-1844-45/#_edn7)

नहीं समझती है। प्रिंस और फ्लोरिमल जैसे कुछ अभिजात वर्ग के लोग उसके बंधे-बंधाये ग्राहक थे, जिनके लिए वह हमेशा नई लड़कियों की तलाश में रहती थी। प्रिंस के कहने पर वह फ्लोरिमल को अपने घर बुलाती है और रोज़ के बारे में जानकारी देती है। लेकिन फ्लोरिमल के मन में पौलिन के लिए प्रेम भरा था। वह नहीं चाहता कि वह पौलिन को धोखा दे।

लेखक ने अपने उपन्यासों में मध्यवर्ग की लड़कियों का जीवन सरल नहीं दिखाया है। वे हर जगह अपना जीवन व्यतीत करने के लिए संघर्ष करती ही नज़र आती हैं। रोज़ फॉटर, कैरोलाइन वाल्टर्स, जोसफ विल्मोट की आनाबेल आदि।

फ्लोरिमल को भी रोज़ की ओर खींचने का एक ही उद्देश्य था, प्रिंस नहीं चाहते थे कि ओक्टाविया की बहन से उसका विवाह हो। क्योंकि उन्हें डर था कि यदि फ्लोरिमल पौलिन से विवाह कर लेगा तो वह ओक्टाविया के गर्भवती होने की खबर जान जाएगा। ओक्टाविया और प्रिंस के बीच शारीरिक सम्बन्ध थे। ये सम्बन्ध भी प्रिंस ने उसे विवाह का वादा करके बनाये थे। लेकिन बाद में वह उससे विवाह करने से मना कर देते हैं। प्रिंस का कहना है कि राजपरिवार के नियमों के अनुसार मुझे किसी राजपरिवार में ही विवाह करना होगा। ओक्टाविया जब उससे मिलने जाती है तो उनके आलिंगन से अलग होते हुए वह कहती है “हाय ! मिटटी तो औरतों की ही बर्बाद होती है पहले तो उन्हीं का कलेजा फटता है। जितना कष्ट, अपमान, बदनामी, कलंक – सब उन्हीं को तो सहना पड़ता है ?”<sup>48</sup> प्रेम में धोखा खाई हुई ओक्टाविया यह बर्दाश्त नहीं कर पाती। ये सब सुनने के बाद उसका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। वह अपने बस में नहीं रहती। जीवन भर के लिए उसकी बहन पौलिन उसकी जिम्मेदारी उठाती है। उसकी जन्मी संतान को भी वह पालती है।

---

<sup>48</sup> लन्दन रहस्य, खंड -2, पृ - 369

लेखक ने ओक्टाविया के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया है कि उनके उपन्यास की स्त्रियाँ स्वच्छन्द हैं। प्रेमी से बिना विवाह किये सम्बन्ध बना लेती हैं। बाद में जब वही प्रेमी उन्हें धोखा देता है तो वह उसे सहन नहीं कर पाती हैं। ओक्टाविया का वक्तव्य उसके पछतावे को प्रदर्शित करता है। प्रेमी से विछोह की इस पीड़ा को वह बर्दाश्त नहीं कर पाती है और मानसिक संतुलन खो बैठती है। लेखक ने स्त्रियों का गहरा अध्ययन किया है। अपनी पारखी नज़रों से स्त्रियों के अंतर्मन तक पहुँचने के कला उनमें है।

न जाने कितनी ही स्त्रियों के साथ प्रिंस सम्बन्ध बना चुके हैं इसमें उनकी कोई सीमा नहीं थी। अब उनके इसी शौक का शिकार रोज़ फॉटर भी होने वाली थी। लेकिन अपनी इज्जत को बचाने के लिए रोज़ फॉटर भागने में कामयाब हो जाती है। रोज़ फॉटर अपनी आर्थिक स्थितियों के सामने मजबूर अवश्य थी लेकिन वह अपने सम्मान के लिए लड़ना नहीं छोड़ती है। अपनी इज्जत को बचाने के लिए वह अंत तक लड़ती है। मेलमथ के ही लूटमार और चोरी करने के इस कदम ने उसे वापस ब्रेस के हाथों में फंसा दिया। इससे पहले भी वह ब्रेस के हाथों से बचकर भाग चुकी थी।

लड़कियों का सौदा करने के लिए ब्रेस किसी भी सीमा तक जा सकती है। वह निर्दयी अनाथ और बेसहारा लड़कियों को वैश्यावृत्ति के धंधे में फंसाती है। उनके लाख बार गुज़ारिश करने पर भी वह किसी तरह उनकी एक नहीं सुनती है। रोज़ फॉटर भी तीन दिन एक कमरे में बंद रही वह भी प्रिंस के उसी शक्तिशाली वर्चस्व का परिणाम होने वाली थी जिसका अब तक बहुत सी लड़कियां हो चुकी थीं। रोज़ को बंद करने का उद्देश्य प्रिंस का इंतज़ार करना था। लेकिन प्रिंस के सामने रोज़ हार नहीं मानती है और भागने में कामयाब रहती है।

“आखिर तुम जवाब देने के लिए मुझे लाचार करते हो। सब स्त्रियों को तुम कुलटा समझते हो, इसी से तुम्हारी बातों का जवाब देती हूँ। तुम क्या समझते हो कि बड़े-बड़े घरों की पदवीधारिणी स्त्रियों को जिस तरह फुसलाकर तुमने उनका सतीत्व नष्ट कर डाला है, उसी तरह दीन-हीन सती-साध्वी रमणियां भी तुम्हारे लोभ में पड़ जायेंगी? तुम क्या ख्याल करते हो कि डचेस, मौरिशियोनेस आदि जिस तरह तुम्हारी मधुर हंसी देखने के लिए अपना तनमन तुम पर न्यौछावर कर देती हैं उसी तरह दीन हीन धर्म की स्त्रियाँ भी करेंगी? तुम्हारी समझ में स्त्रियों का सतीत्व मोम का खिलौना है, जो राजपद की गर्मी से तुरंत ही गल जाता है, इसी से तुम सब स्त्रियों को एक-सा समझते हो। नहीं प्रिंस ऑफ वेल्स ऐसा नहीं है इसमें सोलह आना तुम्हारी भूल है। मैं हजार बार लाख बार कहती हूँ कि अंग्रेज़ औरतों में धर्म है ब्रिटेनवासियों को अपनी इज्जत आबरू का ख्याल है पर आलीशान मकान में रहने वाली और पसरकर गाड़ी में सैर करने वाली औरतों में तुम्हें सतीत्व नहीं मिल सकता। यह अपूर्व रत्न मध्यश्रेणी के लोगों और शिल्प जीवियों के घरों में ही मिल सकता है। उन्हीं घरों की रमणियों के शिर पवित्रता का चिन्ह स्वरूप सफ़ेद गुलाब के फूलों का मुकुट शोभा पा सकता है।”<sup>49</sup> इतना सब कुछ सुनने पर भी प्रिंस पर उसकी बातों का कोई असर नहीं होता है। लेखक ने यह भी दिखाने का प्रयास किया है कि डचेस और मौरिशियोनेस जैसी स्त्रियाँ ही हैं जो सतीत्व धर्म को कुछ नहीं समझती हैं। साथ ही प्रिंस की वासना का सम्बन्ध न तो गरीब घर की लड़कियों से है और न ही अमीर लड़कियों से। व्यक्ति विशेष की सुन्दरता से ही उनका सम्बन्ध है।

प्रिंस की इसी मानसिकता पर टिप्पणी करते हुए डेलजियल ने रेनॉल्ड्स की एक टिप्पणी उद्धृत की है वे कहती हैं कि - “रेनॉल्ड्स का भी मानना है कि अभिजात वर्ग के लोग नैतिकता के विरुद्ध अपनी निरंकुशता का प्रयोग किसी विशेष

<sup>49</sup> लन्दन रहस्य, खंड -2, पृ-609

वर्ग को छोड़कर व्यक्ति विशेष पर करते थे। वे कभी इस बात का समर्थन नहीं करते थे कि सामाजिक व्यवस्था में किया गया एक क्रांतिकारी परिवर्तन एक महान सुधार का मार्ग प्रशस्त करेगा।<sup>50</sup> रोज़ के शब्द इस बात की ओर इशारा करते हैं कि वह प्रिंस की मानसिकता में परिवर्तन करना चाहती है। उपर्युक्त अंश के अनुसार डेलजियल का भी यही कहना है कि लेखक केवल परिस्थितियों को सामने रखकर चलते हैं। समाज के प्रति जिस प्रकार का बदलाव लेखक चाहते हैं उसकी मांग रोज़ के शब्दों में झलकती है। लेकिन फिर भी लेखक का मानना है कि ऐसे किसी भी संघर्ष से समाज में सुधार नहीं आने वाला है। इस सारी घटना के बीच भी जब प्रिंस नहीं मानते हैं तो वह अपनी रक्षा के लिए छत पर भाग जाती है। रेनॉल्ड्स ने रोज़ फॉटर के माध्यम से मध्यवर्ग की उन औरतों को दिखाया है जो अपने सम्मान को ही सब कुछ समझती हैं। स्त्री मनोविज्ञान को समझते हुए ही लेखक रोज़ की मनोदशा का चित्रण कर पाए हैं।

मीगल्स और मेलमथ को रोज़ का लिखा हुआ नोट मिलता है, उस नोट से ही उन्हें पता चलता है कि वह ब्रेस के मकान में बंद थी। वे उसे बचाने की पूरी कोशिश करते हैं। कुछ पुलिस वालों को ब्रेस के मकान में लेकर जाते हैं। लेकिन पुलिस वाले प्रिंस को देखकर ही पीछे हट गये। पुलिस वाले उन दोनों को ही पकड़ कर ले आते हैं। प्रिंस की ऐसी नीच और घटिया हरकत के लिए पुलिस वाले उसका सारा इल्जाम मेलमथ और मीगल्स पर लगा देते हैं। अपने ही देश के भावी राजा के ऊपर पुलिस वाले किसी स्त्री के सम्मान को हानि पहुँचाने का दोष नहीं लगा सकते थे। देश की सारी कानूनन शक्तियाँ भी मिलकर प्रिंस का कुछ नहीं बिगाड़ सकती थीं। जिसमें देश के सिपाही से लेकर न्यायालय के न्यायाधीश तक सब लिप्त थे। इस तरह दोनों को ही प्रिंस पर हमला करने के झूठे मुकद्दमें में फंसा दिया जाता है। होम ऑफिस की

<sup>50</sup> Dalziel, Margaret, *Popular Fiction 100 Years Ago*, London, Cohen and West, 1957, P - 142

कार्रवाई में दोनों ही लोगों को चुपचाप खड़े रहना पड़ता है। क्योंकि न तो जज और न ही वकील उन्हें कुछ बोलने देते हैं।

एक समय पर मीगल्स प्रिंस का बहुत अच्छा दोस्त था पर ऐसा अपराध करने के बाद मीगल्स भी प्रिंस को किसी दोस्ती की याद नहीं दिलाना चाहता। उसे प्रिंस से यही अपेक्षा थी। होम ऑफिस के लोग भी प्रिंस का ही साथ देते हैं और झूठी कहानियाँ बनाकर जज को सुना देते हैं। विडंबना यह थी कि दोनों में से एक भी किसी ऊँचे घराने से सम्बन्ध नहीं रखता था। इसीलिए इस मुसीबत में फंसना तो निर्धारित था। वहां मौजूद सभी लोग ये जानते थे कि प्रिंस के खिलाफ कुछ भी काम करने का मतलब था अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना है। मुकद्दमे की सुनवाई में मौजूद सभी को लोग जानते थे कि फैसला प्रिंस के ही पक्ष में जायेगा। लेकिन मीगल्स और मेलमथ ने अपनी कोशिश नहीं छोड़ी। वे जानते थे कि देश का आइन कानून कितना ही सख्त क्यों न हो लेकिन वह अपने भावी राजा के खिलाफ कभी नहीं हो सकता है।

लंदन रहस्य में मध्यवर्ग अपने साथ होने वाले अन्याय के खिलाफ पूरी शक्ति से लड़ता है। उसे सफलता मिले या न मिले पर वह कमजोर नहीं पड़ता है। इसका एक उदाहरण यह है कि जब पुलिस वाले झूठी गवाही दे रहे थे उस वक्त मेलमथ का गुस्सा भी बढ़ जाता है वह बोल पड़ता है, “गवाह को यह खयाल रखना चाहिए, कि वह हलफ लेकर बयान कर रहा है।”<sup>51</sup> लेकिन उलटा दोनों ही प्रकाश्य सभा जैसी अन्य कई धार्मिक सभाओं की आड़ में अनेक अनैतिक काम किये जाने के जुर्म में फंसा दिए जाते हैं। अंत में उन्हें देश निकाला दे दिया जाता है। लेखक ने मध्यवर्ग को पीड़ित और प्रताड़ित दिखाया है। संसार के एक संपन्न देश का राजा ही अपने देश की स्त्रियों के सम्मान को लूटता है और उसका विरोध किये जाने लोगों को देश निकाला दे देता है। प्रिंस की इन हरकतों से सभा में उपस्थित हर व्यक्ति परिचित था। लेकिन

<sup>51</sup>शुक्ल, सदानंद, लन्दनरहस्य, आर एल वर्मन प्रकाशन, कलकत्ता, पृ - 438

प्रिंस के खिलाफ जाने की हिम्मत उनमें न थी। जब एक देश का राजा ही इतने अन्याय करेगा तो उस देश का उद्धार कैसे संभव है? एक तरफ तो लेखक यह कहते हैं कि यह इंग्लैंड संसार का सर्वशक्तिमान देश है। लेकिन दूसरी ही ओर उसके अधिपति की पतितावस्था को दिखाने में भी कोई कमी नहीं छोड़ते हैं।

एक स्त्री के प्रति प्रिंस की वासना इतनी अधिक बढ़ गयी कि उसने अपनी शक्तियों का दुरुपयोग तक कर डाला। इंग्लैंड के भावी राजा प्रिंस ऑफ वेल्स जिसके आश्रय में सुखी रहने के लिए जनता इंतज़ार करती है। वह राजा बनने से पहले ही अपनी जनता के साथ अन्याय करने लगा है। मीगल्स और मेलमथ दोनों को ही नार्थ अमेरिका से उल्टीच रवाना कर दिया जाता है। उन्हें अपने स्वजनों से मिलने भी नहीं दिया जाता केवल उनको चिट्ठी लिखने की ही अनुमति दी जाती है। परिस्थितियों के आगे मजबूर मीगल्स उसे समझाते हुए चलता है: “हम लोग विद्रोह की इच्छा से राजा के विरुद्ध षड्यंत्र करने के अपराध में गिरफ्तार किये गये हैं पर प्रजा वत्सल गवर्नमेंट ने हम लोगों के अपराध के अनुसार भारी सजा न दे, दयापूर्वक यह आज्ञा दी है कि हम लोग बिना विलम्ब किये उत्तर अमेरिका चले जाएँ और इस ज़िन्दगी में फिर कभी लौट कर न आवें।”<sup>52</sup> लन्दन के होम ऑफिस के फैसले यदि प्रिंस के खिलाफ भी हैं तो भी सज़ा बेगुनाह को ही मिलती है।

मेलमथ की बीवी गरीबी और भूख से परेशान होकर अपने बच्चों का पेट भरने के लिए सड़कों पर भीख मांगने के लिए निकल पड़ती है। एक दिन इसी गरीबी की हालत में उसकी मृत्यु हो जाती है लेखक आख्यानात्मक शैली में फिर कहते हैं: “वह दुःख - वह कष्ट वर्णन करने योग्य नहीं है। इसी तरह सैंकड़ों वर्षों से कुछ धनी और कुछ हृदयहीन मनुष्यों के सुख स्वच्छंदता के लिए करोड़ों निरीह दरिद्र मनुष्य असहनीय कष्ट भोग करते हैं। पर उनके मुंह की तरफ कोई भी नहीं देखता। मेहनत

<sup>52</sup> लन्दन रहस्य, खंड -2, पृ- 546



करते-करते अगणित व्यक्ति सूख कर काँटा हो गए। जिस दिन काम नहीं मिलता उस दिन, उन्हें सोलहों दंड एकादशी हो जाती। हाय! इन दरिद्रों के कष्ट की सीमा नहीं है।”<sup>53</sup>

जब मेलमथ को पता चलता है कि उसकी बीवी की मृत्यु हो चुकी है। आधीरात में वह शहर के अलग-अलग कब्रिस्तानों में जाता है और कब्रें खोदने लगता है। लंदन के लोग उसे नरपिशाच का नाम दे देते हैं। अपनी बीवी की लाश ढूँढने के लिए न जाने वह शहर की कितनी ही कब्रें खोद डालता है। लेकिन अगले बहुत दिनों तक शहर वालों के लिए यह रहस्य ही बना रहता है कि कब्रें खोद कौन रहा है? अगले कई परिछेदों तक पाठक के मन में यही प्रश्न उठता है कि यह नरपिशाच कौन है? अंततः मेलमथ पकड़ा जाता है और उसे पागलखाने में डाल दिया जाता है। उसकी इस शोचनीय अवस्था के जिम्मेदार प्रिंस ऑफ वेल्स और लन्दन का समाज थे। उसकी इस हालत के सन्दर्भ में हिमलफर्ब की टिप्पणी इस प्रकार है “समाज ने उसे ऐसा बनने पर मजबूर किया था। कब्रें खोदने वाला आदमी एक मध्यम वर्ग से सम्बन्ध रखता था। उसकी किस्मत बचपन से ही उसके साथ नहीं थी। उसके पास अपराध करने के सिवा और कोई विकल्प न बचा था। हिमलफर्ब रेनॉल्ड्स को ‘nihilistic political radicalism’ कहते हैं: वे अक्सर कामगार वर्ग की दुर्दशा का वर्णन करते हैं। लेकिन ये सब कुछ कहने के बाद भी हिमलफर्ब कहते हैं कि अगर कोई रेनॉल्ड्स के मिस्ट्रीज का परीक्षण कर तो जो के अकेला सन्देश जो वे समाज को देते हैं वह उसमें नज़र आएगा कि एक गरीब आदमी को एक न्यायालय, न्यायाधीश और न्यायपीठ के सामने नीचा दिखाया जाये उसे दोषी साबित किया जाए, तभी उसे सबके सामने निकम्मा घोषित किया जाएगा। अराजकतावादी समाज हमेशा गरीब वर्ग को अपने सामने दोषी और घृणास्पद दिखाने के लिए पीछे पड़ा रहता है। विधानमंडल में बैठा

<sup>53</sup> लन्दन रहस्य, खंड -2, पृ- 357

हर एक व्यक्ति यह समझता है कि यदि वह गरीबों के लिए अत्यंत कठोर कानून नहीं बनाएगा तो गरीब वर्ग उनसे ऊपर उठा जाएगा और उच्च वर्ग से भी अधिक क्रूर अत्याचार करने लगेगा। इतना ही नहीं अमीर लोग गरीबों पर किसी भी प्रकार के बदनामी बहरे आरोप लगाने के लिए तैयार हैं।<sup>54</sup> लेखक ने लन्दन में मध्यवर्ग और दरिद्र लोगों का यथार्थ चित्रण किया है। लंदन में उच्च, मध्यम और निम्न वर्ग के बीच जो विषमताएं समाज में मौजूद हैं उन पर लेखक अपनी सूक्ष्म दृष्टि रखते हैं। बड़े-बड़े शहरों की लम्बी चौड़ी सड़कों से लेकर छोटी-छोटी गलियों में और सुविशाल बागों में जो लोग घूमते-फिरते हैं उनके सामने इन भूखे दरिद्रों की संख्या इतनी अधिक है कि बराबरी का तो सवाल ही नहीं उठता है।

इंग्लैंड जैसे विकसित देश के लोग अठारहवीं शताब्दी में भी अत्यंत उन्नत समझे जाते थे। लेकिन इस देश में भी गरीबों और मध्यवर्गीय परिवारों को कमी न थी। लाखों मनुष्य असहनीय जीवन व्यतीत कर रहे थे। बेरोजगारी के अभाव में चोरी और हत्या जैसे अपराधों में लोग लिप्त थे। संभ्रांत परिवारों से भरे इस देश में दरिद्रता का मूल केवल यही है कि सम्पत्ति केवल कुछ ही लोगों के हाथों में सिमट कर रह गयी थी। देश के सारे सुख साधन केवल कुछ ही लोगों के हाथ में सीमित थे। हजारों आदमी भूख से मर रहे थे। देश के हजारों आदमियों का भूख से मरना भी जॉर्ज तृतीय की नजरों में चुभता नहीं था।

होम ऑफिस के फैसले ने मेलमथ को अन्दर तक तोड़ कर रख देता है। उसकी नौकरी छूट जाना, परिवार का भूखों मरना, किसी नयी जगह पर फिर से नौकरी न मिलना सब कुछ सहन कर लेता है। लेकिन अपने परिवार से अलग रहने का विचार ही उसे पागल बना डालता है। मीगल्स की समझायी हुई कोई बात उसे समझ नहीं आ रही है। जहाज में बैठते ही वह वहां से भाग निकलता है। जब तक वह अपने घर

<sup>54</sup> [https://gesteofrobinhood.com/2016/11/30/society-gets-the-criminals-it-deserves-the-resurrection-man-from-g-w-m-reynolds-the-mysteries-of-london-1844-45/#\\_edn7](https://gesteofrobinhood.com/2016/11/30/society-gets-the-criminals-it-deserves-the-resurrection-man-from-g-w-m-reynolds-the-mysteries-of-london-1844-45/#_edn7)

पहुँचता है तब तक उसकी स्त्री अपने बच्चों के साथ वह घर छोड़ चुकी होती है। आगे चलकर यही आदमी लंदन के सभी कब्रिस्तानों की कब्र खोद डालता है। उसे ही नरपिशाच का नाम दे दिया जाता है।

एक दृष्टा की तरह लेखक सब कुछ देखता चला जा रहा है। उसी तरह उसका पाठक भी। लेखक कहते हैं: “हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर ! यह दुर्दशा कब तक बनी रहेगी। कब तक करोड़ों आदमी थोड़े से विलासी मनुष्यों की गुलामी करते रहेंगे? हे जगदीश्वर! तुम्हारा भयानक वज्र कब तक विश्राम करेगा। कब तक यह दुराचार जारी रहेगा? क्या उत्पीड़कों की इच्छा पर ही संसार व्यापार चलता रहेगा।”<sup>55</sup> लन्दन के मध्यवर्गीय जीवन में विद्रूपताएं ही भरी पड़ी हैं। मानवीय भावनाओं का तो कहीं पर नाम ही नहीं है। गरीबों की इस सामाजिक और आर्थिक अवस्था पर लेखक केवल टिप्पणी ही नहीं करते हैं। पाठक को सोचने को भी बाध्य कर देते हैं। लन्दन रहस्य में ऐसी ही अनेक विसंगतियां हैं।

होम ऑफिस के फैसले ने मेलमथ को अन्दर तक तोड़ कर रख देता है। उसकी नौकरी छूट जाना, परिवार का भूखों मरना, किसी नयी जगह पर फिर से नौकरी न मिलना सब कुछ सहन कर लेता है। लेकिन अपने परिवार से अलग रहने का विचार ही उसे पागल बना डालता है। मीगल्स की समझायी हुई कोई बात उसे समझ नहीं आ रही है। जहाज में बैठते ही वह वहां से भाग निकलता है। जब तक वह अपने घर पहुँचता है तब तक उसकी स्त्री अपने बच्चों के साथ वह घर छोड़ चुकी होती है। आगे चलकर यही आदमी लंदन के सभी कब्रिस्तानों की कब्र खोद डालता है। उसे ही नरपिशाच का नाम दे दिया जाता है।

इन सब घटनाओं के बहाने लेखक यही दिखाना चाहते हैं कि यह घटना किसी बंधी हुई व्यवस्था का परिणाम नहीं है बल्कि समाज के भीतर से पैदा हुई

<sup>55</sup> लन्दन रहस्य, खंड 3, पृ -358

परिस्थितियों की ही उपज है। यह केवल प्रिंस ऑफ वेल्स की शक्तियों का दुरुपयोग है। अपने दोषों को छुपाने के लिए वह कुछ भी कर सकता है। एक स्त्री के मान-सम्मान को बचानेके लिए जब दो आम आदमी प्रयास करते हैं तो उनकी गवाही सुनने के स्थान पर होम ऑफिस में बैठे हुए लोगउनके साथ अन्याय करते हैं। उन्हें देश निकाला ही दे दिया जाता है। प्रिंस के दोहरे अस्तित्व से जहाँ तक उसका दोस्त मीगल्स परिचित है उतना ही सारा होम ऑफिस भी। प्रिंस ऑफ वेल्स का भावी राजा होना मतलब वहां की जनता काविश होकर अन्याय के चक्र में पिसना निर्धारित था। खासकर से यह उन औरतों और लड़कियों के साथ अवश्य होता है जो किसी गरीब या मध्यवर्गीय समाज से सम्बंधित हैं।

कैरोलाइन वाल्टर्स भी ब्रेस के इसी व्यवसाय का शिकार थी। वह मिस वाल्टर्स को फ्लोरिमल के झूठे प्रेम जाल में फंसाती है। जिसके बाद वह गर्भवती हो जाती है। उसके गर्भवती होने के बाद वह उसे लिंडली के मकान में ले जाती है। लिंडली अपने मकान में अनैतिक रूप से गर्भवती हुई स्त्रियों को रखती थी। वहां जाकर वह एक मरी हुई संतान को जन्म देती है। उस संतान को वह थेम्स नदी में फेंक देती है। इसके बाद वह लिंडली और ब्रेस दोनों को मारने का निश्चय करती है। वह कुछ भी करके फ्लोरिमल से बदला लेना चाहती है। उसे फंसाने के लिए एक जाल बिछाती है।

कुछ समय बाद भेस बदलकर वह फ्लोरिमल के घर जाती है नौकरी मांगती है। लड़के का भेस बनाकर वह अपना नाम राव बताती है। धीरे-धीरे वह फ्लोरिमल को अपने विश्वास में ले लेती है। वह नौकर राव से अपने मन की बातें कहने लगते हैं। इसी बीच एक रहस्यमयी औरत फ्लोरिमल के जीवन में आती है। उसे शारीरिक रूप से अपनी ओर खींचती है। यह रहस्यमयी औरत फ्लोरिमल को केवल रात के अँधेरे में ही मिलती है। फ्लोरिमल भी उसके प्रेमपाश में आ जाता है विवाह करने को तैयार हो जाता है। वह औरत अंत तक अपना नाम फ्लोरिमल को नहीं बताती है। लेखक ने

एय्यारी के तत्वों का समावेश करते हुए एक पात्र को अनेक पात्रों की भूमिका निभाते हुए दिखाया है। ऐसी ही पात्र कैरोलाइन वाल्टर्स है जो राव और रहस्यमयी औरत दोनों की भूमिका निभाती है। राव के आने के बाद फ्लोरिमल के घर से उसकी सम्पत्ति के कुछ जरूरी कागजात चोरी हो जाते हैं। जो औरत रात के अँधेरे में उसे मिलती है वह उसे वे सब कागजात वापस दिलाने का वादा करती है। साथ ही उसके सामने विवाह की शर्त भी रख देती है।

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में नौकरों की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है। वे अपने मालिकों के सारे रहस्य जानते हैं। रेनॉल्ड्स ने ऐसे बहुत से पात्र दिखाए हैं जो मानसिक रूप से कमजोर हैं। ऐसे में जब भी वे कोई निर्णय लेने की हालत में नहीं होते तो नौकर से ही सलाह मांगते हैं। फ्लोरिमल भी अपने नौकर पर अंधविश्वास करते हैं। पौलिन के विवाह की झूठी खबर भी राव ही उन्हें देता है। जिसे सुनकर वे कमजोर पड़ जाते हैं और उस औरत से विवाह करने के लिए तैयार हो जाते हैं जिसे वे जानते तक नहीं। मानव प्रकृति ही ऐसी है जब उसे एक जगह से धोखा मिलता है तो वह टूट जाता है। जैसे ही उसे पता चलता है कि कोई और उसे प्रेम करने लगा है या सहारा देने लगा है। तो वह उस ओर झुकता चला जाता है। पौलिन के प्रति उसका प्रेम बार-बार उसे पीछे खींचता है। इन सब के बाद उसका मन बोझिल होने लगता है। राव उसकी इसी कमजोरी का फायदा उठाता है।

संदूक से कपड़े निकालते हुए उसको चिन्ता में चूर देख कर उसे अपने विश्वास में लेने के लिए वह पूछता है, जिससे अभी शादी होने वाली है, उसे सरकार दिल से चाहते हैं, तो? फ्लोरिमल उत्तर में हाँ कहता है। चाहता क्यों नहीं पर तौ भी कभी-कभी मन में ऐसा होता है, कि विवाह यदि पौलिन के साथ होता। पौलिन की जो खबर तुमने सुनायी है वह सच तो है न राव।<sup>56</sup>

<sup>56</sup> लन्दन रहस्य, खंड -4, पृ- 159

फ्लोरिमल एक समझदार युवा पुरुष है जो दुनिया की समझ रखता है। लेकिन फिर भी उसे लगता है कि वह अपने प्रेम में हार गए हैं। इंग्लैंड के बड़े घरानों के लोग अपने नौकरों से अक्सर सलाह लिया करते थे। कुछ तो बिना किसी प्रश्न के ही उनकी बात मान लिया करते थे। अपने मालिकों की गुप्त से गुप्त बातें भी उन्हें मालूम होती थीं। अपने नौकरों पर इतना विश्वास करने पर भी अक्सर उनका नकारात्मक रूप ही सामने आता था। रेनॉल्ड्स ने अनेक जगह पर अपने नौकरों को नकारात्मक रूप में ही दिखाया है। वे नौकर जिनका सीधा अपने मालिक से लेन देन होता था वे अक्सर अपने मालिक को किसी भी स्थिति में कमज़ोर जानकर उलट वार करते दिखते हैं। एक ओर तो लेखक अपने पात्रों को इतना अधिक आत्मनिर्भर दिखाते हैं कि वे अपने जीवन के कोई भी फैसले स्वयं ले सकते हैं। दूसरी ओर उनके नौकर ही उनके मन पर राज़ करते हैं। परिणामस्वरूप वे स्वयं से निर्णय लेने की क्षमता ही नहीं रखते हैं।

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में आयी एक स्त्री फर्नेडा है। जो एक स्वावलंबी स्त्री का परिचय है। ऐसी स्त्रियाँ जब भी अपने किसी अधिकार के लिए आगे बढ़ना चाहती हैं या प्रेम में खाए धोखे का बदला लेना चाहती हैं, तो बिना किसी की परवाह किये आगे बढ़ जाती हैं। फर्नेडा अर्थर ईटन से प्रेम करती थी। इसी प्रेम के चलते वह गर्भवती हो जाती है। अर्थर उसे पहले ही विवाह करने से मना कर चुके थे। परंतु जब अर्थर को फर्नेडा के गर्भवती होने की खबर मिलती है तो वह उसे विवाह के लिए मनाते हैं, परन्तु वह नहीं मानती। मातृत्व जैसी कोई भावना उसके अन्दर नहीं है। उसे अपने बच्चे से कोई लगाव नहीं है। वह तो अपने प्रेमी से मिले धोखे के बदले की आग में झुलसती रहती है। इतना ही नहीं अपनी आँखों के सामने वह अपने जिन्दा जन्मे नवजात बच्चे को भी थेम्स नदी में फिंकवा देती है।

प्रेम में धोखा मिलने पर फर्नेडा संवेदनाशून्य हो जाती है। चाचा-चाची से मिलने वाले प्रेम का भी उस पर कोई फरक नहीं पड़ता है। उसके मन में केवल प्रतिशोध की अग्नि जल रही है। उसका स्वाभिमान और उसकी ईर्ष्या उस पर इस तरह हावी हो चुकी थी कि उसे सही और गलत के बीच का फरक नजर आना बंद हो जाता है। अपनी नफरत के आवेग के आगे वह किसी को भी नहीं आने देती है। जीवन को सार्थक बनाने का केवल एक ही उपाय उसे नजर आ रहा था 'बदला'। उसे अर्थर की दया स्वीकार्य नहीं थी। उसके लिए विवाह बंधन का भी कोई महत्व नहीं बचा। कुछ दिनों के बाद वह क्लेरेंडन को अपने चाचा से पीयर की पदवी दिलाने का वादा कर विवाह कर लेती है। वह उम्र में उससे पच्चीस वर्ष बड़ा है। क्लेरेंडन भी लालची था इसीलिए उससे विवाह कर लेता है। विवाह करने के बाद वह अर्थर और लिंडली की हत्या का मंतव्य उसे बताती है।

वह अर्थर के नौकर डडली को अपने साथ मिला लेती है। डडली रोज़ाना अर्थर को पानी में थोड़ा-थोड़ा जहर मिलाकर देता है। धीरे-धीरे वह जहर उनके शरीर में कमजोरी के लक्षण पैदा करने लगा। अर्थर दिन रात बीमार रहने लगे। एक दिन फर्नेडा और डडली को अर्थर रंगे हाथों पकड़ लेते हैं। इतना सब होने पर भी वह उन दोनों को माफ़ करना चाहते हैं। डडली के शर्मसार होने तथा माफ़ी न मांगने पर भी अर्थर उसकी मानसिक हालत को समझ जाते हैं। जब वे देखते हैं कि डडली को अपने किये का पछतावा है तो वे उसे सुधरने का मौका देना चाहते हैं। उसके डर को देखकर कहते भी हैं कि "हम लोगों के यहाँ अपराधी को दंड देने के लिए बहुत से कानून हैं पर उन्हें अच्छी राह पर लाने का कोई कारण नहीं देख पड़ता। जिस कानून में सिर्फ़ राजा की ही जीत है, उसे और उसके बनाने वाले को सिवाए स्वार्थी और निष्ठुर के क्या कहा जा सकता है।"<sup>57</sup> उनका ऐसा बर्ताव देखकर भी फर्नेडा उसकी एक नहीं

<sup>57</sup> लन्दन रहस्य, खंड -2, पृ-384

सुनती है और भीख में मिली इस माफ़ी को भी ठुकरा देती है। अर्थर को होने वाली असीम पीड़ा का एहसास भी उसे है लेकिन फिर भी वह अर्थर की एक नहीं सुनती और कहती भी है -“वह तो कभी होने का नहीं। अर्थर ईटन तुम ऋषि बन गए पर मैं इस पाखंड को भूलने वाली नहीं हूँ। मैं तुम्हें विषम घृणा दृष्टि से देखती हूँ और अब वह घृणा और बढ़ गयी है।”<sup>58</sup>

एक रात अर्थर और डडली, लिंडली के मकान के पास एक भूमि पर नव निर्माण किये जाने वाली जमीन को देखने गए थे। उसी रात रोज़ फॉटर प्रिंस से बचकर भागी थी और उसी रात फर्नेडा, डडली और लिंडली की हत्या कर देती है। जिस समय खून हुआ खून हुआ की आवाज़ें आने लगीं उसी समय वह खुद को बचाने के लिए भागी जा रही थी। रोज़ फॉटर ने अर्थर की ही जमीन पर आधी रात में सहारा लिया था। डडली की हत्या करने के जुर्म में न सिर्फ़ रोज़ फॉटर बल्कि अर्थर को भी जेल की सजा हो जाती है। इस हत्या के इल्जाम में कैरलाइन वाल्टर्स को दोषी माने जाते हैं। लेखक के उपन्यासों में व्यक्ति की जान की कोई कीमत नहीं है। उपन्यास में स्त्री जिसे जननी और जीवनदायिनी माना जाता है वही लोगों की जान लेने पर उतारू है। अपनी हर भावना पर से उसका नियंत्रण खो जाता है। प्रेम में मिले धोखे का बदला लेने के लिए वह बिल्कुल पागल हो जाती है।

लेखक ने अपने उपन्यासों में अधिकतर अपराध करने वालों को कानून की कोई सज़ा नहीं मिलते नहीं दिखाया है। प्रकृति के पापऔर पुण्य का नियम उनके साथ चलता है। उनकी हत्या या चोरी के जुर्म में अक्सर निर्दोष लोग फंसा दिए जाते थे। इसी प्रकार रोज़ और अर्थर ईटन को डडली और लिंडली की हत्या के जुर्म में पुलिस पकड़ कर ले जाती है।

---

<sup>58</sup> लन्दन रहस्य, खंड -2, पृ- 612



*विक्टोरियन लिटरेचर* में कहा गया है कि “उन्नीसवीं सदी में लोगों को सनसनीखेज़ उपन्यास देखने को मिले। जिसके उन्नायक विल्कि कॉलिंग्स थे। रेनॉल्ड्स ने भी अपने उपन्यासों में ऐसे ही सनसनीखेज़ विषयों और शैली का प्रयोग किया लेकिन उसके साथ हिंसा और कामुकता को भी जोड़ दिया। उनके उपन्यासों में इस प्रकार के प्रयोगों ने उनके साहित्य को अत्यधिक लोकप्रिय बना दिया था। यह वह काल था जब नैतिक रूप से उलझे हुए समाज में यौन संबंधी निन्दात्मक आचरण फैला हुआ था। तब ‘रेनॉल्ड्स अखबार’ के सम्पादक रेनॉल्ड्स थे। जिसमें इस तरह के किस्से छपते थे कि उन्हें छापने की हिम्मत अन्य अखबार नहीं कर पाते थे। इससे यह भी समझा जा सकता है कि जैसी खबरें इनके अखबारों में छपती थीं वैसी ही कहानियाँ इनके उपन्यासों में भी छपने लगीं। मध्यवर्ग के बहुत्से पाठकों को इनके उपन्यासों में सनसनीखेज़ किस्से और उन विषयों पर लिखी रचनात्मक कहानियाँ देखने को मिलीं।”<sup>59</sup>

संभ्रांत वर्ग से सम्बन्ध रखने वाले अर्ल और एलिनर पति-पत्नी हैं। लेकिन दोनों के बीच पति-पत्नी जैसा कोई सम्बन्ध नहीं है। इसका सबसे बड़ा कारण है अर्ल की नपुंसकता है। अर्ल के पास संपत्ति की कोई कमी नहीं है। न ही उसके हृदय में उसकी पत्नी के लिए प्रेम ही कम था। माता-पिता के जबरदस्ती करने पर एलिनर ने विवाह कर लिया। “जिन महाप्रभुओं ने अति गर्हित उपाय से इंग्लैंड की सारी भूमि अपने नाम कर ली थी, डेस्बोरा के अर्ल उनमें से एक थे। हर्डफोर्डशायर और डर्बीशायर में उनकी बहुत भारी जमींदारी थी।”<sup>60</sup> लन्दन रहस्य में जो मुख्य पात्र हैं वे अधिकतर संभ्रांत परिवारों में ही जन्म लेते हैं। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों के मुख्य पात्र जैसे भी रहे हैं वे हमेशा अमीर ही दिखते हैं। लेकिन उनके जीवन में आने वाले सुखदुःख मध्यवर्ग

<sup>59</sup> <https://sites.google.com/site/alexisknoxgbb00/victorian-prostitution---a-study/prostitution-in-victorian-literature>

<sup>60</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -2, पृ- 448

के ही जैसे हैं। जीवन के सारे संघर्ष वैसे ही चलते हैं बस संपत्ति की उनके जीवन में कोई कमी नहीं होती है। “रेनॉल्ड्स ने अपने उपन्यासों में जिस प्रकार की कथावस्तु का लेखन किया है उसे ये अपनी इच्छा और किसी विशेष उद्देश्य से लिख रहे थे या नहीं यह अस्पष्ट है। शुरुआत में उन्होंने जो उपन्यास लिखे उसमें उनका झुकाव प्रजातांत्रिक सोच पर था। परन्तु उनके उपन्यासों के मुख्य पात्र हमेशा ही एक कुलीन वर्ग से सम्बन्ध रखने वाले और अच्छे समाज में जन्म लेने वाले होते थे जिन्हें समाज में उच्च स्थान प्राप्त होता था।”<sup>61</sup>

दोनों के विवाह को छः वर्ष बीत चुके हैं। लेकिन एलिनर समाज के प्रश्नों से बचने के लिए उनके साथ रहती है। विवाहिता स्त्री होने पर उसकी भी कुछ शारीरिक आवश्यकताएं हैं। अर्ल को अपनी पत्नी और गष्टेवस के बीच की प्रेम कहानी के बारे में मालूम है। वे जानते हैं कि एलिनर अपने प्रेमी को अपना आत्मसमर्पण कर चुकी है। एक दिन अर्ल दोनों के प्रेमालाप भरी बातें भी सुन लेते हैं। शायद ही कभी अर्ल की पत्नी ने उनसे कभी इतने कोमल और मृदुमंद स्वर में कोई बात कही थी। गष्टेवस को यह कहते हुए सुनना कि तुमने मेरे जीवन को सार्थक कर दिया है। अर्ल को असहनीय दुःख पहुंचाता है। अपनी पत्नी के गष्टेवस के साथ अनैतिक संबंधों के बारे में जानने के बाद भी वे चुप रहते हैं। परन्तु उसके शारीरिक सुख की आपूर्ति न हो पाने पर वे सोचते हैं कि शायद गष्टेवस ही उसके लिए ठीक है।

गष्टेवस का सच तब सामने आता है जब अर्ल को एक कलाकार अपनी कला का नमूना दिखाने आता है — “एलिनर यह वही नौजवान मुसौवर जिसे मैं चाहता हूँ एक तस्वीर दिखाने आया है। वह कहता है कि इस चित्र में विशेष विस्मय कारण है, जिसे वह बिना तस्वीर दिखाए कहना नहीं चाहता। क्या एक बार चित्र देखकर उसकी इच्छा पूरी न करोगी? शायद मिस्टर वेकफील्ड भी वहां चलकर उसकी इज्जत बढ़ा

<sup>61</sup> Dalziel, Margaret, *Popular Fiction 100 Years Ago*, London, Cohen and West, 1957, P - 141

सकते हैं ! इतना कहकर अर्ल रामसे को भेद भरी निगाह से देखने लगे।<sup>62</sup> चित्रकार का चित्र देखते ही एलिनर बेहोश हो जाती है। चित्र देखने पर उन्हें ज्ञात होता है कि गण्टेवस कोई इज्जतदार आदमी नहीं फांसी की सजा पाया हुआ रामसे है। रामसे के सच का दुःख उतना नहीं था जितना कि उन्हें एलिनर के व्यभिचारिणी होने का था। इस झूठ के लिए रामसे उससे बार-बार क्षमा मांगता है, पर अर्ल उसे माफ़ नहीं करना चाहता है। अर्ल कहते हैं - "रिहाई दे सकता हूँ, पर कृपा नहीं कर सकता। अगर तुम्हें छोड़ दूँ तो यह न समझना, कि तुम पर कृपा की गयी है; केवल अपनी बदनामी छिपाने के लिए तुम्हें रिहाई दे दूँगा। तुमने मुझे जो धोखा दिया है उसके लिए मैं उतना नाराज़ नहीं हूँ वैसी दगाबाजी माफ़ की जा सकती है। अगर तुम उस रात को घुटनों के बल बैठकर मुक्त कंठ से सच-सच कह देते कि मैं वही फांसी पर लटका हुआ फिलिप रामसे हूँ, मुझे शरण दीजिये रक्षा कीजिये तो शायद तुम्हारी बात नामंजूर न की जाती, पर तुमने बड़ा भयानक काण्ड कर डाला है; मेरी स्त्री के कलेजे में गहरी छुरी भोंक दी है .... इतना कहते-कहते बच्चों की तरह मुंह छिपा कर रोने लगे।"<sup>63</sup> अर्ल और एलिनर के रिश्ते के बीच शारीरिक प्रेम का कोई महत्त्व नहीं था। केवल भावनाओं के आधार पर ही अपना अस्तित्व बनाये हुए था।

रेनॉल्ड्स ने अर्ल के असीम प्रेम को दिखाया है। ऐसा प्रेम जो शायद ही उनके उपन्यासों का कोई पात्र अपनी प्रेमिका या पत्नी को करता होगा। डेल्लियल के अनुसार उस समय ऐसे बहुत से लेखक थे जो अपनी प्रेम कहानियों में दुखद अंत दिखाते थे। उस अंत के साथ ही पति-पत्नी या प्रेमी-प्रेमिका के रिश्ते समाप्त हो जाते थे। लेकिन रेनॉल्ड्स ने इसी से आगे बढ़कर एक नयी उम्मीद के साथ इनके रिश्ते की शुरुआत फिर से की है। इस सन्दर्भ में डेल्लियल अपनी *पोपुलर फिक्शन: 100*

<sup>62</sup> लन्दन रहस्य, खंड -2, पृ - 503

<sup>63</sup> वही, खंड 2, पृ - 509

इयर्स एगो में कहती हैं कि “लेखकों को कभी भी इस बात की अनुमति नहीं होती है कि वे कभी भी सच्चे प्रेम या सदाचार और खुशी या सदाचार के बीच किसी एक को अच्छा निर्धारित कर सकें। जब भी इन दोनों के बीच में विवाद रहता है प्रेम कभी सच्चा नहीं होता है। इस प्यार के प्यार में खुशियाँ आने से पहले से ही वे लुप्त हो जाती हैं। रेनॉल्ड्स ऐसे एकमात्र लेखक हैं जिन्होंने इससे विपरीत मत अपनाया है। हालाँकि रेनॉल्ड्स इस प्रकार के प्रेम को कम समय के लिए दिखाते हैं।”<sup>64</sup> ऐसा प्रेम उन्होंने लंदन रहस्य में अनेक लोगों के बीच दिखाया है।

इसी के विपरीत दूसरी ओर प्रिंस है जो अपनी चरित्रवान पत्नी पर ही चरित्रहीन होने का इल्ज़ाम लगाते हैं। प्रिंस रीजेंट का चरित्र अर्ल के बिल्कुल विपरीत है। जो अपनी पत्नी को दैहिक सुख तो नहीं दे सकता है, लेकिन फिर भी उसका प्रेम असीम है।

प्रिंस का विवाह ब्रंसविक की राजकुमारी कैरोलाइन के साथ तय हुआ था। प्रिंस की पत्नी का चयन महारानी चार्लोटी के मन के अनुसार नहीं किया गया था। जॉर्ज तृतीय ने इस रिश्ते को अपनी मर्जी से पक्का किया था। यही कारण था कि महारानी चार्लोटी उसे पसंद न करती थी। वह मिस जर्सी के साथ मिलकर उसके खिलाफ षड्यंत्र रचती है। विवाह के पूर्व जब राजकुमारी कैरोलाइन को खाने के कमरे में लाया जाता है तो मिसेस जर्सी, मिसेस हरकोर्ट और मिसेस एटेन उसे लेकर आती हैं। महल में आयी भावी बहु का स्वागत भी उन्होंने नहीं किया था। खाने के कमरे में सोफ़िया, अमीलिया और अगष्टा ने उस राजनंदिनी का स्वागत किया था। लेखक कहते हैं कि “महारानी तो स्वभाव से ही ममता शून्य थी”<sup>65</sup> माता के निष्ठुर व्यवहार से परिचित ये सभी बहनें आग्रहपूर्वक अपने भाई की भावी पत्नी कैरोलाइन का स्वागत करने लगीं। प्रिंस की जिससे शादी होने वाली थी वह उसे लेडी जर्सी के कहे

<sup>64</sup>Dalziel, Margaret, *Popular Fiction 100 Years Ago*, London, Cohen and West, 1957, P - 121

<sup>65</sup> लन्दन रहस्य, खंड -4, पृ - 7

अनुसार बिल्कुल भी सुन्दर नहीं जान पड़ी। लेडी जर्सी प्रिंस की उपपत्नियों में से एक थी। जो अपने पति के साथ उसी महल में रहती थी। उसके पति को प्रिंस के साथ उसके संबंधों के बारे में जानकारी थी, लेकिन प्रिंस से उसे अपने जीवन की सुख सुविधाओं का सहारा था और वह इसमें खुश भी था। कैरोलाइन के लिए प्रिंस यह भी मानते थे कि उसमें राजसी रीति रिवाजों की कमी है। इसका कारण भी यह था कि प्रिंस अपने जिन दास-दासियों को अपने पैरों की धूल तक न समझता था, उन्हीं अधीनस्थ रमणियों को राजकुमारी कैरोलाइन अपनी सखी समान मानती थीं।

विवाह पूर्व ही प्रिंस का हृदय अपनी भावी पत्नी के लिए संकीर्ण हो चुका था। साथ ही उसकी माँ का यह कहना कि उसे मैं तुम्हारे बराबर नहीं समझती हूँ उसके मन को और भी पक्का कर देता है। प्रिंस का मन केवल सुन्दर स्त्रियों की ओर ही आकर्षित होता था। उनके अनुसार राजकुमारी कैरोलाइन उतनी सुन्दर नहीं थीं। ब्रंसविक में विवाह करने का कारण केवल धन का लालच था। जिससे जॉर्ज तृतीय अपने खज़ाने को भर सकते थे। अपने उधारों को चुका सकते थे। ब्रंसविक के राजा शादी में इतना धन देने के लिए तैयार थे कि इंग्लैंड का खाली खजाना भर जाता। महाराज के इस रिश्ते को जोड़ने के पीछे का सच महारानी और रीजेंट दोनों ही जानते थे। कहीं न कहीं वे मिलने वाले धन से संतुष्ट भी थे। महारानी के हाथ से प्रिंस की सत्ता न छूट जाए इसके लिए वह उसे उसकी भावी पत्नी के खिलाफ भड़काती भी है। महारानी कहती है “इस सम्बन्ध में न करने के लिए मैंने उन्हें बहुत समझाया बुझाया, बहुत आरजूमिन्नत की यहाँ तक की बहुत डराया धमकाया भी, पर उन्होंने मेरी एक भी न सुनी जिस बात से डरती थी वही बात हुई। कैरोलाइन किसी तरह तुम्हारे लायक नहीं है। इस विवाह में तुम्हें सुख न मिलेगा।”<sup>66</sup> अपनी माँ से यह सुनकर प्रिंस अपने कानों पर विश्वास नहीं कर पा रहे थे। साथ ही महारानी कहती भी

<sup>66</sup> लन्दन रहस्य, खंड -4, पृ- 9

हैं कि मैं प्रिंसेस कैरलाइन से नफरत करती हूँ। प्रिंस की श्रद्धा अपनी माँ पर से उठ जाती है।

जैसोलीन की कहानी भी रानी कैरलाइन के सन्दर्भ में रेनॉल्ड्स ने जोड़ी है। एक राजभक्त और एक अत्यंत स्वाभिमानी पुरुष है। अपनी रानी के मान-सम्मान की रक्षा के लिए वह अपनी जान तक से खेलने के लिए तैयार है। नारी के प्रति वह सम्मान का भाव रखता है। वह जानता है कि उसके चाचा और पिता की अथाह सम्पत्ति भी उसी की है। लेकिन धन का कोई लालच उसके मन में नहीं है। इंग्लैंड दौरे के समय उनकी मुलाकात कैंटरबरी गाँव में लुइसा से होती है। उसके साथ जबरदस्ती कर रहे एक पादरी से वह उसे बचाता है। वह उससे प्रेम करने लगते हैं और विवाह भी करना चाहता है। जैसोलीन समझता था कि मध्यम वर्गीय परिवार की स्त्रियाँ ज्यादा समझदार होती हैं। लुइसा को देखकर उसे विश्वास हुआ कि वह किसी ऐसी ही सुन्दर सुशील एवं बुद्धिमती स्त्री की तलाश में था। लुइसा से शादी करने के लिए वे उसकी बड़ी बहन क्लारा से इजाज़त चाहते हैं। इसी के लिए वह उसे पत्र भी लिखता है। जवाब वापस आने पर वह उसे मिलने के लिए लन्दन चला जाता है। लेकिन लन्दन जाने पर उसके सामने अपनी रानी के खिलाफ रचे जा रहे षड्यंत्र का सच सामने आ जाता है। अपने प्रेम को पीछे छोड़कर वह केवल अपने देश की रक्षा करना चाहता है। अपनी रानी के मान-सम्मान के लिए वह हर संभव प्रयास भी करता है।

लन्दन में मैरी से उन्हें रानी के खिलाफ रचे जा रहे षड्यंत्र का सच मालूम पड़ता है। जिस होटल में वे रुकते हैं वहाँ पर उन्हें मिसेस रेंजर अगैथा, एम्मा और जूलिया के बारे में पता चलता है। उन लोगों को सही मार्ग पर लाने का वह बहुत प्रयास करता है। रानी कैरोलाइन इस समय इटली में थी। वह किसी भी तरह इन्हें रोकना चाहता है। ये सभी औरतें भी उल्वीच के लिए रवाना होने वाली थीं। रानी के

मान-सम्मान को ठेस पहुँचाने के लिए महारानी प्रिंस रीजेंट, मार्किवस, उवेन और उसकी चार में से तीन लड़कियां (अगैथा, एम्मा और जूलिया) ये सभी मिले हुए थे। चौथी लड़की मैरी, इन सब लोगों का साथ नहीं देना चाहती थी। वह जैसोलिन के साथ थी। अपनी रानी के खिलाफ जिस षड्यंत्र को वह रच रहीं थीं वहां से उन्हें विचलित करना आसान काम नहीं था। फिर भी जब वे नहीं मानती हैं तो वह उन्हें चेतावनी देता है। लेकिन उवेन बहनें उसी के खिलाफ योजना बना उसे नकली पासपोर्ट बनाने के अपराध में फ्रांस की जेल में बंद करवा देती हैं। कोई बड़ी सज़ा उसे नहीं दी जाती है क्योंकि वह मार्किवस का भतीजा था। मार्किवस स्वयं इस षड्यंत्र का हिस्सा था। अर्नेस्टीना का भाई यही जैसोलिन था। लेखक ने अपने उपन्यासों में किसी संभ्रांत परिवार के खिलाफ जाने वाले व्यक्ति को कड़ी से कड़ी सज़ा मिलते दिखाया है। लेकिन जैसोलिन को केवल जेल में बंद किया जाता है। कारण वह भी उन्हीं में से एक परिवार के सदस्य था। फ्रांस में उसे अगले कई महीनों तक बंद रहना पड़ता है। अंत में वह वहां से भागने में सफल हो जाता है।

अपनी रानी को इस षड्यंत्र की खबर देता है। जिसके बाद रानी पर मुकद्दमा भी दायर किया जाता है। लेकिन रानी कैरोलाइन पर होम ऑफिस वाले किसी तरह का कोई जुर्म साबित न कर पाए। इसके बाद वे अपने ही देश में सम्मान के साथ रह पाती हैं।

ऐसे ही राजपरिवार के बुरे कर्मों का फल भोगती हुई सोफिया और अमीलिया भी दिखती हैं। आजीवन दोनों बहनों का विवाह नहीं हो पाता है। कारण सोफिया को राजपरिवार से सम्बन्ध न रखने वाले एक व्यक्ति से प्रेम हो गया था। दूसरी को अपने ही सौतेले भाई से अनजाने में प्रेम हो जाता है। जर्जावस्था में महाराज का पागल हो जाना भी उन्हीं के कर्मों का सन्देश है। इतना ही नहीं जब रानी कैरोलाइन के खिलाफ रचे जा रहे षड्यंत्र को जैसोलिन इटली पहुँचकर उजागर कर देते हैं। उस

समय अगाथा, जूलिया पागल हो जाती हैं। मिसेस रेंजर को एम्मा की हत्या के जुर्म में इंग्लैंड का आइन कानून फांसी की सजा सुना देता है। मिसेस रेंजर जैसोलिन से अपनी सज़ा कम करवाने की प्रार्थना भी करती है। लेकिन वह कुछ भी करने में असमर्थ है। इन सब कथाओं के माध्यम से लेखक ने यही दिखाने का प्रयास किया है कि जो जैसा करता है उसे वैसा दंड भी मिल जाता है। जैसोलिन भी वहां से यह कहकर चला जाता है कि “पाप का दंड एक दिन सबको भोग करना होता है।”<sup>67</sup> इसी पाप-पुण्य के संतुलन को दिखाते हुए लेखक ने उवेन परिवार का अंत भी दिखाया है।

वैश्यावृत्ति संसार के प्रत्येक हिस्से में चलने वाला एक ऐसा धंधा है, जिसमें अमीर ही नहीं गरीब भी शामिल हैं। स्त्री-पुरुषों की शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संसार में वैश्यालय बने हैं। यौन इच्छाओं को घर की चार दीवारी से बाहर पूरा करने को वैश्यावृत्ति का नाम दिया जाता है। विवाह संस्था से अलग हटकर जब कोई पुरुष किसी स्त्री के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाता है और पैसा देता है तो उसे वैश्यावृत्ति या अवैध सम्बन्ध कहा जाता है। मानव की शारीरिक आवश्यकताएं घर में पूरी होते हुए भी वह बाहरी सुकून ढूंढता है। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में वैश्यावृत्ति कहीं तो पात्रों के लिए मनोरंजन है। कहीं पर यह व्यवसाय बन कर लोगों के रोजमर्रा के जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करता है। पदवी और धन के लोभ में भी स्त्रियाँ इसे करने से परहेज़ नहीं करती हैं। रेनॉल्ड्स के द्वारा दिखाई गयी वैश्यावृत्ति के सम्बन्ध में *विक्टोरियन लिटरेचर* में भी कहा गया है: “विक्टोरियन काल के आस पास वैश्यावृत्ति पर चर्चा करना एक महत्त्वपूर्ण विषय था। बहुत से लेखकों ने ‘भ्रष्ट औरतों’ और वैश्यावृत्ति पर लिखना अपना विषय बना लिया था। जी डब्ल्यू एम् रेनॉल्ड्स के उपन्यास मुख्य रूप से कामगार वर्ग पर लिखे जाने के लिए ही लोकप्रिय

---

<sup>67</sup> लन्दन रहस्य, खंड 8, पृ-24



थे। इनके उपन्यासों की बिक्री चार्ल्स डिकन्स के उपन्यासों से अधिक होती थी<sup>68</sup> मध्यवर्ग के बीच इनके उपन्यासों के बिकने का एक कारण यह भी था कि उन्होंने अपनी ही व्यवस्था के बीच लोगों को जूझते हुए दिखाया है। बहुत्सी स्त्रियाँ अमीर घरानों के आदमियों की वासना से भी परेशान थीं और कुछ स्त्रियाँ उनके साथ समझौता भी कर लेती थीं। बहुत्सी ऐसी भी रही हैं जो इसे खुशी से अपना लेती थीं। रेनॉल्ड्स ने अपने उपन्यासों में दिखाया है कि स्त्री-पुरुषों के बीच शारीरिक सम्बन्ध बनाने के लिए उनका विवाहित होना कोई शर्त नहीं है। घर के भीतर अपनी आवश्यकतायें पूरी होते हुए भी स्त्री हो या पुरुष पर पुरुष या पर स्त्री के साथ नज़र आते हैं। लेखक ने अपने पात्रों के मन में संयम, धर्म, रीति जैसे प्रश्नों को भी सीमित ढंग से ही उठते हुए दिखाया है। यही कारण था कि रेनॉल्ड्स के उपन्यास डिकेन्स से अधिक बिकते थे।

*विक्टोरियन लिटरेचर* में मध्यवर्गीय परिवार की कुछ स्त्रियाँ ऐसी मिलती हैं जो अपनी और अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए इस व्यवसाय में आती हैं। विनीशिया भी ऐसे ही मध्यवर्गीय परिवार की एक लड़की है। क्लारा स्टैनली इसका असली नाम है। विनीशिया ट्रिलॉनी उसका बदला हुआ नाम है जो उसकी मालकिन ने उसे दिया था। वह भी परिस्थिति के साथ समझौता कर लेती है और अपने जीवन स्तर से ऊपर उठना चाहती है। माता-पिता के अभाव में क्लारा और लुइसा को उनकी बुआ ने ही पाला था। मिस्टर वेकफर्ड से आर्थिक सहायता मांगने के लिए वह कैंटरबरी से लंदन आती है। लेकिन इस नाम का कोई व्यक्ति उसे वहां मिला नहीं। वास्तव में ये दोनों बहनें मिस्टर मेलबोर्न की बेटियां थीं, जो इनको खर्चा भेजते थे। वापस लौटते समय जब मिसेस बेथस्टन उसे मिली तो उसका दिया हुआ

<sup>68</sup> <https://sites.google.com/site/alexisknoxgbbo00/victorian-prostitution---a-study/prostitution-in-victorian-literature>

प्रस्ताव वह ठुकरा न पायी। उस प्रस्ताव ने क्लारा के उड़ते हुए सपनों को जमीन दे दी। जिस पर खड़े होना उसकी अपनी मर्जी थी। मिसेस बेथस्टन उससे वैश्यावृत्ति तो नहीं करवाती लेकिन योजनाबद्ध तरीके से अमीर लोगों को फंसाने के लिए वह उसे प्रशिक्षित करती है। वह उसे अपने घर में रखती है। उसका जीवन उन लड़कियों के नारकीय जीवन जैसा नहीं होता जिस प्रकार मिसेस ब्रेस के यहाँ था।

*विक्टोरियन लिटरेचर* में रेनॉल्ड्स के विषय में कहा गया है कि “उपन्यासों में एक समस्या अवश्य देखने को मिली वह यह कि उनके उपन्यासों में आई स्त्री पात्र अपनी कामुक भावनाओं का बिना किसी शर्म के खुले आम प्रदर्शन करती हैं। ऐसा उल्लेख मध्यवर्गीय महिलाओं के लिए बिल्कुल भी स्वीकार्य नहीं था। इसका कारण यह था कि मध्यवर्गीय महिलाओं के लिए यह अवधारणा प्रचलित थी कि वे अपनी कामुक इच्छाओं को छुपा लेती हैं।<sup>69</sup>

अमीर लोगों को फंसाने के लिए वह अनेक नाज़-नखरे सीखती है। अभिनय करने की ये सारी कलाएं एक षड्यंत्र का हिस्सा थीं, जिन्हें प्रिंस तक पहुंचने के लिए रचा जा रहा था। इस समय प्रिंस की उम्र 60 वर्ष के आस पास थी। इस उम्र में भी प्रिंस का मन औरतों के प्रति वैसा ही था। शहर में खूबसूरत लड़की की खबर पहुँचते ही प्रिंस उसे मिलने के लिए ओकेशिया कॉटेज पर जाते हैं। विनीशिया के सामने अपना प्रेम प्रस्ताव रखते हैं। वह अपनी एक शर्त रखती है। जब उसका विवाह हो जायेगा तो वह अपने पति के साथ आकर राजमहल में रहेगी। इस प्रकार प्रिंस मान जाते हैं और मिसेस बेथस्टन अपनी योजना में सफल हो जाती हैं। होरेस उससे विवाह कर लेता है।

<sup>69</sup> <https://sites.google.com/site/alexisknoxgbb00/victorian-prostitution---a-study/prostitution-in-victorian-literature>

वह प्रिंस से कहती है कि “यह पहले ही तय हो चुका है कि आप मेरे पति को अपने यहाँ कोई ऐसी जगह दे देंगे जिससे हम लोग कार्लटन महल में रह सकेंगे। प्रिंस ने अपने महल का लार्ड स्टीवर्ड का पद विनीशिया के पति होरेस सेक्विल को दे दिया। विनीशिया को अपने पास रखने और उसे दुनिया के सभी सुख आराम देने के लालच में प्रिंस का यह कहना कि “मैं सुंदरी विनीशिया के पति से बढ़कर उपयुक्त मनुष्य दूसरा कोई नहीं समझता”<sup>70</sup> इसका उत्तर देते हुए वह कहती है “कि मैं इस समय आपके पास आई हूँ। हाँ, विवाह होने के पहले ही मैंने उससे कह दिया था, जिसको तुम अपनी अर्धांगिनी बनाना चाहते हो वह प्रिंस की उपपत्नी बन्ने का वचन दे चुकी है।”<sup>71</sup> इस प्रकार लेखक ने अपने उपन्यासों में आधुनिकता और खुलेपन का परिचय दिया है। साथ ही उनके उपन्यासों की स्त्रियाँ सम्भोग करने की इच्छा को दबाती नहीं हैं, बेबाकी से व्यक्त करती हुई नज़र आती हैं, जिसे लेखक ने विनीशिया के माध्यम से सफलतापूर्वक दिखाया भी है। प्रिंस के साथ सम्बन्ध बनाने की उसकी कोई इच्छा नहीं थी। इसके पीछे का उद्देश्य एक सुखी जीवन की तलाश करना था।

होरेस सैकविल को बैरेन का खिताब दिया गया, जिससे अब वे लार्ड सैक्विल बन गए थे और दूसरे उन्हें प्रिंस रीजेंट के महल के लिए लार्ड स्टीवर्ड का भी पद मिल गया था।<sup>72</sup> प्रिंस ने अपनी वासना के कारण न जाने ऐसे कितने ही लोगों को ऐसी पदवियां दी होंगी जो उनके लायक भी न थे। सुन्दर और विवाहित स्त्रियों का प्रिंस से सम्बन्ध रखने का कारण यही था कि वे अपने और अपने पति के लिए महल में एक स्थान निश्चित करवा लेती थीं। जिसका लाभ उनकी आने वाली संतानों को भी मिलता था।

<sup>70</sup> लन्दन रहस्य, खंड -6, पृ- 199

<sup>71</sup> वही, पृ- 198

<sup>72</sup> वही, पृ- 103

लेखक ने लन्दन के नगरीय जीवन को अपने उपन्यासों का केंद्र बिंदु बनाया है, जहाँ लोग नैसर्गिक सुख की परवाह किये बिना ही भौतिक सुख के पीछे भागते हैं। कैंटरबरी नामक एक छोटे से गांव से निकलकर क्लारा भी सुख आराम के पीछे भागने लगती है। अपनी इच्छानुसार सारी सुख सुविधाओं से संपन्न उसे एक नया जीवन मिल जाता है जिसे वह दिल खोलकर स्वीकार कर लेती है। मकान, बगीचे, नौकर, चाकर, घोड़ा-गाड़ी उसे किसी बात की कोई कमी नहीं थी। मिसेस बेथस्टन ने भी उसके सुख आराम में कोई कमी नहीं छोड़ी थी। ऐसे जीवन के लिए अपने मान सम्मान को दांव पर लगा देने पर बीच-बीच में ही उसका मन उसे वहां से भाग जाने के लिए कहता है :“बीच-बीच में उसके इस तरह दुखित हो जाने का कारण क्या था? क्या उसने अपना कोई फ़र्ज अदा नहीं किया था। अथवा कोई कसूर कर डाला था? क्या उसने अपनी अमूल निर्दोषिता को खो दिया था? अथवा उसको इस बात का डर था कि उसका सती-धर्म, जो अब तक बचा हुआ है, लालच में पड़कर कहीं बर्बाद न हो जाए? क्या उसने कहीं ठोकर खायी थी। अथवा उसे किसी बात का डर लगा हुआ था? उसे अपने प्यारे के वियोग का अनुताप होता था? अथवा प्रेम की आशा और भय से वह घबरा उठती थी ?”<sup>73</sup> इन सब बातों का मूल केवल यही था कि यह उसकी असली पहचान नहीं थी। न तो अब वह अपने असली रूप में रही थी और न ही अब लोग उसको उसके नाम से जानते थे।

दोनों पति-पत्नी को ये पद तथा पदवी मिलने के बाद भी सुख की कोई अनुभूति नहीं होती है। होरेस अपने आप को कचोटते हुए सोचता है कि उसने हृदय से प्रेम करने वाली पत्नी को प्रिंस के साथ जाने के लिए मजबूर कर दिया। बास्बार उसकी आत्मा उसे यह कहती है कि मैंने अपनी पत्नी को घृणित कार्य में झाँक दिया है। स्वयं से प्रश्न करता हुआ कहता है कि “जब वह इस घृणित कार्य के विचार मात्र

<sup>73</sup> लन्दन रहस्य, खंड -5, पृ-38

से ही काँप रही थी मैं उसे बचा सकता था। इसी कारण से अपने तुच्छ स्वार्थ साधन में पड़कर उसे भयानक गड्ढे में धकेल देना ही मैंने उचित समझा।<sup>74</sup> बार-बार उसकी अंतरात्मा उसे अपनी पत्नी को रोकने के लिए कहती थी। लेकिन वह उसे रोक न पाया, वह पूरी तरह से बिखर जाता है। दोनों ने प्रेम विवाह किया था लेकिन फिर भी उनके चेहरे पर उदासी छाई रहती थी। वे दोनों ही समझ जाते हैं कि भौतिक सुख ही सब कुछ नहीं होता है। लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी। कार्लटन प्रासाद में सुख का जीवन बिताते हुए भी वह अपराध-बोध से हमेशा ग्रसित क्यों रहते हैं।

होरेस के मन में उत्पन्न होने वाले ये प्रश्न विवाह जैसी पवित्र संस्था पर भी सवाल उठाते हैं। अपराध-बोध होने पर भी वह लाचार है। आडम्बरों से भरा जीवन दोनों को दिन और रात दोनों ही समय में सुख से जीने नहीं देता है। सत्ता और व्यवस्था के इस प्रकार के दबाव और कोरी मानवीय संवेदनाओं ने दोनों के लिए उलझन पैदा कर दी है। विनिशिया अपने जीवन में हर तरह के सुख से तृप्त भी होना चाहती थी। परन्तु उसे सब कुछ मिल जाने के बाद उसकी वह तृप्ति उसके जीवन को कठिन बनाती है। अंत में भौतिक सुख से मिलने वाली संकीर्णताओं और उन स्वार्थों से हमेशा के लिए दूर हो जाना ही वह अपने लिए सही समझती है।

रेनॉल्ड्स ने इन दोनों पात्रों के जरिये समाज के उस घिनौने रूप के दर्शन कराये हैं , जो लोगों के मन में असंतोष उत्पन्न कर सकता था। इन दोनों पति-पत्नी का ऐसा जीवन जीने का फैसला करना लन्दन के समाज, संस्कृति, मान्यताओं, मूल्यों, व्यवस्था, सत्ता पर प्रश्न चिन्ह लगा देता है। जिसे भारतीय पम्परा तो बिल्कुल भी स्वीकार नहीं कर सकती थी।

रेनॉल्ड्स ने इन दोनों पात्रों के जरिये समाज के उस घिनौने रूप के दर्शन कराये हैं , जो लोगों के मन में असंतोष उत्पन्न कर सकता था। इन दोनों पति-पत्नी

---

<sup>74</sup> लन्दन रहस्य, खंड -6, पृ-198

का ऐसा जीवन जीने का फैसला करना लन्दन के समाज, संस्कृति, मान्यताओं, मूल्यों, व्यवस्था, सत्ता पर प्रश्न चिन्ह लगा देता है। जिसे भारतीय पम्परा तो बिल्कुल भी स्वीकार नहीं कर सकती थी।

प्रिंस ने मिस फिज़हर्बर्ट से विवाह किया था। लेकिन इनका विवाह राजनियमों के अनुसार मान्य नहीं था। वह उनके साथ कार्लटन प्रासाद में खुले आम ही रहती थी। जॉर्ज तृतीय ने कभी इस रिश्ते को मंजूर नहीं किया था। क्योंकि परम्परागत रीति से प्रिंस का विवाह किसी राजघराने में ही किया जा सकता था। उसे ही महाराज मान्यता भी देते। इतना होने पर भी मिसेस फ़िज़ प्रिंस के राजपाठ पर अपना अधिकार समझने लगी थी। यह विवाह गुप्त रीति से हुआ था लेकिन फिर भी राजमहल और प्रिंस के सभी करीबी लोग इससे अच्छी तरह से परिचित थे। इस प्रकार प्रिंस की प्रधान पत्नी होने पर भी उसका यथा सर्वस्व प्रिंस की दया पर निर्भर था। हालाँकि जिस बंधन में वह प्रिंस से बंधी थी यदि वह उसे न काटना चाहती तो राज-सिंघासन पाने में भी विघ्न खड़ा हो सकता था। लेकिन जब प्रिंस को फ़िज़ के मार्किवस ऑफ़ वेलोर्ड के साथ अनैतिक संबंधों के बारे में पता चलता है, तो वे उसे रंगमहल में चल रहे जलसे के बीच से ही धक्के मारकर महल से बाहर कर देते हैं। दोनों के अनैतिक सम्बन्ध से उपजी एक संतान भी थी जिसका जन्म फ़्रांस यात्रा के दौरान हुआ था। उसी क्षण से प्रिंस उसके सारे अधिकार छीन लेते हैं। प्रिंस के स्वयं के चरित्र के बारे में कुछ भी कहना कम होगा। न जाने कितनी ही राजसी और साधारण परिवार की स्त्रियों से महल में रहते हुए ही उनके सम्बन्ध थे। जो आदमी स्वयं अपनी ब्याहता पत्नी पर प्रश्न उठा रहा है वह न जाने कितनी ही औरतों से सम्बन्ध बना चुका था। पुरुष प्रधान इस समाज में प्रिंस जैसे पुरुषों के ऊपर उनकी स्वयं की औरतें कोई प्रश्न नहीं उठाती थीं। फ़िज़ यदि प्रश्न उठाती तो वह भी किस आधार पर। जिस समाज से वह सम्बन्ध रखती थी उसमें इस तरह के सम्बन्ध किसी

मर्यादा का हनन नहीं समझे जाते थे। प्रिंस के न जाने ऐसे कितनी ही औरतें से सम्बन्ध थे। न जाने कितनी ही उसके बच्चे को जन्म देते हुए मर गईं और कितने ही बच्चों को थेम्स नदी में फेंका जा चुका था।

चरित्रहीनता का ऐसा ही एक इल्जाम प्रिंस ने रानी कैरोलाइन पर लगाया था। लेकिन वह भी इस इल्जाम से बच जाती हैं। इंग्लैंड का इतिहास इस बात का गवाह है कि प्रिंस ने अपनी पत्नी कैरोलाइन पर झूठे इल्जाम लगाए थे। पुरुष मानसिकता सदियों से यही रही है कि औरत को अपना गुलाम बना कर रखा जाए। इसी मानसिकता का पालन करते हुए रेनॉल्ड्स ने भी प्रिंस और अन्य पात्रों के माध्यम से एक नयी कहानी का निर्माण किया है।

उपन्यास के शीर्षक का नाम जैसे '*लन्दन रहस्य*' है वैसे ही सारी घटनाएं भी रहस्यों से ही जुड़ी हुई हैं। रामसे ने रिचर्ड के जन्म से सम्बंधित जिन कागजों को रिचर्ड भवन से चुराया था, वे मीगल्स के हाथ लग जाते हैं। रामसे की हत्या हो जाने के बाद वह उन कागजों को उसके होटल के कमरे से उठा लाता है। (रामसे से अत्यधिक परेशान होकर एलिनर उत्तेजना में आकर रामसे की हत्या कर डाली थी) उन कागजों में हन्नालाइट फूट और महाराज के विवाह के प्रमाण पत्र थे। अपनी जवानी के दिनों में महाराज ने हन्नालाइट फूट से विवाह किया था। जिसके परिणामवश उनको एक पुत्र की उत्पत्ति हुई थी। जो रिचर्ड दम्पत्ति की सतांन मर जाने के कारण उन्हें गोद दे दिए गये थे। लेकिन यह सच संसार को मालूम नहीं था। ड्यूक की पदवी पाने के उद्देश्य से मीगल्स और अमेज़न (लेडीलिटीशिया) महाराज के पास जाते हैं। दोनों ही उन्हें अपने जाल में फंसाना चाहते हैं। वे उन्हें सताते हैं और इस बात का भय उनके मन में पैदा करते हैं कि यदि उन्होंने ड्यूक की पदवी उनके नाम नहीं की तो वे यह सच दुनिया के सामने उजागर कर देंगे।

इस घटना के बाद महाराज आधी रात में प्रेमविवाह से जन्मे पुत्र को देखने के लिए व्याकुल हो उठते हैं। विंडसर के निकट उनका पुत्र रहता है इसका पता लेकर वे उससे मिलने के लिए जाते हैं। दरवाज़े तक पहुँचते ही वे अचानक से रुक जाते हैं। लेकिन थोड़ा साहस कर और थोड़ा आत्मसंयम बरत वे घर के अन्दर जाते हैं। युवा रिचर्ड के कमरे में जाते ही वे देखते हैं कि राजकुमारी अमीलिया उसी रिचर्ड के साथ प्रेमालाप कर रही है। उन्हें महाराज का आना ज्ञात ही न हुआ। “लेकिन जब महाराज जो घोर विषाद से चिल्ला उठे, तब दोनों ने ही चौंककर दरवाज़े की ओर देखा, तो सामने महाराज को खड़ा पाया। यह देख अमीलिया दौड़ी और महाराज के पैरों से लिपटकर बड़े कातर स्वर में कहने लगी “बाबा, क्षमाकरो, दया करो।”<sup>75</sup>

अत्यंत विद्रोही और दुःखी भाव से चिल्ला महाराज कहने लगे “मन्दभागिनी? यह तू क्या कर बैठी? तू नहीं जानती यह तो तेरा भाई है।”<sup>76</sup> अपनी न समझी में वह अपने ही पिता से कहने लगी नहीं पिताजी आपको कोई भ्रम हुआ है। इस पर महाराज का यह कहना कि ये हन्ना लाइटफूट के गर्भजात मेरे ही पुत्र है। “यह सुन भय से एकदम अभीभूत हो बेरोनेट ने मुंह ढांक लिया और कहा कैसा सर्वनाश है !”<sup>77</sup> जिस सत्य का सामना करने का साहस इतने वर्षों में महाराज न कर पाए थे वह ऐसी अवस्था में उनके सामने आया। उनका वह पुत्र जिसे वे वर्षों पहले भूल चुके थे ऐसे अवस्था में अपनी ही बेटे के साथ मिलता है।

इस घटना से तीनों ही व्यक्ति स्तब्ध रह गये। वह समय मानो अचल हो गया था। तीनों के पास न तो शब्द ही थे और न सहनशक्ति। इस असहनीय पीड़ा को वे कैसे बर्दाश्त करते। शायद ही ये तीनों व्यक्ति अपने जीवन कभी इतने विवश हुए थे।

<sup>75</sup> लन्दन रहस्य, खंड -4, पृ- 135

<sup>76</sup> लन्दन रहस्य, खंड -4, पृ- 135

<sup>77</sup> लन्दन रहस्य, खंड -4, पृ- 135



पिता के यह पूछने पर कि तूने कोई पाप नहीं किया है वह चुप रहती है। वह किस मुंह से अपने पिता को कहती कि यौवन की उन तपती भावनाओं के चलते वह अपनी अतृप्त इच्छाओं की तृप्ति युवा रिचर्ड से ऋ चुकी थी। इस आघात को वह सह न सकती थी। इसीलिए अचल खड़ी रही। उसके प्रेम के पलों का परिणाम जैक फाउंडलिंग ही था। जिसे जन्म के बाद एक डॉक्टर को दे दिया गया था। लेकिन वहां से उसे हैंगमैन चुरा कर ले गया था। जैक फाउंडलिंग के जन्म के माध्यम से लेखक ने ऊँचे घरानों की ढीली पड़ी हुई सीमाओं को उजागर किया है। ऐसे ही प्रिंस और ओक्टेमिया की भी अवैध संतान फ्लोरेंस थी। जिसे जन्म के बाद उसकी बहन पौलिन ने पाला था।

प्रिंस का चरित्र किसी भी प्रकार से सम्माननीय नहीं था। लेकिन एक पिता की भावनाएं उसमें भी मौजूद थीं। प्रिंस के हृदय में कभी भी किसी स्त्री के मान-सम्मान का प्रश्न ही नहीं उठा था। वे स्त्रियों को केवल काम और वासना की दृष्टि से ही देखते थे। अचानक उन्हें अनैतिक कृत्यों से जन्मी अपनी बेटी की याद आ जाती है। यह भी तब होता है जब उनकी बहन अमीलिया अपने भाई से अपने खोये हुए बेटे को ढूँढने के लिए कहती है। प्रिंस को जब इस सत्य का पता चलता है तो वह जैक को अपना देने की जगह पर उसे लन्दन से बाहर भेज देते हैं। कारण यह है कि उसे राजकुमारी ने जन्म तो दिया था पर शाही खून वह फिर भी न था। इस पर एनी हम्फ्रे ने *रेनॉल्ड्स : नाइनटिंथ सेंचुरी फिक्शन, पॉलिटिक्स एंड दी प्रेस एडिटेड बाय एनी हम्फ्रे एंड लुइस जेम्स* में लिखा है “यदि तर्कसंगत रूप से न देखा जाए तो इन उपन्यासों को गलत दृष्टि से भी समझा जा सकता है। जिसमें पुराने अपराधों का दुरुपयोग किया जाता है और विशेषाधिकारों की सीमाएं तोड़ी जाती हैं। (यदि इस दोहरे नज़रिए की तुलना की जाए तो इससे समान कहानी फाउंडलिंग की घटना में देखने को मिलती है। जिसमें कि वैध रूप से जन्में शाही खून को ही समर्थन प्राप्त हो

सकता है। उसे ही समाज में उच्च स्थान मिल सकता है। लेकिन यदि वह अवैध रूप से जन्मा है तो उसे अपने अधिकारों और पद से शाही होते हुए भी वंचित रहना पड़ेगा।) इन उपन्यास श्रृंखला में यह दिखाया गया है कि प्राकृतिक रूप से प्राप्त अधिकार ही अधिनियमित हो सकते हैं। उनके लिए किसी प्रकार की इच्छा महत्त्व नहीं रखती है।<sup>78</sup> पहली बार प्रिंस का हृदय अपनी बेटी के लिए पिघला था। अमीलिया और पौलिन सखियाँ थीं। प्रिंस अपनी बहन से निवेदन करते हैं कि तुम अपनी सहेली से कहकर फ्लोरेंस से मुझे मिलवा दो। दोनों ही भाई बहन शाही खून हैं। दोनों ही एक दूसरे के अनैतिक संबंधों को समझते हैं। लेकिन उनके हाथ में इतनी शक्तियाँ होते हुए भी वे अपने पद के कारण मजबूर हैं और अपनी संतानों को अपने पास नहीं रख सकते हैं।

इन सब से अलग हटकर अब रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में अपराध दुनिया की दुनिया का भी आरम्भ होता है।

मि. ग्रमले ब्रेस से पूछताछ करने के लिए उसके घर जाते हैं। लेकिन वह धोखे से उसका खून कर देती है और अपने रसोईघर में ही उसकी लाश दबा देती है। ब्रेस ने पुलिस वाले का खून किया है इसका पता उसके नौकर फ्रेडरिक को चल जाता है। ये दोनों ही मालकिन और नौकर हृदयहीन और निष्ठुर हैं। ब्रेस जो अब तक दूसरी लड़कियों के मान-सम्मान और इज्जत से खेलती आ रही थी, अब अपने ही बुने जाल में फंस जाती है। एक दिन अपने आप से बात करते हुए फ्रेडरिक उसे सुन लेता है “इसके अलावा मुझे दिन रात यह चिंता घेरे रहती है कि कहीं किसी दिन हेड कांस्टेबल ग्रमले के खून की बात अकस्मात् न फूट जाये। जो हो मैं तीनों आदमियों

<sup>78</sup> [Humpherys, Anne](#). added author [James, Louis, 1933](#)-title [G.W.M. Reynolds : nineteenth-century fiction, politics, and the press / edited by Anne Humpherys, Louis James](#). series title [The nineteenth century](#) series title [Nineteenth century \(Aldershot, England\)](#) imprint [aldershot, England ; Burlington, VT : Ashgate, c2008](#). isbn [0754658546](#) (alk. paper) [9780754658542](#) (alk. paper) catalogue key [6676743](#) Includes bibliographical references (p. [273]-284) and index.

के कंजे में पड़ गयी हूँ। जब इन लोगों की इच्छा होगी, तभी धमकाकर मुझसे रुपया चीरा करेंगे और मुझे लाचार होकर इनकी इच्छा पूरी करनी ही पड़ेगी।<sup>79</sup> फ्रेडरिक आकर उससे कहता है कि मैं जानता हूँ ग्रमले पक्षाघात से नहीं मरा है बल्कि उसको तुमने मारा है। वह कहता है “अच्छा मेम साहब पहले तो यह देख लेना चाहिए कि नाव को कहाँ से छोड़ना है, यानि साफ-साफ़ बात तो यह है कि पीटर ग्रमले पक्षाघात से नहीं मरा है उसे तो तुमने ही मार डाला है।”<sup>80</sup> इतना सुनते ही ब्रेस का सारा शरीर कांप उठा, जोर-जोर से साँस चलने लगी आवाज़ बिगड़ गयी और धौंकनी की तरह छाती उठने बैठने लगी। ब्रेस ने अपने जीवन में जितने भी पापकिये थे अब उन सब की परिणति का समय आ गया था। फ्रेडरिक अपनी मालकिन पर किसी भी तरह से कोई रहम नहीं करना चाहता था। अपनी गलती पकड़े जाने के जिस असमंजस में वह थी उसे फ्रेडरिक ने और अधिक बढ़ा दिया था। परिस्थिति वश वह उसके सामने गिड़गिड़ाती है, उससे भीख मांगती है।

इसके कुछ दिनों बाद ग्रमले के अचानक गायब हो जाने पर उसकी तहकीकात करने के लिए जब मब्स आता है। तो वह अपने नौकर के साथ मिलकर उसका भी खून कर डालती है। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों ने ऐसी अनेक कहानियाँ बुनी हैं, जहां लोग अपनी एक गलती छुपाने के लिए दूसरी गलती कर डालते हैं। होम ऑफिस की अंतिम कार्यवाही तक भी ब्रेस को अपनी गलती का कोई पछतावा नहीं था। फ्रेडरिक पर तो गुनाह का कोई असर ही नहीं हुआ था।

लंदन रहस्य में नौकर अपने मालिकों के साथ केवल तब तक ही रहते थे जब तक कि वे आर्थिक और मानसिक रूप से कमज़ोर नहीं पड़ते थे। मालिकों की गलतियाँ केवल तब तक ही छुपी रहती थीं जब तक कि वे धनवान और शक्तिशाली

---

<sup>79</sup> लन्दन रहस्य, खंड -2, पृ - 332

<sup>80</sup> वही, पृ -332

होते थे। अब तक ब्रेस सबके साथ हृदयहीन थी लेकिन अब उसका नौकर उसके साथ अमानुषिक व्यवहार करता है। उसे अपनी अंकशायिनी बनने पर मजबूर करता है। ब्रेस को लगता है कि आज सारे कुकर्मों का दंड उसे मिल गया है। जो अनुचित व्यवहार आज तक वह बेसहारा लड़कियों के साथ करती आ रही थी आज वह खुद बेसहारा थी। इस मानसिक दबाव में उसे यह स्वीकार करना ही पड़ता है। पालमाल स्ट्रीट की सुप्रसिद्ध कपड़ा बेचने वाली, प्रिंस ऑफ वेल्स की दुलारी अमीरों की परम प्यारी और कितनी ही स्त्रियों का गुप्त रहस्य जानने वाली, मिसेस ब्रेस अपने ही नौकर की खिदमत में हाजिर होने को मजबूर हो जाती है। लेखक ने अपने उपन्यासों में जैसी करनी वैसी भरनी जैसी उक्ति को सच होते दिखाया है। पाप और पुण्य के बीच संतुलन का सन्देश लेखक देते हैं। नकारात्मक के साथ सकारात्मक पात्रों की भी कोई कमी उनमें नहीं है। लेखक भी पाप और पुण्य की बातों में विश्वास करते हैं। लेखक के उपन्यासों के पात्र जो किसी न किसी षड्यंत्र में संलग्न दिखते हैं वे एक दिन अपने ही कर्मों पर पछतावा करते हैं। अर्नेष्टीना ने प्रिंस के साथ षड्यंत्र रच कर अपने पति को फंसी पर चढ़वा दिया था। उसी का फल उसे आगे चलकर भोगना पड़ता है। अर्नेष्टीना अपने जीवन के अंतिम समय में हैंगमेन के अत्याचारों का शिकार होती है। पहले तो वह उसके सम्मान को ठेस पहुंचाता है। बाद में उसे अपने ही घर में जिंदा जलने के लिए छोड़ जाता है। इतना ही नहीं उसका चाचा मार्किवस भी उसी आग में झुलस जाता है। दोनों ने ही अपने जीवन में जितने बुरे कर्म किये थे, उतनी ही शोचनीय मृत्यु भी उनकी होती है।

यहाँ पर लेखक ने पाप और पुण्य की इतिश्री कर दी है। न्याय और अन्याय के बीच जो जंग लेखक अब तक चलाते रहे हैं, यहाँ पर उसने उसे चरम पर पहुंचा दिया है, जिसे दिखाने में अनुवादक भी सफल हो पाए हैं।

## जोसफ विल्मोट

‘जोसफ विल्मोट’ में ‘जोसफ’ नामक एक नौकर की कहानी है। यह सम्पूर्ण उपन्यास एक नौकर की जीवनी की तरह लिखा गया है। जोसफ इसका केन्द्रीय पात्र है। जोसफ का बचपन एक अनाथालय में बीतता है। वहां से निकलने के बाद वह अनेक स्थानों पर काम करता है। उसके मालिकों के साथ हमेशा ही उसका अच्छा सम्बन्ध बना रहा है। अनाथालय के मालिक के मरते ही उसे अन्य बच्चों सहित मोमबत्ती के कारखाने में काम करने के लिए भेज दिया जाता है। जहां से भागते हुए वह जूकस नामक बदमाश के जाल में फंस जाता है। वह उसे भीख मांगने पर मजबूर कर देता है तभी देलमर उसे मिलता है, वह उसके आगे भीख मांगते हुए कहता है “दोहाई साहब मुझे कोई काम धंधा दीजिये। कैसा ही नीच काम क्यों न हो मैं आपकी आज्ञा मानूंगा। मुझे बचाइए मैं आपका बड़ा ही उपकार समझूंगा”<sup>81</sup> उससे छुटकारा पाने के लिए वह देलमर की नौकरी को अपना लेता है। इसके बाद वह उसे अपने घर ले जाता है। उसकी उम्र और पढ़ाई-लिखाई देखते हुए देलमर उसे पेज का काम दे देते हैं। इन्टरनेट पर उपलब्ध एक ब्लॉग पर रेनॉल्ड्स के समय के लेखन में घरों में रखे जाने वाले नौकरों के विषय में लिखा गया है कि “नौकर विशेष रूप से पुरुष नौकरों को अपने पद और धन के प्रदर्शन के लिए रखा जाता था। इनको रखने का एक ही उद्देश्य होता था लोगों को यह दिखाना कि परिवार के पास नौकरों पर खर्च करने के लिए पैसा है।”<sup>82</sup>

ऐसे तो देलमर के घर में पेज की ऐसे कोई आवश्यकता भी नहीं थी। फिर भी वह जोसफ को नौकरी देते हैं। उस पर दया दिखाते हुए और उसकी स्थिति को समझते हुए देलमर उसे कहते हैं “मैं समझता हूँ कि तुम अच्छी शिक्षा पा चुके हो

<sup>81</sup> यशोदानंदन खत्री और चतुर्भुज औदीच्य, जोसफ विल्मोट, भारत मित्र प्रेस कलकत्ता, कलकत्ता, पृ-44

<sup>82</sup> <http://rosydisorder.blogspot.in/2012/03/servants-in-non-aristocratic-households.html>

तुम्हारी उन्नति करना जरूरी है। यदि तुम मेरे घराने में पेज का काम कर सको तो मैं तुम्हीं को उसका भार दूँ इस समय यदि तुम्हें कहीं किसी वकील के ऑफिस में लेखन के काम में लगवा दूँ तो तुम गलत संगत में पड़ जाओगे तो तुम्हारी उन्नति होना कठिन है, इसी से मैं कहता हूँ कि दोतीन बरस तुम्हें इसी काम में रखूंगा, इससे तुम्हारा दिल भी न दुखेगा”<sup>83</sup> उसे थोड़ा बहुत पढ़ा लिखा जानकर देलमर उसे किसी और के यहाँ पर नौकरी नहीं दिलवाना चाहते हैं वे उसे अपने यहाँ ही पेज की नौकरी दे देते हैं “नौकरों का शिक्षित होना असामान्य नहीं था। मोटे तौर पर रूढ़िवादी प्रकार के नौकरों को ही अशिक्षित समझा जाता था लेकिन वास्तव में उन्हें थोड़ा बहुत पढ़ना जरूर आता था। हालाँकि इस सदी के आखिरी समय में अशिक्षा बड़े स्तर पर फैली हुई थी। लेकिन फिर भी एक नौकर का पढ़ना और लिखना उसके कौशल में गिना जाता था। ऊँचे स्तर के नौकर जो अपने मालिकों के साथ रहते थे उनसे ये उम्मीद की जाती थी कि वे पढ़ना और लिखना दोनों जानते हों।”<sup>84</sup> ऐसा ही जोसफ के साथ भी था नयी पोशाक मिलने पर वह खुश हो जाता है। देलमर साहब का प्रेम देख वह अपने मन में इस बात का निश्चयकर लेता है कि आजीवन ईमानदारी से वह वहाँ पर काम करेगा। जोसफ अपने मालिक को भगवान मानता है। आजीवन उसकी सेवा करना चाहता है। वह उसके लिए ईमानदार था उसके परिवार के बहुत से गुप्त राज भी उसे नौकरी करते हुए मालूम हो गए थे

एक दिन अचानक से एक व्यक्ति आता है और उसका मामा होने का दावा करता है। लनीवर अपने साथ जूकस को भी लेकर आता है। जूकस ने जोसफ को अपने पास नौकरी के बहाने रखा था। लेकिन उसको शारीरिक रूप से बहुत प्रताड़ित किया था। दोनों को ही देख जोसफ डर जाता है अपने बदसूरत मामा और जूकस को देखकर। देलमर समझ जाते हैं कि जोसफ उनके साथ जाना नहीं चाहता है। देलमर

<sup>83</sup>वही, पृ- 44

<sup>84</sup><http://rosydisorder.blogspot.in/2012/03/servants-in-non-aristocratic-households.html>

में दुनिया को सूक्ष्म दृष्टि से परखने की समझ है। जोसफ को देख वे उसकी मानसिक हालत को समझ जाते हैं। उसके मामा को बोल देते हैं कि वे उसे कानूनी रूप से भेजेंगे। क्योंकि वे उस क्षेत्र के 'जस्टिस ऑफ पीस' हैं, इसीलिए अपने घर में रहने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए वे स्वयं जिम्मेदार हैं। उसका मामा भी कानून की पैरवी से डरता है और वहां से चला जाता है। उसी रात जोसफ को लगता है जैसे घर में कोई आया है। पर उसे कोई नज़र न आया। सुबह जैसे ही उठा कपड़े पहनने को हुआ तो उसे मालूम पड़ा कि बाहर कुछ हलचल हो रही है उत्सुकता में बाहर जाने को हुआ ही था कि "इतने में ही किसी स्त्री के रोने का गला सुन पड़ा हां! यह क्या यह तो कुमारी एडिथा का गला है। तुरंत मन में अमंगल भावना हो आई। कुमारी पर ऐसा कौन-सा दुःख आ पड़ा है जो वह इतना विलाप कर रही है। मेरा जी न माना झट से तड़ फड़ाकर अपने घर से बाहर निकलने लगा। इतने में ही किसी के पैर की आहट सुन पड़ी। तुरंत दरवाज़ा खोलकर एडवर्ड भीतर आया। उसका चेहरा मुर्दे-सा पीला पड़ रहा था। मुझे देखते ही वह बड़े जोर से चिल्ला उठा – हा जोसफ ! हमारे प्यारे मालिक"<sup>85</sup> इसके आगे वह दीवार से लग कर खड़ा हो गया उससे आगे बोला न गया। बहुत दुःखी भाव में आकर एडवर्ड उसके सामने खड़ा हो गया। जोसफ को फिर भी विश्वास न था कि उसका मालिक अब नहीं रहा "उसी अवस्था में मेरे मुंह से निकला - हा ! परमेश्वर ! क्या कहा भाई ! साफ़ कहो, हमारे मालिक – क्या—"<sup>86</sup> जोसफ को उसके मालिक पिता जैसा ही स्नेह दे रहे थे। अपने अनाथालय से निकलने के बाद देलमर ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने उसे इतने प्रेम से अपने पास रखा था। इससे पहले जूकस का साथ पा वह घबरा गया था। अपने मामा के आ जाने से परेशान भी था। देलमर ने जैसे आत्मीय भाव से उसे अपनाया था, उसके लिए तो वे

<sup>85</sup> यशोदानंदन खत्री और चतुर्भुज औदीच्य, जोसफ विल्मोट, भारत मित्र प्रेस कलकत्ता, कलकत्ता, पृ- 87

<sup>86</sup> वही, पृ- 87

फरिश्ता ही थे। फिर उसी मालिक की हत्या हो जाना उसके लिए असहनीय हो गया था।

एडवर्ड का यह कहना “खून ! जोसफ खून ! हमारे मालिक का खून हुआ”<sup>87</sup> उसके मस्तिष्क को सुन्न कर देता है। वह समझ नहीं पाता कि अचानक से उस पर से मालिक का साया कैसे उठा गया। इस घटना को लेखक ने ज्यादा आगे न बढ़ाकर यहीं पर समाप्त कर दिया है। न तो खूनी को ढूँढने की अधिक कोशिश इसमें दिखाई गयी है। न ही किसी प्रकार की कार्यवाही ही इस खून को लेकर मिलती है। उसके मालिक का खून किसने किया लेखक ने अंत तक भी इस रहस्य से पर्दा नहीं उठने दिया है।

अनुवादक ने ‘जोसफ विल्मोट’ की कहानी को विरामों में विभक्त किया है। जिसमें हर विराम में अलग पात्र आ जाते हैं। पाठक के मन में अंत तक यही सवाल बना रहता है कि आखिर खून किसने किया होगा। अगले कुछ विरामों तक इंतज़ार करने के बाद भी बार-बार सोचने पर भी लनीवर पर ही शक जाता है। लेकिन इस खून की कहानी एक रहस्य ही बनकर रह जाती है। लेखक ने स्वयं इस हत्या के बारे में कुछ नहीं कहा है। आलोच्य लेखक के उपन्यासों में जिस शहरी उपन्यास का उल्लेख हुआ है, उसमें अनेक अपराध होते हैं, अनेक घटनाएं घटती हैं, हिंसा से भरे किस्सों में अनेक पात्र शामिल होते हैं लेकिन इन सभी की गुत्थी अनसुलझी रह जाती है। लेखक भी इनके बारे में चुप नज़र आते हैं। उदाहरण के लिए इन्टरनेट से प्राप्त *ऑक्सफोर्ड लिटरेचर* में रेनॉल्ड्स के उपन्यासों के विषय में कुछ इस प्रकार की टिप्पणी लिखी प्राप्त हुई है “उस काल के सनसनीखेज़ उपन्यासों की जो सबसे लोकप्रिय शैली थी वह शहरी-रहस्यात्मक उपन्यास थे। जिनमें गोथिक रहस्यमयी कथावस्तु को जटिल शहरी वातावरण में परिवर्तित कर दिया गया। जिनमें शहर को

---

<sup>87</sup> वही, पृ- 87



एक अतिरेकपूर्ण, रहस्यमयी और आश्चर्यजनक स्थान के रूप में दिखाया जाता है। इन उपन्यासों में अपराध से भरे किस्से, वर्ग विभाजन, अहिंसा और गंदगी से भरे स्थानों और घटनाओं का वर्णन देखने को मिलता है। उपन्यासों में ये सब घटनाएं बार-बार डरावने स्वप्न की तरह आती हैं और आकर चली जाती हैं।<sup>88</sup> यह टिप्पणी उपर्युक्त घटना के सन्दर्भ में बिल्कुल सटीक है।

उसके दूसरे मालिक का नाम लार्ड रवनहिल है। लार्ड रवनहिल के पास भी वह कुछ उलझी हुई परिस्थितियों में पहुंचता है। रात के अंधेरे में धोखे से उसे लड़की समझकर एक सर्ईस उसका अपहरण कर लाता है। इस पर जोसफ भी यह समझ बैठता है कि वह सर्ईस भी उसे लड़की समझ कर उसकी सहायता करने के लिए खड़ा है। वह भाग कर गाड़ी में चढ़ जाता है। सर्ईस के बार-बार यह कहने पर “घबराने की कोई बात नहीं है।”<sup>89</sup> वह कुछ समझ नहीं पाता है बार-बार एक ही शब्द सुनाई देता ‘सब ठीक सब ठीक।’ इसके बाद वह सोचता है कि लनीवर और टॉडी के भय से तो अच्छा ही है कि मैं यहाँ पर हूँ साथ ही गाड़ी वाला मुझे जहाँ भी ले जा रहा है वहाँ पर कम से कम मुझे इतना भय तो नहीं होगा जितना मुझे उन लोगों से है अलीसिया नामक स्त्री के लिए रचे गए षड्यंत्र में वह फंस जाता है। लार्ड रवनहिल अलीसिया से अपने बेटे का विवाह करवाना चाहते थे। अलीसिया से अपने बेटे का विवाह करवा रवनहिल कर्जे से छूटना चाहता था क्योंकि अलीसिया के पास धन संपत्ति की कोई कमी नहीं थी। रात के अँधेरे में जोसफ को कुछ समझ न आया वह केवल इतना ही समझ पाया कि मेरे दोनों ओर दो पुरुष खड़े हुए हैं जिनमें से एक पचास वर्ष के आसपास का बुजुर्ग आदमी है। दूसरा आदमी युवा वाल्टर है। वे लोग उसे एक कमरे के अन्दर ले जाते हैं, जहाँ पर उसका सारा भेद खुल जाता है। अपने

<sup>88</sup><http://literature.oxfordre.com/view/10.1093/acrefore/9780190201098.001.0001/acrefore-9780190201098-e-216#acrefore-9780190201098-e-216-note-89>

<sup>89</sup> जोसेफ विल्मोट, पृ - 130

साथ घटी इस घटना के बारे वह सब कुछ कह देता है। इसके बाद लार्ड रवनहिल उसे अपने यहाँ नौकरी पर रख लेते हैं।

विवाह एक भावनात्मक बंधन होता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में इसे देखा जाए तो इसे दो आत्माओं का मिलन समझा जाता है। दो परिवारों की आपसी समझदारी से ही विवाह संस्था को खड़ा किया जाता है। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में कुछ विवाह तो प्रेम से हुए थे कुछ विवाह आपसी साझेदारी से और कुछ षड्यंत्रों से जिनमें से एक भी सफलता के चरम पर पहुँचता नज़र नहीं आता है। रेनॉल्ड्स के लन्दन रहस्य में उल्लिखित ऐसा ही एक विवाह है। प्रिंस रीजेंट और कैरोलाइन का विवाह था। इंग्लैंड के इतिहास का सबसे प्रसिद्ध और वेल्स की रीजेंसी का अंतिम विवाह। इसके बाद इंग्लैंड में रानी विक्टोरिया का राज्य आरम्भ हो गया था।

रवनहिल अपनी योजना में सफल नहीं हो पाता है। अलीसिया से हाथ छूट जाने पर अब एक नया मालदार आदमी उसे मिलता है जिसकी बदशकल बेटी का नाम उफीमिया है। बौष्टिद नाम का एक व्यापारी अपनी बेटी का विवाह युवा वाल्टर से करना चाहता है। कारण यही था कि उसकी बेटी शकल से बदसूरत थी और दूसरा पक्ष वह कर्ज में डूबा हुआ था। इस कारण वाल्टर के पिता भी इसके लिए तैयार हो जाते हैं। उसका रूप वर्णन करते हुए लेखक कहते हैं कि “चिपटी नाक थी, लाली लिए हुए बाल थे चेहरे पर चेचक के दाग थे। उसी नाक से महीन गले से वह बातचीत करती थी। जब कभी हंस पड़ती तो हाथी से बड़े- बड़े दांत बाहर निकल पड़ते। खूब लम्बी थी, पिता की तरह अमीरी कपड़े और गहने वह भी पहने थी।”<sup>90</sup> दोनों ही परिवार इस रिश्ते के लिए तैयार हो जाते हैं। बौष्टिद उसे विवाह के नाम पर इतना धन देने के लिए तैयार है, जिससे उसके सारे कर्ज का भुगतान किया जा सकता था। विवाह तय होने से पहले ही पावनेदारों की लिस्ट और कर्ज की राशी दोनों के बीच

---

<sup>90</sup> जोसेफ विल्मोट, पृ - 13

बंट जाती है। लेकिन युवा वाल्टर इससे खुश नहीं था। वाल्टर का उससे विवाह होने के पीछे एक मतलब था। उसका पिता पैसों के लिए वाल्टर की बलि चढ़ा देना चाहता था। एक दिन जोसफ उसका रोना सुनता है। युवा उसे देख लेता है और पूछता है कि कब से यहाँ पर खड़े हो? वह उत्तर देता है “थोड़ी देर से? वह कहने लगा - “थोड़ी देर से? किन्तु तुमने कुछ मेरे मुख से सुना है अच्छा जोसफ मेरी बातों का एक शब्द भी तुम किसी से न कहना। क्यों न कहोगे तो?”<sup>91</sup> लार्ड रवनहिल अपने कर्ज की मुक्ति के लिए अपने बेटे का प्रयोग करना चाहता है। युवा उफीमिया से विवाह नहीं करना चाहता है। विवाह होने से पहले ही वह भाग जाता है।

धन के लालच में किये जाने वाले इस विवाह से वाल्टर खुश नहीं था भागने से पहले वह अपने पिता से झगड़ता है। पिता को यह जवाब भी देता है कि चाहे हमारा सत्यनाश ही क्यों न हो जाये, पुरखों की यह हवेली नीलाम ही क्यों न हो जाए लेकिन उस बदसूरत लड़की से मैं दौलत के लिए विवाह न करूँगा। उसके मन की दृढ़ता को दिखाता है, कहता है कि “मैं गरीबी की हालत में रह सकता हूँ। किन्तु वैसी कुलक्षिणी लड़की से ब्याह कर अमीर नहीं बनूँगा। मैंने दृढ़ संकल्प कर लिया है किसी तरह मेरा संकल्प पलट नहीं सकता है।”<sup>92</sup> इस पर उसके पिता का यह कहना “नहीं वाल्टर ऐसा न कहो। कल ही सब पावनेदार हवेली की छाती पर चढ़ जायेंगे।”<sup>93</sup> उसका पिता उसे समझाता भी है कि यह विवाह नहीं केवल एक सौदा है। जिसमें दोनों परिवार अपने बच्चों का भविष्य अपने फायदे के लिए निर्धारित कर रहे थे। लेकिन वह किसी भी तरह से खुद को तैयार नहीं कर पाता है।

एक रात युवा अपने नौकर को साथ ले लन्दन भाग जाता है। लन्दन जाने पर उसे एक स्त्री से प्रेम हो जाता है। विवाह तय होने के बाद टूट जाता है।

<sup>91</sup> यशोदानंदन खत्री और चतुर्भुज औदीच्य, जोसफ विल्मोट, भारत मित्र प्रेस कलकत्ता, कलकत्ता, पृ- 31

<sup>92</sup> वही, पृ- 35

<sup>93</sup> वही, पृ- 35

इसका कारण अलीसिया थी। जिसकी जानकारी वह चिट्ठी के माध्यम से अपने माता-पिता को भेजता है। उधर उसके माता-पिता बौष्टिद से अपना रिश्ता भी तोड़ देते हैं। वाल्टर ने जिस लड़की को पसंद किया था, वहां से भी उसे बहुतसा धन मिलने वाला था।

इसके बाद उन लोगों का अपमान कर वे लोग उन्हें वापस भेज देते हैं। जब बौष्टिद का परिवार आया तो रवनहिल के परिवार ने उनका स्वागत न किया। जब लेडी बौष्टिद आगे बढ़ी तो लेडी रवनहिल भी पीछे हट गयीं उन्होंने हाथ भी न मिलाया। बौष्टिद अत्यंत ही नीच व घमंडी था। ऐसा व्यवहार देखकर वह भी अहंकार से बोलने लगा। ये सब देख लार्ड और लेडी को बहुत बुरा लगा। तीनों घबराए से खड़े रह गए। यह देख बौष्टिद बोल उठा –“यह क्या बात है क्या हममें से किसी से कोई अपराध हुआ है? अपराध? नहीं लार्ड रवनहिल बोले - अपराध कुछ नहीं है किन्तु आज हम लोग आपकी खातिर नहीं कर सकते हैं।”<sup>94</sup> जब तक उन लोगों का मतलब सिद्ध हो रहा था, तब तक वे उन लोगों की खातिर कर रहे थे। बौष्टिद बोलता है कि क्यों क्या हम आपके संबंधी नहीं हैं आप हमारी खातिर नहीं करेंगे। रवनहिल बोले “संबंधी! वाह ! मैं जिस उच्च खानदान से हूँ - उस खानदान की ऐसी इज्जत है, उस खानदान को ये नीच बौष्टिद अपने संबंधी कहेंगे, यह बात मैं कभी नहीं जानता था।”<sup>95</sup> ऐसा व्यवहार वे लोग नहीं सह पाते हैं और बहुत कुछ उल्टसीधा बोलकर चले जाते हैं। अन्ततः वाल्टर का विवाह लन्दन में ही हो जाता है।

रेनॉल्ड्स ने जितना रुचिकर लन्दन रहस्य के षड्यंत्रों को बनाया है उतना जोसफ विल्मोट में आने वाले दृश्यों को नहीं बना पाए हैं। जोसफ के साथ घटने वाली घटनाएं पाठक को अपने साथ बाँध नहीं पाती हैं। उपरी सतह तक ही वे अपना असर

---

<sup>94</sup> वही, पृ- 62

<sup>95</sup> वही, पृ- 62

पाठक के मन पर छोड़ती हैं। रवनहिल की योजना उतनी मजबूत नहीं लगती है। साथ ही अनुवादक ने भी इसे बहुत रुचिकर बनाने का प्रयास नहीं किया है।

लेडी कालिंदी जोसफ की तीसरी मालकिन जोर्जियाना की छोटी बहन थी। वह उसकी सगी नहीं सौतेली बहन थी। लेडी जोर्जियाना के पिता ने दो शादियाँ की थी। इनके पिता अर्ल थे, इसीलिए दोनों बहनें अमीर खानदान से सम्बन्ध रखती थीं। लेडी कालिंदी उम्र में ज्यादा बड़ी नहीं थी, लेडी जोर्जियाना का नौकर जोसफ हमेशा उसकी रक्षा करता है, उसका सम्मान करता है। लेकिन कालिंदी इसे एक नौकर का फ़र्ज़ न समझ कर उसका प्रेम समझने लगती है। जब जोसफ पर लगा चोरी का इलज़ाम झूठा साबित हो जाता है, तो वह उसे पहले से भी अधिक प्रेम करने लगती है।

जोसेफ अपने तीसरे मालिक के घर पर भी पूरे समर्पण के साथ काम करता है। उसी के साथ काम करने वाली उसकी मालकिन की प्रधान नौकरानी डाकिना को उससे ईर्ष्या थी। वह उसे चोरी के अपराध में फंसा देती है। लेडी जोर्जियाना के घर से उसकी बहन कालिंदी की अंगूठी चोरी हो जाती है। सभी जगह ढूँढने पर भी अंगूठी नहीं मिलती है। जब नौकरों की तलाशी लेने की बात आती है तो वह अंगूठी जोसफ के तकिये के नीचे मिलती है। वह किसी भी तरह से अपनी बेगुनाही साबित नहीं कर पाता है। उसके मालिक उसे गाड़ी घर में बंद कर देते हैं। उसी रात उनके घर में चोरी करने आये चोरों को जोसफ अपनी जान पर खेलकर भगाता है। इतना ही नहीं वह अपने मालिक को कालिंदी की प्रधान दासी चार्लॉटी के अपहरण की बात भी बताता है, जिसे वह चोरी करने आये जूकस के मुँह से गाड़ीघर में सुनता है। उसे बचाने में अपने मालिक की सहायता भी करता है। चार्लॉटी के वापस आने पर उसकी मालकिन उसे माफ़ कर देती है।

लन्दन में एक घर में बहुत से नौकर हुआ करते थे जो बहुत बार एकदूसरे के अच्छे मित्र भी बन जाया करते थे। लेकिन बहुत बार एकदूसरे को फंसाने के लिए

षड्यंत्र भी रचते थे। इनके माध्यम से रेनॉल्ड्स ने नौकरों के आपसी षड्यंत्र और दुश्मनी को दिखाया है- चार्लोटी के वापस आने पर वह उससे माफी मांगती है। डाकिना ने उसके खिलाफ जो षड्यंत्र रचा था उसका भंडाफोड़ भी वह स्वयं करती है। चार्लोटी उससे पूछती है “अच्छा जोसफ एक बात पूछती हूँ, तुम निडर होकर उत्तर देना, क्या इस घर में तुम्हारा कोई दुश्मन है, जो तुमसे भीतरी आंठ रखता है।

मैं - हाँ, है चार्लोटी इस घर में मेरा एक शत्रु है।

चार्लोटी- और वह शत्रु डाकिना है ?”

“मैं - हाँ, डाकिना है।”

चार्लोटी- ओह! दुष्टा !पिशाचिनी! विश्वासघातिनी! कुछ परवाह नहीं जोसफ तुम यह सब खा लो।”<sup>96</sup>

इसके बाद चार्लोटी उसके सामने सारा सच कह देती है। इस पर डाकिना कहती है “तू? एक नौकरानी, मेरी बात में दखल देती है, बैठ अपनी जगह, कहती हुई डाकिना अपने दांत पीसने लगी।

चार्लोटी कुछ परवाह नहीं, तुम शांत होकर मेरी बात सुनो। मैं क्या कहती हूँ बीच में जवाब मत दो।”<sup>97</sup>

जब जोसफ की बेगुनाही साबित हो जाती है तो उसका मालिक उसे रूपया देकर विदा करना चाहता है। लेकिन वह लेने से मना कर देता है। कालिंदी का भी शुक्रिया करता है। वह कहता है मैं गरीब साधारण नौकर हूँ लेकिन आप लोगों ने मुझ पर कृपा की। इतना कहकर बिना पैसा लिए वह चला जाता है।

लेखक ने जोसफ को बेगुनाह दिखाया है। लेकिन वास्तविक जीवन में शायद ही लन्दन का ऐसा कोई परिवार रहा होगा जहाँ नौकरों को चोरी या किसी और

<sup>96</sup> यशोदानंदन खत्री और चतुर्भुज औदीच्य, जोसफ विल्मोट, भारत मित्र प्रेस कलकत्ता, कलकत्ता, पृ- 41

<sup>97</sup> वही, पृ- 44

अपराध में फंस जाने के बाद सफाई देने का मौका मिलता था। उन्हें कम से कम सजा देते हुए भी नौकरी से निकाल दिया जाता था। अधिकतर घरों में तो सीधा पुलिस के हवाले ही कर दिया जाता था। लेकिन जोसफ अपनी मर्जी से जोर्जियाना के घर की नौकरी छोड़ कर चला आता है।

एक दिन अपने आप से बात करते हुए जोसफ कहता है “सचमुच वह मुझे निर्दोष समझती थी।”<sup>98</sup> उसके बेगुनाह साबित होने के बाद जब यह सारी घटना समाप्त हो जाती है तो कालिंदी एक दिन उसे अकेले में बुलाती है और उसके सामने प्रेम का प्रस्ताव रख देती है: “जोसफ - प्यारे जोसफ - तुमसे साफ-साफ कह दूँ मैं तुम्हें चाहती हूँ! जिस क्षण मैंने इस दरवाज़े पर पैर रखा था उसी क्षण तुम मेरे हृदय में धंसे थे। पर दुष्ट डाकिना की करतूत से उसमें कुछ फेर हो गया था। लेकिन जिस घड़ी से तुम्हारी निर्दोषिता मालूम हुई फिर उसी भाव ने जोर बांधा है मैं तुम्हारे लिए कितनी ही रोई हूँ। जब चार्लोटी से मालूम हुआ कि तुमने वह इनाम लेने से इनकार कर दिया है तब हृदय में और भी आनंद हुआ”<sup>99</sup> जोसफ जानता है कि वह उस घर का नौकर है। वह उसकी भावनाओं को किसी तरह स्वीकार नहीं कर सकता था। उसे अपनी सीमाओं का ज्ञान भी उसे है। वह कालिंदी के इस प्रेम प्रस्ताव का कोई उत्तर नहीं देता है। कालिंदी का इस तरह का व्यवहार उसे परेशान कर देता है, वह कांपने लगता है। तभी कालिंदी फिर पूछ बैठती है: “मेरी बात का उत्तर क्यों नहीं देते जोसफ ! तुम दिल में मेरी असमानता के बारे में सोच रहे हो, उसे दिल से निकाल डालो - ध्यान में भी न लाओ। स्त्री के लिए जो बात कहने की नहीं है, लज्जा छोड़ मैंने तुमसे वह बात ही कह दी है। इसी अपराध से अपराधिनी समझते हो क्यों

<sup>98</sup> यशोदानंदन खत्री और चतुर्भुज औदीच्य, जोसफ विल्मोट, भारत मित्र प्रेस कलकत्ता, कलकत्ता, पृ- 26

<sup>99</sup> वही, पृ- 61

जोसफ? क्या तुम मेरे लिए ऐसा नीच खयाल करते हो?"<sup>100</sup> नौकर होकर वह अपनी मालकिन की बहन से प्रेम नहीं कर सकता था। वह अपनी सीमाएं जानता था। समाज में इस प्रेम को कोई स्थान नहीं मिल सकता था, यह बात जोसफ को अच्छी तरह मालूम थी। बड़े घरानों की महिलाएं उस समय अपने नौकरों के साथ अनैतिक सम्बन्ध रखती थीं। संसार में यह बात प्रचलित थी। लेकिन ऐसे सम्बन्ध खुले आम नहीं रखे जाते थे। उनके साथ विवाह बंधन में बंधने जैसा भी कोई उपाय नहीं था, क्योंकि वे किसी प्रेमवश उनके साथ सम्बन्ध नहीं रखती थीं। उनके साथ विवाह करने का कोई प्रश्न ही नहीं था। लेकिन कालिंदी तो उससे विवाह करना चाहती थी, जो समाज में चलने वाले इस छुपी हुई रीति से भिन्न था।

जोसफ हमेशा उसे लेडी कालिंदी कहकर पुकारता था। कालिंदी नहीं चाहती कि वह उसे 'लेडी' कहकर पुकारे। वह कहती है "मैं तुम्हारे लिए अलहदा हूँ : ओह क्यों तुम इस ढंग से बोलते हो मुझे कष्ट होता है जिस समय तुम मुझे चाहोगे उस समय अवश्य ही प्रेम करोगे। ठीक समझो - प्यारे जोसफ ! - ठीक समझो मैंने आज तुमको अपना शरीर समर्पण किया है, यह प्रणय सूत्र ईश्वर जानता है सदा बंधा रहेगा। मैं अपनी प्रतिज्ञा से कभी अलग होने की नहीं। मेरा सुख स्वच्छन्द सब तुमसे है।"<sup>101</sup> जोसफ जानता है कि लेडी कालिंदी किसी भी तरह से नहीं मानेगी। लेडी जोर्जियाना उसके प्रेम का पता चलते ही उसे वापस भेज देना चाहती है। लेकिन कालिंदी पर कोई उपाय काम नहीं करता है, कालिंदी को समझाने का हर प्रयास विफल हो जाता है। तिवर्तन साहब और जोर्जियाना उसे वहां से दूर भेज देते हैं फिर भी वह नहीं मानती है किसी न किसी तरह से उससे मिलने के लिये मार्ग खोज लेती है। अंत में जोसफ को ही वहां से जाना पड़ता है।

---

<sup>100</sup> वही, पृ- 62

<sup>101</sup> वही, पृ- 63



वहां से नौकरी छोड़ने के बाद जोसफ एक नयी जगह पर नौकरी करता है। जोसफ को नयी नौकरी बीबी रोबिन्सन के घर मिल जाती है। बीबी रोबिन्सन जोसफ की नयी मालकिन है। उसे अपनी बेटियों को पढ़ाने के लिए गुरुआनी की आवश्यकता होती है। अखबार में ये इश्तेहार देखकर कालिंदी अपना नाम बदलकर वहां भी पहुँच जाती है। वह जोसफ के बारे में पहले से ही जानकारी ले लेती है। अपनी असली पहचान का खुलासा करने के लिए जोसफ को भी मना कर देती है। वह अपना नाम बदलकर पामर रख लेती है। लेखक ने अपने उपन्यासों में ऐय्यार के जैसे अपने पात्रों को भेस बदलते हुए दिखाया है। बार-बार वे अपना नाम बदलते हैं और बार-बार वेश भी बदल लेते हैं। कालिंदी भी बीबी रोबिन्सन के घर पर बुरके में आती है जिससे कि उसको कोई पहचान न सके। जोसफ के लिए कालिंदी अपना नाम और भेस दोनों बदलकर आती है। जोसफ के यह कहने पर भी कि वह आनाबेल से प्रेम करता है वह उससे दूर नहीं जाना चाहती है। लेकिन यह सुनने के बाद वह रोबिन्सन के घर में आये फ्रेंकलिन के साथ सम्बन्ध बनाती है। कालिंदी अपने अधूरेपन को पूरा करना चाहती है। इसीलिए जब उसकी जरूरत जोसफ से पूरी नहीं होती है तब वह फ्रेंकलिन से अपनी जरूरत पूरी करती है। यदि वह जोसफ को प्रेम करती थी तो भी अपने प्रेम को भूल कर फ्रेंकलिन की ओर न झुकती।

जोसफ भी आनाबेल से प्रेम करता था लेकिन फिर भी इन दोनों को साथ देख उसे अच्छा नहीं लगता। इस बेचैनी में बार-बार वह आनाबेल और कालिंदी के बीच झूलता रहता है। एक दिन अचानक से फ्रेंकिलन उसे छोड़ कर चला जाता है। जोसफ कालिंदी को उदास नहीं देख पाता है। जोसफ का झुकाव फिर से कालिंदी की ओर होने लगता है। कुछ दिन बाद दोनों ही फ्रेंकिलन को भूल मानसिक और शारीरिक रूप से एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं। जोसेफ का अंतरमन उसे बार-बार यही कहता था कि आनाबेल अब उसकी नहीं रही है। कालिंदी को भी फ्रेंकिलन से धोखा मिला था,

इसीलिए वह उसे भी उस दुःख से बाहर निकालना चाहता था। जब-जब बीबी रोबिन्सन अपने काम से कुछ दिनों के लिए बाहर चली जाती थी दोनों को एक-दूसरे के साथ बिताने के लिए अधिक समय मिल जाता था। दोनों को ही लगता था कि उनको प्रेम में धोखा मिला है। अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि की तलाश में फिर से दोनों में प्रेम उत्पन्न हो जाता है। मेले में वोइलेट को आनाबेल मानकर वह भी यह समझ लेता कि उसे धोखा मिला था। वोइलेट आनाबेल की जुड़वाँ बहन थी, जो बचपन में उसकी माँ ने किसी दूसरे व्यक्ति को दे दी थी। जोसफ उसे ही आनाबेल मान कर कालिंदी को अपने जीवन में जगह दे देता है। ऐसे ही एक दिन पामर (कालिंदी) बाज़ार के काम से बाहर जाती है और लौट कर नहीं आती है। बहुत खोजने पर भी उसका पता नहीं लगता है। जोसफ को एक दिन उसका पत्र मिलता है कि उसके पिता और भाई उसे ले गये हैं। जीवन में मिलने के मौका मिलेगा तो वह उसे फिर से मिलेगी। इसी प्रेम के परिणामस्वरूप कालिंदी और जोसफ की संतान का भी जन्म होता है। प्रणय सूत्र में बंधे बिना ही कालिंदी जोसफ के बच्चे को जन्म देती है जिसके बारे में स्वयं जोसफ भी नहीं जानता था।

भारतीय रीति-रिवाज़ के अनुसार रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में विवाह होना ही संतान होने की शर्त नहीं था। अठारहवीं शताब्दी के लंदन में प्रेम बंधन में बंधकर लोग अपनी मर्जी से शारीरिक सम्बन्ध बना लिया करते थे। उसी का परिणाम अवैध संतानें होती थीं।

ऐसे ही जोसफ विल्मोट में भी रेनॉल्ड्स ने एक डॉक्टर पम्फ्रेट को इस धंधे में संलिप्त दिखाया है। जो यह काम पैसा कमाने के लिए करता है। इसी डॉक्टर के यहाँ वेलवेट अपनी संतान को जन्म देने के बाद मर जाती है। जोसफ को यह डॉक्टर एक यात्रा के दौरान मिलता है। उसकी आवश्यकता को समझ डॉक्टर उसे अपने अस्पताल में सहायक की नौकरी देता है। वह डॉक्टर दिन के समय समाज कल्याण के नाम पर

अपने मरीजों को निःशुल्क दवा देता था। जिसे देखकर शुरुआत में जोसफ अपने मालिक से बहुत खुश था। उसे लगता था कि उसका मालिक कितना अच्छा है। लेकिन धीरे-धीरे उसकी सारी सच्चाई सामने आ गयी। वह अपने घर में गुप्त रूप से उन स्त्रीयों को रखता था जो अपनी अवैध संतानों को जन्म देती थीं। वह उनसे खूब पैसा कमाता था। एक रात को जोसफ ने देखा कि वोइलेट वहां आयी है। लेकिन उसे कौन लेकर आया वह देख न पाया। उसे मालूम पडा कि वोइलेट गर्भवती है। एक दिन जब माल्कम वोवेनहोम उससे मिलने के लिए आया तो वह समझ गया कि वह उसकी संतान को जन्म देने वाली है। लेकिन वोइलेट और उसका बच्चा दोनों में से कोई न बचा। जोसफ स्वयं को कोसता है कि वह उससे मिल नहीं पाया। क्योंकि वह उसे आनाबेल समझ रहा था। लेकिन जब उसके मरने के बाद आनाबेल वहां आती है। तो वह फिर से खुश हो जाता है। आनाबेल उसे अपनी जुड़वां बहन वोइलेट का सारा सच बता देती है। जोसफ को फिर से मिलने का वादा करके वह वहां से चली जाती है।

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में अविवाहित मातृत्व स्त्रियों के लिए समस्या बन जाता है। जिसकी जिम्मेदारी न तो उनका प्रेमी लेने को तैयार होता है और न ही परिवार। छोटी उम्र में गर्भवती हो जाने के कारण अनेक स्त्रियाँ संतान को जन्म देते समय ही मर जाती थीं। ऐसा ही वोइलेट के साथ भी हुआ

अवैध संतानों की कहानी को लेखक ने किसी वर्ग विशेष तक ही सीमित नहीं रखा है। समाज के अधिकतर पात्र तो ऐसे ही कार्यों में संलिप्त दिखते हैं। लन्दन के जीवन का यह हिस्सा जहाँ रिश्ते बनते हैं और उनसे होने वाली अवैध संतानों की उत्पत्ति को सामने लाना शायद लेखक के लिए आवश्यक बन पडा था। रेनॉल्ड्स ने अपने उपन्यासों में बहुत-सी पात्रगत कथाओं का सृजन किया है जिनमें प्रेम, ईर्ष्या, षड्यंत्र, वैश्यावृत्ति और रहस्य सब कुछ मिलता है जिनमें से एक हिस्सा अवैध रूप से

जन्में बच्चों का भी है। पुरुष और स्त्री की अनुशासनहीनता और मानवजाति की उत्तेजक भावनाओं के परिणामस्वरूप संतान की उत्पत्ति होना अवैध कहलाता है। उन्हें समाज के डर से न अपना पाने के कारण जन्म तो दिया जाता था लेकिन केवल मारने के लिए। ऐसी संतानों का भविष्य जन्म के साथ ही निर्धारित कर दिया जाता था। थेम्स नदी में ही उनकी अंतिम यात्रा होती थी। लन्दन में ऐसे बहुत से अड्डे या स्थान थे जहाँ पर अवैध संतान को जन्म देने के लिए उसकी माँ नौ महीनों तक रहती थी। संतान का जन्म हो जाने के बाद उसे वहीं खत्म करके वापस लौट जाती थी। 'लन्दन रहस्य' में इसे व्यापार की तरह चलाने वालों में लिंडली है। ब्रेस उसके पास अपने वैश्यावृत्ति के धंधे में गर्भवती हुई लड़कियों को रखती थी। यह अड्डा खुलेआम नहीं चोरी छुपे चलता था।

जोसफ आनाबेल से प्रेम करता है। लेकिन कालिंदी की ओर होने वाले आकर्षण से वह खुद को दूर नहीं रख पाता है। कालिंदी की ओर आकर्षण का कारण उसकी जुड़वां बहन वोइलेट थी। जिसे सर्कस में मर्टीमरपरी के रूप में देख वह अनाबेल समझ बैठता है। वह इस बात को मान लेता है कि आनाबेल उसे भूल चुकी है। मर्टीमर नाम की परी को देख उसे लगता है वह अनाबेल है। जब वह उससे बात करने के लिए जाता है, तो वह उसे पहचानने से मना कर देती है। इसी बीच उसकी नौकरी का स्थान परिवर्तित हो जाता है। नयी जगह पर उसे कालिंदी मिलती है।

इस बार जोसफ को मि. शेकलफोर्ड के यहाँ पर नौकरी मिल जाती है। यहाँ पर उसका काम अपने मालिक की बीमार पत्नी का ध्यान रखना होता है। साथ ही दूसरे घर में एक स्त्री अपने नवजात बच्चे के साथ रहती थी उसकी खबर भी साथ-साथ देते रहना था। जोसफ नहीं जानता था कि दूसरे घर में स्त्री रहती है वह कालिंदी ही है। जब वह वहाँ जाता है तो कालिंदी उसे मिल जाती है। जिसे मि. शेकलफोर्ड ने अपने पास कैद कर रखा था। कालिंदी कहती है कि जोसफ यह तुम्हारा बच्चा है।

उसके हाथ में अपना बच्चा रख देती है। जोसफ अपने दिल की बातों को व्यक्त करते हुए कहता है “आह ! मेरा दिल बहुत जोर से धड़कने लगा पिता का जो मोह पुत्र पर होता है। उसी तरह का भाव मेरे हृदय में होने लगा। बालक सो रहा था। मैंने बार-बार उसकी ओर देखा वह जग उठा। उसके नेत्र काले और चमकदार थे। बालक रोया नहीं उसके चेहरे के तेज से मैं आश्चर्य चकित हो गया। फिर मैंने उसके गालों को चूमा - फिर चूमा - बार-बार चूमा मेरे नेत्रों में आंसू भर आये और मैं कुर्सी पर बैठ गया।”<sup>102</sup> जोसफ अभी उम्र में उतना बड़ा नहीं था। वह इस भावना के बारे में कुछ जानता तक नहीं था। कालिंदी के अचानक से यह कह देने पर कि यह तुम्हारा ही है वह कुछ बोल ही न पाया। इस पर कालिंदी भी प्रेम से यह कहती है कि “मैंने तुम्हारे मिलने की आशा एकदम खो दी थी। रात दिन मुझे तुम्हारी ही सोच थी - रात दिन मैं यही सोचती थी कि किसी तरह तुमसे मुलाकात हो जाए तो मैं किसी तरह तुम्हारे बच्चे को तुम्हारे हाथों में धरूँ।”<sup>103</sup> बिना विवाह के संतान की उत्पत्ति और फिर उसके बाद भी जोसफ के हृदय से आनाबेल की मूर्ती का न जाना। वह सोचता है कि अब मैं एक बच्चे का बाप हो गया हूँ। फिर कालिंदी इस बच्चे का दावा मुझ पर रखती है “ओह ! आनाबेल की सूरत मेरे हृदय में जमी हुई है। आनाबेल को मैंने हृदय से प्रेम किया है। उसे मैं किसी तरह हृदय से बाहर नहीं कर सकता हूँ। आनाबेल से अधिक कालिंदी को नहीं चाहता। पर अब क्या करूँ कालिंदी को यदि छोड़ कर चला जाऊँ तो वह संतान का दावा मुझ पर रखती है और फिर संतान का मोह भी कैसा कि दिल को इधर ही खींच रहा है।”<sup>104</sup> कालिंदी और आनाबेल के प्रेम के बीच द्वंद में अब तक तो वह फंसा हुआ था। लेकिन पिता बन जाने पर भी उसका यह द्वंद खत्म नहीं होता है।

<sup>102</sup> यशोदानंदन खत्री और चतुर्भुज औदीच्य, जोसफ विल्मोट, भारत मित्र प्रेस कलकत्ता, कलकत्ता, पृ- 4

<sup>103</sup> वही, पृ- 5

<sup>104</sup> यशोदानंदन खत्री और चतुर्भुज औदीच्य, जोसफ विल्मोट, भारत मित्र प्रेस कलकत्ता, कलकत्ता, पृ- 6

अपने बच्चे को देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ था उसे कहता है कि मैं तुम्हें इस फकीरी हालत में नहीं रख सकता हूँ। कालिंदी भी जोसफ के साथ चलने के लिए तैयार हो जाती है। कालिंदी उसके साथ सूखी रोटी खाकर भी रहने को तैयार है। उसके पिता के दिए गहने और जवाहरात उसके पास हैं, वह कहती है कि वह उनके कुछ दिनों के निर्वाह के लिए काफी हैं। सब कुछ जानते हुए भी आनाबेल का प्रेम उसे बार-बार अपनी ओर खींचता है। उसे लगता है कि वह कालिंदी के साथ चल कर रहा है। लेकिन वह कालिंदी को उस कैद से छुड़ाने के लिए पूरा प्रयास भी करता है। दोनों मिलकर भागने की योजना बनाते हैं। एक दिन भागने में सफल हो जाते हैं लेकिन कालिंदी एक बार फिर उससे दूर हो जाती है। जिस गाड़ी में कालिंदी बैठी थी शायद उसके परिवार वाले उसे ले गये। जोसफ फिर से अपने प्रेम से अलग हो जाता है। जोसफ को कालिंदी कहीं नहीं मिलती है।

इस बीच लेखक बीबी फोली की भी कहानी जोड़ते हैं। फोली दंपत्ति के घर पर मिस्टर शेकलफोर्ड का आना जाना था। इसीलिए वे जोसफ को कभी-कभी उनके घर किसी काम से भेज देते थे। बीबी फोली के पति लुटेरे थे। जो उन्हें नहीं मालूम था। मिस्टर हेनले और दो पुलिस वाले मिलकर एक दिन उस लुटेरे को पकड़ लेते हैं। हेनले भी जोसफ को जानता है वह उसे कहता ही की लुटेरे से मिल लो, यही था जिसने उस दिन तुम्हें नुकसान पहुँचाने का प्रयास किया था वह मिस्टर फोली का घोड़ा देख अचंभित रह जाता है। बीबी फोली इस लुटेरे की पत्नी है, उन्हें ये जानकार कितना दुख होगा। मिस्टर फोली को उसके किये गये अपराधों के लिए केवल फांसी की सजा ही मिलनी थी। इस बात को लेकर बीबी फोली बहुत परेशान थीं। जोसफ हेनले और उसके साथियों से बात कर फोली की सजा कम कराने में सफल हो पाता है।

अंत में वह मैथ्यू हस्लिटन के यहाँ पर नौकरी करता है। अपनी जीवनी में वह कहता है “समाचार पत्र पढ़ते-पढ़ते एक दिन एक पत्र में मैंने नौकरी का विज्ञापन पढ़ा। जिसे मैंने ठीक समझा एक बूढ़ा आदमी एक ऐसा पेज या नौकर चाहता था जो घर के कामों की ओर पूरा ध्यान रखे और अच्छी तरह पढ़ा लिखा भी हो। उसका विशेष काम चिट्ठी पत्री का उत्तर देना और अखबार पढ़कर सुनाना था। यह आदमी रीडिंग में रहता है जो विंडसर से बहुत थोड़ी दूर पर है मैंने वहीं चलने का इरादा किया।”<sup>105</sup> सर मैथ्यू बहुत ही अजीब किस्म में आदमी हैं। कभी वे जोसफ को बोलते हैं कि मैं तुम पर भरोसा नहीं करता हूँ कभी कहते हैं कि अपनी पिछली नौकरी का सुबूत दो, अपने चरित्र का सुबूत दो आदि।

मैथ्यू के घर पर नौकरी करते हुए एक दिन उसे बीबी फोली मिली और उसका धन्यवाद करने लगी। वह उसे अपनी कहानी सुनाती है “मेरी माँ एक बड़े आदमी की बहन थी। उस फौली अफसर के साथ मेरी माँ का छुपे- छुपे प्रेम हो गया था। उसी के साथ मेरी माँ का ब्याह भी हुआ मेरे पिता का नाम ग्राम्बी था”<sup>106</sup> वह अपनी माँ की कहानी जोसफ को सुनाने लगती है। उसके बाद जोसफ वापस अपने घर लौट आता है।

एक दिन जोसफ देर रात घर लौटा उसके मालिक ने पूछा तो उसने कारण बताया कि मिस्टर फोली को फांसी की सजा नहीं मिली इसीलिए वह इतना खुश है। मिस्टर मैथ्यू भी सोचने लगे कि जोसफ का उनसे कोई रिश्ता नहीं है फिर भी वह इतना खुश है। जोसफ को खुश देख वे अपने जीवन की कहानी भी उसे सुनाने लगे। तभी उसको पता लगा कि मिसेस फोली की माँ उसके मालिक की बहन थी। जो इस वक्त बहुत मुसीबत में है और उसको अपने मामा की आवश्यकता है

---

<sup>105</sup> वही, पृ-5

<sup>106</sup> वही, पृ- 49

वह उसे सारी कहानी सुनाने लगता है बीबी फौली एमिलिया लेसली है। यह मैथ्यू की बहन की बेटा है, जो अब मर चुकी है। मैथ्यू अपनी सारी जायदाद उसके नाम करना चाहता है। लेकिन उसे कुछ पता नहीं है। मैथ्यू की बहन, बेटा और भांजी तीनों ने ही भाग कर अपनी मर्जी से विवाह कर लिया था। “आपने उसे निकाल दिया। आपने उसके कुल दुःख भरे पत्र उत्तर में बिना एक शब्द लिखे लौटा दिए। साहब आप भले ही मुझे नौकरी से निकल दीजिये पर मैं सच कहूँगा कि इस विषय में आप निर्दोष नहीं हो सकते हैं आपने उसे गड्ढे में गिरा दिया है।”<sup>107</sup>

इसके बाद उसे पता चलता है कि आनाबेल की माँ ही सर मैथ्यू की बेटा है। वह इन सब का आपस में मिलन करा देता है। और फिर सर मैथ्यू उसे अपने अपनी जायदाद का सेक्रेटरी बना लेते हैं। वह आनाबेल के साथ उसका विवाह भी दो वर्ष के बाद करने के निर्णय करते हैं। जोसफ जो बहुत-सा पैसा देकर पूरी दुनिया में घूमने के लिए भी भेज देते हैं। ताकि वह और आनाबेल इन दो वर्षों में थोड़े और बड़े हो जाये।

लेकिन रास्ते में एक दिन जब फ्रांस जाते हुए उसकी गाड़ी खराब हो जाती है तो उसे फिर से कालिंदी मिलती है। रात में वह एक मकान में जाता है जो गिरिजाघर होता है। उसे बार-बार लगता है जैसे कालिंदी उसके पास है लेकिन वह उसे कहीं दिखती नहीं। सुबह उठकर देखता है तो गिरिजाघर में उसे कालिंदी और अपने बच्चे की लाश मिलती है। उसकी किस्मत का खेल ही था कि जीवन के अंतिम क्षणों में उसको प्रेम करने वाली उससे मिलकर ही अपना दम तोड़ती है।

एक बार फिर से कालिंदी का उसके जीवन में आना और चले जाना। इसके बाद फिर से जोसफ के जीवन की दिशा बदल जाती है और वह फिर से आनाबेल से प्रेम करने लगता है। परन्तु इस बात का दुःख उसे हमेशा रहता है कि वह कालिंदी को अपने जीवन में कोई जगह नहीं दे पाया।

---

<sup>107</sup> वही, पृ - 75



जोसफ की जीवनी के सन्दर्भ में गोपाल राय जी की टिप्पणी को उद्धृत करना सही रहेगा “सच पूछें तो प्रत्येक उपन्यास उपन्यासकार के नीजी अनुभवों का ही दस्तावेज़ होता है और हर उपन्यासकार अपने को अपनी रचना में पूरी तरह से अभिव्यक्त करके ही संतुष्ट होता है। जिन उपन्यासकारों की संवेदन-क्षमता अधिक होती है, जो स्वयं को ही नहीं बल्कि अपने चारों ओर पसरे समाज को भी सूक्ष्मता से देखते हैं और उसे अपनी अनुभूति का विषय बना लेते हैं। जिन उपन्यासकारों में अपने को अपने परिवेश में घुला देने की क्षमता होती है, वे अपनी कृति की आसानी से पहचान में नहीं आते। प्रेमचंद, तोलस्तोय, डिकेन्स, लोरेन्स आदि ने आत्मघटित को अपने उपन्यासों में न ढाला हो ऐसी बात नहीं है, बल्कि डेविड कॉपर फील्ड में डिकेन्स ने और *संस एंड लवर्स* में लोरेन्स ने, अपने को पर्याप्त स्पष्ट रूप से सम्मिलित किया है। पर उनका ‘आत्मघटित’ ‘अन्यघटित’ के अनुपात में इतना संतुलित है कि पाठक को कोई ‘संदेह’ नहीं होता है।”<sup>108</sup> यह तो नहीं कहा जा सकता है कि यह उनकी आत्मघटित घटनाएं हैं लेकिन ये घटनाएं उन्होंने अपने आसपास ही देखी होंगी।

रेनॉल्ड्स ने अपने उपन्यासों में इंग्लैंड के विभिन्न हिस्सों के जीवन का बारीकी से चित्रण किया है। उनके उपन्यासों में आयी घटनाएं क्रियाशील ढंग से चलती हुई दिखायी देती हैं। समाज की बुराइयों को ढकने के लिए लेखक ने कोई बदलाव करने की कोशिश नहीं की है। समाज की सच्चाई पर पड़े परदे को उन्होंने हटाया है। इनके उपन्यासों में जो प्रतिबिंबित हो रहा है उसमें साहित्य की जटिल विचारधारा का कहीं कोई स्थान नहीं है। न ही कहीं कोई गुप्त विचार ही इनके उपन्यासों में मिलता है। लेखक कहीं पर भी किसी घटना विशेष के बारे में केवल इशारा करके नहीं छोड़ देते हैं। जिस भी घटना के बारे में उल्लेख करते हैं उसे विस्तृत आकार देने का प्रयास

<sup>108</sup> राय, प्रो. गोपाल, *उपन्यास की संरचना*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2006, पृ- 216

करते हैं। वे पाठक के साथ स्वयं चलते हैं और उसे हर घटना पर अपनी सोच के बारे में अभिव्यक्ति देते हैं। समाज में रहने वाले लोगों से जुड़ी भावनाओं का उल्लेख करना ही उनके उपन्यासों का महत्त्वपूर्ण आधार है। कोई भी लेखक समाज के बीच रहकर ही अपने लोगों से जुड़ी भावनाओं और समस्याओं की पड़ताल कर सकता है, रेनॉल्ड्स ने भी वही किया। उनके उपन्यासों में जितनी बार भी दैहिक संबंधों का प्रश्न उठता है, उतनी ही बार आंतरिक सत्यता भी अपना पलड़ा भारी कर देती है। लेखक अपने पात्रों का मानसिक विश्लेषण करते हुए नज़र आते हैं। लेखक केवल अभिव्यक्ति देते हैं और निर्णय पाठक के हाथ में छोड़ देते हैं। एक किस्सागो की तरह वे अपने पाठकों को संबोधित करते हुए चलते हैं और टिप्पणी करते हुए आगे निकल जाते हैं। लन्दन के इस लोकवृत्त की समीक्षा करते हुए लेखक ने सम्पूर्ण समाज को उजागर किया है। वे अपने उपन्यासों में समाज में होने वाले सही और गलत के बीच की पहचान की प्रतिबद्धता को व्यक्त करते हैं।

## तीसरा अध्याय

### रेनॉल्ड्स के हिंदी में अनूदित उपन्यासों का भाषिक विश्लेषण

- शाब्दिक स्तर पर
- लिप्यन्तरण और हिंदीकरण
- समतुल्यता के स्तर पर
- पाठ्यपरक सीमार्यें



## तीसरा अध्याय

### रेनॉल्ड्स के हिंदी में अनूदित उपन्यासों का भाषिक

#### विश्लेषण

अनुवाद एक प्रक्रिया है। इसमें स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। एक भाषा का निर्माण वर्णों और स्वरों से होता है। इन वर्णों और स्वरों के उच्चारण से निकली ध्वनि से शब्दों का निर्माण होता है। यह शब्द आगे चलकर भाषा के अनेक अवयवों का रूप धारण कर लेते हैं। शब्द, पदबंध, वाक्य और उनसे निर्मित होने वाला अर्थ एक पाठ का निर्माण करते हैं। इन सब के निर्माण के पीछे प्रत्येक भाषा के व्याकरणिक नियम काम करते हैं। शब्द भाषा की अर्थवान इकाई है। यह इकाई स्वतंत्र होते हुए भी अर्थात् किसी वाक्य या पद का अंग न होते हुए भी स्वयं में एक अर्थ को वहन करती है। एक ही शब्द प्रकृति या पाठ के सन्दर्भ के अनुसार अपना रूप परिवर्तित कर लेता है। यदि अनुवादक शब्दों पर विशेष ध्यान नहीं देता है तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। “यह ध्यान रहे कि ध्वनियों या अक्षरों का प्रत्येक समूह शब्द नहीं होता है।”<sup>109</sup> रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अनुवाद करते हुए अनुवादकों ने उनके सन्देश के समतुल्य शब्द रखने का ही प्रयास किया है। प्रयास शब्द लिखने का तात्पर्य यह है कि आवश्यक नहीं है कि स्रोत भाषा की शब्दावली का समतुल्य अर्थवान शब्द लक्ष्यभाषा में मिल ही जाए।

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में लन्दन के समाज का चित्रांकन है। जिसमें भारत के रहन-सहन से बिल्कुल भी समानता नहीं है। अनुवादकों ने अपनी ओर से कोई कमी नहीं छोड़ने का प्रयास ही किया है।

<sup>109</sup> गोस्वामी, कृष्ण कुमार, *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2008, पृ- 207

रेनॉल्ड्स के सन्देश प्रभावशाली ढंग से हिंदी के पाठकों तक पहुँच सके इसके लिए अनुवादकों ने अनेक प्रयास किये हैं। इसके लिए अनुवादकों ने आम बोलचाल के शब्दों का ही प्रयोग किया है। जब अनुवादक किसी भी शब्द का प्रयोग करते हैं तो शब्दों के प्रयोग के लिए उनकी एक जिम्मेदारी बन जाती है, अर्थात् जब वे सम्प्रेषण के लिए प्रयोग किये जा रहे हैं तब क्या वे उस वाक्य का अर्थ अभिव्यक्त कर पा रहे हैं, जिसकी आशा उनसे की जा रही है। शब्दों का चयन करते हुए यह ध्यान रखना चाहिए कि वह सन्देश के अंशों के अनुसार सही है या नहीं। पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग से अक्सर अर्थ में भिन्नता आ जाती है। यदि अनुवादक लक्ष्य भाषा का अच्छा ज्ञाता नहीं है, तो ऐसी गलतियाँ होने की सम्भावना अधिक रहती है। शब्दों का प्रयोग केवल लेखन तक ही सीमित नहीं है, किसी भाव को अभिव्यक्त करने की भंगिमा का भी आधार है। जो सही समय पर एक अर्थ से दूसरे अर्थ में परिवर्तन करता है अनुवाद का सृजन करते हुए उसे सम्पूर्णता प्रदान करने की कला का दायित्व अनुवादक का ही है। भाव को केवल शब्द ही सहारा दे सकते हैं। उसे केवल सतह तक ही नहीं रहना चाहिए। साथ ही किसी भाव को किसी के मस्तिष्क या हृदय तक पहुँचाने की कला, क्षमता और शक्ति शब्दों में होती है। उसे वाक्य में सही स्थान और सही पर्यायवाची के साथ पिरोना भी एक चुनौती है। शब्दों का प्रयोग करने का अर्थ केवल यह नहीं है कि केवल वही शब्द रख दिए जायें जो अनुवादक को पसंद हों। बल्कि यह भी ध्यान रखना चाहिये कि अनूदित रचना को कौन-सा पाठक वर्ग पढ़ने वाला है। केवल अपनी संवेदना को लिखना ही अनुवादक का कर्तव्य नहीं है। किसी रचना को पूर्णतः अनूदित करना होता है। इस सन्दर्भ में कैलाश भाटिया जी का भी कहना है कि “इसमें भाषिक अभिव्यक्तियों के विश्लेषण के आधार पर मूल पाठ के अर्थ को पूर्ण रूप में ग्रहण किया जाता है। भाषा के माध्यम से जो भी ‘संप्रेष्य’ है पाठक के रूप में अनुवादक को उसे अर्थ क्षेत्र की वस्तु के रूप में देखना पड़ता है।

उसे न केवल पाठ के संकेतार्थ तक ही सीमित रहना पड़ता है बल्कि उसे संरचनार्थ, प्रयोगार्थ, सहप्रयोगार्थ, संपृक्तार्थ आदि को भी अपनी अर्थ सीमा में बांधना पड़ता है।”<sup>110</sup>

## शाब्दिक स्तर पर

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों की मूल भाषा अंग्रेजी है। उनके उपन्यासों का कथानक लन्दन के ब्रिटिश समाज पर आधारित है। जो वहां की सभ्यता को उजागर करते हैं। उनके भावों को आत्मसात कर अनुवादकों ने अनेक शब्दों के माध्यम से उनके संदेशों को जीवंत बनाये रखने का प्रयास किया है। तत्सम, उर्दू, फारसी, हिन्दीकरण आदि वर्गों में विभाजित कर निम्नलिखित प्रकार से इनका वर्गीकरण किया जा सकता है। इस क्रम में सबसे पहला है उर्दू शब्दावली :

### उर्दू शब्दावली का प्रयोग

जिस समय हिंदी में रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अनुवाद होना प्रारम्भ हुआ था उस समय तक हिंदी भाषा का मानक रूप में विकास नहीं हुआ था। भारत में मुगलों की सल्तनत के बाद उर्दू और अरबी फ़ारसी के शब्दों का अधिक प्रयोग अधिक मात्रा में किया जाता था। हिंदी भाषा को अपनी युवावस्था को प्राप्त करने में अभी समय था। साथ ही ब्रिटिश हुकूमत भी हिंदी भाषा को तवज्जो नहीं देती थी। उन्होंने भी जब अपने धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए शिक्षा का आरम्भ किया तो उर्दू भाषा को ही महत्त्व दिया। यही कारण रहा होगा कि आरंभिक दौर में जिन लोगों ने शिक्षा प्राप्त की उनकी भाषा में उर्दू के शब्दों का बाहुल्य था। अनुवादकों ने उर्दू और फ़ारसी के

<sup>110</sup> भाटिया, डॉ. कैलाश चन्द्र, *अनुवाद कला सिद्धांत और प्रयोग*, नयी दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1985, पृ- 20

शब्दों का प्रयोग किया इसका एक कारण और था, वह यह कि जिन पाठकों के लिए इन उपन्यासों का अनुवाद हो रहा था वे उर्दू और फ़ारसी की शब्दावली से भलीभाँति परिचित थे। इसीलिए अनुवादकों को इस प्रकार के प्रयोग करने में किसी भी प्रकार के प्रयोग करने में किसी भी प्रकार का संकोच नहीं होता था।

इस प्रकार के प्रयोग के बाद यह भी कहा जा सकता है कि इन उर्दू शब्दों को समझने के लिए पाठक को उस समय किसी भी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा होगा। अनूदित उपन्यासों में कुछ शब्द ऐसे भी आये हैं जिनके स्थान पर हिंदी के शब्दों का प्रयोग किया जा सकता था। आलोच्य उपन्यासों के तीन अनुवादकों में से सदानंद शुक्ल जी ने रेनॉल्ड्स के लन्दन रहस्य के खंडों को अनूदित करते हुए उर्दू के शब्दों का बहुलता से प्रयोग किया है जिन्हें पढ़ते हुए केवल हिंदी के ज्ञाता लोगों को कहीं-कहीं पर अस्पष्टता होती है। उर्दू के शब्द समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करना पड़ेगा और यदि पाठकों को उर्दू भाषा का मामूली ज्ञान भी है तो वे बार-बार शब्दकोश का प्रयोग करने के लिए बाधित नहीं होंगे। ऐसी स्थिति में प्रश्न उत्पन्न होने की पूरी संभावना रहती है। उर्दू शब्दों के कुछ उदाहरणों के प्रयोग निम्नलिखित प्रकार से हैं -

१) अंग्रेजी - the old lady would rather have heard that an entire city with hundreds of thousands of human creatures had been swallowed up by an earthquake, than that her obese poodle suffered the slightest ill-treatment.”<sup>111</sup>

उर्दू - वृद्धा कुत्ते को इतना चाहती थी कि सारी दुनिया के जीव जंतु अकाल महामारी या भूकंप आदि होने से जहनुम में चले जाएँ तो भी उसे कुछ परवाह नहीं, पर उसके प्यारे कुत्ते को तात बयार भी न लगने पावे”<sup>112</sup>

<sup>111</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 3, p- 348

<sup>112</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -3, पृ -317



**विवेचन** - यहाँ पर अनुवादक ने 'swallowed' शब्द की जगह 'जहहनुम' शब्द का प्रयोग किया है। जो लेखक के व्यंग्यात्मक सन्देश को अभिव्यक्त करने में सक्षम है। इस शब्द का प्रयोग ही लेखक के गुस्से को दिखा रहा है। लेखक के क्रोध का कारण यह है कि वृद्धा के मन में अपने कुत्ते के लिए इतना प्रेम है कि वह भूखे मरते इंसानों की तरफ भी उसका ध्यान नहीं जाने दे रहा है।

२) **अंग्रेजी** - The heavy hangings were drawn over the windows—<sup>113</sup>

**उर्दू** - खिड़कियों में जरदोजी काम के मखमली परदे पड़े हुए हैं, समादान वगैराह में मोमबत्तियां जल रही हैं।<sup>114</sup>

**विवेचन** - अनुवादक ने 'heavy hangings' की जगह पर 'जरदोजी काम' शब्द का प्रयोग किया है। 'heavy hangings' की जगह यदि अनुवादक 'भारी कढ़ाई के पर्दों का प्रयोग करता तो यह सन्देश उतना प्रभावी नहीं बन पाता।

३) **अंग्रेजी** - "I am at the command of your Royal Highness," said Ramsey, scarcely able to conceal the delight which he experienced at thus finding himself taken as it was alike into the confidence and the service of the Prince."<sup>115</sup>

**उर्दू** - रामसे - मैं तो आपकी ताबेदारी में हाजिर हूँ आप इच्छा करें तो मेरी ताबेदारी की रक्षा कर सकते हैं - खुश कर सकते हैं, उसके बदले में आप मुझे भला बुरा जो कुछ करने को कहेंगे, उसके लिए मैं हर सूरत में मुस्तैद हूँ<sup>116</sup>

**विवेचन** - अनुवादक ने 'command of your' का अनुवाद 'आपकी ताबेदारी' और 'into the confidence and the service' का अनुवाद 'हर सूरत में मुस्तैद हूँ' किया है। रामसे प्रिंस को अपने विश्वास में लेना चाहता है। अनुवादक का प्रयोग

<sup>113</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 3, p - 352

<sup>114</sup> *लन्दन रहस्य, खंड-3, पृ - 96*

<sup>115</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 4, p - 352

<sup>116</sup> *लन्दन रहस्य, खंड-4, पृ - 111*

उसके फैसले को मजबूती से दिखाने में सफल है। हर सूरत में मुस्तैद हूँ पद उसके निर्णय की दृढ़ता को भी दिखाता है। रामसे का प्रिंस के सामने यह सब कहना केवल अपना काम निकालने के लिए था। इसकी जगह यदि 'हाज़िर हूँ' का प्रयोग किया जाता तो जरूरत पड़ने पर उसके उपस्थित होने की कोई गारंटी नहीं दे पाता। न ही प्रिंस पर अपनी बातों का इतना अधिक प्रभाव जमा पाता।

४) अंग्रेजी - "began arthur, "that you will ask me no questions relative to the way in which I obtained possession of certain receipts respecting which I require an explanation"<sup>117</sup>

उर्दू - "अब अर्थर ने कहा, - "अकस्मात् दो नुस्खे मेरे हाथ लगे हैं उनका हाल आपसे दरयाफ्त करना है। वे नुस्खे मुझे कैसे और कहाँ मिले अगर यह न पूछे तो दिखाऊँ"<sup>118</sup>

विवेचन - यहाँ पर अर्थर डॉक्टर से अनुरोध कर रहा है, कि उसे जहर को काटने का एक नुस्खा मिला है। 'I require an explanation' का अनुवाद अनुवादक ने 'उनका हाल आपसे दरयाफ्त करना है' किया है। यहाँ 'आपसे दरयाफ्त' के स्थान पर यदि मैं आपसे 'एक स्पष्टीकरण चाहता हूँ' लिखा जाता तो भी यह बात उतनी ही प्रभावी बन जाती। अतः यह अनुवाद सफल है।

५) अंग्रेजी - "and let him remember he's on his oath !" Exclaimed Melmoth sternly – for the working man was unable to subdue his feelings any longer.<sup>119</sup>

उर्दू - अब मेलमथ क्रोध को संभाल न सका। और बोल उठा, — "गवाह को यह ख्याल रखना चाहिए, कि वह हलफ लेकर बयान कर रहा है।"<sup>120</sup>

<sup>117</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol 1, p- 150

<sup>118</sup> लन्दन रहस्य, खंड -1, पृ -513

<sup>119</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 2, p - 391

<sup>120</sup> लन्दन रहस्य, खंड -2, पृ - 437

**विवेचन** - अनुवादक ने 'oath !' का अनुवाद 'हलफ' किया है। यदि यहाँ पर 'शपथ' शब्द का प्रयोग होता तो भी यह सही रहता। यदि कोई पाठक केवल हिंदी जानता है तो उसके लिए 'हलफ' शब्द समझना थोड़ा मुश्किल हो जाएगा। क्योंकि इसके लिए शब्दकोश का प्रयोग करना पड़ेगा।

६) **अंग्रेजी** - She accosted her, saying, " I am glad you have come at last, my dear - as I am wearied of being retained a prisoner here." "a prisoner!" repeated Mrs. Lindley, holding up her hands with well affected amazement: "what does the dear child mean? Surely the doors have not been barred against her?—surely she has never been locked up in her own room?"<sup>121</sup>

**उर्दू** - ब्रेस को देखकर वह कहती है कि अच्छी बात है कि आप यहाँ आयीं हैं अब मुझे ये बताइए कि कितने दिन मुझे इस पाप-पुरी में रहना पड़ेगा। लिंगली - (ताज्जुब से हाथ उठाकर) कैद ! यह क्या कहती हो बेटी तुम्हें कभी ताला कुंजी लगाकर कैद नहीं कर रखा !<sup>122</sup>

**विवेचन** - यहाँ पर अनुवादक ने 'well affected amazement' के स्थान पर 'ताज्जुब' शब्द का प्रयोग किया है। यह शब्द मिसेस ब्रेस और मिस वाकर के बीच की बातचीत को अधिक सशक्त बना रहा है। ताज्जुब शब्द का प्रयोग मिसेस ब्रेस के आश्चर्य को दिखाने में सफल है।

७) **अंग्रेजी** - Such was the harrowing reflection that occupied poor Clara Stanley as she rode back in the hackney-coach to the Cross Keys in Grace church Street. On reaching the tavern she dismissed the vehicle and made inquiries relative to the hours at which the stages started for Canterbury.<sup>123</sup>

<sup>121</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 2, p - 411-412

<sup>122</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -2, पृ- 603

<sup>123</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 5, p - 5

**उद्** - "क्रॉसक्रीज़ सराय में पहुँच और गाड़ी का भाड़ा चुकाकर वह दरियाफ्त करने लगी कि कैंटरबरी की गाड़ी कब छूटती है।"<sup>124</sup>

**विवेचन** - यहाँ पर अनुवादक ने दो वाक्यों को एक ही में परिवर्तित कर दिया है क्लारा को लन्दन में जब अपनी बुआ को पैसे भेजने वाला व्यक्ति नहीं मिला तो वह वापस जाने के लिए एक स्टेशन पर जाती है। जहाँ उसकी ट्रेन छूट जाती है। और वह अगली गाड़ी के बारे में जानकारी एकत्रित करने लगती है। इसके लिए अनुवादक ने 'inquiries' शब्द के स्थान पर 'दरियाफ्त' शब्द का प्रयोग किया है। यह थोड़ा बोझिल-सा लग रहा है। इस वाक्य को पढ़ते हुए एक लय नहीं बन रही है इसके स्थान पर 'पूछने लगी' शब्द का प्रयोग होता तो ज्यादा बेहतर लगता।

८) **अंग्रेजी** - "I am aware of the necessity of throwing a veil over all such occurrences in which the honour or character of your Royal Highness may in anyway be mixed up," said Leveson : "but still I think that a private and secret investigation might be set a foot"<sup>125</sup>

**उद्** - मैं अच्छी तरह समझता हूँ कि जिस काम से आपकी इज्जत-हुर्मत का सम्बन्ध है, उस पर पर्दा डाल देना ही अच्छा है; तो मेरी यह राय है कि चुपचाप पता लगाने का काम फोरन शुरू कर देना चाहिए।<sup>126</sup>

**विवेचन** - यहाँ पर मार्किवस ऑफ लेवसेन प्रिंस से समाज में उसकी इज्जतदार छवि के बारे में बात कर रहा है। ये दोनों मिस ट्रीलौनी की सुन्दरता पर मुग्ध हैं। इस बातचीत के बीच 'honour or character' शब्द के लिए अनुवादक ने 'इज्जत-हुर्मत' शब्द का प्रयोग किया है। वास्तव में इस शब्द को लिखने की संरचना 'इज्जत-ओ-हुर्मत' है। यह वाक्य मार्किवस के व्यंग्य और चिंता दोनों को अभिव्यक्त करने में सफल है। इसीलिए एक प्रकार से इसका प्रयोग यहाँ सराहनीय भी है।

<sup>124</sup> लन्दन रहस्य, खंड -5, पृ-17

<sup>125</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 5, p-34

<sup>126</sup> लन्दन रहस्य, खंड -5, पृ- 35

९) अंग्रेजी - He was not particularly tall; but his slender figure, upright as a dart, was modelled to the most perfect masculine symmetry. He was well dressed, but without finery or pretension; and his manners were elegant and fascinating, without the slightest tinge of reserve and hauteur on the one hand, or affectation and familiarity on the other. He was just such a young man whose attentions could not fail to give pleasure to the purest-minded maiden, nor be received with impunity where the heart was previously disengaged.<sup>127</sup>

उर्दू - “वे बहुत लम्बे नहीं थे उनका छरहरा शरीर तीर जैसा सीधा था यद्यपि उनके कपड़े कीमती थे पर न तो उनमें चमकदमक थी और न ही ठाठबाट ही। उनका चरित्र उत्तम एवं मुग्ध करने वाला था, जिसमें अभिमान, रुखाई, जाहिरदारी और औपचारिक बेतक्कलुफी छू तक नहीं गयी थी।”<sup>128</sup>

**विवेचन** - लेखक ने जैसोलीन के चरित्र का वर्णन करते हुए उनकी शारीरिक बनवाट का उल्लेख किया है। जिसके लिए लेखक उनके चरित्र को अलंकृत भाषा के माध्यम से दिखाने का प्रयास करते हैं। उनके चरित्र और शरीर का वर्णन जिस सुन्दरता से लेखक ने किया है उसे उतनी ही सुन्दरता से अनुवादक ने इन शब्दों में पिरोया है। उदाहरण के लिए ‘without the slightest tinge of reserve and hauteur on the one had, or affectation and familiarity on the other’ का अनुवाद ‘जिसमें अभिमान, रुखाई, जाहिरदारी और बेतक्कलुफी छू तक नहीं गयी थी’ किया गया है। इस पद के अनुवाद में ‘बेतक्कलुफी’ और ‘जाहिरदारी’ शब्द के प्रयोग ने पूरे पद को सम्पूर्ण बना दिया है। इस वाक्य से अलग होने पर भी इसमें अधूरापन नहीं लग रहा है।

<sup>127</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 5, p - 39-40

<sup>128</sup> लन्दन रहस्य, खंड -5, पृ - 111

१०) अंग्रेजी - "page—eh?" Cried Mr. Walter. "And I presume you are in search of another situation Well,"he continued, as I gave an affirmative response, "We shall see what is to be done for you. Here—come along with me."<sup>129</sup>

उर्दू - "मैं प्रसन्न हो गया, वाल्टर ने देखा कि मेरा चेहरा प्रफुल्लित हो गया है। मैंने नयी नौकरी कुबूल की। वे भी मुझे नौकरों वाले घर में जाने के लिए कह बाहर चले गये।"<sup>130</sup>

विवेचन - जोसेफ के नए मालिक के घर उसे एक पेज के पद की नौकरी दी जाती है। यहाँ से उसका नया सफर शुरू हो जाता है। जोसफ ने युवा वाल्टर के घर में पेज की नौकरी स्वीकार की। उसकी खुशी को अभिव्यक्त करने के लिए लेखक ने 'gave an affirmative response' लिखा है, जिसके स्थान पर अनुवादकों ने केवल 'कुबूल' है शब्द लिख दिया है। यदि इसका पूरा अनुवाद किया जाता तो वह इस प्रकार होता 'उसने सकारात्मक उत्तर दिया'। यह प्रयोग उतना प्रभावी नहीं होता। अतः अनुवादक का यह प्रयोग सफल है।

११) अंग्रेजी - in the conversation which had hitherto been going on; and the silence was presently broken by Charles observing, with a somewhat significant look, "Your wages were due to-day—weren't they, Joseph ?" "Yes,"I answered: "but I had quite forgotten all about it. I suppose I must apply to the steward"<sup>131</sup>

उर्दू - "जोसफ आज तो तुम्हारा महीना पूरा हो गया है न? तनखा लोगे न ?"

हाँ, मैंने उत्तर दिया – हाँ, मैं यह बात को बिल्कुल भूल ही गया था। अच्छा खजांची साहब से अब कहूंगा"<sup>132</sup>

<sup>129</sup> जोसफ विल्मोट, प -39-40

<sup>130</sup> जोसफ विल्मोट, प -143

<sup>131</sup> जोसफ विल्मोट, प -43-44

<sup>132</sup> जोसफ विल्मोट, प - 7

**विवेचन** - जोसफ के नए मालिक रवनहिल परिवार के घर का प्रधान नौकर चार्ल्स जोसफ का अच्छा दोस्त था। जब कभी भी उन लोगों को घर के कामों से फुर्सत मिलती थी वे दोनों बाहर टहलने चले जाते थे। एक शाम को जब लिंग्टन और जोसफ सोते के किनारे- किनारे टहल रहे थे तभी उसके पैसों के बारे में उसने पूछा। जिसके लिए अंग्रेजी में रेनॉल्ड्स ने 'wages' शब्द का और अनुवादक ने 'तनख्वा' शब्द का प्रयोग किया है। यह शब्द बहुत ही साधारण और आम बोलचाल का है। इसके लिए किसी भी शब्दकोश की आवश्यकता नहीं है। अनुवादक ने शब्दों का सटीक प्रयोग किया है।

१२) **अंग्रेजी** - "But you heard what fell from my lips. Now, Joseph, shall you not mention every particular of this scene to your fellow-servants?" "Certainly not, sir," I responded energetically." In order to avoid hearing or seeing more, I was hastening away."<sup>133</sup>

**उर्दू** - किन्तु तुमने कुछ मेरे मुख से सुना है अच्छा जोसफ मेरी बातों का एक शब्द भी तुम किसी से न कहना। क्यों न कहोगे तो? "हुज़ूर माफ़ करें किन्तु मेरी यह आदत नहीं है कि मैं इधर की उधर करूं"<sup>134</sup>

**विवेचन** - एक दिन जोसफ युवा वाल्टर को रोते हुए सुन लेता है जैसे ही वाल्टर को पता चलता है वह उसे रोकता है। जोसेफ उसे संबोधित करते हुए 'sir' की जगह अनुवादकों ने 'मालिक' शब्द का प्रयोग नहीं करता है बल्कि 'हुज़ूर' शब्द का प्रयोग करता है। यह शब्द हिंदी का नहीं है। न ही इसके लिए शब्दकोश की आवश्यकता है। इसके स्थान पर मालिक शब्द भी समीचीन रहता।

१३) **अंग्रेजी**- "I am, madam," was my answer ; "and if I could do anything to oblige you, I shall be truly happy."<sup>135</sup>

<sup>133</sup> जोसफ विल्मोट, प -55

<sup>134</sup> जोसफ विल्मोट, प -31

<sup>135</sup> जोसफ विल्मोट, प - 78

**उर्दू** - "मेम साहब आपका जो हुक्म हो मैं करने को तैयार हूँ आपका उपकार करके मैं बड़ा प्रसन्न हो उंगा।"<sup>136</sup>

**विवेचन** - जोसफ देलमर साहब की छोटी बेटी की बहुत इज़्ज़त करता है। वह भी उस दिन से जिस दिन से वह उनके घर में आया था। जब छोटी मालकिन उसे किसी काम के लिए कहती है तो वह भी हमेशा उसकी आज्ञा के लिए तत्पर रहता है।।  
could do anything to oblige you का अनुवाद 'मेम साहब आपका जो हुक्म हो किया है। यहाँ पर देखा जाए तो oblige का शब्दकोशीय अर्थ 'कृपा', 'अनुग्रह' या 'आभारी' होता है। इसीलिए सन्दर्भ के अनुसार यह शब्द ठीक है।

१४) **अंग्रेजी** - there must be no cold formality on your side. I am only Calanthe to you." But your ladyship"<sup>137</sup>

**उर्दू** - तुम मुझे लेडी कहके न पुकारो मैं तुम्हारे लिए अलहदा हूँ।"<sup>138</sup>

**विवेचन** - लेडी कालिंदी जोसफ से प्रेम करती है। कालिंदी जोसफ की मालकिन की बहन है, वह नौकर है इसीलिए वह उसे लेडी कहकर ही पुकारता है। कालिंदी के मन में जोसेफ के लिए प्रेम है। कालिंदी उसे बार-बार यही समझाने का प्रयास करती है कि वह उससे प्रेम करती है। लेकिन वह इस पर कुछ नहीं कहता है और उससे दूर रहने का प्रयास हमेशा करता है। कालिंदी उससे नाराज़ होकर कहती है कि 'I am only Calanthe to you' इसका अनुवाद 'तुम्हारे लिए अलहदा हूँ किया गया है। सन्दर्भगत अनुवाद करते हुए अनुवादकों ने उर्दू शब्दावली का प्रयोग किया है।

उर्दू शब्दों का प्रयोग करते हुए अनुवादकों के संदेशगत और संदर्भगत अनुवाद में कोई कमी नहीं आयी है। वे सन्देश से कहीं भटके नहीं हैं। दोनों ही अनुवादक इस बात में सफल हैं कि उनका अनुवाद, अनुवाद जैसा नहीं मूल जैसा ही लगता है।

<sup>136</sup> वही, प- 81

<sup>137</sup> वही, पृ-122

<sup>138</sup> वही, पृ- 62



अनूदित उपन्यासों में जो लयात्मक भाव उत्पन्न हुआ है उसने पाठक को बास्बार ऊब का शिकार नहीं होने दिया है। ऐसा अनुवाद उपयुक्त माना जाता है।

### **तत्सम शब्दावली का प्रयोग**

आधुनिक भारतीय भाषाओं में हिंदुस्तान में प्रयोग होने वाली अनेक भाषाएं आती हैं। जिनमें उर्दू और तत्सम दोनों ही शब्दावलियों का समावेश होता है। अंग्रेजी के कुछ शब्दों का प्रयोग बिल्कुल उसी रूप में हिंदी में भी किया जाता है। दूसरे संस्कृत भाषा से कुछ शब्दों को हिंदी में हू-ब-हू ले लिया गया है। इन्हें तत्सम शब्दावली का नाम दे दिया गया है। हिन्दी में इनका प्रयोग किसी विदेशी शब्द की तरह नहीं होता है। न ही तत्सम के शब्दों को समझने में हिंदी के पाठकों को कोई बाधा होती है। जिस हिन्दुस्तानी भाषा का प्रयोग सदानंद शुक्ल जी ने किया है उसमें उर्दू, फारसी और तत्सम के शब्दों का मिला-जुला रूप देखने को मिलता है। जिस काल में रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अनुवाद हुआ उस समय लोगों की भाषा में तत्सम के शब्दों का काफी प्रयोग होता था। तत्कालीन समय का पाठक वर्ग आसानी से तत्सम शब्दों का प्रयोग करता था और उन्हें समझता भी था। शायद ऐसे शब्दों का प्रयोग करने में अनुवादक ने कोई सावधानी नहीं दिखाई है। इन शब्दों का प्रयोग उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति में आ गया है। इसमें संप्रेषणीयता का भी कोई प्रश्न नहीं उठता है।

### **तत्सम शब्दों का प्रयोग**

Perish through starvation - पेट की ज्वाला से तड़प-तड़प कर

Motive for self-annoyance - अवज्ञा सूचक

Gratitude - कृतज्ञ

Widow's weeds - शोकग्रस्त वस्त्र

### प्रसंगों में संदर्भानुसार तत्सम शब्दों का प्रयोग

१) **स्रोतभाषा** - But that woman who had been the accomplice in his crime and who was now his paramour,—did she also sleep? Great God! What would she not have given to be enabled to sleep as that man by her side was then sleeping?<sup>139</sup>

**तत्सम शब्दावली** - इस पर वह सोचती है कि - हाय ! धन-धान्य वस्त्र, अलंकार, मणि मुक्तादी जो भी उसके पास है, यदि सब दे डालने पर भी वह एक बार फ्रेडरिक के साथ आराम से सो सकती।<sup>140</sup>

**विश्लेषण** - मब्स की हत्या करने के बाद जब ब्रेस और फ्रेडरिक सोने के लिए कमरे में चले गए तब फ्रेडरिक तो चैन से सो गया लेकिन ब्रेस को नींद नहीं आती है। ब्रेस अपनी इस परेशानी में सोचती है कि उसके पास सब कुछ है लेकिन फिर भी वह चैन से नहीं सो पा रही है। यहाँ पर अनुवादक ने अपने अनुसार रचना को अनूदित करने का प्रयास किया है। रेनॉल्ड्स ने अंग्रेजी में रचित रचना में 'धन-धान्य वस्त्र, अलंकार, मणि मुक्तादी' शब्दों के अंग्रेजी शब्द नहीं दिए हैं। लेकिन पाठक के लिए लेखक का सन्देश समझना आसान हो जाए इसके लिए तत्सम शब्दों का प्रयोग किया गया है। यह अर्थ बोधगम्य बन गया है।

२) **स्रोतभाषा** - The beautiful huntress was now apparelled in widow's weeds. Her magnificent hair no longer fell in a thousand ringlets over her shoulders: it was arranged in the simple style suitable to her mourning garb, and was nearly altogether concealed by the snowy cap which she was compelled to wear. The sable dress set off her fine shape to a somewhat less advantage than the male attire which wont to develop her well-formed limbs in a manner so comparatively undisguised and exciting: but still the admier of the

<sup>139</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol 2, p-124

<sup>140</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -3, पृ -352

sex who had never seen her in her amazonian garb, would not have been very willing to admit that she could possibly have improved by any change of raiment that appearance which she presented in her costume of widowhood.<sup>141</sup>

**तत्सम शब्दावली** - आज वह सुंदरी विधवा शोकग्रस्त वस्त्र धारण किये हुए है। आज उसके विपुल केशदाम सहस्र आकुंजन से कुंजित होकर पीठ पर नहीं पड़े हुए हैं आज वह सुन्दर केशराशि उसके धारण किये शोकवस्त्र के उपयोगी सहज भाव से सम्बद्ध होकर शोकसूचक तुषारधवल टोपी के नीचे छिपी हुई है वह निरंतर जो पुरुष परिच्छेद पहनकर घूमती-फिरती थी और जो उसे बहुत ही फबते थे। वह रमणी वस्त्र धारण किये हुए है। यद्यपि यह वस्त्र उतना नहीं फबता तथापि जो रमणी रूप के ग्राही और जिन्होंने उसे पुरुष परिच्छेद में कभी नहीं देखा, वे यह भी स्वीकार न करेंगे की इस कृष्णवस्त्र की अपेक्षा वह किसी वेश में अधिक सुन्दर दिखाई देगी।<sup>142</sup>

**विश्लेषण** - अमेज़न (लिटीशिया) अपने पति की मृत्यु का शोक मना रही है जो स्त्री हमेशा पुरुष प्रधान वस्त्रों में रहती थी वह अपने पति की मृत्यु के बाद उनके शोक में अत्यधिक समर्पित हो जाती है। अगले एक वर्ष तक वह इसी प्रकार के वस्त्रों को पहनने का निश्चय करती है। अमेज़न के दुःख को दिखाने के लिए अनुवादक ने तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है। जैसे 'Her magnificent hair no longer fell in a thousand ringlets' का अनुवाद 'विपुल केशदाम सहस्र आकुंजन से कुंजित, 'mourning garb' का अनुवाद 'शोकवस्त्र', 'the snowy cap' का अनुवाद 'तुषारधवल', 'male attire' का 'पुरुष परिच्छेद', 'costume of widowhood' का अनुवाद 'कृष्णवस्त्र' किया है इसके अतिरिक्त केशराशि और केशदाम जैसे शब्द भी आये हैं। इन शब्दों से अमेज़न के पति की मृत्यु का और उसके शोकग्रस्त होने का

<sup>141</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p -264

<sup>142</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -4, पृ -19

प्रसंग प्रभावी लग रहा है। अनूदित किया हुआ यह प्रसंग मूल जैसा ही लग रहा है साथ ही यह प्रयोग इसीलिए भी आवश्यक था क्योंकि वह उसके दुःख को अधिक गहराई से अभिव्यक्त कर पा रहा है।

3) **स्रोतभाषा** - "Unhappy girl ! "cried the living, fearfully agitated and unable to control his words: "you know not what you have done nor whom you love—for that man is your brother!"<sup>143</sup>

**तत्सम शब्दावली** - महाराज दुखी होकर कहते हैं - "मन्दभागिनी? यह तू क्या कर बैठी? तू नहीं जानती यह तो तेरा भाई है"<sup>144</sup>

**विश्लेषण** - युवा रिचर्ड और अमीलिया को प्रेम करते देख महाराज अचानक से चिल्ला उठे। उनके चिल्लाने का कारण यह था कि राजकुमारी अमीलिया अपने ही पिता की अवैध संतान से प्रेम करती है। अमीलिया की अनजाने में की गयी भूल और महाराज का गुस्सा करते हुए यह कहना कि 'यह तेरा भाई है'। इस वाक्य में 'मन्दभागिनी' शब्द का प्रयोग करते हैं। अनुवादक ने इस शब्द का प्रयोग भाव को प्रभावी बनाने के लिए किया है। जो एक सफल अनुवाद है।

4) **स्रोतभाषा** - "and that point? "said the Countess, interrogatively. "The name of the individual in whose arms my sister forgot her duty and her chastity," was the prompt reply. "You will reveal that secret to me"<sup>145</sup>

**तत्समशब्द** - "जिसकी अंकशायिनी होकर मेरी बहिन अपना सतीत्व धर्म भूल गयी है, उसका नाम क्या है"<sup>146</sup>

<sup>143</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol 1, p- 307

<sup>144</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -4, पृ- 135

<sup>145</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p – 141

<sup>146</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -1, पृ – 471

**विश्लेषण** - प्रेम में आकर ओक्टाविया ने स्वयं को प्रिंस को समर्पित कर दिया था उसके बाद जब प्रिंस उससे विवाह नहीं करते हैं तो वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठती है। डचेस उसकी खबर उसके पिता और बहन के पास लेकर आती है। यहाँ पर अनुवादक ने 'her chastity' का 'अंकशायिनी' और 'her duty' की जगह 'सतीत्व धर्म' जैसे तत्सम शब्दों का प्रयोग सही है। डचेस एक उच्च घराने की स्त्री है जो ऐसे ही शब्दों का प्रयोग कर इस अपमानजनक बात को कह सकती है। यह प्रयोग सही भी था क्योंकि तत्कालीन हिंदी पाठकों के लिए एक अविवाहित स्त्री का गर्भवती हो जाना अपराध माना जाता था। आज के समय में भी ऐसा ही है।

५) **स्रोतभाषा** - ("Caroline—my friend," continued the lady, in a voice of such keen bitterness and withering acrimony that it seemed as if a demoness spoke within her; " my heart is at times the prey to friends who infuse into my veins a horrible madness ! Oh! for the rage—the fury—the havoc of conflict, look not into history's pages in search of sanguinary fights—seek not descriptions of bloody battles and the murderous storming of cities and sack of towns"<sup>147</sup>

**तत्सम शब्दावली** - "कभी-कभी मेरा हृदय हृदय मानो पिशाचों की लीलाभूमि हो उठता है । उस वक्त में पागलों सी हो जाती हूँ यदि रणोंमाद्जनित प्रचंड क्रोध देखना चाहती हो, यदि तुमुल संग्राम और लोमहर्षण हत्या का स्वरूप जानना चाहती हो तो इतिहास देखने का कोई प्रयोजन नहीं है।"<sup>148</sup>

**विश्लेषण** - कैरोलाइन से बात करते हुए फर्नेडा अर्थर पर क्रोधित हो रही थी और उसके मनाने पर भी नहीं मानती है। अर्थर ने उसके प्रेम को ठुकरा दिया था इसीलिए वह उससे बदला लेना चाहती थी। वह उसकी हत्या करने को आतुर है। इस पर गुस्से में आकर वह उपर्युक्त लिखी पंक्तियों में अपना गुस्सा अभिव्यक्त करती है। जिस

<sup>147</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p – 144

<sup>148</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -1, पृ - 479

प्रकार की स्त्री वह है उसका क्रोध दिखाने के लिए अनुवादक ने निम्नलिखित पंक्ति का अनुवाद इस प्रकार किया है 'my heart is at times the prey to finds who infuse into my veins a horrible madness' का अनुवाद 'मेरा हृदय मानो पिशाचों की लीलाभूमि हो उठा हो' किया गया है। दूसरा 'history's pages in search of sanguinary fights' का अनुवाद 'रणोंमाद्जनित प्रचंड क्रोध' जैसे तत्सम शब्दों के माध्यम से किया है। इन शब्दों के प्रयोग से उसकी मनोवस्था प्रभावी जान पड़ती है।

६) **स्रोतभाषा** - When the well-educated sin, their iniquity is ten thousand times greater than that of the poor ignorant peasant or unlettered operative ;—and therefore are the back slidings of Royalty and aristocracy offences more positively heinous and damnable than even the blackest deeds which the uneducated poor ever perpetrate.<sup>149</sup>

**तत्सम शब्दावली** - सुशिक्षित लोग जब पापकर्म करने पर उतारू होते हैं तो तब अशिक्षित लोगों से उनका पापकर्म कहीं बढ़ चढ़कर होता है। इसीलिए राजा और धनि-मानी लोगों का सामान्य दुष्कर्म भी गरीब गंवारों के जघन्य दुष्कर्म की अपेक्षा अत्यंत निंदनीय और विगृहीत समझा जाता है।<sup>150</sup>

**विश्लेषण** - अनुवादक ने 'offences more positively heinous' का अनुवाद 'जघन्य दुष्कर्म' और 'damnable than even the blackest deeds' का अनुवाद 'निंदनीय और विगृहीत किया है। यदि इसका अनुवाद शब्दकोशीय अर्थ के अनुसार किया जाता तो उसका अर्थ प्रभावी नहीं लगता। यहाँ पर तत्सम शब्दों का अच्छा प्रयोग अनुवादक ने किया है। शिक्षित और पढ़े लिखे लोगों के बीच पापकर्म के अंतर

<sup>149</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p – 176

<sup>150</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -1, पृ -605

को दिखाने में अनुवादक सफल रहे हैं। इन शब्दों का प्रयोग अत्यंत सहजता से कर उन्होंने गरीब और अमीर के बीच के अंतर को दिखाया है।

७) **स्रोतभाषा** - The cruel mandates of an absolute sire and a tyrannical Ministry many compel me to bestow my hand upon another : but my heart will ever be thine ! The mystic fires of passion burn at this moment in my soul withas strong a fervour as when I received the first virgin kiss from your lips: possession has not deadened that warmth nor mitigated that glow,—and the flame will burn on unquenchably until the end.<sup>151</sup>

**तत्सम शब्दावली** - “मैं स्वेच्छाचारी पिता और मंत्री सभा के निष्ठुर आदेशानुसार दूसरों के साथ विवाह करने पर लाचार जरूर किया गया हूँ पर मेरा मन सर्वदा तुम्हारा ही है। पहले जब तुम्हारे अनास्वादित अकलंकित अधर का रस पान किया था। उसी वक्त मेरे हृदय में जो अनुरागिनी जल उठी थी इस वक्त भी वह उसी तरह जल रही है।”<sup>152</sup>

**विश्लेषण** - यहाँ पर प्रिंस ओक्टाविया को यह कहते हैं कि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ केवल माता-पिता के कहने से मैं किसी दूसरी स्त्री से विवाह करने के लिए तैयार हुआ हूँ। अपनी प्रेमिका से वार्तालाप करते हुए जब वह उसकी तारीफ़ करता है, तो उसका अनुवाद अनुवादक ने तत्सम शब्दावली में किया है। ‘first virgin kiss from your lips’ का ‘अनास्वादित अकलंकित अधर’ और ‘हृदय में जो अनुरागिनी’ शब्द का प्रयोग उसके सौन्दर्य और प्रेम को दिखाने के लिए किया है। इन शब्दों का प्रयोग करने में अनुवादक ने अपने ज्ञान का परिचय दिया है, ऐसा कहने का कारण यह है कि इस प्रकार का प्रयोग तत्सम शब्दों का प्रयोग अभिजात वर्ग की भाषा का प्रदर्शन है।

<sup>151</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p – 333

<sup>152</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -1, पृ -360

८) **स्रोतभाषा** - Over the surface of the troubled main swept the screaming bird;—and on the tenth evening the sea went down a deep blood-red colour, like a lamp of evil omen extinguishing beneath the mighty arch of heaven which now overhung the boundless ocean like a tremendous sheet of lead.<sup>153</sup>

**तत्सम शब्दावली** - तरंग पर तरंग उठने लगी समुद्री पक्षी चिल्ला-चिल्लाकर चारों ओर उड़ने लगे। लाल अंगारे के गोले की तरह सूर्य धीरे-धीरे अनंत आकाशपटस्पर्शी प्रगाढ़ नीलिमामायी जलराशि में छिप गया। इन सब अशुभ लक्षणों को देखकर जहाज़ वाले समझ, गए कि तूफ़ान आना ही चाहता है।<sup>154</sup>

**विश्लेषण** - जोसेफ विल्मोट के अनुवादकों ने समुद्र में आने वाले तूफ़ान में मौसम का परिवर्तन दिखाया है। 'सूर्य धीरे-धीरे अनंत आकाशपटस्पर्शी प्रगाढ़ नीलिमामाये जलराशि' पदों में प्रकृति का मनोभावी चित्रण किया गया है। तत्सम शब्दावली के प्रयोग से सूरज का चित्रण सुन्दर प्रतीत हो रहा है।

### **देशज शब्दावली का प्रयोग**

देशज शब्द वे होते हैं जो किसी क्षेत्र विशेष में या देश विशेष में ही प्रयोग किये जाते हैं। उनका कोई वैश्विक रूप नहीं होता है। इस प्रकार के शब्दों को शब्दकोश और मानक शब्दावली में कोई स्थान प्राप्त नहीं होता है। उत्तर भारत में जब हिंदी का विकास नया-नया हुआ था तब लोग अपने ही गढ़े हुए कुछ शब्दों का प्रयोग करते थे। परन्तु जिस समय आलोच्य उपन्यासों का अनुवाद हुआ उस समय हिन्दी के मानक शब्दों का प्रचलन भी कम था। हालाँकि देशज शब्द लक्ष्य भाषी समाज की आंचलिकता को प्रदर्शित करते हैं। इसीलिए कहीं-कहीं इनका प्रयोग

<sup>153</sup> जोसेफ विल्मोट, प -373

<sup>154</sup> जोसेफ विल्मोट, प - 475



स्वाभाविक भी है। लक्ष्य भाषा का स्वाद देशज शब्दों के बिना संभव ही नहीं हो सकता है। कुछ अटपटे, देशज या स्वयं गढ़े हुए शब्दों के विषय में कैलाश भाटिया जी का कहना है कि “जब हमें मूल रूप से कोई सटीक शब्द नहीं मिल पाता, तब कई बार हमें शब्दों को गढ़ना भी पड़ता है। प्रारम्भ में ऐसे गढ़े हुए शब्द अटपटे से लगते हैं, लेकिन बार- बार व्यवहार में आने पर वे अपने बन जाते हैं और उनका अजनबीपन जाता रहता है। हर भाषा के विकास में ऐसी स्थितियाँ आती हैं।”<sup>155</sup> इसीलिए रेनॉल्ड्स के भी उपन्यास शहरी वातावरण पर लिखे गए हैं लेकिन उनमें जीवन की साधारण घटनाओं का उल्लेख होने पर भी हिन्दी के पाठकों के लिये अनुवादकों ने उन्हें आत्मीय बनाने का प्रयास किया है। इसीलिए विदेशी समाज का एहसास अनूदित उपन्यासों में कम होता है।

९) अंग्रेजी - In fact, he was apparelled as an old woman, with a dark brown cloak, and the hood drawn over his countenance, which was further shaded by a dingy cap having an enormous frill. He carried a bundle of matches in his hand—and in this disguise posted himself exactly opposite the door of the chandler's shop.<sup>156</sup>

**लक्ष्यभाषा** - सेम्पसन उस वक्त वहां से भेस बदल कर निकला और उस वक्त खासा एक बूढ़ी औरत बन गया था। “काला लाबादा ओढ़े हुए, टोकरी के बराबर एक पुरानी हैट सर पर रखे हुए, खासी एक गंवार औरत बनकर वह बाहर निकला। सारांश यह है कि उसे कोई मिस्टर सेम्पसन नहीं कह सकता था। हाथ में दिया सलाई का एक बण्डल लेकर वह ठीक उसी दुकान के सामने आ खड़ा हुआ”<sup>157</sup>

<sup>155</sup> भाटिया, डॉ. कैलाश चन्द्र, *अनुवाद कला सिद्धांत और प्रयोग*, नयी दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1985, पृ- 22

<sup>156</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 3, p-187

<sup>157</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -6, पृ -34

**विवेचन** - सेम्पसन जब अपनी तहकीकात करने के लिए लन्दन के उस गन्दे मोहल्ले में जाता है, तब वह अपने असली रूप में नहीं बल्कि एक औरत बनकर जाता है। इसके लिए अनुवादक ने उसके रूप की व्याख्या करते हुए कुछ देशज शब्दों का प्रयोग किया है। जैसे 'a dark brown cloak' का अनुवाद 'काला लाबादा ओढ़े हुए', 'the hood drawn over his countenance, which was further shaded by a dingy cap having an enormous frill' का अनुवाद 'टोकरी के बराबर एक पुरानी हैट', 'an old woman' का 'एक गंवार औरत' किया है, 'abundle of matches' का 'दिया सलाई का एक बण्डल' इस अंतिम पद में 'बण्डल' अंग्रेजी शब्द का लिप्यन्तरण है। इस शब्द का लिप्यन्तरण ही सम्भव था। लेकिन फिर भी इसका प्रयोग इन देशज शब्दों के बीच संप्रेषणीय बन रहा है।

१०) "Well, my lord—or Royal Highness—I'll explain to you exactly the predicament I stand in, You see I'm now playing at hide and seek—afraid to go near my own house "<sup>158</sup>

**लक्ष्यभाषा** - "मेरे प्रभो ! मैं स्पष्ट शब्दों में अपनी अवस्था बताता हूँ आप तो देखते ही हैं कि मैं इधर-उधर-लुक्का-चोरी खेल रहा हूँ तो अपने मकान के पास आने में भी डरता हूँ।"<sup>159</sup>

**विवेचन** - हैंगमैन को सरकार की तरफ से फांसी की सजा दी गयी थी। उसे अर्ल ने भी उसे अपनी बीवी से दूर रहने और देश से बाहर चले जाने की सलाह भी दी थी। नहीं तो वह उसे मार डालता। देश में वापस रहने के लिए और फांसी की सजा से मुक्ति पाने के लिए वह प्रिंस से प्रार्थना करता है। उसके इधर-उधर छुपते फिरने के लिए अनुवादक ने 'hide and seek' शब्द की जगह 'लुक्का-चोरी' देशज शब्द का

<sup>158</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol.3, p- 224

<sup>159</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -6, पृ -177

प्रयोग किया है। इसकी जगह यदि चोरी-छिपे शब्द का प्रयोग होता तो अधिक सटीक लगता। इस शब्द का प्रयोग ठीक नहीं लग रहा है।

११) अंग्रेजी - He felt agatha's head gently droop upon his shoulder. It was true that she had on a plain travelling-bonnet, so that the silk material alone came in contact with him: but Btill his extreme sense of propriety made him shrink from anything that appeared to approach an undue familiarity.<sup>160</sup>

**लक्ष्यभाषा** - रात के समय “उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि अगैथा का सिर उनके कंधे पर आ लगा है। यद्यपि केवल उसके **बोनेट का\*** किनारा ही उनके कंधे से आ लगा था। तो भी अपनी भद्रता के खयाल से इस प्रकार का हेलमेल उन्हें बुरा मालूम हुआ”<sup>161</sup>

**विवेचन** - जैसोलिन और अगैथा अपनी दोनों बहनों के साथ जब उल्वीच की ओर एक साथ एक ही गाड़ी में जा रहे थे तब उन स्त्रियों की यही योजना थी कि वे जैसोलिन को अपनी ओर आकर्षित करेंगी और रानी के खिलाफ हो रही योजना से उसे दूर कर देंगी। इसी के लिए रात के समय अगैथा बार-बार उसके कंधे पर गिरती रहती है। यहाँ लेखक की एक पंक्ति ‘he made due allowances for the present little incident’ का अनुवादक ‘हेलमेल’ किया है। यहाँ ‘हेलमेल’ जैसे देशज शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसकी जगह पर ‘इस हरकत’ शब्द का भी प्रयोग किया जाता तो अधिक सटीक रहता।

१२) अंग्रेजी - "But thou Shall be revenged, my poor murdered wife," he resumed at length. "Yes—the atrocious system under which the poor of this country live and die, hath murdered thee! Thou art one of the myriad million victims whom that system have already sent, starved or broken-hearted, to untimely graves. Oh! curses—curses—hell's curses upon such a system ! But thou shalt be

<sup>160</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 3, p - 191

<sup>161</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -6, पृ -40

revenged, I repeat— yes, by the living God! thou shalt be revenged ! For I will prove a terror to society—to that society whose system has driven me to despair. The deity made me a man: 'this the world which has made me a monster!'<sup>162</sup>

**लक्ष्यभाषा** - इतना कहकर वह प्रायः एक मिनट तक लाश की तरफ कड़ी निगाह से देखने लगा, – तुम्हें भूखा मार डाला है। देशाचार ने ही तुम्हें मार डाला है। मैं कसम खाकर कहता हूँ कि इसका बदला जरूर-जरूर लूंगा। मेरा घर द्वार सब छुड़वा दिया और मुझे सदा के लिए पागल बना डाला ! अच्छा मैं भी उसका वैसा ही बदला लूंगा। लोग मेरा नाम सुनते ही थर्रा उठेंगे। विधाता ने मुझे मनुष्य गढ़ा था, पर लोगों ने मुझे राक्षस और नर पिशाच बना डाला।<sup>163</sup>

**विवेचन** - शहर भर की कब्रें खोदने के बाद जब मेलमथ को अपनी पत्नी की लाश एक कब्र से मिलती है तो वह उसके सामने रोने लगता है। सरकार के देश निकाला देने के कारण उसका परिवार भूखो मरने लगता है। एक वक्त के खाने के लिए भी उसके बच्चे मोहताज हो जाते हैं। उसकी बीवी की मौत भूखे मरने के कारण हो गयी। अपनी पत्नी की लाश को देखते ही वह अपना आपा खो बैठता है। उसके मन में अपने देश की शासन व्यवस्था के लिए घृणा है। वह अपना मानसिक संतुलन पूरी तरह से खो बैठता है। अब वह सबसे बदला लेना चाहता है। इस पर जब वह कहता है 'I am—striking terror into the soul of that community' इसका अनुवाद अनुवादक ने 'लोग मेरा नाम सुनते ही थर्रा उठेंगे' किया है। यह अनुवाद उसकी घृणा और दर्द को दिखाने के लिए काफी है। यह देशज शब्द उसके डर से कांपने की क्रिया-प्रतिक्रिया को अभिव्यक्त करता है।

१३) अंग्रेजी - And well indeed might they gaze with admiration upon the huntress: for never had a more splendid creature burst upon their

<sup>162</sup> *Mysteries of the court of London, Vol.1, p -148*

<sup>163</sup> *लन्दन रहस्य, खंड -6, पृ - 417*

view. The cold night air had imparted the richest carnation glow to those cheeks that looked so firm and soft; and her fine large dark eyes, so clear and bright, seemed to swim in a living lustre. The black brows, well divided and rather full than thin, set off the stainless white of her high and noble forehead : her coral lips, on which a good-tempered smile was playing, half revealed the pearly teeth ;—and her luxuriant hair, dark as night, and glossy as the raven's wing, showered in a myriad curls upon her shoulders. Then her bearing was so graceful and elegant—the garb which she wore so admirably became her symmetrical form, and her shape was characterised by so much unrestrained lightness, that she was all which one might expect to meet in a daring huntress, who was like wise a charming woman. <sup>164</sup>

**लक्ष्यभाषा** - “अब वे लोग आँखे फाड़-फाड़कर ताज्जुब के साथ उस शिकारिनी को देखने लगे। कारण वैसी अपूर्व मूर्ति पहले उन लोगों ने कभी न देखी थी। रात की ठंडी हवा लगने पर उसके मदभरे नेत्र बड़े सुहावने लगने लगते थे उसकी काली-काली खमदार भौंहें उन्नत, श्वेत ललाट की अपूर्व शोभा बढ़ा रही थी। उसकी मंद-मंद मुस्कान उसके मोती जैसे चमकीले दांतों की शोभा बढ़ा रहे थे” <sup>165</sup>

**विवेचन** - एक दिन बेगारमैन के शराबखाने में मीगल्स और उसकी प्रेमिका दोनों जाते हैं। अमेज़न को देख वहन उपस्थित सारे चोर डाकू जो वहां शराब पी रहे थे अचंभित हो गये। उन्होंने इससे पहले ऐसी स्त्री नहीं देखी थी। वह कभी भी नारी वेश में नहीं रहती थी हमेशा मर्दाना पोशाक पहने रहती थी। उसे लेखक ने ‘huntress’ का नाम दिया है। अनुवादक इस शब्द का अनुवाद ‘शिकारिनी’ करते हैं। वैसे तो शिकारिनी

<sup>164</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p - 115

<sup>165</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -1, पृ - 379

शब्द का प्रयोग होता है लेकिन अनुवादक ने देशज रूप में शिकारिनी लिखा है। यह उद्धृत पंक्ति के अनुसार सही प्रयोग है।

१४) अंग्रेजी - It was in the middle of September, 1814, that his Royal Highness the Prince of Wales, now Regent of the kingdom, accepted an invitation to dine with one of his oldest and most faithful friends, the Marquis of Leveson.<sup>166</sup>

**लक्ष्यभाषा** - "1814 ईस्वी के सितम्बर महीने के मध्य में एक दिन प्रिंस ऑफ वेल्स ने, (जो राज्य के प्रतिनिधि थे), अपने बहुत पुराने दोस्त मार्किवस ऑफ लेवसेन के यहाँ खाना खाने का नेवता स्वीकार किया।"<sup>167</sup>

**विवेचन** - प्रिंस के दोस्त मार्किवस ऑफ लेवसेन प्रिंस को अपने घर पर रात के खाने का लिए बुलाते हैं। इसके लिए अनुवादक ने 'an invitation to dine' शब्द की जगह 'नेवता' लिखा है। यह शब्द देशज है। वैसे आमबोलचाल के शब्दों को देखा जाये तो उसमें 'न्यौता' शब्द का प्रयोग होता है। परन्तु आज भी दादा-दादी 'नेवता' शब्द ही बोलते हैं। इस देशज शब्द का प्रयोग भी सही है।

१५) अंग्रेजी - No—her beauty is not of a celestial character, "remarked Sir Douglas." It is the voluptuous loveliness which one's imagination pictures in an odalisque, reclining languidly on the cushion in some orient seraglio."<sup>168</sup>

**लक्ष्यभाषा** - डगलस - "नहीं, नहीं उसकी सुन्दरता स्वर्गीय सुन्दरता नहीं है। उसकी खूबसूरती तो उस यारबाश लौंडी की तरह है, जो किसी पूर्वी महल-सरा में गद्दी पर सुस्त पड़ी हो।"<sup>169</sup>

<sup>166</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 3, p- 8

<sup>167</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -5, पृ - 19

<sup>168</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol 3, p- 10

<sup>169</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -5, पृ -25

**विवेचन** - यहाँ पर अनुवादक ने देशज शब्दों के रूप में अभद्र भाषा का प्रयोग किया है। एक सुन्दर स्त्री जिसके पीछे शहर के सभी कामुक आशिक पड़े हुए हैं वे सभी उससे सम्बन्ध बनाना चाहते हैं। डगलस और मल्पास जब आपस में उसके बारे में बात कर रहे थे तब वे उसकी खूबसूरती के सन्दर्भ में अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं। जिसके लिए अनुवादक ने कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जो नीच लोग ही एक स्त्री के लिए प्रयोग कर सकते थे। 'It is the voluptuous loveliness which one's imagination pictures in an odalisque' का अनुवाद 'उसकी खूबसूरती तो उस यारबाश लौंडी की तरह है' किया है। जिस प्रकार के चरित्र के लोग मल्पास और डगलस हैं उनके लिए इसी प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया जा सकता था। ये शब्द लेखक के सन्देश का अर्थ वहन करने में सफल हैं।

#### पदों में देशज शब्दों का प्रयोग

१६) अंग्रेजी - The fourth member of the delectable group was Mr. Horace Sackville. This young gentleman, who had no titular prefix to his name.<sup>170</sup>

**लक्ष्यभाषा** - "इस मजेदार मंडली के चौथे मेम्बर मिस्टर होरेस सैकविल थे। इनके नाम के साथ कोई पदवी का पुछल्ला नहीं लगा हुआ था"<sup>171</sup>

**विवेचन** - होरेस सैकविल मिस वेथर्स्ट के भतीजे थे और ये प्रिंस की नाजायास संतान भी थे। साथ ही प्रिंस की मित्र मंडली में ये भी शामिल थे। प्रिंस को इनसे बहुत अधिक लगाव था। इन्हें मिस वेथर्स्ट ने पाला था और इनके माता-पिता का कोई पता नहीं था। इनके नाम के पीछे कोई नाम न होने पर लेखक कहते हैं 'This young gentleman, who had no titular prefix to his name' इसका अनुवाद अनुवादक ने 'पदवी का पुछल्ला नहीं था' किया है। लेकिन अधिक धन संपत्ति होने के कारण

<sup>170</sup> *Mysteries of the court of London* Vol. 3, p- 9

<sup>171</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -5, पृ -21

इनका शहर के संभ्रांत लोगों के बीच उठना-बैठना था। इसीलिए यह पद इस वाक्य के साथ पूरा न्याय कर रहा है। देशज शब्द के प्रयोग ने इसे प्रभावी बना दिया है।

१७) अंग्रेजी - On entering at the small and narrow street-door, there is a sharp descent in the passage—thus indicating that slope towards the ditch which has already been mentioned.<sup>172</sup>

लक्ष्यभाषा - सड़क के छोटे और तंग दरवाज़ों से मकान में घुसने पर राह नीचे को जाती नजर आती है, जिससे मालूम होता है, कि खाई की ओर जमीन ढलुआँ है, जैसाकि पहले कहा जा चुका है।<sup>173</sup>

विवेचन - इस अंश में रेनॉल्ड्स ने जैकोब टापू के अन्दर जाने और वहाँ से दिखने वाले दृश्य की चर्चा की है। इस दृश्य में वे एक सड़क की सीढ़ियों के बारे में बताते हुए कहते हैं 'thus indicating that slope towards the ditch' जिसका अनुवाद अनुवादक ने 'कि खाई की ओर जमीन ढलुआँ है' किया है। यहाँ पर 'ढलुआँ' जैसे देशज शब्द का प्रयोग हिंदी पाठकों की समझ के अनुसार किया गया है।

### वाक्यों में देशज शब्दों का प्रयोग

१८) अंग्रेजी - her form was slender her shape symmetrical—and her department characterised by dignified elegance<sup>174</sup>

लक्ष्यभाषा - "अंग कैसे सुडौल बने हैं, मानो किसी सुघड़ शिल्पी ने सुन्दर सांचे में ढाल दिए हों"<sup>175</sup>

विवेचन - इस अंश में लेखक ने 'dignified elegance' शब्द रखा है। इसके स्थान पर शब्दकोश के गौरवशाली मनोहर शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है। इसकी जगह

<sup>172</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 3, p -79

<sup>173</sup> लन्दन रहस्य, खंड -5, पृ -239

<sup>174</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 2, p -186

<sup>175</sup> लन्दन रहस्य, खंड -3, पृ -546



अनुवादक ने 'सुघड़ शिल्पी' जैसे देशज शब्द का प्रयोग किया है। इस शब्द का अपना ही एक महत्त्व है। हिंदी पाठकों के लिए भी बोधगम्य है।

१९) अंग्रेजी - Then take it!" ejaculated Eleanor, abruptly stretching forth her right arm from beneath the cloak and the sudden movement was followed, rapidly as the eye winks, by the report of a pistol a short quick cry burst from Ramsey's lips—and the next instant, while that death-sound was yet piercing the air, he threw up his arms and fell down dead!<sup>176</sup>

**लक्ष्यभाषा** - "अच्छा तो लो"इतना कह और लबादे के अन्दर से हाथ निकाल कर एलिनोर ने उसकी ओर बढ़ा दिया। साथ ही पलक गिरते न गिरते धड़ाम से पिस्तौल की भीषण आवाज़ हो गयी।<sup>177</sup>

**विवेचन** - यहाँ पर अनुवादक ने cloak के लिए 'लबादे', 'rapidly' के लिए धड़ाम, by 'the report of a pistol' के स्थान पर 'पिस्तौल की भीषण आवाज़' जैसे शब्दों का प्रयोग किया है। ये शब्द आम बोलचाल के हैं। जिन्हें समझने के लिए किसी शब्दकोश की आवश्यकता नहीं है। ये शब्द केवल वही व्यक्ति समझ सकता है जो इस भाषा को बोलने वाले समाज से परिचित हो।

२०) अंग्रेजी - Answered Rao;"and he now loves one who possesses an ardour of temperament and a voluptuousness of disposition quite equal to his own.<sup>178</sup>

**लक्ष्यभाषा** - "नहीं वह नशा तो उतर गया है, इस समय जिस स्त्री पर वे लडू हैं वह आग्रह और प्रेमोत्सान में उनके योग्य ही है।<sup>179</sup>

**विवेचन** - लेखक ने मिस ट्रीलौनी के प्रति प्रिंस की लालसा को दिखाया है। जो प्रेम तो नहीं है, लेकिन बस एक स्त्री के प्रति कामुक भावना है। इस प्रकार से लेखक का

<sup>176</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 2, p- 298

<sup>177</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड-4, पृ -110

<sup>178</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 2, p - 310

<sup>179</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड-4, पृ-147

यह भाव 'love' शब्द में तो व्यक्त नहीं हो पा रहा है। लेकिन अनुवादक ने उनके लिखे हुए 'he now loves one' का अनुवाद 'स्त्री पर वे लड्डू हैं' कर दिया है, जो इस भाव को लेखक से ज्यादा अच्छी अभिव्यक्ति कर पा रहा है।

२१) अंग्रेजी - "Come, Julia dear—come—I didn't mean to vex you—I—  
assure you I did not,"stammered Page, absolutely frightened by the  
fiendish countenance that thus glared so menacingly upon him.<sup>180</sup>

**लक्ष्यभाषा** - जूलिया का विकराल रूप देखकर पेज की तिल्ली काँप उठी। उसने धीरे से कहा नहीं प्यारी क्रोध मत करो।<sup>181</sup>

**विवेचन** - यहाँ पर अनुवादक ने stammered की जगह पर 'तिल्ली' शब्द का प्रयोग किया है। इसकी जगह पर केवल 'काँप उठा' शब्द का भी प्रयोग किया जा सकता था। लेकिन 'तिल्ली' शब्द का प्रयोग करने पर ऐसा लगता है जैसे अनुवादक ने अपनी स्वाभाविक भाषा और भाव को यहाँ व्यक्त कर दिया हो।

२२)अंग्रेजी - I have failed in all my endeavours to do anything honest to  
obtain a livelihood,"<sup>182</sup>

२३) **लक्ष्यभाषा** - बड़े कष्ट में हूँ पास में फूटी कौड़ी भी नहीं है पास में रहने को  
चौआभर भी जगह नहीं है।<sup>183</sup>

**विवेचन** - जूलिया ब्रिग्स और पेज के साथ बैठकर बात कर रही होती है। अपनी खराब आर्थिक स्थिति के बारे में बात करते हुए ही वह कहती है कि न तो मेरे पास रहने के लिए ही कोई जगह है और न ही जीवन गुज़ारने के लिए पैसे ही हैं। उपर्युक्त अंश में वह अपनी दयनीय आर्थिक स्थिति का बखान कर रही है। 'फूटी कौड़ी' और 'चौआभर' जैसे देशज शब्दों के प्रयोग ने लेखक के सन्देश में कोई बाधा उत्पन्न नहीं

<sup>180</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol., p - 109

<sup>181</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -1, पृ-365

<sup>182</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p - 160

<sup>183</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -1, पृ -537

की है। जिन देशज शब्दों का प्रयोग अनुवादक ने किया है उनके समतुल्य कोई शब्द अंग्रेजी अंश में नहीं मिला है। यहाँ पर यह अवश्य कहा जा सकता है कि लेखक ने अपनी कला और समझ के अनुसार इस अंश का संदर्भगत अनुवाद किया है।

२४) अंग्रेजी - Its pestilential atmosphere is swarming with human life—men, women and children herding there as in the other poor neighbourhoods of London.<sup>184</sup>

लक्ष्यभाषा - “तौ भी उस जगह में जहाँ गन्दी खाई मौजूद और दुर्गंधित वायु भरी है मर्द, औरत, लड़के, लड़कियां, खचाखच भरी हुई हैं।<sup>185</sup>

विवेचन - यहाँ पर अनुवादक ने ‘खचाखच’ शब्द का प्रयोग किया है। यह प्रयोग इस मोहल्ले के दृश्य के लिए उपयुक्त भी लग रहा है। लन्दन का एक ऐसा दृश्य जिसकी कल्पना करना भी अपने आप में एक चुनौती है। उस मोहल्ले के दृश्य को अनुवादक ने साकार कर दिया है। साथ ही जब उस मोहल्ले में लोगों की भीड़ एकत्रित होती है तो वहाँ पर सांस तक लेने की जगह नहीं बचती है। इसीलिए यहाँ पर ‘men, women, and children herding there’ इस पद के लिए ‘खचाखच’ शब्द का प्रयोग कर अनुवादक ने सन्देश को अनुवाद में संप्रेषणीय बना दिया है।

## लिप्यन्तरण और हिंदीकरण

साहित्य की विविध विधाएं होती हैं। जैसे प्रत्येक विधा की रचना करने का तरीका भिन्न होता है, उसी प्रकार अनुवाद करने की कला में भी भिन्नता आ जाती है। स्रोत भाषा का जब लक्ष्य भाषा में अनुवाद किया जाता है तो उसकी भी अपनी कुछ सीमाएं होती हैं। वह अपने विचारों का प्रदर्शन करने के लिए किसी प्रकार की विद्वता को दिखाने के लिए स्वतंत्र नहीं होता है। लेखक के विचारों को पूर्ण सन्देश

<sup>184</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 3, p -78-79

<sup>185</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -5, पृ -239

के साथ संप्रेषित करना उसका कर्तव्य होता है। अनुवाद के अंतर्गत अक्सर बहु तसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अनुवाद करते हुए कुछ कठिनाइयाँ इस प्रकार की भी सामने आती हैं जिनका उपाय करना आवश्यक हो जाता है। लेकिन अनुवाद के पाठ में कुछ वाक्य, सन्देश आदि ऐसे भी आ जाते हैं जिनका कोई निराकरण नहीं किया जा सकता है। अनुवादक अपने कार्य के प्रति निष्ठा भी बरते तो भी कुछ प्रयोग ऐसे हो ही जाते हैं जिनमें कुछ कमियां नज़र आती हैं। मुख्य समस्या यह भी है कि कुछ शब्दों के पर्याय ढूँढने में भी समस्या आती है। अक्सर ऐसा भी होता है कि वाक्य रचना में गलत पर्याय रखने से अर्थ में परिवर्तन भी हो जाता है। अक्सर जिस क्षेत्र या देश विशेष की रचना को अनूदित किया जाता है उसमें कुछ शब्द ऐसे आते हैं जिन्हें उसी रूप में रखना आवश्यक हो जाता है। इससे अनूदित कृति का रूप विरूप तो नहीं बनता है। लेकिन उसके लिए पाठक को शब्दकोश की आवश्यकता पड़ जाती है। स्रोत भाषा के कुछ शब्दों को लक्ष्य भाषा में इस प्रकार इसीलिए भी रखा जाता है ताकि मूल शब्द प्रदर्शित हो सकें। ऐसे में एक देश की परंपरागत बातें और दृष्टि वहां की भाषा में भी परिलक्षित होती है।

मानव प्रकृति का जिस प्रकार विकास होता है, उसकी भाषा भी उसी प्रकार बनती चली जाती है। एक देश के विभिन्न भूभागों में लोग विदेशी भाषा का प्रयोग अक्सर अपनी सुविधा के अनुसार करना शुरू कर देते हैं। रेनॉल्ड्स के उपन्यास अंग्रेज़ी भाषा में लिखे गए थे। अनुवादक ने उनके उपन्यासों का अनुवाद करते हुए अंग्रेज़ी के ही कुछ शब्दों का हिन्दीकरण कर दिया है। इस प्रकार के प्रयोग अनुवादक ने किसी मंतव्य से नहीं किये हैं। इनका प्रयोग स्वाभाविक रूप से इनके अनुवादों में आ गया है। इसका दूसरा अर्थ यह भी है कि लेखक ने शब्दकोश की सहायता नहीं ली है और कुछ शब्दों के लिए शब्दकोश की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इनमें से कुछ शब्द ऐसे भी हैं जिनका कोई संदर्भगत प्रयोग करते भी नहीं बनता था। इसीलिए थोड़े

परिवर्तन के साथ उनका प्रयोग कर लिया जाता है। अर्थात् उनको केवल उसी रूप में समझा जा सकता है। उदाहरण के लिए कुछ देशों की सेना के नाम आदि। ऐसे कुछ प्रयोग करने से मूल भाषा का ज्ञान भी आसानी से हो जाता है। अनुवादक ने कुछ ऐसे ही चर्चित और प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया है, जो निम्नलिखित दो भागों में विभाजित किये गए हैं -

## लिप्यन्तरण

इसे अंग्रेजी में 'Transliteration' कहते हैं। इसका अर्थ एक भाषा के लिपि चिन्हों के आधार पर दूसरी भाषा के लिपि चिन्हों को समानता के साथ प्रतिस्थापित करना है। इसे दूसरे शब्दों में समझा जाए तो एक ही शब्द के मौखिक और लिखित दोनों रूप भिन्न होते हैं। सदानन्द शुक्ल ने अंग्रेजी की प्रकृति समझने के बाद अन्यभाषिक शब्दों को समभाषिक शब्दों में लिखा है। इसमें वर्तनी का सबसे अधिक ध्यान रखना पड़ता है। स्रोत भाषा की स्वनिमिक इकाइयों का लक्ष्य भाषा की लिखित इकाइयों में परिवर्तन किया जाता है। यदि दूसरे शब्दों में कहा जाए तो एक भाषा की स्वनिमिक इकाइयों का दूसरी भाषा की लिपि में परिवर्तन लिप्यन्तरण कहलाता है। इसमें स्रोत भाषा के मौखिक माध्यम का लक्ष्य भाषा के लिखित माध्यम में रूपांतरण किया जाता है। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में ऐसे बहुत से शब्द आये हैं जिनका लेखक ने अनुवाद नहीं किया और न ही अनुवाद किया ही जा सकता था। जिससे मूल उपन्यास का अंग्रेजी भाषा में लिखा होना तो ज्ञात होता ही है। साथ ही यह भी ज्ञात होता है कि उन शब्दों का अनुवाद शायद संभव नहीं था। इसीलिए भी अनुवादक ने उन्हें छोड़ दिया।

इस सन्दर्भ में डॉ. सुरेश कुमार का मत है "लिप्यन्तरण अभ्यास-रूढ़ प्रक्रिया है जो अनुवाद की सीमा में नहीं आती। अनुवाद हर बार नए सिरे से करना होता है। चाहे उसमें समान तत्व की आवृत्ति क्यों न होती रहे। लिप्यन्तरण व्यवस्था को

योजनाबद्ध रीति से निश्चित कर रूढ़ रूप में प्रयोग में लाया जाता है। लिप्यंकन और लिप्यन्तरण में भी अंतर है। किसी भाषा के स्वरों को उनके उच्चारण मूल्य से सहसंबद्ध लिपि चिन्हों में अंकित करना लिप्यंकन कहलाता है। लिप्यंकन में किसी भाषा के स्वनिर्मों को लिपिबद्ध किया जाता है परन्तु लिप्यन्तरण में दो भाषाओं के लिपिचिन्हों (जिन्हें उच्चारण मूल्य भी समाविष्ट है) के बीच 'एक के लिए एक' के आधार पर संवादिता निश्चित हो जाती है। लिप्यंकन पूर्ववर्ती स्थिति है और भाषा से जुड़ी है; लिप्यन्तरण परवर्ती स्थिति है जिसका भाषांतरण/अनुवाद में उपयोग है।<sup>186</sup>

तीनों ही अनुवादकों ने भाषा को लेकर ऐसे कुछ प्रयोग किये हैं। अंग्रेजी और हिंदी के मिले जुले रूप से बने ऐसे ही कुछ संप्रेषणीय शब्दों का उदाहरण निम्नलिखित है -

१) पश्चिमी - "as for the bearing of her Royal Righness being majestic," continued Lady Jersey, "such a statement could only be looked upon as one of those fullsome compliments which are invariably paid to royal or illustrious personages. For no individual would be so disloyal and no newspaper so bold as to proclaim the real truth," added her ladyship. "It is the grovelling, servile, and spaniel-like character of Englishmen to puff off everything royal, simply because it is royal."<sup>187</sup>

**हिन्दीकरण** - "आप ही कहिये, - ऐसे स्थल में कहने की हिम्मत किस अखबार की पड़ सकती है? किस आदमी को साहस हो सकता है? जानते तो हो कि खुशामद करने में अँगरेज जाती ठीक स्पेनियार्ड कुत्ते के समान है"<sup>188</sup>

<sup>186</sup> कुमार, डॉ. सुरेश, *अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा*, दरियागंज: नयी दिल्ली, वाणी प्रकाशन, पंचम संस्करण, 2007, पृ- 80-81

<sup>187</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 3, p -321

<sup>188</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -3, पृ - 609

**स्पष्टीकरण** - यहाँ पर प्रिंस लेडी जर्सी से बात कर रहे हैं। वे जर्सी से यह जानना चाहते हैं कि अखबार वालों ने प्रिंस के विवाह के बाद उनकी पत्नी रानी कैरोलाइन के सौन्दर्य के बारे में कुछ भी क्यों नहीं छापा है। इस पर प्रिंस की प्रिय जर्सी उत्तर देती है कि 'अंगरेज़ जाती ठीक स्पेनियाई कुत्ते के समान है। इस पद में जो व्यंग्य का रूप झलकना चाहिए था वह पूर्णरूपेण पाठक को प्रभावित कर रहा है। उसका प्रभाव बनाए रखने के लिए अनुवादक ने 'spaniel-like character' की जगह 'स्पेनियाई कुत्ते' शब्दों का हिन्दीकरण करना अनिवार्य समझा है। सदानंद शुक्ल का यह प्रयोग प्रभावी बन पड़ा है। यदि इसकी जगह पर 'स्पेन के कुत्ते के समान' लिखा जाता तो यह शब्द उतना अच्छा नहीं लगता।

२) **पश्चिमी** - You would pledge your oath now to renew your former friendship towards me: but when once you were outside these doors, you would enact your past treachery all over again. You perceive, therefore, that I know your character too well to place any reliance upon your honor as a gentleman, your credit as a man, or your word as a prince. Indeed, I shall not feel easy in my mind, nor disencumber my heart of the load which your perfidy has heaped upon it, until I have expressed my real opinion of you: which is, that you are about as precious a rascal as ever disgraced the human species."<sup>189</sup>

**लिप्यन्तरण** - तुम्हें क्या तुम तो इस वक्त सहज हो दोस्त बन जाओगे, पर यहाँ से बाहर कदम रखते ही विश्वासघात करने से कहीं बाज न आओगे। यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम भी समझते होगे तुम कैसे आदमी हो। तुम कैसे आदमी हो यह बिना खोलकर कहे रहा नहीं जा सकता है। मनुष्यों में तुम जैसा 'रेस्कल' और कोई है या नहीं सो नहीं जानता।"<sup>190</sup>

<sup>189</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 3, p - 276

<sup>190</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -4, पृ - 51

**स्पष्टीकरण** - यह घटना उस समय की है जब प्रिंस ने एलिनोर के सम्मान को हानि पहुँचाने का प्रयास किया था। अचानक से वहाँ पर मीगल्स पहुँच जाता है जो एलिनोर को बचाते हुए प्रिंस के विरुद्ध हो जाता है इसके बाद प्रिंस भी उसे समझाने का प्रयास करते हैं लेकिन वह भी जानता है कि प्रिंस कभी नहीं बदल सकते हैं। सम्युल्यता का भाव लाने के लिए यहाँ पर अंग्रेजी गाली का लिप्यन्तरण करना आवश्यक था। इसीलिए 'rascal' के स्थान पर सदानंद शुक्ल ने 'रैस्कल' शब्द रखा है। कोई अन्य शब्द रख देने पर मीगल्स की दी हुई गाली उतनी प्रभावी नहीं बनती।

३) **पश्चिमी** - He said nothing more for the present: but upon reaching the house, desired a footman to take me into the servants hall, give me some food, and conduct me to the library when I had received refreshment.<sup>191</sup>

**हिन्दीकरण** - "देखो ! इस लड़के को नौकरों वाले घर में ले जाकर खिलाओ-पिलाओ और जब यह खा पी चुके तब इसे मेरे पास लाइब्रेरीघर में ले आओ।"<sup>192</sup>

**स्पष्टीकरण-** अनुवादकों ने यहाँ पर 'library' की जगह 'लाइब्रेरीघर' शब्द का प्रयोग किया है। यहाँ पर आधे शब्द का लिप्यन्तरण किया गया है लेकिन आधा शब्द 'घर' अनुवादकों ने अपनी ओर से जोड़ा है। भारत में उस समय पर घरों के अन्दर अध्ययन करने के लिए संभवतः कोई विशिष्ट जगह या स्थान नहीं बना होता था। बहुत बड़े-बड़े घरों में ही पढ़ने के लिए विशिष्ट स्थान हुआ करता था। यही कारण रहा होगा कि अनुवादक ने यहाँ पर इस शब्द का प्रयोग किया है। इसकी जगह यदि 'लाइब्रेरी कक्ष' का प्रयोग किया जाता तो वह अच्छा अर्थ अभिव्यक्त कर पाता।

४) **पश्चिमी** - The library of Delmar Manor was a spacious and lofty room—very handsomely furnished—and the shelves of which were

<sup>191</sup> Joseph Wilmot, p- 13

<sup>192</sup> जोसफ विल्मोट, पृ - 45



crowded with books, being protected from the dust by glass doors.<sup>193</sup>

**हिन्दीकरण** - देलमर साहब का लाइब्रेरीवाला कमरा खूब लंबा चौड़ा और ऊँचा था चारों तरफ अलमारियों के अलावे तारों में किताबें भरी थीं, जिनमें शीशे और किवाड़ लगे थे।<sup>194</sup>

**स्पष्टीकरण** - अनुवादकों ने यहाँ पर 'library' शब्द के लिए 'लाइब्रेरीवाला कमरा' शब्द का प्रयोग किया है। लेकिन इससे पहले का प्रयोग इससे बिलकुल भिन्न था। इस शब्द का उन्होंने हिन्दीकरण कर दिया है। उन्होंने इसे अपने अनुसार परिवर्तित कर दिया है। यहाँ पर 'कमरा' शब्द से यह अभिव्यक्त हो रहा है कि यह एक घर के अंदर का ही हिस्सा है। आधा लिप्यन्तरण और आधा प्रयोग संदर्भानुसार किया गया है।

५) **पश्चिमी** - "Well, perish and be damned !" exclaimed the woman, who was indeed the night-nurse of the infirmary', as she flung open the door which separated the two rooms and appeared upon the threshold in a flannel gown tied loosely around the waist, and a dirty night cap with great frills flapping over her face.<sup>195</sup>

**हिन्दीकरण** - ये सब सुनने के कुछ देर बाद वहाँ पर एक खूबसूरतसी धाय आती है "रात में जाकर रोगियों की सेवा-शुश्रूषा करने का भार इसी औरत पर था। वह फलालेन का गाउन और सूती कश्मीरे की मैली कुचैली नाईट कैप पहने हुए थी।"<sup>196</sup>

**स्पष्टीकरण** - सदानंद शुक्ल ने यहाँ पर 'flannel gown' का हिन्दीकरण करते हुए 'फलालेन का गाउन' और 'a dirty night cap' का लिप्यन्तरण 'मैली कुचैली नाईट

<sup>193</sup> Joseph Wilmot, p -16

<sup>194</sup> जोसफ विल्मोट, पृ - 49

<sup>195</sup> Mysteries of the Court of London, Vol. 2, p -190

<sup>196</sup> लन्दन रहस्य, खंड -3, पृ - 461

कैप' किया है। अनुवादक को यहाँ पर 'flannel' शब्द के अर्थ को पाद-टिप्पणी में स्पष्ट कर देना चाहिए था। इसका हिन्दीकरण मात्र काफी नहीं था।

६) **पश्चिमी** - Answered Mr. Page. "The long and short of the matter is that I have recently moved into a nice little house in the Edgeware Road—Paradise Villas the place is called"<sup>197</sup>

**लिप्यन्तरण** - "वह कहता है कि "हाल ही में उसने एज्वर रोड पर एक छोटा सा मकान लिया है। उस स्थान को 'स्वर्ग-सदन' कहते हैं।"<sup>198</sup>

**विश्लेषण** - इस अनुच्छेद में अनुवादक ने 'Edgeware Road' का लिप्यन्तरण कर दिया है। मूल भाषा के भाव को बनाए रखने के लिए अनुवादक ने स्थानों के नाम में कोई परिवर्तन नहीं किया है। हालाँकि यहाँ पर अनुवादक के पास यह छूट थी कि वह अपने पाठकों की समझ के लिए किसी भारतीय सड़क का भी नाम लिख सकता था। परन्तु अनुवाद का यह प्रयोग पात्रों और कथा के अनुसार सही है। कुछ प्रख्यात स्थानों के नाम का लिप्यन्तरण करना ही उचित था।

७) **पश्चिमी** - Each cell contained an iron bedsheet screwed down to the stone pavement; and the bedding was of the strongest and coarsest material. No table—no chair—no article of furniture, in fine, save the iron bed, appeared in either of those cells. The light was admitted from narrow windows in the wall of the passage; and in winter time the place was alarmed by means of a fire at the end of that stone corridor.<sup>199</sup>

**लिप्यन्तरण** - हर एक कोठरी के सामने वाले फाटक में एक फुट लम्बी और एक फुट चौड़ी छोटी-सी खिड़की है। उसी से पागलों को खाना दिया जाता है। उन कोठरियों में टेबल कुर्सी आदि की कोई व्यवस्था नहीं है। हर एक कोठरी में एक-एक लोहे की

<sup>197</sup> Mysteries of the Court of London, Vol. 2, p -235

<sup>198</sup> लन्दन रहस्य, खंड -4, पृ -58

<sup>199</sup> Mysteries of the court of London, Vol. 1, p - 242

चारपाई पड़ी हुई है और उस पर एक मोटा बिस्तरा बिछा हुआ है। चारपाईयों के पांवे स्क्रू से जमीन में कसे हुए हैं। कोठरी में आग जलाने की भी व्यवस्था नहीं है। जाड़े के दिनों में सामने वाले रास्ते में एक जगह आग जला दी जाती है।<sup>200</sup>

**विश्लेषण** - यहाँ पर अनुवादक ने प्रत्येक शब्द का अनुवाद करने का प्रयास किया है। जैसे कुछ शब्द आये हैं 'लोहे की चारपाई', 'मोटा बिस्तरा', 'एक फुट चौड़ी छोटी-सी खिड़की' इन सभी का अनुवाद किया है। लेकिन उपर्युक्त अनुच्छेद में 'टेबल' और 'स्क्रू' शब्दों का लिप्यन्तरण कर दिया गया है। 'टेबल' की जगह 'मेज़' का प्रयोग किया जा सकता था। परन्तु 'स्क्रू' की जगह यदि अनुवादक 'पेंच' या 'पेंचों' से जमीन में कसे हुए थे लिखते तो यह प्रयोग ज्यादा अच्छा रहता। अनुवाद में एक लय भी बनी रहती।

८) **पश्चिमी** - The nobleman became pale as a corpse and staggered back as if struck by a death-blow : but, instantaneously recovering himself lie replied in a low hoarse tone, " Do so—and in the evening I will declare in the House of Lords the conditions upon which that same Philip Ramsey procured a pardon through the interest of the Prince of "Wales!"<sup>201</sup>

**हिन्दीकरण** - यह सुन पहले तो अर्ल मर्माहत हुए पर तुरंत ही संभलकर बोल उठे – "हो जाए,— पर मैं भी संध्या समय हाउस ऑफ़ लार्डस के सब मेम्बरों से कह दूंगा कि रामसे ने किस हरकत पर प्रिंस द्वारा रिहाई का परवाना पाया है।"<sup>202</sup>

**विश्लेषण** - यहाँ पर अनुवादक ने House of Lords के स्थान पर ' हाउस ऑफ़ लार्डस के सब मेम्बरों' का प्रयोग किया है। लिप्यन्तरण करते हुए अनुवादक ने अपनी ओर से 'मेम्बरों' शब्द अधिक जोड़ दिया है। 'मेम्बरों' शब्द का प्रयोग सही हुआ है।

<sup>200</sup> लंदन रहस्य, खंड 4, पृ - 80

<sup>201</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p - 282

<sup>202</sup> लन्दन रहस्य, खंड -4, पृ - 63

यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि house of lords में केवल सदस्य ही रहेंगे, इसीलिए यह प्रयोग स्वाभाविक था। अनुवादक का यह प्रयोग अपने पाठकों को समझाने का एक प्रयास है, 'मेम्बरो' की जगह 'सदस्यों' का प्रयोग भी किया जा सकता था।

९) **पश्चिमी** - I have received a letter from our gracious Queen to that effect. They have all four been well tutored by me: and I am certain that not even the members of the famous Secret Police of Paris, nor yet the most astute brethren of the Order of Jesuits, could be better prepared to play their part than are my daughters. Woolhovich<sup>203</sup>

**हिन्दीकरण** - "इसी मतलब कि एक चिट्ठी दयामयी महारानी को भी लिखी है। मैंने चारों लड़कियों को सिखा पढ़ाकर खूब पक्का कर दिया है। मुझे विश्वास है कि न तो पेरिस की मशहूर खुफिया पुलिस और न जेसुइटधर्म सम्प्रदाय का कोई चालाक से चालाक आदमी मेरी लड़कियों से बढ़कर काम कर सकेगा।"<sup>204</sup>

**विश्लेषण** - अनुवादक ने इस उपन्यास का अनुवाद हिंदी के पाठकों के लिए किया है। जिसमें कुछ शब्दों का लिप्यन्तरण आया है, यह आवश्यक भी था। लेकिन कुछ शब्द ऐसे भी आये हैं जिनका सन्दर्भगत अर्थ बनता है। ऐसे शब्द हिंदी के पाठकों की समझ से दूर हैं। उपर्युक्त अनुच्छेद में जेसुइटधर्म का प्रयोग हुआ है। इस धर्म के बारे में समझने के लिए हिंदी के पाठकों को कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। यदि इसके स्थान पर अनुवादक थोड़ा बदलाव करके 'क्रिस्तानी धर्म' शब्द का प्रयोग करता तो यह पाठकों को आसानी से समझ में आ जाता। परन्तु अनुवादक ने लेखक के सन्देश का भी यहाँ पर ध्यान रखा है।

<sup>203</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol.4, p-56

<sup>204</sup> लन्दन रहस्य, खंड -5, पृ - 165

सदानंद शुक्ल ने रेनॉल्ड्स के जिन उपन्यासों का अनुवाद किया है उनमें काफी अधिक लिप्यन्तरण देखने को मिला है। इनमें सबसे पहला उदाहरण है रेनॉल्ड्स के उपन्यासों के पात्रों के नाम हैं। केवल सदानन्द जी का नाम इसीलिए लिए गया है क्योंकि जोसफ विल्मोट का अनुवाद करने वाले दोनों अनुवादकों ने उपन्यास के बहुत से पात्रों का नाम हिंदी में अपने अनुसार परिवर्तित कर दिया है उदाहरण के लिए 'Lady Calanthe' का 'लेडी कालिंदी'। इसे लिप्यन्तरण तो नहीं शब्दों का हिन्दीकरण अवश्य कहा जाएगा। जबकि सदानन्द जी ने अनुवाद करते समय पात्रों के नामों में कोई परिवर्तन नहीं किया है। उन्हें अंग्रेजी में ही रहने दिया है। उन पात्रों के नाम भारतीय संस्कृति के अनुसार सटीक नहीं हैं, परन्तु जिस परिवेश के उपन्यासों का वे अनुवाद कर रहे थे, उसके मर्म को बनाये रखने के लिए लिप्यन्तरण कर देना ही सही था। इसके अतिरिक्त नीचे दे गयी सूची में कुछ स्थानों और वस्तुओं का नाम भी लिप्यन्तरित कर दिया गया है। उदाहरण के लिए

अंग्रेजी	लिप्यन्तरण
Beggraman	बेगरमेन,
Julia	जूलिया,
Page	पेज,
Ramsey	रामसे,
Magsman	मेग्स्में,
Hangman	हंगमेन,
Galoz Widow	गैलोज़ विडो,
Briggs	ब्रिग्स,
Warren	वारेन,
Mabs	मब्स,
Tim Meagles	टीम मीगल्स,
Amilia	अमीलिया,

Sofia	सोफ़िया,
Clarendon	क्लेरनदन
Melmoth	मेलमथ
Misses Toms	मिसेस टोमस
Tidliwing	टिडलीविंग
Tobi Firebrand	टोबी फायरब्रॉंड

वस्तुओं और स्थानों के नाम

Tower Hill	टावर हिल,
Blackman Street	ब्लैकमेन स्ट्रीट
Stamford Hill	स्टेमफोर्ड भवन
Ellisbury	एलिसबरी
Westend Place	वेस्ट एंड प्लेस
Saint James	सेंट जेम्स
Mailcart	मेलकार्ट
Berlines	वर्लिन्स
Bonnet	बोनेट
Dressing - room	ड्रेसिंगरूम
Chocolate	चॉकलेट
Prussia	प्रुशिया
Private Secretary	प्राइवेट सेक्रेटरी
Flannel	फलालेन
Nightcap	नाईट कैप
Mordontse	मोरदोंत्से
Herfordshire and Derbyshire	हर्डफर्ड शायर और डर्बीशायर
Berkeley Square	बर्कली स्कायर
Desborough	डेस्बोरा
Lord Marchmont	लार्ड मार्चमोंट
Desk	डेक्स
Baron Holdernes	बेरन होल्डरनेस

Cross Keys	क्रॉसक्रीज़ सराय
Pocket	पॉकेट
Bathtub	बाथटब
Jesuits	जेसुइट
Bow Street	बो स्ट्रीट
Magistrate	मजिस्ट्रेट

## समतुल्यता के स्तर पर

अंग्रेजी साहित्य और हिंदी के साहित्य में बहुत अधिक अंतर है जिस समय रेनॉल्ड्स के उपन्यास हिंदी में अनूदित हो रहे थे उस समय उनके उपन्यासों को पढ़ने वालों की संख्या बहुत अधिक थी। हिंदी के साहित्य का उस समय अधिक विकास नहीं हुआ था। अनुवादकों के सामने यह चुनौती अवश्य थी कि उन्हें अधिक से अधिक पाठकों तक इन उपन्यासों को आसान भाषा में पहुंचाना था। अंग्रेजी भाषा में इनके उपन्यासों की जितनी अधिक लोकप्रियता थी उतनी ही हिंदी में भी हुई। इसका सबसे बड़ा श्रेय अनुवादकों को जाता है। बिना समतुल्यता के पाठकों तक सन्देश पहुंचाना आसान नहीं था। जो अनुवादक इनके उपन्यासों का अनुवाद कर रहे थे उसके पीछे इनका उद्देश्य रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का सरल अनुवाद करना था।

समतुल्यता का तात्पर्य समान आधार पर तुलना करना है। अनुवाद करते हुए एक भाषा की लिखित सामग्री का स्थानांतरण दूसरी भाषा में समानता के साथ करना होता है। सुरेश कुमार जी ने इसे सममूल्यता का नाम दिया है। इस सन्दर्भ में वे कहते हैं कि “भाषा के भाषावैज्ञानिक विश्लेषण में अर्थ के स्तर पर पर्यायता या अन्वयांतर सम्बन्ध पर आधारित होते हुए भी सममूल्यता सन्देश का गुण है जिसमें पाठ को उसकी समग्रता में ग्रहण करना होता है। यह अवश्य है कि सममूल्यता के निर्धारण में पाठ संकेतविज्ञान के तीन घटकों के अधिक्रम का योगदान रहता है -

वाक्यस्तरीय सममूल्यता पर अर्थस्तरीय सममूल्यता को तरजीह मिलती है तथा अर्थस्तरीय सममूल्यता पर सन्दर्भस्तरीय सममूल्यता को मान्यता दी जाती है। दूसरे शब्दों में यदि दोनों भाषाओं में वाक्यरचना के स्तर पर सममूल्यता स्थापित न हो तो अर्थ स्तरीय सममूल्यता निर्धारित करनी होगी और यदि अर्थस्तरीय सममूल्यता निर्धारित न हो सके तो संदर्भ स्तरीय सममूल्यता को मान्यता देनी होगी।<sup>205</sup>

किसी भी कृति को समतुल्यता के स्तर पर लाने के लिए केवल अनुवाद ही कर देना समीचीन नहीं होता है। रचना के अर्थ की सूक्ष्मता को समझना अनुवादक का पहला कर्तव्य हो जाता है। बहुत बार ऐसा भी होता है कि अनुवाद करते हुए किसी भी प्रकार के शब्दकोशीय अर्थ नहीं रखे जाते हैं जिसकी शर्त यह होती है कि शब्दकोशीय अर्थ न रखने पर भी वह व्याकरणिक दृष्टि से पूर्ण और नियमबद्ध होना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि अक्सर समतुल्यता का प्रयास करते हुए बहुत से देशज शब्दों का प्रयोग करना अनिवार्य हो जाता है। इनमें कुछ ऐसे वाक्य या पद भी आ जाते हैं जिनको केवल लक्ष्य भाषी पाठक ही समझ सकता है। जिसके कारण वह अर्थ ग्रहण करने में किसी भी प्रकार की समस्या उत्पन्न नहीं होती है।

समतुल्यता की सीमा तक पहुँचने के लिए कुछ छोड़ना भी पड़ता है और कुछ जोड़ना भी पड़ता है। जिसमें कुछ शब्दों और वाक्यों का अनुवाद नहीं भी किया जाता है। कुछ शब्दों और वाक्यों में अपनी ओर से जोड़ने की छूट भी अनुवादक को होती है। जिसमें एक नियम का पालन करना होता है, कि मूल लेखक का सन्देश किसी भी प्रकार से बाधित नहीं होनी चाहिए। गहराई से अर्थों को समझाने और समझने के लिए केवल वस्तुबोधक शब्द ही महत्त्व नहीं रखते हैं। यदि अनुवादक थोड़ा-सा भी परिवर्तन अपनी मर्जी से करता है तो उसे उस वाक्य के लिए यह जिम्मेदारी निभानी

<sup>205</sup> कुमार, डॉ. सुरेश, अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा, पंचम संस्करण, वाणी प्रकाशन, 2007, दरियागंज, नयी दिल्ली, पृ- 61



होती है कि मूल सन्देश प्रभावित न हो। “अनुवाद की उत्तमता एवं स्तर की चर्चा प्रायः साहित्य के क्षेत्र में ही की जाती है। कारण यह है कि इसी क्षेत्र में प्रायः एक ही कृति के अनेक अनुवाद होते हैं। युग बदलने के साथ प्राचीन कृतियों के नए-नए अनुवाद भी निकलते हैं। इनके साहित्यिक गुणों के विषय में चर्चा भी होती है...”<sup>206</sup>

१) **स्रोतभाषा** - "Your services will be needed to give away the bride, madam," said Rao: "but I will fetch you at the proper moment—or else request the clergyman to do so. Perhaps you will hold yourself in readiness about half-past nine 'clock?" "Certainly—with much pleasure," responded the milliner. "One word more, madam," added Rao: then, in a solemn and mysterious tone, he said, "The ceremony will take place in the dark, for reasons which I cannot explain now."<sup>207</sup>

**लक्ष्यभाषा** - “राव - कन्यादान आप ही को करना होगा, साढ़े नौ बजे के पहले आप तैयार हो जाइएगा या तो मैं खुद ही आकर बुला ले जाऊंगा या और नहीं तो पुरिहित जी को उस समय विस्मय न हो। वह बात यही है कि विवाह अन्धकार में होगा।

**विश्लेषण** - अनुवादक ने भारतीय विवाह के समान ही ब्रिटिश रीति में होने वाले विवाह का अनुवाद कर दिया है। ब्रिटिश समाज में कन्यादान जैसी कोई प्रथा नहीं है। वहां पर शादियाँ गिरिजाघरों में होती हैं। जहाँ पर दुल्हन के साथ शादी वाली जगह तक एक स्त्री साथ जाती है। परन्तु वह विधि कन्यादान के समान नहीं होती है। यहाँ पर अनुवादक ने “Your services will be needed to give away the bride, madam,” के स्थान पर ‘कन्यादान’ शब्द लिखा है। जो हिंदी के पाठक के समझने के लिए आसान होगा। समतुल्यता के आधार पर यह अनुवाद सफल है।

<sup>206</sup> शर्मा, प्रणव, *अनुवाद-विमर्श: एक अद्यतन दृष्टि*, दिल्ली, नीरज बुक सेंटर, 2015, पृ- 42

<sup>207</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p -315

२) **स्रोतभाषा** - When the sense of your own unhappiness steals irresistibly upon you—when, in gazing around, you behold wives who can be proud of their husbands and rejoice in a smiling progeny— then curse me not in the depths of your sickening spirit,—but pause for a moment to reflect that I also am unhappy !”<sup>208</sup>

**लक्ष्यभाषा** - “जब अपनी शोचनीय अवस्था को समझोगी, जब आँखें पसारकर चारों ओर देखोगी, कि सैंकड़ों सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने पति के गौरव से गौरवान्वित होकर संतान के मुंह की मृदु हंसी देखकर आनंदित होती हैं तब हृदय के दारुण दुःख से मुझे कोसना मत । प्राणप्रिये तब अच्छी तरह विचार कर देखना कि यह अभाग भी परम दुःखित है”<sup>209</sup>

**समतुल्यता** - अर्ल नपुंसक है, परन्तु वह अपनी पत्नी को बहुत प्रेम करते हैं। पति-पत्नी के बीच में जिस प्रकार के शारीरिक सम्बन्ध से रिश्ता बनता है, उस प्रकार का सम्बन्ध अर्ल और एलिनोर के बीच संभव नहीं था। वे सुखी और सम्पन्न जीवन के सिवाए वह उसे किसी प्रकार का सुख देने में समर्थ नहीं थे। एलिनोर के जीवन को इतना संघर्षमयी बनाने के लिए अर्ल बहुत अधिक दुःख था अनूदित किये गए इस प्रसंग में अर्ल का दुःख और पश्चाताप परिलक्षित हो रहा है। उसे भी पछतावा है कि उसने एलिनोर का जीवन बर्बाद कर दिया है। यहाँ पर अनुवादक ने अच्छा अनुवाद किया है। जो मूल के समतुल्य सन्देश दे रहा है।

३) **स्रोतभाषा** - ("I awoke with a dreadful head-ache—but it will pass away presently, "answered Mrs. Brace, assuming the languid tone and looks of an invalid. "You must excuse me, my dear Florimel, for receiving you in my bed-chamber—""It is not the first time I have set my foot in this sanctuary," interrupted the nobleman, with easy smile.)”<sup>210</sup>

<sup>208</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p -136

<sup>209</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -1, पृ - 456

<sup>210</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. , p - 167

**लक्ष्यभाषा** - “अधखुली आँखों के साथ ब्रेस ने धीरेधीरे कहा - आज सवेरे उठने पर शिर कुछ भारी मालूम हुआ। कुछ चिंता नहीं अभी अच्छी हो जाउंगी। मिस्टर फ्लोरिमेल ! शयनागार में तुम्हें बुलाने के लिए माफ़ी मांगती हूँ। इस पर कुछ हंसकर फ्लोरिमेल ने कहा, - इस श्री मंदिर में कोई पहली ही बार तो नहीं आया ?”<sup>211</sup>

**समतुल्यता** - फ्लोरिमेल जब ब्रेस के घर जाता है तो वह उसे अपने शयनकक्ष में बुलाती है। ब्रेस झूठी बीमारी का नाटक करके बिस्तर पर लेटी हुई है। फ्लोरिमेल से झूठी ही माफ़ी मांगती है कि वह उसे अपने शयनागार में बुलाना नहीं चाहती थी। पर फिर भी वह उसे अपनी ओर आकर्षित करने का पूरा प्रयास करती है। उपर्युक्त अनुवाद में ‘श्री मंदिर’ शब्द का प्रयोग व्यंग्यात्मक रूप में किया गया है। मूल और अनूदित दोनों के बीच केवल इसके प्रयोग से समतुल्यता का भाव अच्छा बना है। किसी-किसी प्रसंग में अनुवादक के लिए कुछ शब्दों का ऐसा प्रयोग करना अनिवार्य बन जाता है।

लिटिशिया और मीगल्स हन्ना लाइटफूट के पत्रों के माध्यम से महाराज को मजबूर कर राजमहल में अपने लिए ऊँचा पद चाहते हैं। इन पत्रों में महाराज के जीवन का ऐसा सच छिपा है जिसे वे भूल चुके थे उसे याद दिला इन दोनों ने उनके ज़ख्मों को फिर से हरा कर दिया है। उनके मजबूर करने पर वे उन दोनों की शर्त को मान लेते हैं। लेकिन उनके चले जाने के बाद वे अपनी भावनाओं को रोक न सके। उनकी इसी दशा का वर्णन लेखक ने किया है, जिसे अनुवादक ने निम्नलिखित शब्दों से साकार बना दिया है।

४) **स्रोतभाषा** - From the towering height of his lofty station and from the dizzy summit of his insatiable ambition, did he command the attention of the universe,—he who could not command a single one of all the

<sup>211</sup> लन्दन रहस्य, खण्ड 1, पृ - 567

agonising thoughts that racked him now | He who awed the nations, shrank appalled from the ghastliness of his own ideas. The man who had sought to retain the glorious gem of trans atlantic power in his own regal diadem,—who was even at that moment studying to roll back the portentous tide of democracy which was sweeping over France and threatening to dash its waves against the white cliffs of albion,—who kept his people enchained in iron bond and sent forth his armies to ride rough-shod over the necks of his wronged subjects when assembling to petition for their rights,—he who did and was doing all this, was now crouching, and cowering, and grovelling beneath the spectral shapes which his own imagination conjured up! Yes—the monarch who lacerated the millions with knotted scourges, now felt his own conscience whipped with scorpions; —and he who had no remorse for the countless hearts which his tyranny made to weep so bitterly, was now himself inwardly shedding tears of blood in the compunction of his soul for the memory of Hannah Lightfoot.”<sup>212</sup>

**लक्ष्यभाषा** - ऐश्वर्य के सर्वोच्च शिखर पर बैठकर जो संसार के ऊपर आधिपत्य कर रहे थे, वे आज अपने ही हृदय से परास्त हुए थे। आज उनके हृदय में जो आग धधक रही थी, उस पर उनका वश न चला। जिसके रोब से लाखों प्राणी डर के मारे काँप उठते थे, आज अपने भय से वह आप ही भयभीत हो रहा था ! जिसके भीम पराक्रम से प्रजा-प्राधान्य-विधि का भीषण स्रोत सारे फ्रांस राज्य को आप्लावित कर इंग्लैंड के श्वेत पर्वत के नीचे तक आकर भी विफल मनोरथ हो रहा था, जिसके पराक्रम रूप सीकल में लाखों जीव बंधे हुए थे – आज वही अपने आप से परास्त हो रहा था, आज विवेक बिच्छु उसके हृदय में बारम्बार डंक मार रहा था। जो व्यक्ति नित्य

---

<sup>212</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p - 304

लाखों प्राणियों को रुलाया करता था, आज वही हन्ना लाइटफूट का नाम याद आने पर रो रो कर व्याकुल हो रहा था।”<sup>213</sup>

**समतुल्यता** - जिस प्रकार लेखक ने इनकी स्थिति का वर्णन करने का प्रयास किया है उसी का अनुसरण अनुवादक ने भी किया है। कुछ शब्द तथा पद जैसे ‘सर्वोच्च शिखर’, ‘आधिपत्य’, ‘आज विवेक बिच्छु उसके हृदय में बारम्बार डंक मार रहा था’, ‘प्रजा-प्राधान्य-विधि का भीषण स्रोत’, ‘इंग्लैण्ड के श्वेत पर्वत के नीचे’ तथा ‘रो रो कर व्याकुल’ का प्रयोग कर अनुवादक ने वीर रस को दिखाने का प्रयास किया है। जो इसे सार्थक बनाने में सफल हुए हैं। इसमें अधिकर तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है जो इस घटना को सजीव और चाक्षुष बनाने के लिए अनिवार्य भी था। उदाहरण के लिए यदि यहाँ पर ‘सर्वोच्च शिखर’ के स्थान पर ‘सबसे ऊँचे पद पर’, ‘विवेक बिच्छु उसके हृदय में बारम्बार डंक मार रहा था’ की जगह ‘बार-बार उनका दिमाग उन्हें सोचने के लिए मजबूर कर रहा था’ तथा ‘रो रो कर व्याकुल’ के स्थान पर ‘दुःख के कारण रो-रो कर बेचैन हो रहे थे’ को परिवर्तित कर यदि इस प्रकार से अभिव्यक्त किया जाता तो महाराज का यह प्रभुत्व कभी उत्पन्न नहीं हो पाता। अनुवादक ने उनकी वीरता को समझते हुए आंतरिक अर्थ का समावेश किया है। कहीं पर छोटे तो कहीं पर बड़े वाक्य देखने को मिलते हैं। यह अनुवाद समतुल्य है। मूल से भी अधिक प्रभाव अनुवादक ने अनूदित रचना में दिखाया है।

अनुवादक के इस अनुवाद को देखकर सुरेश कुमार जी के समतुल्यता और समान प्रभाव को लेकर एक विचार उद्धृत करना आवश्यक बन पड़ा है। वर्तमान चिंतन की प्रभावसमता को लेकर वे कहते हैं “वर्तमान चिंतन में प्रभावसमता की धारणा को अनुवाद प्रणाली के निर्धारण की मुख्य कसौटी माना जाता है। इसे ही नाइडा ने प्रकार्यात्मक (या गतिशील) मूल्य समता कहा है। इसका तात्पर्य यह है कि

<sup>213</sup> लन्दन रहस्य, खंड -4, पृ-128

अनुवाद को पढ़कर अनुवाद के पाठक पर भी प्रभाव पड़े जो मूलपाठ को पढ़कर मूल पाठ के पाठक पर पड़ा था या पड़ता है; दोनों (पहले और दूसरे) पाठकों पर पड़ने वाले प्रभावों में समानता हो। नाइडा ने इसे मूल्यगत समानता के रूप में देखा है जो सन्दर्भनिष्ठ होने से प्रकार्यात्मक या गतिशील होती है – सन्दर्भ से निर्धारित होने के कारण प्रकार्य (प्रभाव) गतिशील होता है; सन्दर्भ बदलने से प्रकार्य भी बदलता है। इस प्रकार की गतिशीलता मूल्यसमता अनुवाद प्रणाली के निर्धारण की कसौटी है – मूलभाषा तथा लक्ष्यभाषा के सन्दर्भों की परिवर्तनशीलता को ध्यान में रखते हुए अभिव्यक्ति-मूल्यों की समानता को बनाये रखना अनुवाद प्रणाली का मूल तत्व है।”<sup>214</sup>

इसीलिए कहा जा सकता है कि लेखक ने महाराज के प्रचंड प्रभाव को दिखाने के लिए जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया है, वैसा ही प्रभावी और शक्तिशाली शब्दों का प्रयोग अनुवादक ने भी किया है। जिस प्रकार के शासक महाराज रहे हैं उन्हें कोई तूफान भी न हिला सकता था। एक ऐसा व्यक्ति अपनी युवावस्था की प्रेमकथा को लेकर इतना कमजोर पड़ जाता है कि स्वयं को संभाल भी नहीं पाता। उनके इस असहनीय दुःख को दिखाने में अनुवादक ने अपने कौशल का परिचय दिया है। यह वर्णन बिल्कुल वैसा ही है जैसा पौराणिक काल में किसी शक्तिशाली शासक का वर्णन किया जाता था।

१) **स्रोतभाषा** - Being skilful with her needle, she thought of turning that talent to advantage; and having procured a list of the principal millinery establishments in London, she resolved to apply to them for work as accident ordained, mine was the very first house whereat she

<sup>214</sup> कुमार, डॉ. सुरेश, *अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा*, दरियागंज: नयी दिल्ली, वाणी प्रकाशन, पंचम संस्करण, 2007, पृ- 92

called; and I made immediate arrangements with her. This evening she takes up her abode beneath my roof."<sup>215</sup>

**लक्ष्यभाषा** "इसी इरादे से कि कपड़े की जितनी भी दुकानें हैं उसने उनकी फेहरिस्त तैयार की है। वह एक-एक कपड़े वाली कि दुकान में जाकर नौकरी तलाश करना चाहती है। श्री गणेश मेरी ही दुकान से हुआ। मैंने चटपट ही उसकी दरखास्त मंजूर कर ली है, वह आज ही रात में यहाँ चली आवेगी।"<sup>216</sup>

**समतुल्यता** - रोज़ फॉटर अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद अपनी जीविका स्वयं अपने आप चलाना चाहती है। इसके लिए वह किसी गलत काम को करने के लिए तैयार नहीं है। वह अपने बल पर अपना जीवन व्यतीत करने में विश्वास रखती है। नौकरी की तलाश करते-करते ब्रेस के हाथों पड़ने के बाद वह उसे फ्लोरिमल को बेच देती है। इसके बाद वह फ्लोरिमल को उसकी ओर आकर्षित करने की योजना बनाती है। ब्रेस हमेशा ही अपने ग्राहकों की चाटुकारित किया करती थी। भोली-भाली लड़कियों को वैश्यावृत्ति के जाल में धोखे से फँसाना यही उसका व्यापार था। साथ ही वह फ्लोरिमल को भी उसका ग्राहक बनाना चाहती है। अनुवादक ने उसके भावों को समझते हुए उर्दू और आम बोलचाल के शब्दों को प्रमुखता से प्रयोग कर सहज अनुवाद किया है। 'श्री गणेश' शब्द का प्रयोग कर भावानुवाद किया गया है। इस प्रकार के शब्द के प्रयोग से ब्रेस के इरादों को भांपना आसान हो पाया है। इससे उसकी जुबान पर कुछ और हृदय में कुछ और होने का अनुमान पाठक लगा सकते हैं।

६) **स्रोतभाषा** - "Thirdly, then, I want you to do ascertain something which I can't explain in a moment, and which will help him to get out of goal as comfortable as possible," added the Gallows' Widow: "or else he'll be hung, to acertainty."

<sup>215</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p - 168

<sup>216</sup> खण्ड 1, पृ - 470

The milliner shuddered—not so much at the idea of the probable fate of the Magsman, but at the thought that she should have the misfortune to be so closely linked to such a wretch. "all! you may well be shocked, ma'am," observed the Gallows' Widow, on whom the tremor which thus convulsed the entire frame of Mrs. Brace was not lost : " it would indeed be an awful thing for you to know that your own husband was hung up like a dog." "Spare your comments, young woman," said the milliner, in a stifling voice. "I see that you know all—every thing?" she added, -fixing a searching look upon her<sup>217</sup>.

**लक्ष्यभाषा** - गेलोज़ विडो - आपको एक काम करना पड़ेगा । कौन काम सो बिना समय पाए खुलकर नहीं कह सकती । वह काम करने से वारेन अनायास ही जेल से भाग आवेगा, नहीं तो उसे फांसी दे दी जाएगी । "इस बात को सुनते ही ब्रेस काँप उठी इसीलिए नहीं कि बादशाह के हुक्म से वारेन सूली पर लटका दिया जायेगा बल्कि इस ख्याल से, कि हाय! मैं इस नराधम की स्त्री हूँ !

ब्रेस का यह भाव गेलोज़ विडो से छिपा न रहा । उसने कहा,- "मेम साहब ! इस बात से आपको कष्ट तो होगा ही । आपका स्वामी कुत्ते की तरह लटका दिया जायेगा तो क्या आपको दुःख न होगा?"

ब्रेस, - अच्छा टीका टिप्पणी रहने दो । समझ गयी कि तुम सब कुछ जानती हो ।<sup>218</sup>

**समतुल्यता** - गेलोज़ विडो ब्रेस के पास उसके पति वारेन को मिली सजा की खबर लेकर आती है। वह कहती है कि उसे अपने पति को बचाने के लिए उसकी सहायता

<sup>217</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p -171

<sup>218</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -1, पृ -576-577



करनी पड़ेगी। उसका पति उसके साथ रहता नहीं था। अब उसका सम्बन्ध गेलोज़ विडो के साथ था। ब्रेस के सम्बन्ध भी लन्दन के ऊँचे घरानों के लोगों के साथ थे। इसीलिए गेलोज़ विडो उससे सहायता मांगने आयी थी। वर्तमान समय में जो पति उसका नहीं है न हो दोनों के बीच पति-पत्नी का कोई रिश्ता ही है। लेकिन फिर भी वह उसकी सहायता करने के लिए तत्पर हो जाती है। यहाँ पर गेलोज़ विडो और ब्रेस की मनःस्थिति को दिखाया गया है। इस मनःस्थिति का प्रदर्शन करने के लिए अनुवादक ने The milliner shuddered wretch का अनुवाद 'इस बात को सुनते ही ब्रेस काँप उठी' और but at the thought that she should have the misfortune to be so closely linked to such a wretch का अनुवाद 'इस ख्याल से, कि हाय! मैं इस नराधम की स्त्री हूँ! किया है। यहाँ पर अनुवादक ने दोनों ही स्त्रियों की भंगिमाओं को विजुअलायिज़ (visualize) करने का प्रयास किया है। इसके बाद गेलोज़ उसके डर को तथा जो फैसला वह थोड़ी देर में लेने वाली है उसे और दृढ़ करने के लिए कहती है कि "it would indeed be an awful thing for you to know that your own husband was hung up like adog." अनुवादक ने इसका अनुवाद 'आपका स्वामी कुत्ते की तरह लटका दिया जायेगा तो क्या आपको दुःख न होगा?' किया है। न चाहकर भी वह उसकी सहायता करने के लिए तैयार हो जाती है। इस प्रकार के वाक्यों के प्रयोग के माध्यम से आंतरिक असमंजस दृष्टिगत हो रहा है। गेलोज़ विडो जानती थी कि इस पर ब्रेस की क्या प्रतिक्रिया आएगी। अनुवादक ने इस पूरे प्रसंग का कौशल के साथ अनुवाद किया है उन्होंने सहजानुवाद करते हुए भावनाओं की प्रदर्शित करने का प्रयास किया है। आन्तरिक डर और बाह्य घबराहट इन दोनों भावों को अनुवादक ने उचित वाक्यों के रूप में अभिव्यक्त किया है। अंत में कहा जा सकता है कि अनुवादक ने समतुल्य अनुवाद किया है।

७) **स्रोतभाषा** - "Spare you will— pity you cannot!" rejoined the Earl of Desborough."And in sparing you, I act not through any considerations of mercy — but in order to avert a public scandal and the world's scorn from my house! The imposture you have practised upon me is venial— oh! yes—and your condition in that respect might indeed have commanded my pity: for, on that fatal night when you became an inmate of my dwelling, had you thrown yourself on your knees before me—revealed to me the astounding secret that you were Philip Ramsey the convict—and demanded my forbearance and my succour, I should not have refused your prayer! But you have planted a poisoned dagger in the bosom to my wife<sup>219</sup>

**लक्ष्यभाषा** - अर्ल, - "रिहाई दे सकता हूँ, पर कृपा नहीं कर सकता। अगर तुम्हें छोड़ दूँ तो यह न समझना, कि तुम पर कृपा की गयी है, केवल अपनी बदनामी छिपाने के लिए तुम्हें रिहाई दे दूँगा। तुमने मुझे जो धोखा दिया है, उसके लिए मैं उतना नाराज़ नहीं हूँ, वैसी दगाबाजी माफ़ की जा सकती है। अगर तुम उस रात को घुटनों के बल बैठकर मुक्त कंठ से सच सच कह देते कि मैं वही फांसी पर लटका हुआ फिलिप रामसे हूँ, मुझे शरण दीजिये रक्षा कीजिये तो शायद तुम्हारी बात नामंजूर न की जाती, पर तुमने बड़ा भयानक काण्ड कर डाला है, मेरी स्त्री के कलेजे में गहरी छुरी भोंक दी है। ..." इतना कहते-कहते बच्चों की तरह मुंह छिपा कर रोने लगे।<sup>220</sup>

**समतुल्यता** - अर्ल की मजबूरी और उनका गुस्सा दोनों ही समान रूप से इस अनुवाद में समन्वित हैं। लेखक के जिस सन्देश को अनुवादक ने अनूदित किया है उसमें तत्सम शब्दों की प्रधानता है। साथ ही भाषा में एक गंभीरता और प्रौढ़ता भी देखने को मिलती है। अर्ल जो बोल रहे हैं उसमें उनकी आत्मा से निकलने वाला दुःख अभिव्यक्त हो रहा है। जिसमें अनुवादक की भाषा में पूरी तरह से परिवर्तन हो गया

<sup>219</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p - 168

<sup>220</sup> *लन्दन रहस्य*, खण्ड 2, पृ - 509

है। अनुवादक ने हिंदी में अंग्रेजी के भावों से समतुल्यता लाने के लिए कुछ इस प्रकार के प्रयोग किये हैं 'and in sparing you, I act not through any considerations of mercy — but in order to avert a public scandal' का 'केवल अपनी बदनामी छिपाने के लिए तुम्हें रिहाई दे दूंगा, 'your condition in that respect might indeed have commanded my pity' का 'वैसी दगाबाजी माफ़ की जा सकती है', 'revel led to me the astounding secret' का 'मुक्त कंठ से सच सच कह देते', 'But you have planted a poisoned dagger in the bosom to my wife' का 'बड़ा भयानक काण्ड कर डाला है', जैसे अनेक पदबंधों का प्रयोग किया है। ऊपर लिखे हुए प्रसंग में अनुवादक ने 'and in sparing you, I act not through any considerations of mercy — but in order to avert a public scandal' का समतुल्य अनुवाद 'केवल अपनी बदनामी छिपाने के लिए तुम्हें रिहाई दे दूंगा यहाँ पर 'रिहाई' शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए था, क्योंकि जब किसी को कैद से आज़ाद किया जाता है तो उसे ही 'रिहाई' दी जाती है। इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता था 'समाज में होने वाली बदनामी के डर से मैं तुम्हें मुक्त कर सकता हूँ।' दूसरा वाक्य है 'But you have planted a poisoned dagger in the bosom to my wife' का अनुवाद 'बड़ा भयानक काण्ड कर डाला है' किया है। परन्तु यह उतना प्रभावी नहीं लग रहा है, यदि इसका अनुवाद यह किया जाता कि 'तुमने तो मेरी पत्नी की पीठ में जहर से भरा छुरा घोंपा है' तो यह अनुवाद अधिक सार्थक होता। हिंदी के पाठकों के लिए इस भाषा का प्रयोग सामान्य स्तर का है। इसीलिए यहाँ सरल शब्दावली का प्रयोग हुआ है। अर्ल का सन्देश रामसे तक सरल शब्दों में बड़ी सरलता से पहुँच रहा है। समतुल्यता के स्तर पर अनुवादक ने सफल अनुवाद किया है।

- ८) **स्रोतभाषा** - Oh! Thou demon-hearted Prince, hast thou no mercy — no compassion — no sympathy for thy wronged and ruined Octavia?

Wherefore hast thou brighted all the hopes of my youth?—why hast thou carried desolation and woe into the sanctuary of that heart which was filled with love for thee? O God! Do thy thunders sleep? O heaven! Hast thou no lightnings left? Give me the wand of an enchantress<sup>221</sup>

**लक्ष्यभाषा** - “ओक्टेमिया तुम्हें हृदय मंदिर का देवता बनाकर प्रेमोमत चित्त से तुम्हारी आराधना करती थी, पर तुमने उस पवित्र देव मंदिर में भयानक निराशा और अपार दुःख भर दिया ! हे इंद्र ! तुम्हारा बज्र कहाँ गया? प्रभु मुझे जादू की छड़ी दो।”<sup>222</sup>

**समतुल्यता** - ओक्टेमिया प्रिंस से प्रेम करती थी। प्रिंस ने भी उसके साथ सम्बन्ध बनाए थे। लेकिन जब ओक्टेमिया को पता चला कि प्रिंस का विवाह किसी दूसरी स्त्री से होने वाला है तो वह अपने मानसिक संतुलन खो देती है। इसी हालत में वह अपने आप से ही ऐसी बातें कर रही थी। जिसका अनुवाद उपर्युक्त अंश में है। ओक्टेमिया का पागलपन और भगवान से उसके वार्तालाप को दिखाने के लिए अनुवादक ने उपर्युक्त अंश का भावानुवाद किया है। यहाँ पर अनुवादक ने ‘Oh! thou demon-hearted Prince, hast thou no mercy – no compassion – no sympathy for thy wronged and ruined Octavia?’ का भावानुवाद ‘ओक्टेमिया तुम्हें हृदय मंदिर का देवता बनाकर प्रेमोमत चित्त से तुम्हारी आराधना करती थी,’ किया है। इसका अनुवाद यदि शब्द प्रति शब्द किया जाता तो इस प्रकार होता ‘हे! राक्षस जैसे हृदय वाले प्रिंस तुममें किसी प्रकार की दया - कोई संवेदना - सहानुभूति नहीं है कि तुमने ओक्टेमिया के साथ कितना गलत किया है।’ परन्तु इस वाक्य का ऐसा अनुवाद अच्छा नहीं लग रहा है। ओक्टेमिया के दर्द को समझने के लिए यह क्लिष्टता उत्पन्न की गयी है। ‘O heaven! Hast thou no lightnings left? Give

<sup>221</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p- 396

<sup>222</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -2, पृ -554

me the wand of an enchantress' का अनुवाद 'हे इंद्र! तुम्हारा वज्र कहाँ गया? प्रभु मुझ जादू की छड़ी दो' किया है। यूरोपीय परम्परा में केवल 'ईसा मसीह' को माना जाता है। इंद्र भगवान की अवधारणा केवल हिन्दू परम्परा में है। "वस्तुतः अनुवाद किसी भाषा की एक एकनिष्ठ रचना नहीं होती। अनूदित कृति में दो भाषाओं के संरचना और संस्कार एक दूसरे में निहित होकर संश्लिष्ट रूप में स्थित होते हैं एक ओर इसमें मूल कृति का संप्रेष्य कथ्य तथा कलात्मक बनावट का दबाव रहता है और दूसरी ओर लक्ष्यभाषा की अपनी सम्पूर्ण व्यवस्था तथा सामाजिक और सांस्कृतिक संस्कार अनूदित पाठ को अपना स्वरूप प्रदान करते हैं (श्रीवास्तव और गोस्वामी) इस दृष्टि से समतुल्यता एक निष्ठ नहीं है और यह बहुआयामी स्तर पर कार्य करती है।"<sup>223</sup> इस आधार पर कहा जा सकता है कि यह प्रयोग ओक्टामिया और प्रिंस के प्रसंग के बीच संतुलन नहीं बना पा रहा है।

फर्नेडा क्लेरंडन से विवाह कर लेती है। विवाह करने का सबसे बड़ा कारण यह था कि वह अर्थर की हत्या करने के लिए किसी का साथ चाहती थी। अपनी इस योजना के बारे में फर्नेडा ने उसे पहले नहीं बताया था। विवाह के बाद उसका मन परिवर्तित हो जाता है। अब वह एक नहीं दो खून करना चाहती है जिसमें अर्थर के साथ लिंडली का भी नाम शामिल है।

९) **स्रोतभाषा** - "Two murders!" said Lord Holderness, straining her convulsively to his breast. "Oh! Fernanda, Fernanda—I shall be blest by thy love on earth but through thee shall I be accurst hereafter!"<sup>224</sup>

<sup>223</sup> डॉ. नगेन्द्र (संपा.), *अनुवाद विज्ञान: सिद्धांत और अनुप्रयोग*, नयी दिल्ली, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय: दिल्ली विश्वविद्यालय, प्रथम संस्करण, 1993, पृ- 61

<sup>224</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p - 405

**लक्ष्यभाषा** - क्लेरेंडन - (कांपकर) “बाप रे बाप ! एक साथ दो-दो खून ! तुम्हारे साथ मैं इस लोक में अवश्य सुखी रहूँगा पर तुम्हारे ही लिए मेरा परलोक नष्ट हो जायेगा।”<sup>225</sup>

**समतुल्यता** - समतुल्यता के आधार पर देखा जाए तो अनुवादक ने अचंम्भित हुए भावों को अच्छी तरह अभिव्यक्ति दी है। ‘इस लोक में’ और ‘मेरा परलोक नष्ट हो जायेगा’ जैसे पदबंधों का प्रयोग किया है। किसी की हत्या के बारे में सोच कर जब क्लेरेंडन अपने वर्तमान जीवन और मरने के बाद की दशा को लेकर परेशान होता है, उसका वह डर इस अंश में दिख रहा है। लेखक के संदेश के साथ यहाँ पूरा न्याय हुआ है।

१०) **स्रोतभाषा** - She did not hasten towards Mrs. Brace's if she still looked on the milliner as a benefactress: but with a sullen slowness of step and a sinister moodiness of manner, she accosted her, saying, "I am glad you have come at last, madam—as I am wearied of being retained a prisoner here."<sup>226</sup>

**लक्ष्यभाषा** - ब्रेस को देखकर वह कहती है कि अच्छी बात है कि आप यहाँ आयीं हैं अब मुझे ये बताइए कि कितने दिन मुझे इस पाप-पुरी में रहना पड़ेगा।<sup>227</sup>

**समतुल्यता** - मिसेस ब्रेस को देखकर मिस कैरलाइन गुस्से से भर जाती है। उसने बड़ी चतुराई से लड़कियों को फसाने का और उन्हें कैद करके रखना और उन्हें वैश्यावृत्ति में झोंकना अपना धंधा बना रखा था। अनुवादक ने सन्दर्भगत अनुवाद अर्थात् भावानुवाद किया है। ‘पाप-पुरी’ जैसे शब्द का प्रयोग एक वैश्यालय अप्रत्यक्ष रूप से किया गया समतुल्य अनुवाद है। यह अनुवाद सफल है।

<sup>225</sup> लन्दन रहस्य, खंड -2, पृ -585

<sup>226</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p -411

<sup>227</sup> लन्दन रहस्य, खंड -2, पृ - 602

११) **स्रोतभाषा** - The nobly-born villain who wooed me with guile, won my honour with treachery, and discarded me with a corresponding heartlessness! Yes, madam—lean see through it all—all;—and I curse—aye, curse my own folly when I think that there was a time at which I believed that he really loved me! Well— what am I living for?<sup>228</sup>

**लक्ष्यभाषा** - “अब मेरी आँख खुल गयी हैं; अब मुझे मालूम हो गया है कि उस दुष्ट लम्पट के हाथ मेरा सतीत्व रत्न किसने बेचा था। हाय ! हाय ! उस दुष्ट ने छल कपट कर पहले तो मेरा मन मोह लिया और दगा करके मेरा सतीत्व नाश कर डाला ; पीछे दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया। मैं तुम्हें कोसती हूँ और अपनी नासमझी को भी कोसती हूँ। अब मुझे जीकर क्या करना है ?”<sup>229</sup>

**समतुल्यता** - कैरलाइन वाल्टर्स अब सब कुछ जान जाती है कि ब्रेस ने ही उसके सम्मान को फ्लोरिमल के हाथों बेचा था। इस पर वह घृणा से ब्रेस से बात करती है वह कहती है ‘won my honour with treachery, and discarded me with a corresponding heartlessness!’ इसका अनुवाद अनुवादक ने ‘पीछे दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया’ एक मुहावरे के रूप में किया है। इस मुहावरे के प्रयोग से लेखक का सन्देश विचलित नहीं हुआ है। मिस वाल्टर्स का क्रोध जितना मूल भाषा में दिख रहा है उससे अधिक प्रगाढ़ता के साथ अनूदित रचना में उभरा है अनुवादक ने यहाँ इसे संश्लिष्ट कर दिया है। अन्विति में भी कहीं से कोई विचलन नहीं है।

१२) **स्रोतभाषा** - "What is your name, my good fellow?" inquired the Prince, adopting a very conciliatory tone.<sup>230</sup>

<sup>228</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p – 411-412

<sup>229</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -2, पृ -603-604

<sup>230</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 2, p - 08

**लक्ष्यभाषा** - “इस पर मानो टूटी-फूटी शहनाई की तरह भायें- भायें करके उसने कहा - श्रीमान मेरा नाम पीटर ग्रमले है” असल बात यह है कि रात भर वह किसी होटल में शराब पीता रहा और गाता रहा, इसी से उसकी आवाज़ भारी पड़ गयी है।<sup>231</sup>

**समतुल्यता** - प्रिंस ने अपनी ही पत्नी के विरुद्ध अपनी माँ के साथ मिलकर एक षड्यंत्र की रचना की थी। जिसमें मार्किव्स ऑफ़ लेवसेन और प्रिंस, मिसेस उवेन, उनकी तीनों बेटियाँ और महारानी इसका हिस्सा थीं। इस षड्यंत्र की शिक्षा उवेन की छोटी बेटी मैरी को भी दी जा रही थी। जब पहली बार उसे यह ज्ञात होता है कि जो शिक्षा अब तक उसकी माँ ने उसे दी थी उसे इंग्लैंड की रानी के खिलाफ प्रयोग करना है। इस पर वह इसका विरोध करती है और कहती है -

१३) **स्रोतभाषा** - "It may be so,"observed Mary, her agitation subsiding and yielding to thoughtfulness: then, after a long pause, she said, "I have no doubt that I shall soon think as you do: but at first it is painful—yes, very painful to receive such lessons and be enjoined to pursue such a course of training. 'This is same as if a beautiful picture on which the eye was gazing with rapturous admiration, suddenly changed into an assemblage of loathsome reptiles."<sup>232</sup>

**लक्ष्यभाषा** - “शायद ही इसमें कुछ भी संदेह नहीं, कि बहुत जल्द मेरा ख्याल भी तुम लोगों जैसा ही हो जाएगा। पर ऐसी शिक्षा पाना और ऐसे पथ पर चलने के लिए मजबूर किये जाना, पहले बहुत दुखद जान पड़ता है यह तो वैसा ही है, जैसे कोई अच्छी तस्वीर जिसे आदमी बड़ी खुशी के साथ देख रहा हो, अकस्मात बदलकर घिनौने कीड़ों की जमात हो जाए।”<sup>233</sup>

**समतुल्यता** - लेखक ने जिस संदेश को अंग्रेजी के पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास किया है उसे समान रूप से अनुवादक ने भी लिखने का प्रयास किया है। अनुवादक ने

<sup>231</sup> लन्दन रहस्य, खंड -2, पृ -642

<sup>232</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 3, p - 44

<sup>233</sup> लन्दन रहस्य, खंड -5, पृ -123



अपना कर्तव्य का पालन करते हुए सन्देश में कोई कमी नहीं छोड़ी है, लेकिन संदर्भ को ध्यान में रखते हुए संदर्भगत अनुवाद किया है अपनी बहनों से ये सब बात करने के बाद मैरी की घबराहट दूर हो जाती है। आखिर कुछ देर सोचने के बाद अपनी बहनों को एक सन्देश देते हुए कहती है कि जिसका एक पद निम्नलिखित है 'suddenly changed into an assemblage of loathsome reptiles.' इसे अनुवादक ने बहुत ही अच्छे शब्दों में लिखा है 'अकस्मात् बदलकर घिनौने कीड़ों की जमात हो जाए'। इस पदबंध का यथोचित अनुवाद हुआ है।

जोसफ एक ईमानदार नौकर है। जोसफ हमेशा अपने मालिक के भले के लिए ही सोचता है। उसकी सहायक नौकरानी चार्लॉटी ने कालिंदी की अंगूठी और चांदी के कुछ बर्तन उसके बिस्तर के नीचे छुपा दिए थे। ऐसा करके वह उसे चोरी के इलज़ाम में फंसाना चाहती थी। इस पर जब वह पकड़ा जाता है तो उसके मालिक उसे पुलिस के हवाले करना चाहते हैं। जो जोसेफ कभी भी अपने मालिक के सामने कुछ नहीं बोलता था, आज वह उनके सामने गिड़गिड़ाने लगा। वह कहता है -

१४) **स्रोतभाषा** - "No, sir—no—never!" I shrieked forth, the dullness of my despair suddenly unlocking my tongue and finding a vent in words. "Never, never!" —and falling on my knees, I clung with my arms clasped around Mr. Delmar's legs. "For God's sake do not cast me off, sue! For God's sake, do not!"<sup>234</sup>

**लक्ष्यभाषा** - जाने किसी ने मेरे जीभ के ताले की जो इतनी देर से बंद था चाभी से खोल दिया हो। उस प्रकार मैं बोल उठा "नहीं-नहीं साहब ! कभी नहीं ! इतना कहकर मैंने धरती पर घुटने टेककर देलमर साहब के पैर पकड़ लिए - दुहाई साहब मैं आपके

<sup>234</sup> Joseph Wilmot, p -19

पैर पड़ता हूँ मुझे मत छोड़ियो ईश्वर के लिए मुझे विदा मत कीजिये मैं आपकी ही शरण में अपने दिन काटूंगा।<sup>235</sup>

**समतुल्यता** - इस अनुच्छेद के अनुवाद में अनुवादक ने वाक्य विन्यास में थोड़ी कमी छोड़ दी है। जैसी कि I shrieked forth, the dullness of my despair suddenly unlocking my tongue and finding vent in words. का अनुवाद 'किसी ने मेरे जीभ के ताले की जो इतनी देर से बंद था चाभी से खोल यहाँ पर इसे ऐसे भी लिखा जा सकता था 'अब तक जो मेरी जुबान बंद थी उस पर लगे ताले को अचानक से किसी ने खोल दिया' दूसरा For God's sake do not cast me off का अनुवाद 'ईश्वर के लिए मुझे विदा मत कीजिये' यह भी किया जा सकता था 'ईश्वर के लिए मुझे मत निकालिए' इसके अलावा 'दुहाई साहब' जैसा शब्द भी कुछ ठीक नहीं लग रहा है। अनुवादकों ने शब्द प्रति शब्द अनुवाद तो किये हैं लेकिन उनमें कोई रुचि जैसा भाव नहीं आ रहा है। यह प्रयोग अनूदित जैसा अलग ही नज़र आ रहा है। जोसफ के दुःख से पाठक जुड़ नहीं पा रहा है। उपर्युक्त अंश में समतुल्यता की कमी है।

**१५) स्रोतभाषा** - "But you, annabel – dearest annabel?" I whisperingly answered: "to what perils am I leaving you exposed!"

"Be not uneasy, Joseph, on my account," she rejoined: " my life at least will not be menaced Beware of my father beware also of that man Taddy, who was here this evening.and now go!"

"No, no, annabel—I cannot leave you thus!" I said: "there is madness in the bare thought I rather would I dare everything" "Joseph, Joseph— I conjure you to depart!

You know not what you are risking by this delay!"

---

<sup>235</sup> जोसफ विल्मोट, पृ - 76-77

"No, annabel" " Joseph, if my father were to overhear us, he might in the first paroxysm of his rage shudder at the idea you understand me for must take depart '."236

**लक्ष्यभाषा** - "किन्तु तुम आनाबेल, प्रिय आनाबेल तुमको मैं किसके पास छोड़ जाऊं मेरे लिए न घबराओ – जोसफ! मुझे ये लोग मार नहीं डालेंगे, किन्तु तुम सचेत हो मेरे पिता से सावधान रहो – और उस टॉडी से भी सावधान रहो। टॉडी आज रात को यहाँ आया था, अब तुम जाओ।"

"नहीं ! आनाबेल ! मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकता तुम यहाँ बैठी दुःख झेलोगी और मैं चला जाऊंगा कैसे पागलपन की बात है।"

"जोसफ ! जोसफ ! विनती करके कहती हूँ तुम जाओ तुम नहीं जानते कि इस देरी में कितनी भारी जोखिम है। तुम जाओ ।"

नहीं आनाबेल।

देखो यदि मेरा बाप इस बात को सुन लेगा – उस समय की बात याद करने से भी मेरा हृदय काँपता है – तो न जाने क्या फसाद करेगा। यदि मुझे बचाना है तो तुम जाओ।"237

**समतुल्यता** - यहाँ पर अनुवादक ने "' But you, annabel — dearest annabel ?" । whisperingly answered: " to what perils am I leaving you exposed!" का अनुवाद "किन्तु तुम आनाबेल, प्रिय आनाबेल तुमको मैं किसके पास छोड़ जाऊं किया है। परन्तु अनुवाद में अनुवादक ने अपने अनुसार वाक्य को ढाल दिया है। इसका पूर्ण अनुवाद नहीं किया है। अनुवाद कुछ इस प्रकार से किया जाना था 'पर आनाबेल तुम - प्यारी आनाबेल – मैंने बहुत धीरे से उसे कहा, किस आधार पर मैं तुम्हें यहाँ छोड़ जाऊं!' एक दूसरा वाक्य आया है जहाँ पर लिखा है 'You know not what you are

<sup>236</sup> Joseph Wilmot, p -36

<sup>237</sup> जोसफ विल्मोट, पृ - 127

risking by this delay !” इसका अनुवाद अनुवादक ने ‘तुम नहीं जानते कि इस देरी में कितनी भारी जोखिम है’ किया है। यहाँ पर ‘कितनी भारी जोखिम है’ पद कुछ अटपटा-सा लग रहा है। यहाँ पर इस पद का अनुवाद कुछ और होना चाहिए था ‘तुम नहीं जानते कि इस तरह से देर करने में कितना बड़ा खतरा है’ और ‘हृदय काँपता है’ के स्थान पर मन घबरा रहा है। ‘तो न जाने क्या फसाद करेगा’ यह ठीक भी लग रहा है लेकिन समतुल्यता का प्रश्न उठाया जाए तो अनुवादक ने इस अंश के अनुवाद में कुछ-कुछ कमियाँ छोड़ दी हैं। इस प्रसंग में आनाबेल की चिंता तो दिखायी है। लेकिन वह उतनी प्रभावी नहीं लग रही है।

यदि एक ही देश में लिखे जाने वाले एक प्रदेश का साहित्य किसी अन्य प्रदेश में पढ़ा जाता तो शायद पाठक आसानी से समझ पाते। इसका कारण यह होता है कि एक ही संस्कृति, भाषा और रीति-रिवाज आपस में समानता रखते हैं। एक समाज की रचना उस देश के लोगों के समान व्यवहार और आचार-विचार को प्रदर्शित करती है। इसके विपरीत किसी अन्य देश की सभ्यता और संस्कृति में पूरी तरह से बदलाव आ जाता है। अंग्रेजी सभ्यता हिंदी के पाठकों के लिए बिल्कुल नयी थी। जिनके विचार भारतीयों की मानसिकता से कोई समानता नहीं रखते थे। ऐसे में अनुवादक ने ऐसे अनुवाद किये जो पाठक के लिए अंग्रेजी समाज को समझने में सहायक बन पड़े। इसको और अधिक स्पष्टता से दिखाने के लिए पाठ्यपरक सीमाओं की तुलना में समझना आवश्यक है।

## पाठ्यपरक सीमायें

किसी भी रचना के अनूदित किये जाने से पहले उस रचना के सन्दर्भ में उठने वाले प्रश्नों पर ध्यान दिया जाता है। जिनमें से पहला प्रश्न यह है कि जो रचना अनूदित होने वाली है उसके पाठक कौन हैं? उसे किस वर्ग के लोग पढ़ना चाहते हैं?

रेनॉल्ड्स के उपन्यास हिंदी भाषा में उस समय अनूदित हुए जब बहुत कम संख्या के लोग साक्षर थे। न तो शिक्षा का इतना अधिक विकास हुआ था और न ही लोगों की समझ का ही। इंग्लैंड के समाज के परिवेश और उनके व्यवहार को समझने के लिए हिंदी भाषी लोग उनसे अधिक परिचित नहीं थे। यदि परिचित थे तो केवल शासन करने वालों के रूप में सदानंद शुक्ल, चतुर्भुज औदीच्य तथा यशोदानंदन खत्री ने अनुवाद करते समय यह अवश्य ध्यान रखा है कि रेनॉल्ड्स के अनूदित उपन्यासों को पढ़ने वाले लोग आम नागरिक हैं। न तो वे किसी कार्यालय के पेशेवर हैं और न ही हिंदी के विशेषज्ञ हैं। भाषा का प्रयोग करते हुए उन्होंने यह भी ध्यान दिया है कि ये उपन्यास अखबार या पत्रिका में नहीं छपने वाले हैं।

जब किसी भी उपन्यास का अनुवाद किया जाता है तो उसमें समाहित होने वाले अनेक तत्वों का ध्यान रखा जाता है। किसी भी रचना में अनेक तत्वों का समावेश होता है। अनेक प्रकार के भाव उसमें होते हैं जैसे हास्य, व्यंग्य, क्रोध, घृणा, प्रेम, वियोग, वीरता, तिलिस्म, रहस्य इन सभी का प्रयोग अनेक प्रकार की अंतर्वस्तु के समावेश के लिए होता है। गद्य में ये सभी तत्व भाव बन जाते हैं जिन्हें पदों में रसों का नाम दे दिया जाता है। इन सभी से किसी भी पाठ या प्रसंग की अंतर्वस्तु का निर्माण होता है। इस अंतर्वस्तु को एक भाषा से दूसरी भाषा में अंतरित करने के लिए अनुवादकों को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इतना ही नहीं उसे सार्थकता भी मिलती है। यह सार्थकता भाषा की अनेक इकाइयों में संतुलन बनाए रखने से ही संभव हो पाती है। भाषा की इन इकाइयों में वाक्य, उपवाक्य, शब्द, पद, पदबंध और प्रसंग का महत्त्व होता है। इसीलिए किसी भी साहित्यिक रचना में अंतर्वस्तु का महत्त्व अधिक रहता है। रचना के प्रारम्भ होने के साथ ही अनुवादक को लेखक के संदेश के प्रति सक्रियता के साथ तादात्म्य बनाना होता है। इस सक्रियता में अनुवादक का कर्तव्य केवल लिखी हुई रचना को ही परखना नहीं होता है। लेखक के

मन में अनुवादक को प्रवेश करना पड़ता है। न केवल एक घुसपैठिये की तरह बल्कि एक चिकित्सक की तरह। इसके लिए डॉ. नगेन्द्र का कहना है कि “अनुवादक को पाठक और रचयिता की नहीं, बल्कि सहृदय और सर्जक दोनों की भूमिका में उतरना होता है। पहले सहृदय पाठक के रूप में कृति को ग्रहण करना होता है और फिर गृहीत रूप की लक्ष्य भाषा में पुनः सृजना करनी होती है। उसे कृति के अभिधार्थ में न अटक कर उसकी प्रतीकात्मकता को और उसके माध्यम से ध्वनित पात्रों की मानसिकता तक पहुंचना होता है। उसे उस स्थिति से भी जूझना होता है जहां शब्दों के अर्थ चुक जाते हैं और पात्रों की आत्मा संकेतों, बिम्बों और प्रतीकों के रूप में ...”<sup>238</sup> रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में भी किसी प्रकार की कोई कमी नहीं मिली हैं। इनके सभी उपन्यास अनेक तत्वों से परिपूर्ण हैं। किसी एक समाज या सभ्यता का ही नहीं अपितु पूरे संसार का चित्र यहाँ मिलता है।

किसी उपन्यास की अंतर्वस्तु की रक्षा करने के लिए लेखक को अपनी समझ और अनुभव का सहारा लेना पड़ता है। अंतर्वस्तु को अंतरित करना कोई आसान काम नहीं है, इस प्रक्रिया में भी अनुवादक को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अनेक बार ऐसे शब्दों और वाक्यों का सामना अनुवादक को करना पड़ता है जिसके लिए किसी शब्दकोश का सहारा भी नहीं लिया जा सकता है। अनेक बार ऐसा होता है कि यदि शब्दकोश नहीं है तो लिप्यन्तरण से भी काम नहीं चलता है। हर अंश में पाद-टिप्पणी को रख देना भी सही नहीं होता है। ऐसे में ही अनुवादक की परीक्षा होती है। रचना में आने वाले किसी सन्देश को बनाए रखने के लिए उसे ऐसी अभिव्यक्ति करनी होती है कि अर्थ का अनर्थ न हो जाए। लक्ष्यभाषी पाठक को यह भी समझ आ जाए कि लेखक ने वही लिखा है जो पाठक ने समझा है। आवश्यक

<sup>238</sup> डॉ. नगेन्द्र (संपा.), *अनुवाद विज्ञान: सिद्धांत और अनुप्रयोग*, नयी दिल्ली, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय: दिल्ली विश्वविद्यालय, प्रथम संस्करण, 1993, पृ- 192

नहीं है कि जिस क्रम में लेखक के वाक्य हों, उसी क्रम में अनुवादक भी लक्ष्य भाषा को अनूदित करे। लेखक के सन्देश को अभिव्यंजित करना ही अनुवादक का कर्तव्य है। अनुवादक की सबसे बड़ी चुनौती ही है कि लक्ष्यभाषी पाठ और मूल पाठ में संतुलन बनाये रखे।

रेनॉल्ड्स के उपन्यास अंग्रेजी भाषा से हिंदी में अनूदित हुए थे। स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा में कितना अंतर है या कितनी समानता है इसे कुछ विशेष एवं निम्नलिखित अंशों में सार्थकता के आधार पर परखा जाएगा -

१) **स्रोतभाषा** - at the first glance which he threw upon agatha, Emma and Julia, the sentiment of mingled pity and indignation was deepened in his soul to think that such beautiful creatures should have become entangled in such detestable intrigues. He was however far from suspecting that beneath the air of lively, good tempered artlessness which was natural to them and which corrupting influences had not as yet materially impaired, there lurked all the nascent tendencies and inclinations towards that thorough depravity which the denizens of fashionable life are so skilled in veiling with smiles, affability and the glitter of fascinating manners—as the hideousness of a corpse may be concealed with flowers.<sup>239</sup>

**लक्ष्यभाषा** - “अगैथा, एम्मा और जूलिया को देखते ही पहले तो बड़ा क्रोध चढ़ आया, पर साथ ही यह सोचकर दया भी आयी की ऐसी सुंदर स्त्रियाँ इन नीच और पापकर्म में लिप्त हैं। अस्तु जो कुछ हो उन लोगों को देखकर मन में तरह-तरह की भावनाएं उठने लगीं। उनके मन में पूरा-पूरा विश्वास हो गया कि जिस प्रकार पुष्पवृक्षों के नीचे सांप छिपा रहता है, शायद उसी प्रकार उनके इस स्वाभाविक मंद मुस्कराहट, मधुरभाषण और विशुद्ध कटाक्ष के भीतर वजहदार दुनिया के राग-रंग, नाज, नखरे में

<sup>239</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 3, p - 190

चौबीसों घंटे लिप्त रहने के कारण किसी प्रकार की धूर्तता और अश्लीलता छिपी होगी। उन्हें पूरा विश्वास है कि ये ठीक उस पथिक के समान हैं, जिसे जान बूझकर किसी दुष्ट ने बुरा रास्ता बतला दिया है। और जिस प्रकार वह बेचारा अनजान पथिक निर्दोष है, उसी प्रकार ये भी निर्दोष हैं।”<sup>240</sup>

### विश्लेषण -

१) एक सुबह जब मिस्टर लोफ्टस अपने कमरे में बैठे थे तभी होटल का एक कर्मचारी उनके लिए उवेन बहनों की ओर से नाश्ते का प्रस्ताव लेकर आया। वे उनकी लन्दन की रानी के विरुद्ध किये जाने वाली योजना से परिचित थे। इसीलिए वह उनकी अगली चालों से बचने के लिए सतर्क रहते हैं।

२) लेखक ने इस उपन्यास में लम्बे-लम्बे वाक्यों का प्रयोग किया है। ‘at the first glance which he threw upon agatha, Emma and Julia, the sentiment of mingled pity and indignation was deepened in his soul to think that such beautiful creatures should have become entangled in such detestable intrigues.’ इस वाक्य को अनुवादक ने भी हिंदी भाषा की प्रवृत्ति के विरुद्ध एक ही वाक्य में परिवर्तित कर दिया है। ‘अगैथा, एम्मा और जूलिया को देखते ही पहले तो बड़ा क्रोध चढ़ आया, पर साथ ही यह सोचकर दया भी आई की ऐसी सुंदर स्त्रियाँ इन नीच और पापकर्म में लिप्त हैं। अस्तु जो कुछ हो उन लोगों को देखकर मन में तरह तरह की भावनाएं उठने लगीं।’ यहाँ पर अनुवादक ने ‘detestable intrigues’ का अनुवाद ‘नीच और पापकर्म में लिप्त हैं’ किया है। इस पद का अनुवाद ‘ऐसे घृणास्पद कार्य में लिप्त हैं’ लिखा जाता तो प्रसंग के अनुसार अधिक अनुकूल रहता। क्योंकि अपने ही देश की रानी के खिलाफ ऐसा कार्य जो करे वह घृणा के ही योग्य है। इससे अनुवाद अधिक सार्थक लगता।

<sup>240</sup> लन्दन रहस्य, खंड -6, पृ -44-45



3) लेखक ने उवेन बहनों की चतुराई के साथ ही उनकी नासमझी को भी उद्धृत किया है। 'He was however far from suspecting that beneath the air of lively, good tempered artlessness which was natural to them and which corrupting influences had not as yet materially impaired, there lurked all the nascent tendencies and inclinations towards that thorough depravity which the denizens of fashionable life are so skilled in veiling with smiles, affability and the glitter of fascinating manners—as the hideousness of a corpse may be concealed with flowers.' का अनुवाद अनुवादक ने 'उनके मन में पूरा-पूरा विश्वास हो गया कि जिस प्रकार पुष्प वृक्षों के नीचे सांप छिपा रहता है शायद उसी प्रकार उनकी इस स्वाभाविक मंद मुस्कराहट, मधुरभाषण और विशुद्ध कटाक्ष के भीतर वजहदार दुनिया के रागमंग, नाज, नखरे में चौबीसों घंटे लिप्त रहने के कारण किसी प्रकार की धूर्तता और अश्लीलता छिपी होगी।' यहाँ यह वाक्य हिंदी की प्रवृत्ति के अनुसार बड़ा है इसे छोटे-छोटे वाक्यों में भी लिखा जा सकता था। जैसोलीन ने इन तीनों बहनों के स्वभाव की तुलना समाज के विभिन्न हिस्सों से की है। उनकी यह सोच इन शब्दों के प्रयोग मात्र से ही उनकी नीच प्रवृत्ति को प्रभावी बना रही है। इस पद में वयंग्य के साथ ही जैसोलीन का क्रोध नज़र आ रहा है। दुनिया में ऐसी प्रवृत्ति वाले लोगों का क्या स्थान होता है और भविष्य में उन्हें क्या दंड मिल सकता है, इसकी परख अच्छी तरह से जैसोलीन को है। यह व्यंग्यात्मक भाषा अवश्य है परन्तु जैसोलीन की चिंता भी इसमें व्यक्त हो रही है।

2) **स्रोतभाषा** - "a lady who takes a butler should be able to pay him," said Mr. Robinson: then, with all the bitterness of sarcasm which the natural malignity of his disposition could enable him to throw into his language, he observed, "Even the very lowest of kept women always pay their servants whom they are obliged to turn off because they themselves are turned off by their paramours." "To be sure!" added Alicia: "The common streetwalker to the base seducer the nobly-born villain who cares of her servants" "and therefore I'm

sure the prostitute of fashionable life ought to do the same," remarked the butler."<sup>241</sup>

**लक्ष्यभाषा** - खानसामा उसे कहता है की इस जुआचोरिन के पास काम करके हमें अब कुछ नहीं मिलने वाला है। जो औरत खानसामा रखने के शौक रखती है उसे मशुहरा देने की भी शक्ति होनी चाहिए। वह कहता है कि जो लोग पैदल चलते हैं वे भी अपने नौकरों का खयाल करते हैं। "इसीलिए कहता हूँ की नामजद वैश्या से भी वैसा ही व्यवहार करना चाहिए।"<sup>242</sup>

**विश्लेषण** -

- १) मिसेस फ़िज़हर्बर्ट महल से निकाल दिए जाने पर भी अपना विलासी जीवन नहीं छोड़ती है। उसके नौकर भी जानते हैं कि अब उनकी तनख्वा नहीं मिलेगी। एक दिन जब पुलिस वाले आकर उसकी सम्पत्ति कुर्क कर जाते हैं तब उसके नौकर भी उसकी बेईज्जती करने लगते हैं।
- २) अनुवादक ने कुछ पदों का अनुवाद शब्द प्रति शब्द न करके भावात्मक रूप से किया है। रोबिन्सन, फ़िज़ का खानसामा था गुस्से में आकर वह कहता है 'a lady who takes a butler should be able to pay him,' said Mr. Robinson: then' का अनुवाद 'खानसामा उसे कहता है कि इस जुआचोरिन के पास काम करके हमें अब कुछ नहीं मिलने वाला है।' इस वाक्य में यदि इसका सीधा-सीधा अनुवाद किया जाता तो यह अंश उतना प्रभावी नहीं बन पाता। उदाहरण के लिए 'औरत खानसामा रखने का शौक रखती है उसे नौकर को तनख्वा भी देनी चाहिए।' रोबिन्सन की भावाभिव्यक्ति और उसके आंतरिक गुस्से का अनुवाद सदानंद शुक्ल जी ने अच्छा किया है।

<sup>241</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 2, p - 603

<sup>242</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -3, पृ - 471

- 3) रोबिन्सन उसके लिए अभद्र भाषा का भी प्रयोग करता है। उसके क्रोध को दिखाने के लिए अनुवादक ने 'an therefore I'm sure the prostitute of fashionable life ought to do the same,' remarked the buter का अनुवाद "इसी से कहता हूँ की नामजद वैश्या से भी वैसा ही व्यवहार करना चाहिए" किया है। इस पंक्ति को पढ़कर ऐसा प्रतीत हो रहा है कि अनुवादक स्वयं रोबिन्सन की वाणी में बोल रहे हैं। 'prostitute' का अनुवाद 'नामजद वैश्या' इस वाक्य में अपना अधिक प्रभाव बनाये हुए है। रोबिन्सन का आंतरिक क्रोध और उसकी अभद्र भाषा के प्रयोग से उसकी भाव-भंगिमाएं इस अनूदित अंश में परिलक्षित हो रही है।
- 4) तभी वे सब मिलकर उसके पास जाते हैं। जब उन्हें यह पता चल जाता है कि अब उन्हें कुछ नहीं मिलने वाला है, वे सब मिलकर उसकी बेईज्जती करना शुरू कर देते हैं। ऊँचे घरानों के नौकरों को अपने मालिकों के बारे में सब कुछ पता होता है। उसी को अपना मोहरा बनाकर वे लोग अपने मालिकों के बुरे समय में प्रयोग करते हैं। फिज़ की इन्हीं कमजोरियों का फायदा रोबिन्सन भी उठाता है। अनुवादक ने अनुवाद करते समय एक मालिकन की नौकर के द्वारा किये जाने वाले अपमान को सफलता के साथ हिंदी में रूपांतरित किया है।
- 3) **स्रोतभाषा** - I will destroy your reputation— I will blast your fame— I will whisper to one and breathe in the ear of another that I have possessed you—that you are my mistress—that I am secretly blessed with your favours—aye, and I will even forge amatory epistles, signed by your name, to show confidentially to my friends as proofs of all the tales that I shall thus whisper concerning thee! This is the course which I will pursue. Miss Trelawney and even though you may be the purest of virgins, yet will I bring you to be looked upon as the most profligate of Messalinas. Now, then—you know the nature of the warfare which I am resolved to wage. I give you one

fortnight to deliberate and if by mid-day on the second Wednesday from this date, I do not receive a favourable letter from you, I will at once enter without pity and without remorse upon this tremendous crusade which I have shadowed out for your contemplation."<sup>243</sup>

**लक्ष्यभाषा** - "मैं तुम्हारा यश धूल में मिला दूंगा- तुम्हारे माथे पर कलंक का टीका लगा दूंगा, की तुमने मुझे अपना दिल दे दिया है – मेरे ताबे रहती हो – और छिपकर मुझे अपने यहाँ बुलाती हो। इसके अलावा मैं तुम्हारे नाम की जाली प्रेम-पत्रिकाएँ बनवाऊंगा और अपनी बात के प्रमाण में उन्हें सबको दिखाऊंगा। अब मैं यही कार्यवाही करूंगा। तुम चाहे दूध कि धोई क्यों न हो, मैं तुम्हें बदनाम अवश्य कर डालूँगा। तुम्हें मिट्टी में मिलाकर छोड़ूँगा। तुम्हारा सर्वनाश करने के लिए जो काम मैं करने वाला हूँ, सो सब तुम्हारी समझ में आ गया होगा। अब मैं तुम्हें पंद्रह दिन की मोहलत देता हूँ, अगर तुमने आज के पन्द्रहवें दिन बुधवार को दोपहर तक मेरी बात मानकर मेरे पास अनुकूल उत्तर न भेजा, तो जो कुछ मैंने कहा है, उसे कर दिखाने से कभी बाज न आऊँगा।"<sup>244</sup>

**विश्लेषण** -

- १) उपर्युक्त अनुवाद में अनुवादक ने विनिशिया और कर्नल मल्पास की बातचीत का अनुवाद किया है। कर्नल मल्पास विनिशिया को अपनी रखैल बनने का प्रस्ताव देता है। वह उसके इस प्रस्ताव को निष्ठुरता से ठुकरा देती है। इस पर कर्नल उसको बदनाम करने की धमकी देता है। इस पूरी घटना का अनुवादक ने अपने अनुभव के आधार पर उसका सन्दर्भ समझ कर अनुवाद किया है।
- 2) 'I shall thus whisper concerning thee!' इस वाक्य का अनुवाद प्रसंग में नहीं किया गया है। लेकिन इसका अनुवाद कुछ इस प्रकार होता 'इस प्रकार मैं तुम्हारे

<sup>243</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 3, p -68

<sup>244</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -5, पृ -205

बारे में कानाफूसी करूंगा।' परन्तु इसके अनूदित न किये जाने पर भी प्रसंग में कोई अधूरापन नहीं लग रहा है।

2) इस अंश का अनुवाद करते हुए अनुवादक ने स्रोत भाषा के सन्दर्भ की रक्षा की है मल्पास के द्वारा बोली गयी धमकी भरी भाषा को 'that you are my mistress' का अनुवाद 'मेरे ताबे रहती हो' कर अनुवादक ने बहुत सरलता से अभिव्यक्ति दे दी है। यहाँ पर 'तुम मेरी रखैल हो' भी किया जा सकता था। तो यह अनुवाद अधिक सटीक प्रतीत होता।

3) यहाँ पर मल्पास के मन की आतंरिक अभिव्यक्ति है। Miss Trelawney: and even though you may be the purest of virgins, yet will I bring you to be looked upon as the most profligate of Messalinas.' का अनुवाद 'तुम चाहे दूध कि धोई क्यों न हो, मैं तुम्हें बदनाम अवश्य कर डालूँगा। यहाँ पर यदि 'you may be the purest of virgins' का अनुवाद अनुवादक ने 'तुम्हें मिट्टी में मिलाकर छोड़ूँगा' किया है। इस पंक्ति का अनुवाद यदि 'चाहे तुम दुनिया की सबसे पवित्र चीज़ ही क्यों न हो' किया जाता तो वह उतना अधिक प्रभावी नहीं होता। इस प्रसंग का अनुवाद छोटे-छोटे सरल वाक्यों में कर अनुवादक ने इसकी अंतर्वस्तु की रक्षा की है।

“निष्कर्षतः अनुवाद मूल्यांकन एक जटिल, विवादास्पद और संवेदनशील प्रक्रिया है जिसे व्यवस्थित आधार देने हेतु प्रविधियों के विकास के लिए कई प्रयास हुए किन्तु फिर भी कोई सुनिश्चित, वस्तुनिष्ठ, विषयपरक और प्रामाणिक आधार नहीं मिल पाया। वास्तव में अनुवाद एक संश्लिष्ट प्रक्रिया है जिसकी पूर्ण प्रतिबद्धता मूल पाठ से है, किन्तु अनुवाद के बाद अनूदित पठ लक्ष्यभाषा का अंग होते हुए भी अपनी स्वायत्त सत्ता रखता है। मूलपाठ का सहपाठ होते हुए भी मूलपाठ से उसका सम्बन्ध टूट जाता है और वह लक्ष्यभाषा की व्यवस्था और परम्परा में पूर्णतया

विन्यस्त और संयोजित हो जाता है। इसीलिए अनुवाद मूल्यांकन की सफलता इसी में है, जो यह निर्णय दे सके कि अनुवाद के साथ पूर्ण न्याय हो पाया है और वह अपने आप में प्रामाणिक और सफल है।”<sup>245</sup>

किसी भी रचना का अनुवाद करने से पहले अनुवादक मूल रचना को आत्मसात करता है। उसमें आने वाले पात्रों और घटनाओं के साथ अपने मन-मस्तिष्क का तादात्म्य स्थापित करता है। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अनुवाद करने से पहले अनुवादकों ने लेखक के विचारों के साथ अपने विचारों को एकाकार किया होगा। बिना इसके लेखक और अनुवादक के विचारों और दृष्टिकोण के भिन्न दिशाओं में जाने की संभावना बनी रहती है।

रेनॉल्ड्स के उपन्यास एक विशाल फलक पर लिखे गये हैं। जिनका अनुवाद करना कोई आसान काम नहीं था। इन उपन्यासों का भाषिक विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि अनुवादकों ने भी इनका अनुवाद करने में बहुत परिश्रम किया होगा जब कोई भी रचना इतने वृहद् स्तर पर लिखी जाती है तो उसको नियंत्रित तरीके से पाठकों के सामने रुचिकर ढंग से प्रस्तुत करना भी अपने आप में एक चुनौतिपूर्ण कार्य है। इस चुनौती का सामना करने के लिए अनुवादकों ने अनेक मार्ग अपनाये हैं जिससे कि वे सुगमता के साथ लक्ष्यभाषी पाठक तक स्रोत भाषा में लिखे संदेश को पहुंचा सकें

प्रभावधर्मी अनुवाद करने के लिए इन अनेक मार्गों में पहला मार्ग विभिन्न प्रकार के शब्दों का प्रयोग करना था। जिनमें उर्दू, तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी (जिनका लिप्यन्तरण किया गया) जैसे शब्दों का प्रयोग देखने को मिला है। आलोच्य रचनाओं के तीन उपन्यासकारों में से सदानंद जी ने तत्सम और उर्दू शब्दावली का

<sup>245</sup> गोस्वामी, कृष्ण कुमार, *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2008, पृ- 106

अधिक प्रयोग किया है। इस प्रकार की शब्दावली प्रयोग से उनकी भाषा में प्रौढ़ता के दर्शन होते हैं। दूसरी ओर जोसेफ विल्मोट के उपन्यासकारों ने तद्भव और देशज शब्दों का प्रयोग अधिक किया है। उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि देशज शब्दों का प्रयोग तीनों ही अनुवादकों ने भरपूर मात्रा में किया है। देशज शब्दों का प्रयोग करने का एक और उद्देश्य होता है कि वह यह कि अनूदित उपन्यासों में ऐसे प्रयोग से विदेशीपन की झलक कम नज़र आती है।

दूसरी ओर क्योंकि यह अंग्रेजी से अनूदित किये हुए उपन्यास हैं तो बहुत्सी जगह अनूदित उपन्यासों में लिप्यन्तरण भी देखने को मिला है। लिप्यन्तरण की इस प्रक्रिया ने कहीं-कहीं पर पाठकों के लिये बाधा भी उत्पन्न कर दी है। उनके समतुल्य अनुवादक हिंदी भाषा के शब्द भी रख सकते थे या दूसरे विकल्प में अनुवादक पाद टिप्पणियाँ भी दे सकते थे। इस प्रकार से अनुवाद किये जाने पर अनूदित उपन्यासों की प्रवाहमयता में कमी आयी है। इसके अतिरिक्त अनेक स्थानों पर धर्म और मान्यताओं से सम्बंधित अनेक प्रतीकात्मक भाव भी देखने को मिलते हैं। जो एक संकल्पना विशेष से जुड़े हुए हैं। ऐसे शब्दों की संकल्पना को कहीं तो अनुवादकों ने पाद-टिप्पणी में स्पष्ट कर दिया और कहीं पर अस्पष्टता या अधूरी जानकारी भी दे दी है। ऐसे में उस संदर्भित संकल्पना से सम्बंधित जो जानकारी मुझे प्राप्त हुई है उसका उल्लेख मैंने सम्बंधित पाठ के साथ कर दिया है। यदि जानकारी अधूरी या अस्पष्ट रह जाए तो संदेश की प्रवाहमयता बाधित हो जाती है। इस सन्दर्भ में भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के सम्बन्ध में प्रोफेसर गोस्वामी द्वारा सस्यूर की पंक्ति को उद्धृत कर देना सही रहेगा वे कहते हैं “भाषिक प्रतीक अभिव्यक्ति और कथ्य की समन्वित इकाई है तथा अभिव्यक्ति और कथ्य का यह सम्बन्ध संकल्पना शक्ति द्वारा निर्धारित होता है। इसका आधार मनोवैज्ञानिक है और यह मन में बिम्ब के

रूप में रहता है।”<sup>246</sup> तो जब तक कोई अर्थ स्पष्ट नहीं होगा तब तक कैसे कोई प्रतीक बिम्बात्मक रूप धारण करेगा।

जब कोई अनुवादक किसी रचना का अनुवाद करता है तो वह पहले उसे आत्मसात करता है। फिर तादात्म्य लाने के लिए घटनाओं, पात्रों की क्रिया, प्रतिक्रिया, व्यवहार आदि में प्रवाह पर ध्यान देता है। आवश्यक नहीं है कि यह तादात्म्य बनाये रखने के लिए शब्दों और वाक्यों का अनुसरण ही करे। इनके क्रम का अनुसरण किये बिना भी मूल सन्देश को बनाए रखने पर ही अनुवादक का ध्यान केन्द्रित रहना चाहिए। अनुवादकों ने रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को आत्मसात कर हिंदी और अंग्रेजी भाषा के बीच तादात्म्य बनाने में सफलता दिखाई है। इसके इतर अनूदित उपन्यासों में संरचनापरक, अर्थपरक और व्यवहारपरक अनेक ऐसे प्रयोग हुए हैं, जिनमें स्रोत भाषा को लक्ष्य भाषा के समतुल्य संप्रेषित करने के बहुत से प्रयास देखने को मिले हैं। समतुल्यता लाने के लिए अनुवादकों ने शब्द, पद, वाक्य, मुहावरे, संदर्भ आदि सभी कुछ सम्मिलित कर उन सभी को निकटम पर्याय के साथ अनूदित किया है। जिससे यह ज्ञात होता है कि अनुवादकों के प्रयोग मूल के निकट ही हैं।

कांसाग्रान्दे के अनुसार भाषिक अनुवाद, “केवल अभिव्यक्तिपरक स्तर तक ही सीमित रहता है। क्योंकि यह अनुवाद इसीलिए नहीं किया जाता कि मूल पाठ में क्या कहा गया है अथवा क्यों कहा गया है, अपितु इसीलिए कि कैसे कहा गया है इस प्रकार के अनुवाद लक्ष्यभाषा को उत्तरोत्तर अभिव्यक्ति सामर्थ्य की ओर ले जाते हैं और अंततः लक्ष्यभाषा में इतनी शक्ति आ जाती है कि वह अन्य भाषाओं के साथ अंतर अनुवादनीयता स्थापित कर सकती है और आधुनिकीकृत कहला सकती है। यदि भाषिक अनुवाद में प्रयोजन होता है कि कथ्य को कैसे अभिव्यक्त किया गया तो

---

<sup>246</sup> गोस्वामी, कृष्ण कुमार, *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2008, पृ- 264



सौन्दर्यपरक अनुवाद में अनुवाद का प्रयोजन यह दिखाना भी होता है कि उस अभिव्यंजना शैली को या अंदाज़ेबयां को किन विधियों से सौन्दर्यपरक बनाया गया है और उससे किस मात्रा तक रसानुभूति होती है। निश्चित रूप से ऐसे ही अनुवाद को पुनर्सृजन भी कहा गया है। क्योंकि पूरी प्रक्रिया में से गुजरने के बाद अनूदित कृति मात्र अनुवाद न रहकर एक स्वतंत्र सृजनात्मक कृति बन जाती है<sup>247</sup> मूल कृति के समतुल्य ही लक्ष्यभाषा के पाठ की पुनःसर्जना कर अनुवादकों ने समान प्रभाव उत्पन्न किया है। इस प्रक्रिया में अनुवादकों ने छूट अवश्य ली है। उनका कर्तव्य पाठकों तक लेखक के मंतव्य को पहुँचाना था जिसके लिए तीनों ही अनुवादक प्रतिबद्ध नज़र आते हैं।

अपने ज्ञान का प्रयोग करते हुए लेखक के विचारों को शब्दों और वाक्यों में बद्ध करने के लिए अनुवादकों ने अनेक मार्ग अपनाए हैं। इन मार्गों का प्रयोग करने के लिए कोई विशेष नियम नहीं बने हैं। सन्देश की रक्षा करने के लिए वह अपनी बुद्धिमता से अनुवाद के सिद्धांतों का प्रयोग करते दिखे हैं। तीनों ही अनुवादकों ने रचना के संदेश को कोई हानि नहीं पहुँचायी है। आलोच्य उपन्यासों का अनुवाद करने वाले अनुवादक भी अनुभवी ही रहे होंगे। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का भाषिक विश्लेषण करने के बाद इस अध्याय को जब तुलना के आधार पर परखा गया तो वे अधिकतम स्थानों पर संप्रेषणीय ही रहे हैं।

---

<sup>247</sup> अग्रवाल, डॉ. कुसुम, अनुवाद शिल्प समकालीन सन्दर्भ, साहित्य सहकार, 2008, दिल्ली, पृ- 73



## चौथा अध्याय

### रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का सांस्कृतिक विश्लेषण

- पाद-टिप्पणी
- मुहावरे और लोकोक्तियाँ
- खान पान और ब्रिटिश विलासिता
- रहन-सहन और जलसे



## चौथा अध्याय

### रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का सांस्कृतिक विश्लेषण

अनुवाद एक परिपक्व कला है। जो मूल भाषा में लिखी गयी रचना की अंतर्दृष्टि और उस रचना के सम्पूर्ण विश्लेषण पर आधारित होती है। अनुवाद की प्रक्रिया एक सम्पूर्ण ज्ञान से जुड़ी होती है जिसमें अनुवादक लेखक के सम्पूर्ण ज्ञान को अपने ज्ञान में समेटकर एक वृहद् परिप्रेक्ष्य में किसी दूसरी भाषा में उसे अभिव्यक्त करता है। अनुवाद करते समय दो भाषाओं के बीच की जाने वाली तुलना व्यवस्थित और समग्र होती है। जो एक रचना को दूसरी भाषा के सामान्यीकरण की ओर अग्रसर करती है। अनुवाद के माध्यम से एक देश की संस्कृति तथा साहित्य की विशिष्टताओं का प्रसार अन्य देशों में होता है। इसी प्रकार अनुवाद के कारण पाश्चात्य देशों की संस्कृति का भारत में भी प्रचार-प्रसार हुआ।

अनुवाद करने का उद्देश्य एक रचना का अन्य भाषा में पुनर्सृजन करना होता है। अनुवादक लेखक के विचारों का संचरण लक्ष्यभाषा में करने के लिए पहले उसका विश्लेषण करता है। फिर अनूदित किये जाने वाली रचना के संदेश को स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अंतरित करता है। इस प्रकार अनुवाद के माध्यम से ही किसी एक देश में लिखी गयी कृति का किसी अन्य देश में सौभाग्य निश्चित हो जाता है। किसी एक विदेशी लेखक का दूसरे देश में विख्यात होना या उसका विरोध होना अन्य देश के साहित्यिक परिवेश को अवश्य प्रभावित करता है।

इसी स्वीकरण और त्याज्यता के बीच संस्कृति के बहुत से पक्ष भी आते हैं। जो अनुवाद कला के भागीदार बनते हैं। अनुवाद कला में भाषिक विश्लेषण के समान ही सांस्कृतिक विश्लेषण भी होता है। अर्थात् इस कला के बीच भाषा और संस्कृति एक-दूसरे पर आश्रित होती हैं। इसे ऐसे भी समझा जा सकता है कि किसी

भी संस्कृति की अभिव्यक्ति के लिए भाषा को ही माध्यम बनाया जाता है। किसी रचना को अनूदित करते हुए उसकी भाषा पर ध्यान देना जितना आवश्यक होता है उतना ही उसकी संस्कृति पर भी ध्यान दिया जाता है। सांस्कृतिक सन्दर्भों के अस्पष्टीकरण के बिना किसी विशेष संस्कृति को लक्ष्यभाषी तक नहीं पहुंचाया जा सकता है। दूसरे शब्दों में भाषा का तात्पर्य समाज का प्रतीक और संस्कृति का तात्पर्य समाज का प्रतिबिम्ब है। इस सन्दर्भ में डॉ. शशी मुदिराज कहते हैं कि “मनुष्य की सभ्यता अन्यान्य भौतिक और भावात्मक विशिष्टताओं के साथ विकसित हुई और इस विकास ने विभिन्न भाषाओं के यथार्थ को भी विकसित किये। इस प्रकार प्रत्येक भाषा मानवीय चेतना और अभिव्यक्ति का अंश होते हुए भी एक स्वतन्त्र भाषिक यथार्थ है और यह वस्तुतः वह सामाजिक सांस्कृतिक यथार्थ है जो कि उस भाषा के प्रयोक्ताओं ने निर्मित किया है। इस प्रकार भाषा संस्कृति की वाहिका भी है और उसका उत्पाद भी”<sup>248</sup> डॉ. शशी के विचारों को आसान शब्दों में समझा जाए तो उनके कहने का तात्पर्य है कि भाषा विचारों और मानसिकता की अभिव्यक्ति करती है तो संस्कृति उन विचारों पर कार्रवाई करती है। संस्कृति के इन्हीं विचारों को आधार बनाकर रेनॉल्ड्स के हिंदी में अनूदित उपन्यासों का सांस्कृतिक विश्लेषण आगे किया गया है।

भारतीय संस्कृति ब्रिटिश संस्कृति से बहुत भिन्न है रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में आयी ने ब्रिटिश संस्कृति को अनुवादकों ने भारतीयों को समझाने के लिए पूर्ण प्रयास किया है। अंग्रेजी से हिंदी में अनूदित होने वाले उपन्यासों और लेखकों की श्रृंखला में रेनॉल्ड्स का नाम महत्त्वपूर्ण है। रेनॉल्ड्स एक ब्रिटिश लेखक हैं जिन्होंने अपने उपन्यासों में ब्रिटेन की संस्कृति को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। अंग्रेजों की जिस

---

<sup>248</sup> मुदिराज, डॉ. शशी, *अनुवाद: मूल्य और मूल्यांकन*, नागपुर, रुचिर प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1998, पृ- 2 (आरम्भ में से उद्धृत)

संस्कृति को रेनॉल्ड्स ने अपने उपन्यासों में दिखाया है उसे कोई अन्य समकालीन साहित्यकार अपने साहित्य में नहीं दिखा पाये था। इस सन्दर्भ में स्टीफेन कार्वर कहते हैं कि “अपने तत्कालीन साहित्य के लेखन में रेनॉल्ड्स ने हमेशा ही अराजकतावादी समाज को केंद्र में रखा है, उसका सबसे अधिक प्रभाव मेलोड्रामा, न्यूगेट फिक्शन और गोथिक लेखन में नज़र आता था। 1992 में रिचर्ड मैक्सवैल ने मिस्ट्रीज ऑफ़ पेरिस एंड लंडन नामक लेख में 1840 में लिखे गए ‘रहस्यमयी साहित्य’ के पढ़ने और लिखने के जूनून को पहचाना जो गोथिक कथानक के रूप में बदलाव लेकर आया। इस सनसनीखेज़ साहित्य की नीव रखने से पहले निस्संदेह रेनॉल्ड्स ने अपने कथानक को वर्गों में विभाजित किया। अपने साहित्य में वे न केवल एक वर्ग विशेष का ही उल्लेख कर रहे थे बल्कि उस पिछड़े हुए समाज और अपराध भरी दुनिया को उन्होंने पात्र और उनकी कथाएँ भी दीं। ऐसा कथानक बुलिवर लिटन के गोदविनियन न्यूगेट नावेल ‘*पॉल क्लिफर्ड*’ के उपन्यास में भी देखने को मिला था। परन्तु रेनॉल्ड्स ने जिस प्रमाणिकता से अपने उपन्यासों में कथाएँ लिखी हैं वह 1830 के किसी भी उपन्यास में देखने को नहीं मिलता है।”<sup>249</sup>

रेनॉल्ड्स ने ब्रिटेन के समाज के उच्च और निम्न वर्ग का वर्णन किया है। इन्हीं से सम्बंधित संस्कृति रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में देखने को मिलती है।

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में उनकी संस्कृति के विभिन्न पक्षों का अनुसरण देखने को मिलता है। लेखक के उपन्यासों में लन्दन और उसके आसपास के क्षेत्रों में कैसे लोग रहते हैं और उनकी जीवन शैली क्या है, बात करने का लहजा क्या है, इसका पूरा चित्रण उन्होंने अपने उपन्यासों में किया है। रेनॉल्ड्स ने अपने समाज के साथ तादात्म्य स्थापित किया है और वहां की संस्कृति का सांगोपांग परिचय भी दिया है। लोगों की भाषा से लेकर उनके खानपान और रहन-सहन तक का वर्णन भी उपन्यासों

<sup>249</sup> Carver, Stephen, The man who wasn't Dickens : a profile of G.W.M. Reynolds, 1818-1879

में मिलता है। लन्दन और ब्रिटिश संस्कृति के प्रभाव का जैसा पूरे संसार में प्रचलन है वैसा ही रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में भी मिलता है।

जब कोई लेखक उपन्यास लिखता है तो उसमें एक देश की केवल संस्कृति ही नहीं आती है। बल्कि उस देश के ऐतिहासिक, मानसिक और सामाजिक पक्ष सभी सम्मिलित हो जाते हैं। एक अनुवाद को इन सभी तत्वों से जुड़ी संस्कृति को अनूदित करने में सक्षम होना चाहिए। जब एक विषम संस्कृति के उपन्यास का अनुवाद किया जाता है तो अनेक समस्याओं का सामना करते हुए अनुवादक को विविध रूपों में सफल अनुवाद करना होता है। लेखक की अनेक संकल्पनाओं को समझना उसका कर्तव्य होता है। अनेक सन्दर्भों में लेखक उपन्यास लिखता है। इन सभी का तुलनात्मक अध्ययन मुहावरे, लोकोक्तियाँ, पाद-टिप्पणियों, खान पान की वस्तुओं और सजावटी सामान के माध्यम से निम्नलिखित पाठ में किया गया है। इन सभी तत्वों के सांस्कृतिक पक्षों का लक्ष्यभाषा में विश्लेषण होगा। जिसमें पहला विश्लेषण पाद-टिप्पणी के आधार पर किया जाएगा।

## पाद-टिप्पणी

किसी उपन्यास में उसकी सामाजिक सांस्कृतिक सीमाएं अभिव्यक्त होती हैं। एक विशेष देशकाल में लिखी गयी रचना में वहां के सांस्कृतिक तत्वों का समावेश होता है। जिसे समझने में अक्सर अनुवादक असमर्थता प्रकट करता है। जिन्हें एक परिवेश या देश में ही समझा जा सकता है। इसे आंचलिकता से भी सम्बंधित माना जाता है। जो एक विशिष्ट भू-भाग में रहने वाले लोगों को ही समझ में आता है। इसको इस प्रकार से समझा जा सकता है “अभिधा प्रधान वाक्यों का अनुवाद करना अपेक्षाकृत सरल होता है, क्योंकि उसमें शब्दों का सीधा-सरल अर्थ होता है। इसके विपरीत, लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ किसी समाज विशेष में प्रचलित मन्थ्यताओं एवं



परम्पराओं पर निर्भर करते हैं। जैसे भारतीय चिंतन परम्परा में 'उल्लू' शब्द का लाक्षणिक अर्थ 'मूर्ख' है और अंग्रेजी चिंतन परम्परा में 'owl' चतुराई का प्रतीक है। ऐसे प्रसंगों में अनुवादक को यह ध्यान रखना होता है कि मूल पाठ की रचना करने वाला व्यक्ति किस अर्थ की ओर अभिप्रेत करना चाह रहा है, यदि लक्ष्यभाषा में उसका अर्थ वह नहीं है तो उसे चाहिए कि वह लक्ष्यभाषा की शब्दावली में से किसी ऐसे अर्थ का चयन करे जो वास्तविक अर्थ को प्रतिपादित करने में पूर्णतः समर्थ हो।<sup>250</sup> साहित्य का निर्माण भावों के सम्मिश्रण से होता है। साहित्य एक सृजनात्मक प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत विचार और कल्पनाओं का समावेश होता है। इस समावेशन में अभिधा, लक्षणा और व्यंजना जैसी शब्द शक्तियां महत्त्वपूर्ण बन जाती हैं। यही शब्द शक्तियां पाठ में रुचि का विकास करती हैं। जब कोई लेखक अपने उपन्यास में आने वाले पात्र की ओर इशारा कर इतिहास में घटी किसी विशेष घटना के किसी मुख्य पात्र का नाम लेता है, तो वह व्यक्ति विशेष की परिस्थिति बताना चाहता है। अर्थात् वह अपने उपन्यास के वर्तमान पात्र की उस ऐतिहासिक पात्र से तुलना करना चाहता है। इस प्रकार का वर्णन लक्षणा और व्यंजना कहलाता है। अर्थात् वह पूरी कहानी भी नहीं कहता है और यह भी कह देता है कि इस औपन्यासिक पात्र की स्थिति एक ऐतिहासिक पात्र के समान है। जब एक संस्कृति से जुड़े किसी पात्र का नाम इस प्रकार लिया जाता है तो उसका अनुवाद लक्ष्य भाषा में करने पर उसका उल्लेख पाद-टिप्पणी में कर दिया जाता है। परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि शब्द का कोई अर्थ ही हो। कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जिनका किसी विशेष घटना से सम्बन्ध होता है और उसकी व्याख्या करना अनुवादक का कर्तव्य बन जाता है। इसके लिए साधारण शब्दकोश काफी नहीं होता है।

<sup>250</sup> टंडन, पूरनचन्द तथा हरीश कुमार सेठी, *अनुवाद के विविध आयाम*, नयी दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1998, पृ- 101

१) **स्रोतभाषा** - "O God! What have I done that I should thus be made the sport of an infernal hallucination – the victim of a horrible night-mare? But is it true—Oh! Is it true that like a jackal I tear open the graves of the dead and like a vampire I prey upon them? Yes—it is no dream—no delusion: 'this a hideous, horrible, damnable reality—and even now—now—I feel the accursed influence creeping over me! Oh! it comes—it comes, slow and chilling at first, like the gradual coiling of ash my snake around the limbs;—and now it seems to burn on the surface of my flesh and tingle in my veins, as the sensation gains upon me I Oh! spare me—spare me," exclaimed the wretched man, throwing up his arms in despair: spare me— spare me!" he cried, in a rending voice, as he stretched out his hands towards the moon that shone like a crescent of silver. "But what can I do?—how can I combat against my destiny? It is my fate which I am obey him: like Cain am I stricken—like Judas am I doomed—like the Wandering Jew am I cursed! and yet what evil have I done? Cain murdered his brother Abel: never, never have I shed a drop of human blood at all! Judas betrayed his redeemer for thirty pieces of silver: but never did I wrong a friend! The wandering Jew struck Christ when fainting beneath the weight of his cross as he bore it to Mount Calvary: but I never disowned my Saviour.<sup>251</sup>

**पाद-टिप्पणी** - "हे भगवान मैंने कौन-सा अपराध किया है, जो मेरी ऐसी भयानक प्रवृत्ति हो गयी है? किस प्रवृत्ति में ऐसा वीभत्स कार्य करने लगा हूँ सचमुच ही क्या मैं गीदड़ और कुत्ते की तरह कब्र खोद-खोदकर पिशाच की तरह लाश के साथ क्रीड़ा करता हूँ। यह स्वप्न नहीं, प्रलाप नहीं, बल्कि भयानक प्रकृत व्यापार है। देखते- देखते मैं फिर उस भयानक भाव के अधीन होता जाता हूँ। यह आया, यह आया सांप जैसे मनुष्य के शरीर में धीरे-धीरे लिपटता जाता है, उसी तरह उस भयानक भावना ने मुझे

---

<sup>251</sup> Joseph Wilmot, p -174

जकड़ लिया है। उस प्रवृत्ति की आग मेरी रग-रग में धधक रही है। रक्षा करो भगवान मेरी रक्षा करो। मैं क्या करूँ? भाग्य के साथ कैसे युद्ध करूँ? मैं तो भाग्य का हुक्म मान रहा हूँ। मैं केन की तरह भावोपहत हो गया हूँ, जुड्स की तरह भाग्य मुझे नचा रहा है। परिव्राजक यहूदी की तरह मैं शापग्रस्त हो गया हूँ पर मेरा अपराध क्या है केन ने तो अपने भाई एबल को मार डाला पर मैंने तो अपनी जिंदगी में किसी का एक बूंद खून भी न गिराया। जुड्स ने तो तीस रुपये के लिए अपने त्राणकर्ता के साथ विश्वासघात किया था, पर मैंने तो कभी किसी आत्मीय स्वजन की कोई हानि नहीं की। ईसा मसीह कलवरी पर्वत पर क्रॉस ले जाने के समय जब थककर बेहोश हो गए थे, तब दुरमति जू ने उन्हें मार डाला था। पर मैंने तो कभी अपने परिव्राता को अस्वीकार नहीं किया।”<sup>252</sup>

**विश्लेषण** - आधी रात में अपना मानसिक संतुलन खो जाने के कारण मेलमथ शहर भर की कब्रें खोदता रहता है। होश सँभालने पर जब उसे अपनी ऐसी दशा पर अफ़सोस होता है तो वह अपनी तुलना अपने धार्मिक इतिहास में घटने वाली घटनाओं से करता है। ईसा मसीह और आदम-हव्वा से जुडी हुई कुछ घटनाओं से सम्बंधित मुख्य पात्रों का नाम लेकर मेलमथ अपनी तुलना उन लोगों से करता है। वह उस घटना के विषय में सोचता है जब जू ने ईसा मसीह को मार डाला था। रेनॉल्ड्स ने मेलमथ को केन, जुडास, कलवरी और जू (Cain, Judas, Calvary, Zoo) का नाम लेते हुए दिखाया है। स्वाभाविक है कि जिन लोगों को इसाई धर्म के विषय में पूरी जानकारी होगी वे ही रेनॉल्ड्स के संकेतों को समझ पायेंगे। परन्तु लक्ष्यभाषी पाठक को समझाने के लिए अनुवाद में सदानंद शुक्ल जी ने इसकी व्याख्या निम्नलिखित रूप से की है :-

<sup>252</sup> लन्दन रहस्य, खंड - 4, पृ - 503

Cain (केन) - आदम हव्वा का पहला लड़का था। उसने किसान होकर अपने भाई एबल की हत्या की। नोड की जगह उसने पहला शहर बसाया। यहूदी लोग कहते हैं की वह अकस्मात् अपनी संतान से मारा गया <sup>253</sup>

Judas (जुड्स इस्करियट) - कैरियथ एक गाँव का रहने वाला था। कैरियथ का वर्तमान नाम एल्कारजेठीन है और वह एस. जुड़ा में है। जुड्स ईसा मसीह का चेला और उनके साथ दगाबाजी करने वाला था। शिष्य होने पर वह खजांची बना दिया गया था पर इस काम में उसने विश्वासघात किया और लालच में पड़कर चांदी के सिर्फ तीस सिक्कों के लिए ईसा को यहूदियों के हाथ गिरफ्तार करवा दिया। अंत में उस पापके अनुताप में जलकर उसने आत्मघात कर डाला। <sup>254</sup>

Calvary (कलवरी पर्वत) - जेरुसलम के पास है - यहाँ ईसा मसीह सूली पर चढ़ाये गए थे। <sup>255</sup>

ईसाई धर्म से संबंधित कुछ पात्रों का चरित्र वर्णन और उनसे जुड़ी ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन पाद-टिप्पणी में सदानन्द जी ने किया है। मेलमथ की वर्तमान स्थिति और इतिहास में घटी घटनाओं से समानता दिखाने के लिए अनुवादक ने इसाई धर्म से सम्बंधित ऐसे कुछ पात्रों का स्पष्टीकरण पाद-टिप्पणी में अपने पाठकों के लिये किया है, इसका एक विशेष कारण था। लेखक ने भी ऐसे कुछ पात्रों का नाम इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए लिया था ताकि वे पाठकों को पात्रों की वास्तविक स्थिति समझा सकें। इस सन्दर्भ में कुसुम जी की टिप्पणी उद्धृत की जा सकती है “अनुवादक का प्रयोजन है मूल पाठ में निहित सामाजिक, सांस्कृतिक पक्ष को पाठक तक पहुंचाना तो वह उन पक्षों पर ध्यान केन्द्रित करेगा जो इस पक्ष का वहन करते हों। और उसे एक कठिन निर्णय करना होगा कि वह या तो सांस्कृतिक

<sup>253</sup> लन्दन रहस्य, खंड - 4, पृ - 504

<sup>254</sup> वही

<sup>255</sup> लन्दन रहस्य, खंड - 4, पृ - 505

अभिव्यक्तियों का व्याख्यापरक अनुवाद करे या लक्ष्यभाषा की संस्कृति में तदनुरूप अभिव्यक्तियाँ खोजने का प्रयास करे। जो भी हो उसका लक्ष्य होगा मूल पाठ में निहित सांस्कृतिक सन्दर्भ को लक्ष्यभाषा के पाठ तक बिना किसी क्षति के पहुँचाना”<sup>256</sup>

यहाँ पर अनुवादक ने पाद टिप्पणी में जो लिखा है वह भारतीय पाठकों के लिए आवश्यक भी था। इससे लेखक का मंतव्य स्पष्ट हो पाया। जिसे गंभीर भाव से लेखक ने लिखा है अनुवादक ने लेखक की गहनता को उसी से समझाने का प्रयास किया है। उसी भावात्मक सौन्दर्य से उन्होंने रचना में आये एक सन्देश का हास होने से भी उसे बचाया है। हिंदी के पाठकों को ब्रिटेन की संस्कृति में आने वाले इन चिर-परिचित नामों से अवगत कराना भी आवश्यक था। इस अवतरण में आने वाले कुछ नामों का यदि केवल लिप्यन्तरण मात्र कर दिया जाता तो ब्रिटिश संस्कृति का इन उपर्युक्त प्रसंगों से जो सम्बन्ध है वह अस्पष्ट रह जाता। बिना इस पाद टिप्पणी के मेलमथ की पीड़ा का सम्बन्ध किस ऐतिहासिक प्रसंग से समानता रखता है उसकी सच्चाई हिंदी के पाठकों तक नहीं पहुँच पाती। अनुवादक का यह प्रयास अच्छा था।

२) **स्रोतभाषा** - "Good heavens!" cried Lady Lade: "what could such a visit portend?"

"They said that your ladyship was suspected to have been leagued with certain seditious individuals whom the authorities had already sent out of the country," continued Wasp; "and as the Habeas Corpus remains suspended, the Home Office had power to enforce search warrants granted by the magistrates in such cases."<sup>257</sup>

**पाद-टिप्पणी** - वास्प - "उन लोगों ने कहा की, जो मनुष्य राजद्रोही होने के कारण देश से निकाल दिया गया है, उससे आपकी घनिष्ठता है यद्यपि कुछ दिनों के लिए

<sup>256</sup> अग्रवाल, डॉ. कुसुम, अनुवाद शिल्प समकालीन सन्दर्भ, साहित्य सहकार, 2008, दिल्ली, प - 76

<sup>257</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p -196

‘हेबियस कोरपस एक्ट’ उठा दिया गया है, तो भी ऐसे स्थल में होम ऑफिस को वारंट जारी करने का पूरा अधिकार है, इसी से मजिस्ट्रेट ने तलाशी का हुक्म जारी किया है।”<sup>258</sup>

**विश्लेषण** - अनुवादक ने यहाँ पर विस्तार से ‘Habeas Corpus’ का उल्लेख फुटनोट में नहीं किया है। यह अनुमान के आधार पर ही कहा जा सकता है कि हिंदी के पाठकों को ब्रिटेन में विद्यमान रहने के वाले ऐसे किसी भी कानून के बारे में भी कोई जानकारी नहीं रही होगी। अनुवादक को इसका उल्लेख करना चाहिए था बिना इसके हिंदी के पाठक लेखक का तात्पर्य ही नहीं समझ पायेंगे। यह अनुवादक की चूक है इसका उल्लेख निम्नलिखित रूप में किया जा सकता था।

‘Habeas Corpus’ एक ऐसा कानून है जिसमें किसी व्यक्ति को गैर-कानूनी काम करने पर कारावास में डाला जा सकता है। बड़ी से बड़ी सजा इसमें दी जा सकती है। न्यायालय उस व्यक्ति के संरक्षक को आदेश देता है कि वह उसे कार्यवाही के लिए न्यायालय तक लेकर आये। न्यायालय तक लेकर आने का तात्पर्य यह है कि उसकी कस्टडी संरक्षक के पास होगी। यह सभी प्रकार के अवैध कार्यों में किये जाने वाले उच्चतम अवैध कार्यों के लिए बनाया गया कानून है।

3) **स्रोतभाषा** - Since his return to England Tim Meagles had removed his horses from Lady Lade's stables to the mews where he had always been wont to keep them prior to his temporary expatriation: for the amazon, faithful to her determination of leading a prudential life during the period of her mourning, was unwilling that any circumstance should seem to indicate the renewal of a too familiar connection with Meagles. Hence the removal of his stud back to the mews where he had been wont to contract for their keep.<sup>259</sup>

<sup>258</sup> लन्दन रहस्य, खंड -3, पृ -585

<sup>259</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p - 295

**पाद-टिप्पणी** - टीम मीगल्स के घोड़े अड़गड़े में रहते थे। घटनावश जब प्रिंस ने उसे देश से निकाल दिया था, तब उनके घोड़ों को लाकर लेडी लेड ने अपने पास रख लिया था।<sup>260</sup>

**विश्लेषण** - अनुवादक ने उपर्युक्त अवतरण का अनुवाद शब्द प्रति शब्द या वाक्य प्रति वाक्य नहीं किया है। भावानुवाद के रूप में इसे लिखा है। इस अंश के अनुवाद में सदानंद जी ने 'mews' शब्द के स्थान पर 'अड़गड़े' शब्द का प्रयोग किया है। इसका शब्दकोशीय अर्थ 'अस्तबल' या 'घुड़साल' है। परन्तु 'Mews' का तात्पर्य शब्दकोशीय अर्थ से भिन्न है 'यह एक ब्रिटिश शब्द है जिसका प्रयोग 'घोड़ों को रखे जाने वाले अस्तबलों की एक श्रृंखला के लिए प्रयोग किया जाता है जो एक स्थान पर स्थित होता है। आमतौर पर इनमें रहने की व्यवस्था भी होती है। छोटे-छोटे घर जिन्हें क्वार्टर कहा जाता है, को इनके ऊपर बनाया जाता था या आंगन के आसपास भी घरों का निर्माण किया जाता था। इस प्रकार की वस्तुकला का निर्माण सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में लन्दन में किया जाता था। परन्तु अनुवादक ने भिन्न रूप में इसका उल्लेख पाद-टिप्पणी में किया है, वे कहते हैं "जो गाड़ी घोड़ा आदि भाड़े पर देता है और महाजनों के घोड़े सिर्फ मासिक खर्च लेकर अपने अस्तबल में रखता है। बड़े-बड़े नगरों में अड़गड़े वालों की बहुतसी कंपनियां होती हैं और उनमें हज़ारों गाड़ी-घोड़े भाड़े पर चलाने के लिए रहते हैं। कलकत्ते में "कुक कंपनी" का अड़गड़े इस काम के लिए बड़ा मशहूर है।"<sup>261</sup> संभव है कि उस समय घोड़ों को रखने के लिए इस प्रकार के 'mews' कुछ कंपनियां चलाती रही होंगी। कलकत्ते में ब्रिटिश अधिकारी रहते थे इसीलिए वहां पर 'अड़गड़े' होते थे। परन्तु इस शब्द के मूल में जो जानकारी उपलब्ध हुई है, उसका उल्लेख अनुवादक की पाद-टिप्पणी में नहीं है। अनुवादक ने इस शब्द

<sup>260</sup> लन्दन रहस्य, खंड - 4, पृ- 105

<sup>261</sup> वही

का उल्लेख केवल कलकत्ते में स्थित अस्तबलों के सन्दर्भ में कर दिया है। जबकि मूल लेखक ने इस शब्द का प्रयोग लंदन के सन्दर्भ में किया था। 'अड़गड़े' जैसे अटपटे शब्द का प्रयोग करते हुए उसके विषय में फुटनोट दे देना अनुवादक अपना कर्तव्य समझते हैं। परन्तु इस प्रकार का प्रयोग सही नहीं है।

भिन्न राष्ट्रों के विभिन्न क्षेत्रों में विशेष मान्यताओं का प्रचलन होता है। इस सन्दर्भ में कुछ विशेष प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया जाता है। उन सभी जाति विशेष के विश्वास और अभिव्यक्तियों में भी भिन्नता रहती है। प्रत्येक संस्कृति की अपनी जो परस्पर मान्यताएं होती हैं उन्हें अनुवाद के माध्यम से दूसरी भाषा और संस्कृति में समझाना अक्सर मुश्किल हो जाता है। उसी के लिए पाद-टिप्पणी का प्रयोग किया जाता है। दूसरी ओर यह आवश्यक नहीं है कि अनुवाद करते हुए प्रत्येक शब्द का अर्थ अनुवादक को शब्दकोश में ही मिल जाए। न ही कुछ अननुवाद्य शब्दों का लिप्यन्तरण कर देना ही उसके लिए काफी होता है। इन सभी अस्पष्टताओं से बचने के लिए सीमाओं में रहते हुए ही अनुवादक को अनेक रास्ते खोजने पड़ते हैं क्योंकि वह अपनी सीमाओं का उल्लंघन नहीं कर सकता है। ऐसी ही समस्याओं से जूझने के लिए एक अनुवादक विदेशी विचार, संस्कृति, संकल्पना, अर्थवत्ता को लक्ष्यभाषा के पाठकों के समझने योग्य बनाने के लिए अनेक प्रयास करता रहता है। जिसके लिए वह पाद-टिप्पणी का सहारा लेता है। जिसमें कुछ अवतरणों का अनुवाद न कर पाने के कारण उन पर टिप्पणी दे देना ही आवश्यक समझता है। इससे वह न तो मूल उपन्यास के संदेश में कुछ छोड़ता है और न ही अत्यधिक प्रसंगों को जोड़कर उसमें अपनी कला का प्रदर्शन ही करता है।



४) **स्रोतभाषा** - My senses were enthralled –my spirit was bathed in a fount of love. I went home—and then came the terrible reflection that you never could be mine,—although the sweetest reminiscences of my life would ever be associated with your image. Like Orpheus, I could cherish the memory and in imagination look upon the shade of her whom I loved <sup>262</sup>

**पाद-टिप्पणी** - “उस समय मेरी समझ में आया कि तुम मेरी न होगी, केवल तुम्हारी मोहिनी मूरत मेरे ध्यान में होगी और मेरी सारी चिंता को मधुमयी बनाती रहेगी। आर्फियस कि नाई जिंदगीभर तुम्हारी मनोहर मूर्ति मेरे हृदय और नेत्रों में विराजती रहेगी।”<sup>263</sup>

**विश्लेषण** - अर्ल एलिनोर से बहुत अधिक प्रेम करते हैं लेकिन अपनी शारीरिक कमजोरी और नपुंसकता के कारण वे उसे अपनी पत्नी होने का सुख कभी नहीं दे पाए। परन्तु जब वह रामसे के धोखा देने के कारण बीमार होती है तो अर्ल उसे समझाते हैं। वे उसे इस बात के लिए विश्वस्त करते हैं कि अपनी मर्जी के अनुसार वह अपना जीवन व्यतीत कर सकती है। वे यह कहते हैं कि दूर रहकर ही सही लेकिन वे उसको प्रेम अवश्य करते रहेंगे। आर्फियस का उदाहरण देते हुए वे कहते हैं कि ‘आर्फियस कि नाई जिंदगीभर तुम्हारी मनोहर मूर्ति मेरे हृदय और नेत्रों में विराजती रहेगी’ अनुवादक ने ‘आर्फियस’ शब्द को फुटनोट में दिया है। जिसका उल्लेख करते हुए वे कहते हैं ‘कैलियोप का लड़का और ग्रीस देश के थ्रेस नगर का रहने वाला एक प्रसिद्ध कवि था। बीन बजाने में वह प्रसिद्ध हस्त था। मनुष्य की कौन कहे, पशु-पक्षी, वृक्ष-लता आदि भी उसका बीन बजाना सुनकर मुग्ध हो जाते थे इयुरोड़ा इस नाम की एक स्त्री से उसने विवाह किया था पर सांप काट लेने पर वह मर गयी। यह देख आर्फियस बड़ा दुःखित हुआ पाताल में जाकर देवताओं से उसने

<sup>262</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p - 135

<sup>263</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -1, पृ - 454

अपनी स्त्री को माँगा। देवताओं ने उसकी इच्छा पूरी की वह अपनी स्त्री को लेकर आया। पर कुछ दूर आने पर जब उसने पीछे फिरकर देखा तब उसे न पाया। यमपुरी वाले उसे पकड़ ले गए और उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले।<sup>264</sup> 'आर्फियस' की तरह ही अर्ल एलिनोर को प्रेम करते थे। यदि एलिनोर को कुछ हो भी जाता तो वह उसे वहाँ से बचा लाने की पूरी कोशिश करते। अनुवादक ने अर्ल के प्रेम की गहराई को समझते हुए उसकी भावनाओं का हास नहीं होने दिया है। इस शब्द के माध्यम से अर्ल के प्रेम की भव्यता को समझाने की जो चेष्टा लेखक ने की है वैसी ही अनुवादक ने भी की है। आर्फियस और इयुरोड़ा प्रेमी-प्रेमिका के प्रतीक हैं। लेखक जैसे अपनी संस्कृति विशेष से जुड़े किसी किस्से को दिखाने में सफल हुए हैं। वैसे ही अनुवादक ने भी प्रसंग में आने वाले इन प्रेम संकेतों से लक्ष्यभाषी को जोड़ दिया है। अनुवादक का यह अनुवाद सफल हुआ है।

१) **स्रोतभाषा** - "So soon— here the honeymoon be past?" ejaculated his lordship, evidently anxious to obtain a reprieve in respect to a subject<sup>265</sup>

**पाद-टिप्पणी** "क्लेरेंदन - अभी तो हनीमून भी नहीं बीता। इतनी जल्दी क्या पड़ी है ?"<sup>266</sup>

**विश्लेषण** - जिस समय भारत में ये उपन्यास लिखे जा रहे थे उस समय विवाह के बाद हनीमून जैसी किसी प्रथा का प्रचलन नहीं था। न ही लोग इससे अवगत थे। परन्तु वर्तमान समय में हनीमून की प्रथा का भारत में भी प्रचलन है। सदानन्द शुक्ल जी ने इस शब्द की व्याख्या पाद-टिप्पणी में की है। वे कहते हैं विवाह के बाद पति-पत्नी साथ घूमने के लिए शहर से बाहर चले जाते हैं। "विवाह के बाद पहले महीने में हनीमून को आनंद से काटने के लिए प्रायः अँगरेज़ लोग बाहर किसी दूसरी जगह सैर

<sup>264</sup> वही

<sup>265</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 3, p -404

<sup>266</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -1, पृ - 577

के लिए चले जाते हैं।”<sup>267</sup> अपने पाठकों के लिए अनुवादक को यह व्याख्या करनी पड़ी। यह पाद टिप्पणी केवल संस्कृति के जुड़ाव को दिखाने के लिए दे दी गयी है यह शब्द यूरोपीय परम्परा में पति-पत्नी के आरंभिक वैवाहिक नीजी और आंतरिक जीवन की ओर इशारा करता है। अनुवादक ने इसका उल्लेख ठीक रूप में किया है। यह पाद-टिप्पणी शब्द के आर्थी सामर्थ्य को वहन कर पा रही है।

६) **स्रोतभाषा** - I have received a letter from our gracious Queen to that effect. They have all four been well tutored by me and I am certain that not even the members of the famous Secret Police of Paris, nor yet the most astute brethren of the Order of Jesuits, could be better prepared to play their part than are my daughters...

"AKNE OWEN."<sup>268</sup>

**पाद-टिप्पणी** - “इसी मतलब कि एक चिट्ठी दयामयी महारानी से भी प्राप्त हुई है मैंने चारों लड़कियों को सिखा पढ़ाकर खूब पक्का कर दिया है। मुझे विश्वास है कि न तो पेरिस की मशहूर खुफिया पुलिस और न जेसुइटधर्म सम्प्रदाय का कोई चालाक से चालाक आदमी मेरी लड़कियों से बढ़कर काम कर सकेगा।”<sup>269</sup>

**विश्लेषण** - जिस समय उवेन इंग्लैंड की महारानी के साथ मिलकर रानी कैरोलाइन के खिलाफ षड्यंत्र रच रही थी, यह उस समय की घटना का उल्लेख है। उस समय अलजर्नन केवेंडिश (बदला हुआ नाम असली नाम जैसोलिन लोफ्टस) को अपने चाचा से लन्दन वापस लौट आने की चिट्ठी प्राप्त होती है। उस चिट्ठी में उसके चाचा उसे महारानी के इस षड्यंत्र से दूर रहने को कहते हैं कारण था कि वह रानी कैरोलाइन की रक्षा करने के लिए इस षड्यंत्र को रोकने गया था। लेकिन महारानी ने उन चार लड़कियों को रानी कैरोलाइन के पास पहले ही भेज दिया था। इन्हें रोकने के लिए ही

<sup>267</sup> वही

<sup>268</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 3, p -56

<sup>269</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -5, पृ- 165

जैसोलिन वहां जाता है। मिसेस उवेन को जब इस पूरी घटना के बारे में जानकारी प्राप्त होती है तो वह भी अपनी लड़कियों की शिक्षा की तारीफ करते हुए कहती है कि उन्हें कोई नहीं रोक सकता वह उनकी तुलना 'जेसुइस्ट' से करती है। यहाँ पर इस शब्द की व्याख्या करना आवश्यक है जीसस को मानने वाले अनुयायियों को 'जेसुइस्ट' कहते हैं। इस धर्म सम्प्रदाय का उदय 16 वीं शताब्दी में स्पेन में हुआ था। इग्नेशियस लोयला स्पेन के रहने वाले थे। एक युद्ध में घायल होने के बाद आध्यात्म के माध्यम से इन्होंने स्वयं को ठीक किया था। इन्होंने जीसस क्राइस्ट की शिक्षा देकर अन्य लोगों को भी ठीक किया था। इसी धर्म को मानने वालों से उवेन अपनी शिक्षा दी हुई लड़कियों की तुलना करती है। इस धर्म का उल्लेख सदानंद शुक्ल जी ने पाद-टिप्पणी में इस प्रकार किया है। "जेसुइस्ट एक धर्म सम्प्रदाय का नाम है, जो जीसस क्राइस्ट के नाम पर सन 1534 ई. में एग्नेसेस लोयला व्यक्ति द्वारा स्थापित किया गया था। इस सम्प्रदाय का उद्देश्य प्रोटोस्टैंट धर्म की उन्नति करना और उसकी बुराइयों को दूर करना है।"<sup>270</sup> कोई विशेष उल्लेख अनुवादक ने नहीं किया केवल अपने पाठकों की समझ के लिए एक टिप्पणी दे दी है। किसी भावबोध की सृष्टि यहाँ पर नहीं हुई लेकिन एक संस्कृति विशेष से जुड़े धर्म का उल्लेख अवश्य हुआ है। इस धर्म की शिक्षा की ओर इशारा करते हुए ही लेखक ने यह कहने का प्रयास किया है कि वे भी अपने शिष्यों को जैसी शिक्षा देते हैं उससे ज्यादा अच्छी शिक्षा उवेन ने अपनी लड़कियों को दी है। यहाँ पर संप्रेषणीयता का प्रश्न ही नहीं उठता है केवल अनुवादक ने इसे अर्थपूर्ण बनाने के लिए ही पादटिप्पणी का सहारा लिया है। जो पूर्ण नहीं है।

“वास्तव में जब हम एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते हैं तब भाषा का तो केवल परिवर्तन करते हैं, अनुवाद हम मूल भाषा में संचित एवं निहित उसके

---

<sup>270</sup> वही, पृ- 165

बोलने वालों की संस्कृति का ही करते हैं। भाषा तो केवल संवाहक होती है उन सब घटकों की जिनके सम्मिश्रण का नाम है संस्कृति। अनुवादक केवल भाषा के व्यवधान को हटाकर दो भिन्न सांस्कृतिक परिवेशों में रहने वाले व्यक्तियों के बीच संपर्क सेतु बन उन्हें आमने-सामने लाकर खड़ा कर देता है।<sup>271</sup> इसीलिए कहा जा सकता है कि अनुवादक का यह प्रयास पूर्णरूपेण सफल नहीं हो पाया है।

७) **स्रोतभाषा** - It is somewhat repugnant to my feelings to make you the proposition I am about to offer, seeing that you have been tolerably well educated and somewhat decently brought up: but I really know not what else I can do for you. If therefore you think fit to become a page in my household, I will give you liberal wages; and you have already seen enough of me and mine, to be assured of good treatment. If I were to get you as a clerk into a lawyer's office, or anything of that kind, you might fall in with bad companions—advantage might be taken of your youth and in experience<sup>272</sup>

**पाद-टिप्पणी** - “मैं समझता हूँ कि तुम अच्छी शिक्षा पा चुके हो, तुम्हारी उन्नति करना जरूरी है। यदि तुम मेरे घराने में पेज का काम कर सको तो मैं तुम्हीं को उसका भार दूँ। इस समय यदि तुम्हें कहीं किसी वकील के ऑफिस में लेखक के काम में लगवा दूँ तो तुम गलत संगत में पड़ जाओगे तो तुम्हारी उन्नति होना कठिन है,<sup>273</sup>

**विश्लेषण** - देलमर अपने घर पर जोसेफ को लेकर आते हैं। परिवार से परिचय कराने के बाद वे उससे उसकी शिक्षा के विषय में बातचीत करते हैं। उसकी शिक्षा के बारे में जानकर देलमर उसे पेज की नौकरी देने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसके लिए देलमर कहते हैं कि ‘यदि तुम मेरे घराने में पेज का काम कर सको तो मैं तुम्हीं को उसका

<sup>271</sup> अग्रवाल, डॉ. कुसुम, अनुवाद शिल्प समकालीन सन्दर्भ, साहित्य सहकार, 2008, दिल्ली, पृ - 131

<sup>272</sup> Joseph Wilmot, p -12

<sup>273</sup> जोसफ विल्मोट, पृ - 47

भार दूँ' पेज शब्द को स्पष्ट करने के लिए अनुवादकों ने फुटनोट में 'पेज' की व्याख्या की है - "विलायत में चलन है कि जो राजा-महाराजा और धनी लोग हैं वह अपनी बाहरी दिखावट और प्रतिष्ठा के लिए बालकों को नौकर रखते हैं और उनकी उपाधि पेज की है।" एक देश विशेष की संस्कृति में कैसे लोग नौकरों को रखते हैं यह दिखाने का प्रयास अनुवादकों ने किया है। किस प्रकार से कोई गवर्नर या कोई कुलीन व्यक्ति अपने साथ एक सेवक को रखता था यह उसका उल्लेख करने के लिए काफी है। इस पद के सम्बन्ध में कोई विशेष उल्लेख अनूदित कृति में मुझे नहीं मिला है।

'पेज' केवल उनकी सम्पन्नता का प्रतीक था। 'पेज' शब्द के मूल में उसके उद्भव के बारे में कोई निश्चित जानकारी मुझे प्राप्त नहीं हुई है। संभवतः यह शब्द ग्रीक शब्द 'Pias' से आया है जिसका अर्थ होता है 'child' अर्थात् बच्चा। शादी के समारोह के समय एक 'पेज बॉय' को सेवक के प्रतीक के रूप में रखा जाता था। उसके पास वर-वधू की अंगूठियाँ होती थीं। वह उम्र में अधिक बड़ा नहीं होता है वह केवल एक युवा लड़का होता है।

८) **स्रोतभाषा** - With respect to you, Mr. Jukes, I will send you a written undertaking by the post—an undertaking which my attorney shall draw up—to save Joseph Wilmot from becoming chargeable to your parish, or to meet all the costs if he should. So you, sir, have nothing more to do with the matter. In respect to you, Mr. Lanover, I am a justice of the peace and I will treat the case magisterially. I decline therefore to deliver up this boy until you produce documentary evidence of a certain character,—amongst which must be the marriage certificate of your deceased sister with Mr. Wilmot, so as to prove that Joseph was born in wedlock<sup>274</sup>

---

<sup>274</sup> Joseph Wilmot, p-21

**पाद-टिप्पणी** - “अब मैंने ठीक-ठीक निश्चय कर लिया है कि क्या करना चाहिए - आपके लिए - सुनिए मिस्टर जूकस ! आपके लिए मुझे यही कहना है कि मैं आपको डाक द्वारा चिट्ठी भेजूंगा। जिसमें जोसफ आपके गले न पड़े मैं आपको वैसा ही कोई उपाय लिख दूंगा। तब ऐसी दशा में आपकी बोलचाल करने का कोई उपाय नहीं है। आप सुनिए मिस्टर लनिवर मैं यहाँ का “जस्टिस ऑफ पीस” हूँ। मैं इस मामले में मजिस्ट्रेटी आयिन के अनुसार काम करना चाहता हूँ। इसीलिए मैं आपसे कहता हूँ कि मैं इस लड़के को तब आपके हवाले नहीं करूंगा जब तक आप जोसफ के बाप और अपनी बहन के बारे में कोई प्रमाण नहीं देंगे।”<sup>275</sup>

**विश्लेषण** - उपर्युक्त अवतरण में उस घटना का उल्लेख है जब लनिवर जोसफ को लेने के लिए आता है। लनिवर कहता है कि वह उसका भांजा है इसीलिए वह उसे लेने आया है। वह उसे अपने पास अच्छे से रखेगा। अब इस बात पर देलमर कहते हैं कि मैं जोसफ को आपके पास भेजने के लिए तैयार हूँ लेकिन कानून रूप से इसके लिए वे कहते हैं कि मैं इस शहर का “जस्टिस ऑफ पीस” हूँ और दूसरा वे ‘आइन कानून’ का भी हवाला देते हैं। अनुवादकों ने इन दो पदों का उल्लेख फुटनोट में नहीं किया है। हिंदी के पाठकों को समझाने के लिए इसका उल्लेख करना आवश्यक था।

जस्टिस ऑफ पीस का अर्थ होता है ‘आयोग के द्वारा एक ऐसे व्यक्ति को चयनित किया जाना जो शहर में शांति की देखरेख करता है। यह एक न्यायिक अधिकारी होता है जिसका चयन न्यायलय के अधिकारी ही करते हैं। आइन कानून का उल्लेख भी अनुवादक को करना चाहिए था। इस कानून के बारे में कोई विशेष जानकारी मुझे प्राप्त नहीं हुई है।

---

<sup>275</sup> जोसफ विल्मोट, पृ - 77

अवतरण के इस अनुवाद में कमियाँ हैं क्योंकि पहला तो इस प्रकार का अनुवाद संप्रेषणीयता में बाधा उत्पन्न कर रहा है। दूसरा यह हिंदी के पाठकों के लिए पूर्णतः अर्थपूर्ण नहीं है।

९) **स्रोतभाषा** - "Don't answer!" she interrupted me: "I can't be her servant who is in the habit of answering. This, I dare say, will prove your only fault: but I see that it is a fault—and you must correct yourself. What wages had you at Lord Ravenhill's?"

"Twelve guineas a-year, please your ladyship."<sup>276</sup>

**पाद-टिप्पणी** - "जवाब मत दो। नौकर का जवाब देना मुझे नहीं भाता। इस दोष को तुम्हें छोड़ना होगा। अच्छा वहाँ तुम क्या तलब पाते थे?"

"साल में बारह गिन्नी।"<sup>277</sup>

**विश्लेषण** - जोसफ जब देलमर के यहाँ से नौकरी छोड़ने के बाद नई जगह पर गया तो उसे लेडी जोर्जियाना के घर पर नौकरी मिली। जैसे ही वह बात करने के लिए अन्दर गया तो जोर्जियाना अपनी प्रधान नौकरानी डाकिना के साथ ही बैठी थी। लेडी जोर्जियाना उससे उसकी पिछली नौकरी के विषय में बात करने लगती है। वह अपनी पुरानी नौकरी के विषय में बताता है। जोर्जियाना से बात करने के बाद वह यहाँ नौकरी नहीं करना चाहता था। लेकिन जैसे ही वह मना करने को आगे हुआ वैसे ही लेडी ने उसे चुप करा दिया। उसकी नौकरी पक्की होते ही वह उससे उसकी तनख्वा पूछती है। जोसफ बोला 'साल में बारह गिन्नी।' गिन्नी का उल्लेख अनुवादक ने नीचे फुटनोट में दिया है "एक गिन्नी कोई सवा पंद्रह रुपये की होती है।" अनुवादकों ने इसके समतुल्य भारतीय मुद्रा का उल्लेख फुटनोट में किया है जो हिंदी के पाठकों के

<sup>276</sup> Joseph Wilmot, p-85

<sup>277</sup> जोसफ विल्मोट, पृ- 99



समझने के लिए उपयुक्त हैं और ब्रिटिश मुद्रा को समझने के लिए किसी प्रकार की जटिलता उत्पन्न नहीं कर रहा है।

अक्सर जब अनुवादक ऐसी स्थिति में फंस जाता है तो इसे अननुवादयता कहते हैं। अननुवादयता अर्थात् जो अनूदित नहीं हो सकता है जिसका अनुवाद सम्भव नहीं है। “जहां स्रोत भाषा के ऐसे भाषिक और अभाषिक तत्व सीमा बन जाएं जो लक्ष्य भाषा और उसके सांस्कृतिक स्वरूप में विद्यमान ही न हों। साथ ही अनूदित पाठ का पाठक पाठ की मूल संवेदना, संकल्पना और उसकी अर्थवत्ता को ग्रहण ही न कर पाए, वहां भी अन-अनुवादेयता की स्थिति होती है।”<sup>278</sup> रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अनुवाद मूल लेखक के दृष्टिकोण के अनुसार ही किया गया है। उस पर हिंदी के अनुवादकों ने अपने विचार थोपने का प्रयास नहीं किया है। उपन्यासों का अनुवाद करते हुए यदि कुछ अंश छोड़े गये हैं और कुछ का अनुवाद पाठ से अधिक किया गया है। इस जोड़ने-छोड़ने की प्रक्रिया में पाद-टिप्पणियों का सहारा लिया गया। “अर्थांतरण के समय अनुवादक को हेमशा स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषाओं की व्यवस्थाओं में टकराहट का अनुभव करना पड़ता है। इस टकराहट की प्रकृति को बिना ठीक से समझे वह अर्थान्तरण में सफल नहीं हो सकता है।”<sup>279</sup> रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में जो पारम्परिक अभिव्यक्तियाँ हुई हैं उसे हिंदी के पाठकों तक पहुँचाने के लिए पाद-टिप्पणियां देना आवश्यक था। क्योंकि कुछ मान्यताओं और धार्मिक रीति-रिवाजों का अर्थ केवल लिप्यंतरण या शब्दानुवाद से ही नहीं समझा जा सकता था।

उपर्युक्त अनुवादों के उदाहरण से ज्ञात होता है कि अनुवादकों ने स्रोत भाषा का विश्लेषण करने के लिए स्वाभाविकता और उपयुक्तता की दृष्टि को

<sup>278</sup> टंडन, पूरनचन्द्र तथा हरीश कुमार सेठी, *अनुवाद के विविध आयाम*, नयी दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1998, पृ- 100

<sup>279</sup> भाटिया, डॉ. कैलाश चन्द्र, *अनुवाद कला सिद्धांत और प्रयोग*, नयी दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1985, पृ- 28

अपनाया है। पाद -टिप्पणियों के प्रयोग में अनुवादकों के प्रयास सफल दिखते हैं। फुटनोट के माध्यम से लेखक के मूल भाव को अनुवादकों ने नष्ट नहीं होने दिया है। इसके विपरीत कुछ शब्द और प्रसंग मूल उपन्यासों में ऐसे भी आये थे जिनका शब्दानुवाद हो जाने पर लक्ष्यभाषा में उन्हें समझना संभव नहीं था। इसके अतिरिक्त कुछ स्थानों पर वस्तुओं की विशेषता को जानने के लिए अस्पष्टता अवश्य देखी गयी है। कुछ स्थानों पर तो अनुवादकों ने जटिलता, अस्वाभाविकता और अस्पष्टता के लिए फुटनोट का सहारा लिया है। परन्तु कहीं-कहीं पर इसे छोड़ भी दिया है।

स्रोत भाषा के कुछ ऐसे तत्व जो अपनी संस्कृति के साथ एक सीमा बांध कर आते हैं उसमें अभाषिक सीमाएं विद्यमान रहती हैं। इसी को जब संप्रेषणीय बनाना होता है तो यह सन्देश के संचरण में बाधा उत्पन्न करता है। स्रोत भाषा की पाठ सामग्री का लक्ष्यभाषा में यथानुरूप प्रेषण होना ही अनुवाद को सफल बनाता है। डॉ. सुरेश कुमार का भी कहना है कि “अनुवाद की इकाई है संदेश, जो प्रतिपाद्य और भाषा (भाषिक अभिव्यक्ति) की अन्विति है। प्रत्येक पाठ एक संदेश का प्रतीक है। प्रत्येक संदेश अपनी सम्पूर्णता में संप्रेषित हो जाता है, सन्देश का ग्राहक सन्देश पा लेता है। उसका शत-प्रतिशत पूर्ण न होने का तात्पर्य यही है कि संदेश के प्रतिपाद्य पक्ष और भाषा पक्ष के कुछ अंश सामान्य अनुवाद कार्य की राह के रोड़े बन जाते हैं जिन्हें हटाने के लिए हमें अनुवाद की ऐसी युक्तियों का प्रयोग करना होता है, जिसकी असामान्यता पहचानी जाती है जैसे लिप्यन्तरण, अनुवाद लेबल आदि। विशेष बात यह है कि अनूदित पाठ में स्वच्छता, सहजता और प्रवाह की कमी खटकने लगती है। ये ‘राह के रोड़े’ ही अनुवाद की सीमायें हैं। इन सीमाओं की मात्रा का कम या अधिक होना ही मुख्य बात है। सम्बद्ध भाषाओं में सांस्कृतिक और भाषागत दूरी जितनी अधिक होगी, अनुवादगत सीमाओं की मात्रा भी उतनी ही अधिक होगी। यही मात्रा की अधिकता एक ऐसे बिंदु पर पहुँच जाती है जहाँ किसी मूल अभिव्यक्ति का अनुवाद

या तो नहीं हो पाता है या किया नहीं जाता। वस्तुतः इन्हें समाधान-निरपेक्ष, अतएव अनुवाद-निरपेक्ष समझना उपयुक्त है।<sup>280</sup> इसके आगे मूल उपन्यासों के अनुवाद में आये मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रश्न उत्पन्न होता है।

## मुहावरे और लोकोक्तियाँ

स्रोत भाषा में जहां-जहां पर मुहावरों का प्रयोग आता है उसी के अनुसार लक्ष्यभाषा में भी उनका प्रयोग करना अनिवार्य हो जाता। अनिवार्य कहने का तात्पर्य सन्देश की रक्षा करने से है। इसीलिए अनुवाद करते हुए भी समतुल्य मुहावरों को खोजना अनुवादक का कर्तव्य है। अनुवाद करने के लिए अनुवादक को केवल भाषा का ही ज्ञान नहीं होना चाहिए। लेखक के भाव को समझना और उसे तार्किक रूप से लक्ष्यभाषा में प्रस्तुत करने की समझ भी होनी चाहिए। किस समय और किस परिस्थिति में पात्र कैसी भाषा का प्रयोग करते हैं वैसा ही प्रयोग अनुवादक को भी करना होता है। समानता के आधार पर मुहावरों का प्रयोग सफलता से लक्ष्य भाषा में ढालना उसके लिए अनिवार्य हो जाता है।

अनुवाद करते समय जिस भाषा की अभिव्यक्ति मूल में होती है उसी समानता के साथ लक्ष्य भाषा में भी अभिव्यक्ति करनी पड़ती है। मूल रचना के पात्र जिस लक्षणा या व्यंजना का प्रयोग कर अपने भावों को अभिव्यंजित करते हैं उसी का अनुसरण अनुवादक को भी करना पड़ता है। किस भाव को किस समतुल्य मुहावरे के साथ प्रभावी बनाया जा सकता है इसका निर्णय अनुवादक ही करता है। कहीं-कहीं पर ऐसे प्रसंगों का भी सामना उसे करना पड़ता है जहाँ मुहावरे या लोकोक्तियाँ नहीं लिखी होती हैं। लेकिन उनकी अभिव्यक्ति लक्ष्य भाषा में मुहावरों और लोकोक्तियों से ही की

<sup>280</sup> कुमार, डॉ. सुरेश, *अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा*, दरियागंज: नयी दिल्ली, वाणी प्रकाशन, पंचम संस्करण, 2007, पृ. 109

जा सकती है। मुहावरे और लोकोक्तियाँ किसी भी भाषा को प्रौढ़ता प्रदान करते हैं। इनके प्रयोग में सूक्ष्म से सूक्ष्म अर्थ भी निहित होता है जिसे लेखक और अनुवादक अपने पाठक तक पहुँचाते हैं। इसमें अनुवादक को अधिक सतर्क होकर भिन्न संस्कृति के समतुल्य मुहावरों को अपने समाज की समझ के अनुसार प्रयोग करना होता है। इसे प्रभावी रूप से सन्देश पहुँचाने की एक तकनीक भी माना जाता है।

सदानन्द शुकल ने रेनॉल्ड्स के उपन्यास अनूदित करते हुए ऐसे मुहावरों और लोकोक्तियों का भरपूर प्रयोग किया है। दूसरी ओर यशोदानन्दन खत्री और चतुर्भुज औदीच्य 'जोसफ विल्मोट' का अनुवाद करते हुए कम मुहावरों का प्रयोग करते दिखे हैं। 'लन्दन रहस्य' का अनुवाद करते हुए स्रोत भाषा के बहुतसे स्थानों पर मुहावरों का प्रयोग देखने को मिला है। उसमें ऐसे बहुत से मुहावरों आये हैं जिनके समतुल्य मुहावरे हिंदी में उपलब्ध हैं। ऐसे कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं -

## मुहावरे

१) अंग्रेजी - But I am afraid that Mobbs may smell a rat.<sup>281</sup>

**मुहावरा** - तब मब्स बड़ा चतुर आदमी है, उड़ती चिड़िया का दम पहचानता है।<sup>282</sup>

**विश्लेषण** - यहाँ मूल कृति में 'smell a rat' मुहावरे का प्रयोग हुआ है। सदानन्द शुकल ने इसका अनुवाद 'उड़ती चिड़िया का दम पहचानता' किया है। यह अधिक सक्षम प्रयोग नहीं लग रहा है। यहाँ पर यह अनुवाद मूल वाक्य के अर्थ में बाधा उत्पन्न कर रहा है। क्योंकि इस मुहावरे का अनुवाद 'दाल में कुछ काला लगना' या 'शक करना' भी लिखा जा सकता था। यहाँ यह भी नहीं कहा जा सकता है कि मूल कृति की हत्या कर दी गयी है लेकिन अनुवादक का यह प्रयोग अधिक प्रभावी नहीं

<sup>281</sup> *Mysteries of the court of London*, p -119

<sup>282</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -3, पृ -335

है। कुछ विद्वानों का यह भी मानना है कि मुहावरों का अनुवाद पूर्णपुनर्विन्यास होता है। इसमें लक्ष्यभाषा के अर्थ को समझाने के लिए स्रोतभाषा को पूरी तरह से परिवर्तित करना होता है। बिना इस परिवर्तन के उस अर्थ को नहीं समझा जा सकता है।

२) अंग्रेजी - I have learnt to view things in a very different light from that in which I formerly be held them! I now know who it was that literally sold me to the seducer—the base seducer the nobly-born villain who wooed me with guile, won my honour with treachery, and discarded me with a corresponding heartlessness! Yes, madam—I can see through itall—all;—and I curse—aye, curse my own folly when I think that there was a time at which I believed that he really loved me!<sup>283</sup>

**मुहावरा** - “अब मेरी आँख खुल गयी हैं; अब मुझे मालूम हो गया है कि उस दुष्ट लम्पट के हाथ मेरा सतीत्व रत्न किसने बेचा था। हाय ! हाय ! उस दुष्ट ने छल कपट कर पहले तो मेरा मन मोह लिया और दगा करके मेरा सतीत्व नाश कर डाला; पीछे दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया। मैं तुम्हें कोसती हूँ और अपनी नासमझी को भी कोसती हूँ। अब मुझे जीकर क्या करना है ?”<sup>284</sup>

**विश्लेषण** - फ्रेंसिस के कारण गर्भवती हो जाने के बाद लिंडली और ब्रेस, कैरोलाइन वाल्टर्स को अपने पास कैद कर लेती हैं। कैरोलाइन स्पेन देश की रहने वाली लड़की है। उसके शरीर में बहने वाला स्पेनिश खून अपने दोषी को माफ़ नहीं कर सकता था। ऐसा कहा जाता है कि स्पेन की लड़कियां मुंहफट, गुस्से वाली और क्रोधी होती हैं। कैरोलाइन किसी को क्षमा करना नहीं जानती थी। उपर्युक्त अवतरण में उसके गुस्से को रेनॉल्ड्स ने दिखाया है। कैरोलाइन जब वह उत्तेजित हो जाती है तो किस प्रकार की भाषा का प्रयोग वह अपने विरोधी के लिए करती है यह दिखाया है, लेखक ने यह

<sup>283</sup> Mysteries of the court of London, Vol. 1, p- 412

<sup>284</sup> लन्दन रहस्य, खंड -2, पृ - 603-604

दिखाया है। वह कहती है 'discarded me with a corresponding heartlessness !' इसका अनुवाद अनुवादक ने 'पीछे दूध की मक्खी की तरह निकाल' किया है। "मुहावरा सहप्रयोग का एक प्रकार है। यह सहप्रयोग ऐसी अति सीमा है जहां अनुक्रम में प्रयुक्त शब्दों को न तो बदला जा सकता है और न ही उनके स्थान पर पर्यायवाची शब्द रखे जा सकते हैं।"<sup>285</sup> इसीलिए यह अनुवाद उसके दर्द को अभिव्यक्त करने के लिए सफल है। वह केवल अपनी हठ के कारण ही ऐसा नहीं करती है। यह अनुवाद कैरोलाइन की पीड़ा को व्यक्त करने के लिए भी सही है। उसका सतीत्व नाश कर फ्रेंसिस उसका जीवन बर्बाद कर जाता है। बाद में वह उससे विवाह करने के लिए भी मना कर देता है।

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में आने वाली मध्यवर्गीय नारी की पीड़ा को दिखाने में अनुवादक सफल हुए हैं। इस पीड़ा पर न तो भारतीय और न ही अंग्रेज़ होने की मुहर लगी है। इस अनूदित अवतरण के माध्यम से लक्ष्यभाषी पाठक नारी की पीड़ा से अवगत हो पाया है। कैरोलाइन के दुःख को हिंदी पाठक तक इस मुहावरे के माध्यम से अनुवादक ने सफलता से संचरित किया है। सदानंद शुक्ल ने उसके दुःख और लेखक के सन्देश में आने वाली एकसारता को भंग नहीं होने दिया है।

३) अंग्रेजी - "and you are therefore alone with this afflicted relative?" said Bernard Audley, as his eyes swept with a sort of ravenous expression of desire over the beautiful form of the innocent maiden."<sup>286</sup>

**मुहावरा** - मरभूखे से कौवे की तरह निर्दोष लुइसा के सुन्दर मुख की ओर लालच से देखकर "तो तुम अपनी निर्दोष रिश्तेदारिन के साथ अकेली रहती हो।"<sup>287</sup>

<sup>285</sup> अग्रवाल, डॉ. कुसुम, अनुवाद शिल्प समकालीन सन्दर्भ, साहित्य सहकार, 2008, दिल्ली, पृ - 186

<sup>286</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 3, p-38

<sup>287</sup> लन्दन रहस्य, खंड -5, पृ - 109

**विश्लेषण** - लुइसा एक अत्यंत सुंदर व साधारण-सी लड़की थी। जो लन्दन के पास वाले गाँव कैंटरबरी में अपनी मौसी के साथ रहती थी। जिस पर बर्नार्ड आडली की नज़र बहुत दिनों से थी। जब वह अपने घर से बाहर किसी काम के लिए जाती है तो वह रास्ते में उसका पीछा करता। उसे रोक कर अपनी ललचायी और कामुक नज़रों से देखता है। उसकी इन नज़रों को लेखक ने 'as his eyes swept with a sort of ravenous expression' जैसे शब्दों में व्यक्त किया है। जिसका अनुवाद सदानंद जी ने 'मरभूखे से कौवे की तरह' किया है। इस मुहावरे का प्रयोग कर अनुवादक इस पूरे अवतरण में वर्णित बर्नार्ड की लालच से भरी नियत को व्यक्त करने में सफल दिखते हैं। यदि इस मुहावरे की जगह 'ललचाई नज़रों से देखा' का प्रयोग किया जाता तो वह बर्नार्ड की कामुक दृष्टि का प्रभाव कम कर देता। इसीलिए यह अनुवाद मूल सन्देश के साथ न्याय कर रहा है। इसे सफल अनुवाद कहा जाएगा।

४) **अंग्रेजी** - Her large dark eyes shone with a lustre that was subdued by the thick fringes of the lids; the raven masses of her hair fell in heavy clusters upon her shoulders of sculptural perfection; while one or two stray ringlets, twining round upon her throat, set off the alabaster purity of that dazzling neck. One fair hand supported her head as she lay thus half-reclining on the sofa: the other drooped over the black horse-hair cushion, and seemed like modelled ivory resting upon a groomd of ebony.<sup>288</sup>

**मुहावरा** - उसकी आंखें दोनों भौरों की तरह शोभा दे रही थीं। उसके केश दोनों कन्धों पर पड़े हुए थे। एक हाथ गाल पर दूसरा कौच पर — अपूर्व लावण्यमय मानो एक आबनूस के खेत में हाथी दांत पड़ा हो। वैसी ही सुन्दरता को देख प्रेमी मन मोहित होता था।<sup>289</sup>

<sup>288</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p - 120

<sup>289</sup> लन्दन रहस्य, खंड -1, पृ- 57

**विश्लेषण** - उपर्युक्त अनुवाद में अनुवादक ने 'seemed like modelled ivory resting upon a groomd of ebony' की जगह 'एक आबनूस के खेत में हाथी दांत पड़ा हो' का प्रयोग किया है। लेखक ने लेडी कालिंदी के लावण्यमयी सौन्दर्य का वर्णन किया है। अनुवादकों ने कालिंदी के भावगांभीर्य को अभिव्यंजित करने में कोई निरर्थक संकल्पना नहीं की है। अपितु जिस भाव से लेखक ने उसे लिखा है उसी भाव से अनुवादक ने उसे अभिव्यक्त किया है। लेखक ने कालिंदी के जिस सौन्दर्य से पाठकों को परिचित कराया है, अनुवादकों ने यथावत समतुल्य शब्दों का प्रयोग कर उसे चित्र स्वरूप उकेर दिया है। हालाँकि अंग्रेजी साहित्य की तुलना में हिंदी साहित्य में किसी नारी के सौन्दर्य की अभिव्यक्ति बिल्कुल भिन्न रूप से होती है। लेकिन यहाँ पर अंग्रेजी समाज में किये जाने वाले नारी सौन्दर्य के वर्णन का शत प्रतिशत मिलान हिंदी के मुहावरे से हो रहा है।

“स्रोत तथा लक्ष्य भाषा के मुहावरों में कभी-कभी शब्द और अर्थ की दृष्टि से ऐसी समानता भी मिलती है जिसके कारण के बारे में कुछ कहना कठिन है। संभव है कि यह आपसी प्रभाव या लेन-देन, समान स्रोत, समान अनुभव या संयोगवशात् हो।”<sup>290</sup>

अक्सर ऐसा होता है कि एक प्रसंग का अनुवाद करने के लिए समतुल्य मुहावरे और लोकोक्तियाँ नहीं मिलती हैं। समसांस्कृतिक भाषाओं की अपेक्षा विषमसांस्कृतिक भाषाओं के परस्पर अनुभव में कुछ हद तक अधिक समस्याएं रहती हैं। इसी सन्दर्भ में लाडो का कथन है कि “जब दो संस्कृतियाँ समान हों या एक-दूसरे से सम्बद्ध हों, किन्तु भाषाएँ अलग-अलग हों तब अनुवादक को यह छूट होनी चाहिए कि वह लक्ष्य भाषा की सांस्कृतिक शब्दावली को स्रोत भाषा की प्रकृति के अनुसार प्रसंगानुसार बदल दे। यदि विषम संस्कृति हो तो तब भी प्रसंगानुसार परिवर्तन अत्यंत

<sup>290</sup> तिवारी, भोलानाथ, *अनुवाद विज्ञान*, दिल्ली, शब्दकार प्रकाशन, 1972, पृ- 112-113



आवश्यक है अन्यथा उससे सटीक अर्थ की प्रतीति नहीं हो पाएगी।<sup>291</sup> यदि ऐसा सम्भव नहीं है तो भावानुवाद भी कर देना पड़ता है। संस्कृति विशेष में की जाने वाले अभिव्यक्ति के अनुसार ही गहन विचारों के अधीन होकर अनुवादक विशेष प्रयोग करने के लिए तैयार होता है। यह प्रयोग एक अनुभवी अनुवादक अपनी सूक्ष्म दृष्टि का प्रयोग कर ही कर सकता है। इसमें केवल सूक्ष्म दृष्टि ही नहीं पाठ का विश्लेषण भी आवश्यक होता है।

आलोच्य लेखक के उपन्यासों में आम बोलचाल की सरल भाषा का प्रयोग अधिक मिलता है। जिस बोलचाल की भाषा का सहज रूप अनुवादकों ने गृहण किया है। उसी भाषा के प्रयोग से लक्ष्यभाषा में कथा यथार्थ दिख रही है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा उपन्यासों में लिखी घटनाओं को उसके वास्तविक रूप में अभिव्यक्त कर पा रही है।

## लोकोक्तियाँ

“लोकोक्तियाँ प्रायः सभी भाषाओं में अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती हैं। किन्तु वे अभिव्यंजना की दृष्टि से जितनी ही सशक्त होती हैं, कुछ थोड़े अपवादों को छोड़कर अनुवाद करने की दृष्टि से उतनी ही अधिक कठिन होती हैं।<sup>292</sup> वस्तुतः लोकोक्तियों की जड़ें भाषा विशेष के जीवन और संस्कृति से बहुत गहरी जुड़ी होती हैं। “यह कहना अतियुक्ति नहीं होगी कि कुछ विशेष शब्दों को छोड़ दें तो भाषा के सामान्य शब्दों की जड़ें लोकोक्तियों की तुलना में कम गहरी होती हैं। यही कारण है कि अपनी मातृभाषा को छोड़कर किसी अन्य भाषा के सामान्य शब्दों पर अधिकार

<sup>291</sup> डॉ. नगेन्द्र (संपा.), *अनुवाद विज्ञान: सिद्धांत और अनुप्रयोग*, नयी दिल्ली, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय: दिल्ली विश्वविद्यालय, प्रथम संस्करण, 1993, पृ- 114

<sup>292</sup> तिवारी, भोलानाथ, *अनुवाद विज्ञान*, दिल्ली, शब्दकार प्रकाशन, 1972, पृ- 122

पाना जितना सरल है, उसकी लोकोक्तियों पर अधिकार पाना प्रायः उतना ही कठिन है।”<sup>293</sup>

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में आयी लोकोक्तियों का अनुवाद करने में अनुवादकों को अधिक कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा। क्योंकि स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की लोकोक्तियाँ अधिकतर समान पर्याय देती हैं। अंतर केवल इतना है कि अंग्रेजी की लोकोक्तियाँ काफी सतही हैं और हिंदी की गहरी हैं। अनुवादकों ने रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अनुवाद अतिशयोक्ति में नहीं किया है, इसीलिए हिंदी में भी इनका वही प्रभाव पड़ा है जो अंग्रेजी में था। अनुवाद करते समय यह आवश्यक नहीं है कि शत-प्रतिशत वही प्रयोग किया जाए जो लेखक ने किया है। लेकिन लेखक के भावबोध की सृष्टि करना आवश्यक हो जाता है। लेखक की रचना में जो प्रसंग आया है वह लक्ष्यभाषी की संस्कृति विशेष से भी गहरा जुड़ना चाहिए क्योंकि “कभी-कभी ऐसा भी होता है कि शाब्दिक समानता के बावजूद लोकोक्तियों के अर्थ में अंतर होता है”<sup>294</sup>

१) **अंग्रेजी** - "You? – A menial!" said the toady, suddenly stopping short and tossing her head indignantly, while she quivered all the time with mingled rago, spitting and terror. "Know your place—and keep it."<sup>295</sup>

**लोकोक्ति** - “तू? एक नौकरानी, मेरी बात में दखल देती है, बैठ अपनी जगह, कहते हुई डाकिना अपने दांत पीसने लगी।”<sup>296</sup>

**विश्लेषण** - डाकिना चर्लॉटी को कहती है कि तुम चुप रहो इस मामले में कुछ मत बोलो। अनुवादकों ने she quivered all the time with mingled rago, की जगह ‘डाकिना अपने दांत पीसने’ लगी का प्रयोग किया है। डाकिना की शारीरिक भंगिमाएं

<sup>293</sup> वही, पृ - 122-123,

<sup>294</sup> तिवारी, भोलानाथ, *अनुवाद विज्ञान*, दिल्ली, शब्दकार प्रकाशन, 1972, पृ - 130

<sup>295</sup> Joseph Wilmot, p - 112

<sup>296</sup> जोसफ विल्मोट, पृ -

और मानसिक उद्विग्नता को दिखाने के लिए अनुवादकों ने इस मुहावरे का प्रयोग किया है। जो यहाँ पर भावाभिव्यक्ति को संक्षिप्त और सफल रूप से अभिव्यक्त करने में सफल है।

२) अंग्रेजी - "after all, we ain't the men to stand upon trifles, Stephen—and if it comes to the scratch, we must fight a bloody battle, even though the odds will be eight to two when the captain and first mate are put out of the way."<sup>297</sup>

**लोकोक्ति** - "परवाह क्या है? कप्तान और सरदार मेट को खत्म कर दिए जाने का हाल सुनते ही उन लोगों के होश फाख्ता हो जायेंगे जो हो स्टेफेन हम लोग भी ऐसे वैसे आदमी नहीं हैं। अगर लड़ना ही पड़ेगा, तो सालों को लोहे का चना चबवा दूंगा, चाहे आठ हों या दश उसकी मुझे कुछ चिंता नहीं"<sup>298</sup>

**विश्लेषण** - उपर्युक्त अनुच्छेद में हैंगमैन, स्टीफेन और जहाज़ पर स्थित कुछ लोगों के बीच लड़ाई शुरू हो जाती है। जहाज़ का कप्तान बदमाशों का सामना करने की कोशिश करता है। लेकिन बदमाश उनसे अधिक ताकतवर हैं। इसी बीच एक-दूसरे से लड़ते हुए वे लोकोक्ति से युक्त भाषा का प्रयोग करते हैं। दो बार ऐसे वाक्य आये हैं जिनका अनुवाद अनुवादक ने लोकोक्ति के रूप में किया है।

पहला है 'They'll be paralysed' के स्थान पर 'लोगों के होश फाख्ता' लोकोक्ति का प्रयोग है। जो हैंगमैन की भाषा में प्रवाहमयता उत्पन्न कर रहा है।

दूसरा, वारेन जब स्टीफेन के साथ मिलकर लड़ाई लड़ रहा होता है तो वह उसे संबोधित करते हुए कहता है कि 'we must fight a bloody battle' जिसका अनुवाद अनुवादक ने 'लोहे का चना चबवा दूंगा' किया है। यह प्रयोग भी मूल भाषा में किये गए अंग्रेज़ी के वाक्यों से अधिक प्रभावी लग रहा है। दूसरा यह कि यदि

<sup>297</sup> Mysteries of the court of London, Vol. 3, p – 40

<sup>298</sup> लन्दन रहस्य, खंड -4, पृ - 487

इसकी जगह 'खूनी खेल खेलेंगे या खून की नदियां बहा देंगे' का प्रयोग होता तो यह प्रयोग भी अनुवाद सफल ही माना जाता। भारतीय संस्कृति में तो इस प्रकार के लोकोक्तियों और वाक्यों का प्रयोग एक ही अर्थ की अभिव्यंजना करता है। इस प्रयोग को अनुवादक ने लक्ष्यभाषी पाठ में लोकोक्तियों का रूप देकर अत्यंत प्रभावी बना दिया है।

बहुत बार लेखक का संदेश अभिधा में लिखा होता है, लेकिन अभिधा में ही उसका अनुवाद होने पर उसका अर्थ प्रभावी नहीं बन पाता है। शायद इसीलिए ही अनुवादक ने अपने कौशल का प्रयोग कर लक्ष्यभाषी पाठक को समझाने के लिए उपर्युक्त अवतरण का अनुवाद लक्षणा में किया है। कहा जा सकता है कि ऐसे ही अनुवाद के लिए मुहावरे या लोकोक्ति का प्रयोग अनिवार्य बन पड़ता है।

- ३) अंग्रेजी - "Well, "he said, with a sort of inward chuckle,"and so you are beneath your uncle's roof in the long run. Don't you think you played the game of a most ungrateful scapegrace when I first offered to take charge of you? But let me tell you this—that if you show any of your fine spirit here, I will take a leather strap and thrash it out of you."<sup>299</sup>

**लोकोक्ति** - वह उसको कहता है "हाँ, अब तुम बस में हुए हो देखो अब तुम अपने मामा के यहाँ आये हो तुमने हवेली में मुझसे जो इतनी घृणा दिखलाई थी उतनी पेशी की थी उस बात को मैं जाने देता हूँ किन्तु अब जो घृणा वैसे बेशउरी तुम यहाँ प्रकट करोगे तो याद रखो, मैं मारते-मारते तुम्हारी खाल उधेड़ दूंगा"<sup>300</sup>

**विश्लेषण** - जोसफ का मामा लनीवर देलमर के घर जाता है। जोसफ उसे पहचानने से मना कर देता है। लेकिन देलमर की हत्या के बाद वह उसे घर ले आता है। अति घृणामयी गुस्से में उसे कहता है कि "I will take a leather strap and thrash it

<sup>299</sup> Joseph Wilmot, p - 30

<sup>299</sup> जोसफ विल्मोट, पृ - 105

out of you.” अब इस घृणामयी व्यवहार का अनुवाद लोकोक्ति के माध्यम से करते हुए अनुवादकों ने ‘मैं मारते-मारते तुम्हारी खाल उधेड़ दूंगा किया है। यह प्रयोग लनीवर के गुस्से को दिखाने में सक्षम है। उसके एक भी गलती करने पर वह किस प्रकार उसकी खुशामद करेगा यह यशोदानंदन और चतुर्भुज जी ने दिखाने में कोई कमी नहीं छोड़ी है। यह अनुवाद लक्ष्य भाषागत और स्वाभाविक प्रतीत हो रहा है।

४) अंग्रेजी - Say, that because you have hitherto found female honour a thing of snow which the sunlight of Royalty can melt in a moment—do you believe, on this account, that you have obtained a large experience of the mind and character of the entire sex? No, Prince of Wales—ten thousand times no! There is virtue in English women—there is honour in the hearts of British females.”<sup>301</sup>

**लोकोक्ति** - तुम्हारी समझ में स्त्रियों का सतीत्व मोम का खिलौना है, जो राजपद की गर्मी से तुरंत ही गल जाता है, इसी से तुम सब स्त्रियों को एक-सा समझते हो। नहीं प्रिंस ऑफ़ वेल्स ऐसा नहीं है इसमें सोलह आना तुम्हारी भूल है मैं हजार बार लाख बार कहती हूँ कि अंगरेज़ औरतों में धर्म है ब्रिटेनवासियों को अपनी इज्जत आबरू का ख्याल है।<sup>302</sup>

**विश्लेषण** - सदानंद शुक्ल ने एक ब्रिटिश नारी की पीड़ा को हिंदी में अभिव्यक्त किया है। जिसमें वह प्रिंस से सामना करते हुए उसे नारी जाती का अपमान न करने के लिए चेतावनी देती है। रोज़ कहती है ‘No, Prince of Wales—ten thousand times no! There is virtue in English women—there is honour in the hearts of British females.’ इस पूरे वाक्य का अनुवाद सदानंद जी ने ऐसे किया है ‘नहीं प्रिंस ऑफ़ वेल्स ऐसा नहीं है इसमें सोलह आना तुम्हारी भूल है’ इस प्रसंग

<sup>301</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p- 414

<sup>302</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -2, पृ -609

में रोज प्रिंस को चेतावनी दे रही है। उसके कहने का तात्पर्य है कि वह उसे इतना कमजोर न समझे कि अपने देश का शासक समझ कर वह प्रिंस के साथ अपने सम्मान का सौदा कर लेगी। एक अनुवादक से हमेशा यही अपेक्षा की जाती है कि वह लेखक के साहित्य की गहनता और अंतर्दृष्टि को समझ सके। लक्ष्यभाषी तक उसकी संस्कृति में प्रयोग होने वाली लोकोक्ति के अनुसार ही उस तक वह सन्देश पहुंचा सके।

लोकोक्ति में प्रायः किसी प्रसंग विशेष के सन्दर्भ में पूरे वाक्य को उद्धृत किया जाता है यह एक पूरे वाक्य के रूप में रहता है इसीलिए विशिष्ट अर्थ, अधिक गहनता लिए हुए सन्दर्भगत प्रसंग को प्रभावी बनाता है। लोकोक्तियों में प्रायः अभिधा, लक्षणा और व्यंजना तीनों ही प्रकार की शब्द शक्तियां इनमें मिलती हैं। लोकोक्तियाँ सन्दर्भ के अनुसार लिखी जाती हैं। लोकोक्तियों में अर्थगरिमा और सम्प्रेषणीयता होती है। लोकोक्ति का विवेचन करते हुए से वैंटिस कहते हैं - "Proverbs are sentences drawn from long experience." केलिंस के मतानुसार - "Proverbs are ocean of experiences expressed in a drop of word."<sup>303</sup>

- ५) **स्रोतभाषा** - Pardon me—forgive me—for God's sake, do me no harm!" I cried, my tongue now completely unlocked ;and I sank down upon my knees in the midst of that group of four by whom I was surrounded" Perdition !" ejaculated the younger of the two gentlemen.<sup>304</sup>

**लोकोक्ति** - क्षमा कीजिये – मुझ पर दया कीजिये – ईश्वर के लिए मुझे मारिये मत।" चिल्लाकर मैं बोल उठा। मेरी जीभ उस समय लड़खड़ा गयी थी और मैं उन

<sup>303</sup> अग्रवाल, डॉ. कुसुम, अनुवाद शिल्प समकालीन सन्दर्भ, साहित्य सहकार, 2008, दिल्ली, पृ - 187

<sup>304</sup> Joseph Wilmot, p - 38

<sup>304</sup> जोसफ विल्मोट, पृ - 135

चारों आदमियों के बीच में जमीन पर घुटने टेक कर बैठ गया था और हाथ जोड़कर उनसे माफ़ी मांगने लगा।“<sup>305</sup>

**विश्लेषण** - यशोदानंदन और चतुर्भुज जी ने यह अनुवाद अत्यंत सहज और स्वाभाविक रूप से किया है। यह अवतरण उस घटना से लिया गया है जब उन अपहरणकर्ताओं के सामने चिल्लाकर जोसफ अपने जीवन की भीख मांगता है। इस क्षण वह घबरा जाता है ओए अपनी घबराहट को दिखाने के लिए वह कहता है 'I cried, my tongue now completely unlocked.' जोसफ की इस मजबूरी का अनुवाद 'मेरी जीभ उस समय लड़खड़ा गयी' किया गया है। अनुवादकों के द्वारा किया गया यह अभिधार्थ प्रयोग अनुवाद को सहजता दे रहा है।

अक्सर समान लोकोक्तियाँ स्रोत और लक्ष्यभाषा में नहीं मिलती हैं। ऐसे में अनुवादक को समान भाव वाली लोकोक्ति को खोजने का प्रयास करना चाहिए। “यद्यपि इस प्रकार की लोकोक्तियों का अर्थ-बिम्ब स्रोत तथा लक्ष्यभाषा में सदा एक-सा नहीं होता।”<sup>306</sup>

६) अंग्रेजी - "Harriet was all very well a little while ago, my dear lady," returned the man, with a supercilious air and an affected drawl: "but circumstances have transpired, you understand, to enable me to look to a more elevated position."<sup>307</sup>

**लोकोक्ति** - हैरियेट से पहले बात जरूर थी पर अब मेरी अवस्था बदल गयी है और दिमाग ऊँचा हो गया है।<sup>308</sup>

<sup>306</sup> तिवारी, भोलानाथ, *अनुवाद विज्ञान*, दिल्ली, शब्दकार प्रकाशन, 1972, पृ - 131

<sup>307</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 2, p - 120

<sup>308</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -3, पृ -337

**विश्लेषण** - यहाँ पर अनुवादक ने 'look to a more elevated position' के लिए 'दिमाग उँचा' लोकोक्ति का प्रयोग किया है। जिससे मूल कृति में कोई बदलाव नहीं आया है। भारतीय संस्कृति में 'दिमाग उँचा होने' लोकोक्ति का प्रयोग लोग व्यंग्यात्मक रूप में करते हैं। जब हैंगमैन मिसेस ब्रेस को अपने साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाने पर मजबूर करता है तो वह उसे याद दिलाती है कि हैरियेट उसके बच्चे से तीन माह की गर्भवती है। वह ब्रेस को बताता है कि वह उसके सारे गुप्त राज जानता है। वे सारे गुप्त राज किसी को न बताने की शर्त पर वह ब्रेस को अपने साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाने के लिए मजबूर करता है। उसकी सारी संपत्ति को भी वह लूटना चाहता है। उसे लगता है कि अब तो ब्रेस की संपत्ति उसी की है। इसीलिए अब हैरियेट क्यों कोई महत्त्व देगा। हैंगमैन के इस प्रकार के व्यवहार के लिए अनुवादक का प्रयोग है।

७) **अंग्रेजी** - exclaimed Bengul: "he said so to mo when he first entered the crib just now. He says Larry Sampson has got a warrant out against him; but he's blowed if he won't give Larry an inch or two of cold steel afore he'd be lugged off to quod by any such squeaking Willain."<sup>309</sup>

**लोकोक्ति** - तब तो यह वह आदमी है, क्योंकि आने के साथ ही उसने मुझे यह बात कह दी है। वह कहता है कि उसकी गिरफ्तारी का वारंट लैरी सेम्पसन के पास है। साथ ही उसने यह भी कहा है, कि मैं बचा को लोहे के चने चबवा दूँगा<sup>310</sup>

**विश्लेषण** - हैंगमैन की गिरफ्तारी का वारंट सेम्पसन के पास है जब उसे यह खबर मिलती है तो वह भी उसे सबक सिखाने के लिए तैयार हो जाता है। तब हैंगमैन अपने गुस्से को न रोक पाने के कारण कहता है कि 'but he's blowed if he

<sup>309</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 3, P- 82

<sup>310</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड - 5, पृ -248



won't give Larry an inch or two of cold steel afore he'd be lugged off to quod' अब यहाँ पर उसको सबक सिखाने के लिए अनुवादक ने 'में बचा को लोहे के चने चबवा दूंगा का प्रयोग किया है। इस अनुवाद में ग्रामीण बोली की झलक भी दिखलाई पड़ रही है। किसी से दुश्मनी मोल लेने पर या किसी के दुश्मनी करने पर इसी प्रकार की लोकोक्तियों का प्रयोग अक्सर लोग किया करते हैं। वैसा ही भाव अनुवादक ने भी उत्पन्न कर दिया है। इस लोकोक्ति का प्रयोग उसके भय को नहीं उसके साहस को दिखा रहा है। जो सेम्पसन के गुस्से की अभिव्यक्ति करने में सफल हैं।

अनुवाद करते समय यह ध्यान रखना होता है कि भाषा ही पात्रों की संस्कृति को अभिव्यक्त करेगी। उसी संस्कृति, लहज़े और भावना के प्रदर्शन के लिए लेखक पात्रों से मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग कराता है। मुहावरे और लोकोक्तियाँ अक्सर व्यंग्य की भाषा के प्रयोग के लिए चुने जाते हैं। मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग किसी भी भाव को अधिक प्रभावी ढंग से कहने के लिए किया जाता है। मुहावरे और लोकोक्तियाँ किसी भी भाषा को प्रौढ़ता प्रदान करते साथ ही इनके प्रयोग में सन्देश का सूक्ष्म अर्थ भी निहित होता है जिसे लेखक और अनुवादक व्यंजना और लक्षणा के माध्यम से कहकर अपने पाठक तक पहुँचाते हैं अनुवादक को अधिक सतर्क होकर भिन्न संस्कृति के समतुल्य मुहावरों को अपने समाज की समझ के अनुसार लक्ष्यभाषा में प्रयोग करना होता है।

मुहावरे और लोकोक्तियों के माध्यम से भाषा का वैचित्र्यपूर्ण प्रभाव दिखता है। ये प्रयोग साहित्य के लेखन में आकर्षण और चमत्कार उत्पन्न करता है। यही प्रयोग मूल और लक्ष्य भाषी पाठक दोनों के चित्त में साहित्य की भावपूर्ण अभिव्यक्ति भी करते हैं। जब अनुवादक को सटीक पर्याय नहीं मिले तो उसके निकटतम मुहावरे और लोकोक्ति को रखा है। एक प्रकार से यह सांस्कृतिक परिवेश को भी दिखाता है। इस

प्रकार के प्रत्येक प्रयोग में अनुवादक सफल हुए हैं संस्कृति से सम्बंधित के और महत्त्वपूर्ण पक्ष है खान पान का जो ब्रिटिशों की विलासिता का प्रदर्शन करता है।

## खान पान और ब्रिटिश विलासिता

एक देश की सामाजिक और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ और प्रवृत्तियाँ दूसरे देश से भिन्न होती हैं। किसी भी देश की संस्कृति से केवल उसकी भाषा या विशेष ऐतिहासिक किस्से ही नहीं जुड़े होते हैं उसका अपना भिन्न खानपान और भिन्न परिवेश भी एक विशिष्ट समाज की संस्कृति से जुड़ा होता है। जैसे प्रत्येक देश की सामाजिक और सांस्कृतिक सीमाएं भाषा की सीमाएं निर्धारित करती हैं, वैसे ही एक विशेष भूभाग की भोजन सामग्री जिसमें खाद्य और पेय दोनों आते हैं अपना महत्त्व रखती हैं। किसी भी देश का खानपान वहां के लोगों की विशेषता होता है। जो एक देश के लोगों के स्वाद को दर्शाता है। यह तामसिक या सात्विक कोई भी हो सकता है। उस समय के हिंदी पाठक उत्तर आधुनिक अंग्रेजी समाज के खान पान से परिचित नहीं थे। जब ब्रिटिश शासक भारत में निवास कर रहे थे, तब भी वे अपने शासकों के खानपान के बारे में अधिक नहीं जानते थे। उत्तर-भारतीय समाज में उनके खानपान की आदतों से केवल वे लोग ही परिचित थे, जो ब्रिटिशों के करीब थे। या उनके यहाँ खानसामा आदि का काम किया करते थे। अंग्रेजों के खानापान से परिचित अन्य लोगों में वे थे जो यूरोप के किसी देश में रह कर आ चुके थे। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में अनुवादकों ने कुछ स्थानों पर अनुवाद करते समय अपने पाठकों की समझ के लिए अंग्रेजी सामग्री के स्थान पर भारतीय भोजन का नाम रख दिया है। ऐसा करने से अनूदित उपन्यास को पढ़ना पाठकों के लिए सुगम्य और भाषा की तुलना में समतुल्य भी बन गया है। उदाहरण के लिए -

१) **मूलपाठ** - Suiting the action to the word, Briggs filled a glass with gin, which he handed to Mrs. Page; and when she had imbibed the dram, he indulged himself in one, drinking to her "better luck."<sup>311</sup>

अनूदित पाठ - इतना कहने के बाद ब्रिग्स ने एक गिलास जिन जूलिया को दिया जूलिया के पी जाने पर उसने खुद एक गिलास पी कर उसकी मंगल कामना की<sup>312</sup>

**अनूदित पाठ** - अनुवादक ने 'जिन' नामक शराब का वर्णन फुटनोट में नहीं किया और न ही किसी और प्रकार से इसकी विशेषता समझाने का प्रयास ही किया है।

**स्पष्टीकरण** - 'जिन' एक प्रकार की शराब है। जिसका कोई रंग नहीं होता है अर्थात् वह रंगहीन होती है। इसे जुनिपर बेरीज (Juniper Berries) से बनाया जाता है। जुनिपर बेरीज से बनने वाली यह शराब कई विविध स्वादों में उपलब्ध होती है। इस शराब की उत्पत्ति सत्रहवीं शताब्दी में हुई थी। ब्रिटिशों के बीच यह बहुत अधिक प्रचलित थी। जब सरकार ने इसे लाइसेंस मुक्त कर दिया तो इसका अत्यधिक उत्पादन किया जाने लगा और लोग इसे अधिक मात्रा में पीने लगे। इसीलिए ब्रिग्स जैसे बदमाशों को भी यह सस्ते दामों पर आसानी से उपलब्ध हो जाया करती थी। इसीलिए लेखक ने भी ब्रिग्स को 'जिन' पीते हुए दिखाया है।

२) **मूल पाठ** - However, his penetration and shrewdness were baffled for once; and the Magsman chuckled inwardly as he sat down to the enjoyment of the roast fowl, the sausages, the mashed potatoes, and the porter, which an eating-house in the Old Bailey had supplied." We should however observe that the fowland sausages had been previously cut up into pieces, the potatoes turned over with a spoon, and even the very beer poured from one pot into another, by the busy hands of Mr. Soper, to assure himself that no file nor watch-

<sup>311</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, P- 158

<sup>312</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -1, पृ - 536

spring was secreted amongst the articles intended for the prisoner's dinner.<sup>313</sup>

**अनूदित पाठ** - हंसने का कारण यह था कि मुर्गी वगैरह में रेती जैसी कोई चीज़ छिपी हुई है या नहीं। इसीलिए वह मुर्गी और मांस को टुकड़े-टुकड़े करके खाने लगा। आलूदम भी एक-एक करके देख लिया।<sup>314</sup>

**स्पष्टीकरण** - अनुवादक ने उपर्युक्त अनुच्छेद का आशु अनुवाद किया है यह अनुवाद शब्द या वाक्य के क्रमानुसार नहीं है। दूसरी बात यह कि मूल भाषा में मैग्सेमैन की आपराधिक और धूर्त प्रकृति का चित्रण है, जो अनूदित में नहीं मिलता है। इस अनुवाद में अनुवादक ने 'sausages' शब्द का अनुवाद नहीं किया है। 'sausages' 'मांस से भरी एक प्रकार की खाद्य-वस्तु होती है'। दूसरा शब्द 'roast fowl' जिसे केवल 'मुर्गी' लिख दिया गया है। जिसका अनुवाद भुनी हुई मुर्गी होना चाहिए था। तीसरा शब्द है 'mashed potatoes' यह ब्रिटिश, अमरीकन और कनाडा में खाए जाने वाला भोज्य पदार्थ है। इसको पकाने के लिए मलाई, लहसुन और मक्खन का लगातार प्रयोग किया जाता है। इसे तब तक पकाया जाता है जब तक यह एकत्रित नहीं हो जाता है। इसकी जगह यदि 'आलू भर्ती' शब्द का प्रयोग किया जाता तो वह अधिक सटीक रहता। यह भारत में बनाये जाने वाले 'दम आलू' से बहुत भिन्न है। 'आलूदम' का प्रयोग सही नहीं है। अंग्रेजी संस्कृति में भुनी हुई मुर्गी और दम आलू साथ ही में खाए जाते हैं। भारतीय संस्कृति में ऐसी कोई खाद्य सामग्री प्रचलित नहीं थी। इसीलिए इसका अनुवाद ठीक से किया जाना आवश्यक था। उपर्युक्त अनुवाद के लिए यह कहा जा सकता है कि अपनी सुविधा के अनुसार अनुवादक ने इन शब्दों का प्रयोग किया है।

<sup>313</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, P - 192

<sup>314</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड -1, पृ -647

3) मूलपाठ - Starting from the chair in which he was lounging—tossing into the fire the cigar which he was smoking—and almost upsetting the bottle of claret which he had commenced, Meagles"<sup>315</sup>

अनूदित पाठ - मीगल्स टेबल के पास बैठकर चुरुट और क्लैरेट शराब पी रहा था।<sup>316</sup>

स्पष्टीकरण - यहाँ पर भी अनुवादक ने कोई शाब्दिक अनुवाद नहीं किया है। केवल एक छोटे वाक्य में ही इस लम्बे वाक्य का अनुवाद कर अपने कार्य की इतिश्री कर दी है। अनुवादक ने यहाँ पर भी 'bottle of claret' को 'क्लैरेट शराब' ही लिख दिया है। इसकी विशेषता भी नहीं बतायी है। एक बार फिर से विशेष पात्र से जुड़ी विशेष शराब का नाम लेखक ने दिया है जिसे अनुवादक ने महत्त्व नहीं दिया है।

मध्यकाल में भी इंग्लैंड में बहुत तरह की शराब मिलती थीं। हर एक स्तर और वर्ग के लोग अलग-अलग प्रकार की शराब पीना पसंद करते थे। 'क्लैरेट' फ्रांस के एक क्षेत्र बोर्डोआक्स में बनायी जाने वाली शराब है। 1,20,000 हेक्टेयर के क्षेत्र में इसका उत्पादन होता है। इस पूरे क्षेत्र में केवल शराब का ही उत्पादन किया जाता है। फ्रांस में शराब का उत्पादन करने वाला यह सबसे बड़ा क्षेत्र है। यह शराब 'Bordeaux's famous red blend' के नाम से प्रचलित है। यह फ्रेंच शब्द 'clairet' का अंग्रेजी रूपांतरण है। 'क्लैरेट' लाल रंग की शराब है, जिसे रेड वाइन के नाम से भी जाना जाता है। हालाँकि 'रेड वाइन' ब्रिटिश नाम है। इसका उल्लेख करना इसीलिए आवश्यक था क्योंकि भारतीय संस्कृति में इस नाम की शराब का प्रचलन नहीं था। न ही उस समय भारत में लोग शराब पीना पसंद किया करते थे।

अनुवादक ने लेखक की इस बात को ध्यान में नहीं खा परन्तु यदि रेनॉल्ड्स ने किसी विशेष शराब का उल्लेख किया है तो उसका वर्णन करना लक्ष्यभाषी पाठक के लिए आवश्यक हो जाता है। लोक में प्रचलित किसी भी पदार्थ का वर्णन लक्ष्य

<sup>315</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p -345

<sup>316</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड - 2, पृ -400

भाषियों के लिए अपरिहार्य है। इसका कारण भी है यह कि अनुवाद की प्रक्रिया में जो पुनर्रचना होती है उसमें संस्कृति के सारे सन्देश पीछे छूट जाते हैं।

४) **मूलपाठ** - Upon the board glowed the golden orange and the ripe grape of Portugal, dried fruits, sweet-cakes and the various accessories to a dessert in winter-time like wise appeared in crystal dishes.<sup>317</sup>

**अनूदित पाठ** - “खाना खाने के बाद खानसामा टेबल पर पुर्तगाल के संतरे और अंगूर वगैरह तरह-तरह के स्वादिष्ट फल तथा अनेक प्रकार की लज़ीज़ मिठाइयाँ रख गया।”<sup>318</sup>

**स्पष्टीकरण** - यहाँ पर अनुवादक ने ‘sweet-cakes’ को ‘लज़ीज़ मिठाइयाँ’ का नाम दे दिया है। अनुवादक ने अपने ही देश के अनुभव के अनुसार ‘मिठाइयाँ’ शब्द रख दिया है। यह आवश्यक नहीं है कि हमारी संस्कृति में मीठा जिस रूप में उपलब्ध है वही रूप विदेश में भी हो। भारत में मिठाइयाँ दूध और पनीर से बनायी जाती हैं लेकिन केक बनाने की विधि भिन्न होती है। दूसरा दोनों ही मिठाइयों को बनाने की प्रक्रिया में बहुत अधिक अंतर है। हालाँकि जिस प्रकार की खाद्य-वस्तु का प्रचलन भारत में नहीं है उसकी व्याख्या करने पर भी पाठकों को समझाना कठिन होता लेकिन दोनों संस्कृतियों और भाषाओं में जब प्रत्यक्ष अंतर होता है तो सामग्री व पदार्थों की व्याख्या कर देना उपयुक्त रहता है। संस्कृति के अनुसार समतुल्य शब्द रख कर उसे अर्थवान बनाना होता है। केवल रूपांतरण पर ही ध्यान नहीं देना होता है। मूलभाषा की आत्मा को नष्ट होने से बचाना अनुवादक का कर्तव्य है।

५) **मूलपाठ** - I should be a fool if I couldn't discover my own work," replied the man, bluntly. "But come—tip us the rhino—I want to be off and get a glass of ale— for this is cussed dry work."<sup>319</sup>

<sup>317</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, p - 403

<sup>318</sup> *लन्दन रहस्य*, खंड - 2 , पृ - 576

**अनूदित पाठ** - अगर अपने हाथ के काम को भी न पहचान सकूँ, तो मुझ जैसा बेवकूफ कौन होगा? अच्छा अब इस शराब को चढ़ा लो, क्योंकि मैं एक गिलास 'एल शराब' लाना चाहता हूँ<sup>320</sup>

**स्पष्टीकरण** - इंग्लैंड में बहुत तरह की शराब मिलती थी। हर एक स्तर और वर्ग के लोग अलग-अलग प्रकार की शराब पीना पसंद करते थे। स्वाभाविक-सी बात है कि इतने प्रकार की शराब उस वक्त भारत में नहीं मिला करती थी। इसीलिए पाठकों का इनकी विशेषताएं जानना भी आवश्यक था। रेनॉल्ड्स ने अपने उपन्यासों में भिन्न प्रकार की शराब का नाम बार-बार लिया है। लेकिन सदानन्द शुक्ल जी ने उनका वर्णन कहीं नहीं किया है। इससे लेखक के सन्देश की आत्मा को नुकसान पहुंचा है। वास्तव में 'ale' एक प्रकार की शराब होती है। इसे बनाने की प्रक्रिया बीयर जैसी होती है। इसे अधिक तापमान पर तैयार किया जाता है। मध्य काल में इसका प्रयोग पौष्टिक पेय के रूप में किया जाता था। जिसका स्वाद फलों के रस जैसा होता है। उपर्युक्त अवतरण में लेखक ने 'ale' शब्द का प्रयोग इसीलिए किया है क्योंकि सान बनाने वाला सेम्पसन से अपने बचाव के लिए भागने वाला था। जिसके लिए उसे ऊर्जा की आवश्यकता थी। वह उसे 'एल' से मिल जाती। अनुवादक ने इसे 'एल शराब' लिख कर इसके स्वाभाविक विचार को ही नष्ट कर दिया है। पात्रों की जिन इच्छाओं और आवश्यकताओं को लेखक अभिव्यक्त करते हैं, वहां अनुवादक की आत्मनिष्ठता में कमी आ जाती है। संस्कृति विशेष की जानकारी का ध्यान रखते हुए अनुवादक को लेखक और अपने व्यक्तिगत विचारों का समायोजन लक्ष्यभाषा में करना चाहिए।

६) **मूलपाठ** - One was his friend Daniel the Hangman: the other was an individual in a peasant's garb, with a malted shock of light hair, artorid complexion and a peculiarly solid look. This age seemed to be

<sup>319</sup> Mysteries of the court of London, Vol. 3, p – 50

<sup>320</sup> लंदन रहस्य, खंड 5, पृ -242

midway between thirty and forty; and from his general appearance who was evidently affirm-labour. He sit in a corner of the room, and was busily engaged in discussing a supper of bread and cheese, which he seasoned with onions and washed down with copious draughts of ale.<sup>321</sup>

**अनूदित पाठ** - उनमें एक तो उसका दोस्त डेनल दी हंग्मेन था और दूसरा कोई किसान मालूम होता था। उसके बाल रूखे और रंग सुर्ख था। उम्र कोई पैंतीस छत्तीस वर्ष की होगी। रूप-रंग देखने से वह मजदूर और अहमक मालूम होता था। एक कोने में बैठकर वह रोटी, पनीर और कच्चा पियाज खा और शराब पी रहा था।<sup>322</sup>

**स्पष्टीकरण** - भारत में जिस समय ये उपन्यास अनूदित हो रहे थे, उस समय ब्रेड का प्रचलन नहीं था। बहुत समय बाद जाकर भारत में ब्रेड का प्रयोग किया जाने लगा। उपर्युक्त अवतरण में अनुवादक ने 'bread' को रोटी लिखा है, जिसमें मूल की आत्मा के साथ तो कोई छेड़छाड़ नहीं हुई है। परन्तु लक्ष्यभाषी को समझाने के लिए यह प्रयोग ठीक है। 'cheese' को पनीर लिखा है जो सही भी है। सदानंद शुक्ल जी ने 'seasoned with onions copious draughts of ale' का अनुवाद 'कच्चा पियाज खा और शराब पी रहा था' लिखा है। इसका अनुवाद कुछ इस प्रकार किया जा सकता था 'एक कोने में बैठकर शाम के भोजन में वह रोटी और पनीर खा रहा था जिसमें ढेर सारी प्याज डाली हुई थी और वह उसे शराब से डुबो-डुबो कर खा रहा था'। क्योंकि हंग्मेन के साथ जो व्यक्ति था वह किसान के जैसा लग रहा था। वास्तव में भारत के किसान सारा दिन गर्मी में काम करते हैं और भोजन में रोटी के साथ प्याज का सेवन करते हैं इसीलिए उन्हें लू नहीं लगती है। वैसा ही भावात्मक उल्लेख कर अनुवादक ने अपने कार्य की इतिश्री कर दी है। लेकिन यहाँ पर अनुवादक को यह ध्यान रखना था कि भारतीय किसानों के और हंग्मेन के साथ बैठे किसान का

<sup>321</sup> Mysteries of the court of London, Vol. 3, p – 50

<sup>322</sup> लन्दन रहस्य, खंड 5, पृ - 246



उल्लेख सांस्कृतिक स्तर पर बिल्कुल भिन्न था। वह केवल उसकी वेशभूषा के अनुसार वर्णन था, जो लेखक की दी हुई इस परिस्थिति से भिन्न है। इसे भारतीय दृष्टिकोण से नहीं देखा जा सकता था। साथ ही शराब की विशेषता भी अनुवादक ने नहीं बतायी है। 'एल शराब' का नाम अनुवादक ने उद्धृत ही नहीं किया है।

“कुछ विशिष्ट शिष्टाचार तथा सामाजिक मूल्यों के लिए जो अभिव्यक्तियां होती हैं उनका भी ज्ञान अनुवाद के लिए आवश्यक है, यह न हो तो “कॉम्प्लीमेंट्री टोस्टस वर प्रोपोस्ड टू दि रॉयल सोसाइटी ऑफ लन्दन” के लिए “लन्दन की रॉयल सोसाइटी के प्रति सद्भावना व्यक्त करते हुए टोस्ट खाए गये” जैसा हास्यास्पद अनुवाद किया जाता है।”<sup>323</sup> इसीलिए स्रोत भाषा की अभिव्यक्ति क्या कहना चाहती है और उसे कैसे लक्ष्यभाषी तक पहुँचाना है यह आवश्यक है। यदि इसे समझे बिना ही शब्द प्रति शब्द अनुवाद कर दिया गया तो अर्थ का अनर्थ हो जायेगा। इसी प्रकार ऊपर किया गया अनुवाद भी है, उसमें केवल किसान जैसी वेशभूषा की बात की गयी है वह कोई असली किसान नहीं है। लेकिन उससे जुड़े चित्रण की भारतीय खेतों में काम करने वाले किसानों से तुलना कर दी गयी है।

७) **मूलपाठ** - "Hush—not another word!" Interrupted Mrs. Hartley, looking most kindly upon me—so that I suddenly thought she was altogether a different being from what I previously conceived her to be."Here! I have brought you a glass of wine. Drink it—drink it quick—it will keep up your spirits." She presented the tray, on which there was a plate of food and a large glass filled with Port wine.<sup>324</sup>

**अनुदित पाठ** - चुप रहो। बुढ़िया बोली चुप रहो और चुपचाप यह गिलास पी लो। मैं तुम्हारे लिए बहुत ही बुढ़िया शराब लायी हूँ इसे पीकर तुम्हारे शरीर में फुर्ती आ

<sup>323</sup> मुदिराज, डॉ. शशी, *अनुवाद: मूल्य और मूल्यांकन*, नागपुर, रुचिर प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1998, पृ- 10

<sup>324</sup> *Joseph Wilmot*, p- 188

जायेगी और कहकर उसने एक तश्तरी मेरे सामने रख दी। उसने एक गिलास पोर्टवाइन के अलावे कुछ खाने को भी दिया।<sup>325</sup>

**स्पष्टीकरण** - जोसफ विल्मोट का अनुवाद करने वाले दोनों अनुवादक चतुर्भुज औदीच्य और यशोदानंदन खत्री ने यहाँ पर भी सदानंद शुक्ल की तरह विशेष प्रकार की शराब का उल्लेख नहीं किया है। जोसफ को जब कुछ लोग कैद करके ले जाते हैं ऊपर उस घटना के अंश का अनुवाद है। जोसफ के होश में आते ही एक बुढ़िया उसे खाने-पीने का लालच देती है, उसके लिए खाने की कुछ चीज़ें और 'पोर्टवाइन' लेकर आती है। जिसके लिए अनुवादक ने केवल शराब शब्द का प्रयोग नहीं किया है। 'Port wine' लिख दिया है, 'पोर्टवाइन' का तात्पर्य अनुवादक ने स्पष्ट नहीं किया है। इसे यदि फुटनोट में दे दिया जाता तो इसका तात्पर्य अधिक स्पष्ट हो सकता था।

इसका उल्लेख इस प्रकार भी किया जा सकता था। पोर्ट वाइन पुर्तगाल में बनने वाली लाल शराब है। इसे विन्हो दो पोर्तो (vinho do porto) के नाम से जाना जाता है। पुर्तगाल के उत्तरी उपनिवेश दोउरो वेली में इसका उत्पादन होता है। मिष्ठान की जगह इसका प्रयोग किया जाता है। क्योंकि यह मीठी और स्वादिष्ट होती है। यदि इस प्रकार का उल्लेख अनुवादक करते तो इससे लेखक का यह भाव स्पष्ट हो जाता कि वह बुढ़िया जोसफ को खाने और पीने का लालच देना चाहती थी। 'पोर्ट वाइन' का प्रयोग लेखक ने इसीलिए किया क्योंकि जोसफ एक बच्चा है जो मीठी और स्वादिष्ट चीज़ों को देखकर ललचा सकता था। अनुवादकों ने 'Port wine' का वर्णन नहीं किया है लेकिन उन्हें करना चाहिए था डॉ. शशी मुदिराज की टिप्पणी से यह समझा जा सकता है कि यह आवश्यक क्यों है, "अनुवाद एक भाषा के ही भाषिक यथार्थ को दूसरे भाषा और भाषिक यथार्थ से और मैं प्रतिस्थापित करता है और

---

<sup>325</sup> जोसफ विल्मोट, पृ - 69

इसीलिए उसके सांस्कृतिक सन्दर्भ से गुजरना उसके लिए अपरिहार्य है”<sup>326</sup> इसीलिए अनुवादकों द्वारा किये गये इस अनुवाद में अस्पष्टता तो नहीं है। लेकिन अनिवार्य जानकारी देना आवश्यक था।

## रहन-सहन और जलसे

लेखक ने अपने उपन्यासों में संपन्न और गरीब दोनों वर्गों का उल्लेख किया है। दोनों ही वर्गों के रहन-सहन को भी लेखक ने दिखाया है। लन्दन के बड़े-बड़े घरों से लेकर टूली स्ट्रीट के घरों तक का उल्लेख उपन्यासों में मिलता है। जिस सड़क पर खड़े होकर कोई व्यक्ति ताज़ी हवा में सांस तक नहीं ले सकता उनके साथ ही साथ बड़ी आलीशान हवेलियों में रखे हुए महंगे साजो-सामान का वर्णन भी वे करते हैं। जिन्हें लोग अपने घर के बरामदों और खाने की जगह जिसे डाइनिंग हॉल कहते हैं में अपनी सम्पन्नता का प्रदर्शन करने के लिए सजाया करते थे। भारतीयों को उनके रहन-सहन से अवगत कराने के लिए अनुवादकों ने साधारण शब्दों में उनका अनुवाद किया है। अनुवादकों ने अपनी समझ के अनुसार उन सामानों के स्थान पर समतुल्य शब्द रखने का पूरा प्रयास किया है। उदाहरण के लिए कुछ स्थानों पर ऐसे सामान की चर्चा हुई है -

- १) **मूलपाठ** - That room was unchanged in its aspect since Fernanda last saw it. The shutters were hermetically closed inside the casements—the white blinds were down—the dark stuff curtains were drawn. The massive walnut-wood furniture was as funereal as ever in its ebon darkness: the pictures in their black frames imparted the same unvaried gloom to the chamber. There, too, was the old dame's easy-chair with its high back”<sup>327</sup>

<sup>326</sup> मुदिराज, डॉ. शशी, *अनुवाद: मूल्य और मूल्यांकन*, नागपुर, रुचिर प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1998, पृ-11

<sup>327</sup> *Mysteries of the court of London*, Vol. 1, P -410

**अनूदित पाठ** - दालान में जाकर फेर्नानाडा ने देखा कि वह पहले जैसा सजा हुआ था आज भी वैसा ही सजा हुआ है। उसी तरह खिड़कियाँ बंद हैं और उस पर सफ़ेद परदे पड़े हैं, वह कलाई मशहरी लगी हुई है और अखरोट के टेबल वगैरह रखे हुए हैं तस्वीरों में वैसे ही काले चौखटे लगे हैं; लिंडली की वह पुरानी आराम कुर्सी उसी जगह धरी हुई है।<sup>328</sup>

**स्पष्टीकरण** - यह दृश्य लिंडली के घर का है। यहाँ पर अनुवादक ने walnut-wood furniture को अखरोट के टेबल वगैरह लिख दिया है। इसकी जगह अखरोट की लकड़ी से बना सोफा आदि अधिक सटीक रहता। अखरोट की लकड़ी से बनी साजो सामान की वस्तुएं संपन्न वर्ग के परिवारों की पहचान होती हैं। इस लकड़ी से बना फर्नीचर अत्यधिक महंगा होता है जो मध्यवर्ग नहीं खरीद सकता है। इस अखरोट के फर्नीचर का प्रयोग करने के पीछे लिंडली के घर की विलासिता का प्रदर्शन करना था। यह विलासिता ऊँचे घरों के स्त्री-पुरुषों के अनैतिक संबंधों को छिपाने का प्रतीक है। इस फर्नीचर से उसके व्यवसाय का स्तर ज्ञात होता है। इस प्रतीक को ध्यान में रखते हुए अनुवादक ने केवल लकड़ी का साजो-सामान लिख कर उसका प्रभाव खत्म नहीं किया है। इसमें विलासिता का पक्ष पूर्णतः दिखाई पड़ता है।

## जलसे

- १) **मूलपाठ** - Immediately after our arrival at Charlton, around of gaieties commenced at the house. There were dinner-parties three times a week, on which occasions numerous carriages from all the adjacent country-seats rounded up to the dwelling. There were moreover generally a dozen visitors staying at the house and I used to think

<sup>328</sup> लन्दन रहस्य, खण्ड - 5, पृ - 597

that the Ravenshill family maintained a sort of regal magnificence.<sup>329</sup>

**अनूदित पाठ** - “हमारे चार्लटन पहुँचते ही वहाँ धूमधाम आरम्भ हो गयी बहुत से लोग आने लगे सप्ताह में तीन बार जवनार होने लगी। बढ़िया-बढ़िया कितनी हो गाड़ियां इधर-उधर से आने जाने लगीं। जिस दिन भोज नहीं होता उस दिन कोई दस बारह सज्जन तो अवश्य मिलने आते ही थे।”<sup>330</sup>

**स्पष्टीकरण** - जब जोसफ अपने नए मालिक रवनहिल के घर जाता है तो वहाँ भी बड़ी धूम-धाम देखता है। जब चार्लटन हॉल में लोगों को खाने पर बुलाया जाता है तो लेखक ने उसके लिए ‘dinner-parties’ शब्द का प्रयोग किया है जिसका अनुवाद ‘जवनार’ किया गया है। आमतौर पर इस शब्द का प्रयोग नहीं होता है। इसकी जगह ‘भोज’ शब्द का प्रयोग किया जा सकता था।

लन्दन में संपन्न वर्ग के लोग अपनी सम्पन्नता का प्रदर्शन करने के लिए कुछ विशेष अवसरों पर भोज रखा करते थे। इसमें महंगे-महंगे खाने के पकवान बनाये जाते थे। इस भोज के पीछे का उद्देश्य शहर के अमीर लोगों के बीच अपनी पहचान बनाना होता था। जिससे कि वे अपने वर्ग के लोगों के बीच रह सकें।

## वस्त्रादि

किसी भी संस्कृति में वस्त्र आदि की अपनी विशेषता होती है। किसी एक देश और क्षेत्र विशेष में विभिन्न अवसरों के लिए भिन्न प्रकार के वस्त्र धारण किये जाते हैं। जैसे भारत में त्यौहार और खुशी के अवसरों पर लोग रंगीन वस्त्र पहनते थे। लेकिन शोकावस्था में सफ़ेद वस्त्रों का चलन है। इसके विपरीत ब्रिटेन में काले वस्त्रों का चलन है। इस सम्बन्ध में एक उदाहरण निम्नलिखित है:

<sup>329</sup> Joseph Wilmot, p -43

<sup>329</sup> जोसफ विल्मोट, पृ - 5

- १) **मूलपाठ** - The beautiful huntress was now appalled in widow's weeds. Her magnificent hair no longer fell in a thousand ringlets over her shoulders: it was arranged in the simple style suitable to her mourning garb and was nearly altogether concealed by the snowy cap which she was compelled to wear. The sable dress set off her fine shape to a somewhat less advantage than the male attire which was wont to develop her well-formed limbs in a manner so comparatively undisguised and exciting: but still the admour of the sex who had never seen her in her amazonian garb, would not have been very willing to admit that she could possibly have improved by any change of raiment that appearance which she presented in her costume of widowhood.<sup>331</sup>

**अनूदित पाठ** - आज वह सुंदरी विधवा शोकग्रस्त वस्त्र धारण किये हुए है। आज उसके विपुल केशदाम सहस्र आकुंजन से कुंजित होकर पीठ पर नहीं पड़े हुए हैं आज वह सुन्दर केशराशि उसके धारण किये शोकवस्त्र के उपयोगी सहज भाव से सम्बद्ध होकर शोकसूचक तुषारधवल टोपी के नीचे छिपी हुई है वह निरंतर जो पुरुष परिच्छेद पहनकर घूमती-फिरती थी और जो उसे बहुत ही आज वह रमणी शोक वस्त्र धारण किये हुए है। यद्यपि यह वस्त्र उतना नहीं फबता तथापि जो रमणी रूप के ग्राही और जिन्होंने उसे पुरुष परिच्छेद में कभी नहीं देखा, वे यह भी स्वीकार न करेंगे की इस कृष्णवस्त्र की अपेक्षा वह किसी वेश में अधिक सुन्दर दिखाई देगी।<sup>332</sup>

**स्पष्टीकरण** - अमेज़न (लिटीशिया) अपने पति की मृत्यु के बाद उनकी मृत्यु का शोक मना रही है। जो स्त्री हमेशा पुरुष प्रधान वस्त्रों में रहती, जिसे संसार की कोई परवाह नहीं थी वह अपने पति की मृत्यु के बाद उनके शोक में अत्यधिक समर्पित हो जाती

<sup>331</sup> *Mysteries of the court of London*, P - 264

<sup>332</sup> *लन्दन रहस्य*, पृ- 19

है। अगले एक वर्ष तक वह इसी प्रकार के काले वस्त्रों को पहनने का निश्चय करती है। अंग्रेजी सभ्यता में पति की मृत्यु के बाद स्त्रियाँ शोक जाहिर करने के लिए काले वस्त्र धारण करती हैं। अनुवादक ने जैसा उल्लेख अमेज़न का किया है, वह अमेज़न के पति की मृत्यु का और उसका शोकग्रस्त होने के प्रसंग का प्रभावी चित्र बना रहा है। अनूदित किया हुआ यह पाठ मूल जैसा ही लग रहा है अनुवादक ने इस अवतरण में तत्सम शब्दों का अधिक प्रयोग किया है। जिससे कि वे उसके दुःख को अधिक गहराई से अभिव्यक्त कर पा रहे हैं।

अनुवादकों ने अनुवाद करते हुए ऐसा नहीं किया है कि लेखक की हर सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को हिंदी के पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास किया हो। पाठक तक सरलता और सुगमता से ही सन्देश संचरित करना अनुवादकों का कर्तव्य था। कारण अनुवाद ही दोनों संस्कृतियों के बीच सेतु का काम करता है, “मानव संस्कृति अपने मूलाधार में एक होते हुए भी अपनी क्षेत्रीय भिन्नता में एकदूसरे से इतनी दूर चली गयी है कि एक-एक सांस्कृतिक मूल्य दूसरे के लिए नितांत अबोध हो जाते हैं अनुवाद इन दूरियों और दुर्बोधताओं को मिटाने का संकल्प और इसी रूप में अनुवाद सेतु बनता है।”<sup>333</sup>

अनुवाद करते समय अनुवादक के सामने जो रचना होती है उस पर वह अपने विचार व्यक्त नहीं कर सकता है। किसी लेखक की रचना में अपने विचार संलग्न करने की अनुमति उसे होती है लेकिन उसमें कोई बदलाव नहीं करने की नहीं। जहां एक ओर लेखक के पास जहां चारों ओर बिखरा हुआ जीवन और संवेदनाएं होती हैं वहीं अनुवादक के सामने लेखक के संसार से बाहर निकलने की छूट नहीं रहती है। पूर्व योजना में ही अपनी कल्पना को उसे रूप देना होता है, वह उन्हें वैसी अवस्थाओं में पुनर्निर्मित करता है जो जीवन में अप्रत्याशित होती हैं। अनुवादक की अभिव्यक्ति

<sup>333</sup> मुदिराज, डॉ. शशी, *अनुवाद: मूल्य और मूल्यांकन*, नागपुर, रुचिर प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1998, पृ- 2

कुछ नियमों के अनुसार ही चल पाती है, उसे इतनी स्वतंत्रता नहीं होती है कि वह घटनाओं और अवस्थाओं की पुनर्निर्मिति में स्वतंत्रता ले सके। उसे रचना का निर्माण कुछ ऐसे करना होता है जिसमें कुछ असंगतियाँ और खुरदरापन न आने पाए। एक विशेष अर्थ से युक्त अर्थात् उसे अर्थवान बनाना ही उसका काम होता है। एक परिनिवेष्टित ढांचा अनुवादक के सामने मौजूद रहता है, उसे उसमें ही अपना नियोजन करना होता है।

वास्तव में किसी भी रचना का अनुवाद करना आसान नहीं है। अनुवाद करते हुए अनुवादक लक्ष्य भाषा के वैज्ञानिक की तरह काम करता है। इस काम में कदम-कदम पर उसे एक कठिनाई का सामना करना पड़ता है। कठिनाई यह कि उसे बार-बार सुनिश्चित करना पड़ता है कि वह लेखक के सन्देश का अनुसरण कर रहा है या नहीं। मूल लेखक से यहाँ उसकी स्थिति बिल्कुल विपरीत होती है।

रेनॉल्ड्स ने ब्रिटिश संस्कृति का अतिव्याप्ति से वर्णन नहीं किया है। न ही अनुवादकों ने उसे लक्ष्यभाषा में बढ़ा चढ़ाकर दिखाया है। सांस्कृतिक दृष्टी से जीवन के जो पहलू महत्त्वपूर्ण थे उन्हें लेखक ने दिखाया है। लेखक के उसी अनुभव को सार्थकता के साथ अनुवादकों ने हिंदी में अनूदित किया है। यदि अनुवादक लेखक के लिखे हुए किसी विषय से परिचित नहीं भी थे तो भी उन्होंने उसे ग्रहण कर अपनी संस्कृति के अनुसार अनूदित करने का प्रयास किया है। धार्मिक और नैतिक आदि सभी का अर्थपूर्ण विश्लेषण ऊपर मिलता है। हालाँकि भारतीय संस्कृति और ब्रिटिश संस्कृति में बहुत अधिक अंतर है या ब्रिटिश संस्कृति में बहुतसी ऐसी चीज़ें हैं जो भारतीय संस्कृति को स्वीकार्य नहीं थीं। ऐसे ही कुछ स्वीकार न करने योग्य प्रसंगों के आने पर भी किसी संकोच के बिना अनुवादकों ने उसका वर्णन किया है। मूल को समग्रता से आत्मसात किये बिना लेखक की चेतना तक पहुँचना संभव नहीं होता है। विभिन्न युगों में भिन्न प्रकार का साहित्य लिखा जाता है। इसी साहित्य को किसी



अन्य युग के पाठकों तक पहुँचाना जटिलता अवश्य लेकर आता है। लेकिन रेनॉल्ड्स के साहित्य के उपर्युक्त अनुवादकों को इसका प्रतिफल सफलता में मिला है।



## पांचवा अध्याय

### हिंदी में रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अभिग्रहण

- अभिग्रहण सिद्धांत का अर्थ
- रेनॉल्ड्स के विषय में लिखने वाले आलोचकों के विचार
- रेनॉल्ड्स के उपन्यासों से प्रभावित होने वाले हिन्दी के उपन्यासकार
- रेनॉल्ड्स के उपन्यासों से प्रभावित होने वाले उर्दू के उपन्यासकार



## पांचवा अध्याय

### हिंदी में रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अभिग्रहण

सृजन प्रक्रिया एक प्रकार का कौतूहल है जो यह बताता है कि किसी व्यक्ति विशेष पर किसी घटना का कितना अधिक प्रभाव पड़ रहा है और वह उस प्रभाव को किस दिशा की ओर ले जाना चाहता है। इसी प्रकार जब एक रचनाकार या कलाकार पर उसके युग विशेष का प्रभाव पड़ता है तो वह उसके सृजन में परिलक्षित होता है। इसी प्रभाव का दर्पण उसकी रचना बनती है। इसी रचना का सम्बन्ध उसके अन्तरंग से होता है। उसके मन में चलने वाली चेतन और अचेतन प्रक्रिया रहस्यों में ही दबी रहती है। इन रहस्यों को उद्घाटित करने के लिए वह रचना का सृजन करता है लेकिन इस उद्घाटन के लिए यह ध्यान रखना चाहिए कि किसी भी प्रकार की रचना का सृजन चामत्कारिक नहीं होता है। जब तक लेखक किसी विशेष दिशा में चिन्तन नहीं करता है तब तक वह किसी विचार को आकार देने में सक्षम नहीं हो पाता है। उसके आत्मस्फूर्त विचार रचना को आदि से अंत तक की श्रृंखला में बांध देते हैं। यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि विचार उत्पन्न होने की जो श्रृंखला है वह केवल आस पास घटित हो रही परिस्थितियों के कारण ही नहीं हैं। लेखक के पठन की भी इसमें भूमिका रहती है। इसमें उसकी पढ़ी हुई रचनाएँ उतनी ही भागीदार बनती हैं जितने कि लेखक के विचार। लेखक जो देखता है वह तो उसे प्रभावित करता ही है, लेकिन जिसे वह पढ़ता है उसकी आकृतियाँ भी उसके मन में उभरती हैं। वही उसे एक निश्चित मार्ग में बाँध देती हैं। इन्हीं का प्रभाव एक सामान्य पाठक को लेखक बनने की प्रक्रिया में योगदान देता है।

इस रहस्योद्घाटन की प्रक्रिया में साहित्य को समझने के लिए केवल एक पारम्परिक परिपाटी में ही चलना आवश्यक नहीं है। संसार को देखने का तरीका भी एक व्यक्ति के व्यक्तित्व का और एक साहित्यकार के साहित्य का निर्माण करता है। कोई भी व्यक्ति जब अपने विचारों को शब्दों में बद्ध करता है तो उसके पीछे उसकी अपनी ही सोच होती है। समाज और घटनाओं को देखने का उसका अपना नज़रिया होता है। इसी प्रकार कोई भी आलोचक किसी साहित्यिक लहर, समय, सामाजिक समूह, क्षेत्र और धर्म को जिस नजरिये से देखता है, वह सब कुछ अभिग्रहण में सम्मिलित होता है। वह इस बात को भी ध्यान में रखता है कि अलोच्यकालीन समय के लोगों को किस प्रकार का साहित्य सबसे अधिक प्रभावित करता है। अब इन ऊपर लिखे हुए शब्दों को गहरायी से समझने के लिए अभिग्रहण सिद्धांत की उत्पत्ति और विद्वानों के विचारों को समझना आवश्यक होगा।

बीसवीं सदी के मध्य में जब साहित्य की परिकल्पना को समझने के लिए भिन्न दृष्टिकोणों का सहारा लिया जा रहा था। उस समय अभिग्रहण सिद्धांत साहित्य को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण माना गया। इस सिद्धांत का पहला सम्बन्ध रचना और उसके ग्रहण से है। किसी रचना की उत्पत्ति और उसके उपभोग से है। अभिग्रहण सिद्धांत में कृति का अन्वेषण प्रधान रहता है। उसमें यह देखा जाता है कि रचना कितनी सफल हुई है। रचना की उत्पत्ति और उसका उपभोग उसके सीमित अन्वेषण को गहरायी देता है। इसे समझने के लिए उपलब्ध तथ्यों को मध्य में रखकर जैसे रचना के कितने सम्पादक रहे, उस रचना का अनुवाद कितनी भाषाओं में कितने पुस्तकालयों में उपलब्ध है, आदि को ध्यान में रखा जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य तथ्य भी होते हैं जो लेखक की रचना का संचरण या उसका प्रसार कितना अधिक हुआ, इसकी जानकारी उपलब्ध कराते हैं। इन सभी तत्वों का साहित्य के क्षेत्र

में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। ऐसे समय में ही साहित्यिक अध्ययन की राजनैतिक प्रासंगिकता भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

इस अध्याय में अभिग्रहण सिद्धांत के माध्यम से साहित्य को समझने का मूलभूत तरीका उसका विवेचन और विश्लेषण करना है। रोबर्ट जौस के अनुसार साहित्य को समझने की विवेकपूर्ण और प्राकृतिक प्रक्रिया यही है। हाल ही के वर्षों में कुछ विद्वानों ने इस प्रकार से साहित्य को समझने का एक अच्छा तरीका अपनाया है। जो लेखक के वास्तविक कार्य को उसकी कला को मान्यता देता है। पाठ के अन्तर्निहित अर्थ, जिसे अंग्रेज़ी में 'Immanentism' कहते हैं, को समझने के लिए यह एक व्यावहारिक तरीका है। यह साहित्य की परिकल्पना को समझने का आधार है।

अभिग्रहण सिद्धान्त के दायरे में लेखक-पाठ-पाठक आते हैं। जिसमें लेखक, पाठक और पाठ का आंतरिक सम्बन्ध होता है। अभिग्रहण सिद्धांत इस त्रिकोणीय स्तर तक ही सीमित रहता है। इस सिद्धांत को इन तीनों के ऊपर एक छत के समान माना जाता है। अर्थात् इस सिद्धांत के अंतर्गत ये तीनों एक साथ रहते हैं। किसी लेखक के साहित्य को पढ़कर पाठकों ने क्या प्रतिक्रिया दी उसकी समालोचना करना ही अभिग्रहण सिद्धांत है। लेखक के पाठ के प्रति पाठक कितने सचेत हैं यह भी इस सिद्धांत का हिस्सा है। अभिग्रहण सिद्धांत एक बहुत ही सचेत और सामूहिक उपक्रम है। Reader-response-criticism का ही दूसरा नाम अभिग्रहण सिद्धांत है। यह अन्य आलोचनात्मक तरीकों से बिल्कुल भिन्न है। हालाँकि यह कोई विशिष्ट पद्धति, विचार या तरीके से भी सम्बंधित नहीं है। किसी भी कक्षा में कोई विषय शुरू किये जाने के लिए यह सबसे महत्त्वपूर्ण बिंदु है आवश्यक नहीं है कि एक विद्वान या शिक्षक के नज़रिए से ही विषय की आलोचना की जाए। एक विद्यार्थी के नज़रिये से भी इसे एक आलोचनात्मक रूप दिया जा सकता है। इसके लिए सबसे पहले इसके अर्थ को समझना आवश्यक है।

## अभिग्रहण सिद्धांत का अर्थ

अभिग्रहण शब्द 'अभिग्रहण सिद्धांत' से लिया गया है। अभिग्रहण पाठकों की प्रतिक्रिया का एक प्रारूप है। इस प्रारूप में यह ध्यान रखा जाता है कि प्रत्येक पाठक की पाठ को लेकर क्या प्रतिक्रियाएं रही हैं? उन प्रतिक्रियाओं की आलोचनात्मक रूप से व्याख्या करना ही 'अभिग्रहण सिद्धांत' है। पाठकों को संप्रेषित किये जाने वाले (होने वाले) साहित्य के विश्लेषण के माध्यम से अभिग्रहण सिद्धांत को समझा जा सकता है। "1960 में हंस रोबर्ट जौस इस सिद्धांत के जन्मदाता माने गये। 1970 और 1980 के बीच इस सिद्धांत से सम्बंधित सबसे अधिक प्रभावी कार्य में जर्मनी और संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ था। 'अभिग्रहण सिद्धांत' के उन्नायक और सांस्कृतिक विचारक स्टुअर्ट हॉल थे। इन दोनों विद्वानों ने संचार और पत्राचार के अध्ययन के विकास में साहित्य और इतिहास संबंधी माध्यम से इस सिद्धांत का विकास करने में सहायता की। इस सिद्धांत को समझने की प्रक्रिया को उन्होंने एन्कोडिंग और डीकोडिंग कहा है।"<sup>334</sup> यह एन्कोडिंग और डीकोडिंग अनुवाद में भी होता है इस प्रक्रिया में एक भाषा में निहित सन्देश को अन्य भाषा में पहुंचाया जाता है। दूसरे शब्दों में समझा जाये तो जो शब्द साहित्य में लिखे हैं, उसे एन्कोडिंग और पाठक तक जिस रूप में पहुँच रहे हैं, उसे डीकोडिंग की प्रक्रिया कहा जाता है। यह एक प्रकार का विश्लेषण है जिसमें पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों की प्रतिक्रिया को समझा जाता है। "अमबर्टो ईको ने इसे एबेरेंट डीकोडिंग (abberant decoding) कहा है। इसका वर्णन करते हुए वे कहते हैं कि जब किसी पाठक की किसी रचना को समझने की दिशा लेखक के लिखे हुए सन्देश से भिन्न हो जाती है तो उसे abberant decoding कहा जाता है। इसका प्रयोग संचार, मीडिया, संकेत विज्ञान और पत्रकारिता में किया जाता है। इसके

<sup>334</sup> Holub, Robert C., *Reception Theory: A Critical Introduction*, London, Methuen, 1984, p -57



माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाता है कि जब किसी संदेश को दर्शकों या पाठकों तक पहुँचाया जाता है, तो वह किस प्रकार भेजे हुए सन्देश से भिन्न हो जाता है। अमबर्टो ईको ने इस संकल्पना की प्रस्तावना एक लेख में की थी जो 1965 में इतालवी और 1972 में अंग्रेजी में प्रकशित हुआ था<sup>335</sup> इस सिद्धांत के अंतर्गत यह परखा गया कि पुस्तक, चलचित्र या किसी भी रचनात्मक कार्य को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ग्रहण करने का प्रत्येक पाठक या दर्शक का अपना तरीका होता है। इसके अतिरिक्त किसी पाठक या दर्शक का सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण और साथ ही उसके जीवन के अनुभव उस पाठ, चित्र, चलचित्र या नाटक को ग्रहण करने में उत्तरदायी होते हैं।

अमबर्टो ईको पाठक और लेखक के बीच के इस अंतर को समझाते हैं, ईको का मानना है कि विचारों का विकास गंभीर रूप से पाठ और semiotics पर निर्भर करता है। उन्होंने यह भी स्वीकार किया है कि साहित्य अर्थों की शृंखला होने से अधिक अर्थों का मैदान है। साहित्य में निहित अर्थों को समझने के लिए आंतरिक रूप से गत्यात्मक और मनोविश्लेषणात्मक रूप से बंधा होना चाहिए। साहित्य वह है जो बिना किसी वाणी के ही अपने अर्थ को व्यक्त करने के लिए पाठक और उसके जीवन के बीच सक्रिय बना रहता है। हालांकि वह क्या परिभाषित कर रहा है, यह उस समय पाठक के लिए महत्वपूर्ण नहीं होता है। ईको इसका परिणाम “भाषा और semiotics के माध्यम से सन्देश पहुँचाना समझते हैं। किसी मनोविश्लेषणात्मक या ऐतिहासिक तरीके से नहीं।”<sup>336</sup>

वाल्टर रीसे ने कहा है कि “पाठक और उसके अभिग्रहण को समझने के लिए 1960 में साहित्य के पठन को लेकर उत्पन्न हुई सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियाँ जिम्मेदार थीं। इन्हीं परिस्थितियों ने साहित्य और उसके अभिग्रहण को

<sup>335</sup> [https://en.wikipedia.org/wiki/Aberrant\\_decoding](https://en.wikipedia.org/wiki/Aberrant_decoding)

<sup>336</sup> Do

प्रभावित किया। वाल्टर रीसे ने 1960 में या बीसवीं सदी के साठवें दशक में संघीय जर्मनी के विद्यार्थियों के बौद्धिक वातावरण का विवरण दिया था। उनका कहना है कि शिक्षा के क्षेत्र में लगातार होने वाले बदलाव के बावजूद भी कुछ पुराने चिन्ह उन पर रह जाते हैं। प्राथमिक रूप से ये बदलाव शुरुआत में सामाजिक स्तर पर होते हैं।<sup>337</sup> यही बदलाव ही साहित्य के लिए पाठकों का निर्माण करते हैं। इसी समय शोधकर्ताओं और अध्यापकों का नवीन समूह भी तैयार होता है।

साधारण शब्दों में अभिग्रहण का अर्थ है कि जब कोई पाठक किसी भी रचना को पढ़ता है तो वह उस रचना से कुछ ग्रहण करता है, उसे ग्रहण करने की प्रक्रिया को अभिग्रहण कहते हैं। 'अभिग्रहण सिद्धांत' एक ऐसा सिद्धांत है जो कुछ लोगों के लिए नया है। उन्होंने इस सिद्धांत के बारे में कभी सुना नहीं था। जबकि साहित्य का कोई भी हिस्सा इस सिद्धांत से अनछुआ नहीं है। हालांकि यह सिद्धांत जितना साहित्य के करीब है उतना ही समाजशास्त्र और इतिहास के भी है। एक बहुत बड़े असमंजस की बात यह है कि अभिग्रहण 'प्रभाव' या 'प्रतिक्रिया' से भिन्न है। इसके बावजूद भी अभिग्रहण को समझने के लिए केवल पाठक के माध्यम से ही समझा जा सकता है। जे सी होलब का भी मानना है कि अभिग्रहण 'प्रभाव' या 'प्रतिक्रिया' किसी भी प्रकार से पाठ के प्रति कोई संतोषजनक दृष्टिकोण नहीं रखते हैं। अभिग्रहण में पाठक पाठ के निर्माण में स्वयं भी सह-लेखक और सहभागी बन जाता है। इस प्रतिक्रिया में अन्य कई कलाएं भी प्रक्रियारत होती हैं। जिसके मध्य में केवल साधारण विषय ही नहीं होता है बल्कि एक ऐसा विषय भी होता है जो लेखक और पाठक के बीच उस विषय को संचारित करता है। साहित्य का उत्पादन और अभिग्रहण एक द्वंदात्मक प्रतिक्रिया है। हालांकि अभिग्रहण का परिणाम पूर्वानुमानित नहीं था। परन्तु इसे परस्पर रूप से सीमित भी नहीं किया जा सकता था।

<sup>337</sup> <http://www.dacoromanialitteraria.inst-puscariu.ro/pdf/02/10PAPADIMA.pdf>, p -138

वूल्फ गैंग आइसेर, अभिग्रहण के विषय में जौस के ही समान सोचते हैं। इन्होंने 'इंडीटरमीनेंसी एंड दी रीडर रेस्पॉस इन प्रोज़ फिक्शन'<sup>338</sup> के सन्दर्भ में एक भाषण दिया था। जिसमें जौस और इनके विचारों में समानता देखी गयी। इनके विचार 'अभिग्रहण सिद्धांत' को समझने में सहायक है। इन दोनों के ही अनुसार यह सिद्धांत लेखक और उसकी रचना से परे पाठ और पाठक के बीच सम्बन्ध स्थापित करता है। हालांकि इस केंद्र तक पहुंचने के लिए इन दोनों ने ही भिन्न मार्ग अपनाए हैं। जौस इस सिद्धांत तक साहित्य के इतिहास को आधार बनाकर पहुंचे थे जिसके बहुत लम्बे समय के बाद ये ऐतिहासिक और सामाजिक दृष्टि से अभिग्रहण को देखने लगे। इसके दूसरी ओर आइसेर ने प्राथमिक स्तर पर केवल रचना को रखा और उसका पाठकों से कैसा सम्बन्ध है यह देखा। आइसेर ने ऐतिहासिक और सामाजिक तथ्यों को भी संलग्न किया। यदि जौस ने वैश्विक आधार पर इसका अध्ययन किया है तो आइसेर सामूहिक रूप से इसका अध्ययन करते दिखते हैं।

उपर्युक्त दो विद्वानों के अलावा इस सिद्धांत के समर्थन में अन्य विद्वान भी थे जिनका मानना था कि लेखक और उसकी रचना से होने वाले अभिग्रहण को एक सिद्धांत के रूप में मान्यता नहीं दी गयी थी। 'अभिग्रहण सिद्धांत' का अध्ययन और समर्थन करने वाले कुछ विद्वानों के नाम इस प्रकार हैं रोबर्ट जौस, डब्ल्यू आइसेर, रेनर वार्निंग, कार्लहेज़ स्तिएरले, हाराल्ड तथा विनरिच। इसके विपरीत देखा जाए तो इसका समर्थन न करने वाले विद्वानों का मानना है कि भिन्न स्त्री-पुरुषों को भिन्न स्थितियों में रखकर उनकी बहुमुखी और अनिश्चित उम्मीदों को पूरा नहीं किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त एक सवाल और उठता है कि किसी भी वर्ग के पाठक को स्त्री या पुरुष को किसी भी प्रकार के पाठ या साहित्यिक कृति से सम्बंधित होने के लिए दबाव नहीं डाला जा सकता है।

<sup>338</sup> Holub, Robert C., *Reception Theory: A Critical Introduction*, London, Methuen, 1984 p-82

साहित्यिक संचार को जीवित रखने वाले ऐसे बहुत से उपविभागों की उपेक्षा की गयी जो उसके लिए आवश्यक थे। उदाहरण के लिए इसे ऐसे भी समझा जा सकता है कि मध्यस्थों के भिन्न-भिन्न वर्गों में जिस प्रकार किसी साहित्यिक कृति को ग्रहण किया गया उसी प्रकार उस साहित्य के उत्पादन, प्रचार-प्रसार और अभिग्रहण को भी समझा जा सकता है। इस प्रकार अभिग्रहण को भिन्न वर्गों में विभाजित कर बहुत अधिक व्यापक रूप से समझ सकते हैं। दूसरे शब्दों में अभिग्रहण का व्यापक रूप से अपने उद्देश्यों की विविधता के साथ अनेक आलोचनात्मक रूपों में वर्णन किया जा सकता है।

### **अभिग्रहण सिद्धांत और इतिहास**

हंस रोबर्ट जौस ने साहित्य के अध्ययन की पद्धतियों की रूपरेखा पर चर्चा करते हुए अभिग्रहण सिद्धांत नामक एक निर्विवाद क्रांति की शुरुआत की।

अभिग्रहण सिद्धांत की उत्पत्ति से पहले साहित्य को समझने के लिए केवल समाजशास्त्रीय, दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक आधार अपनाए जाते थे। लेकिन हंस रोबर्ट जौस ने अभिग्रहण सिद्धांत का प्रतिपादन करके साहित्य और साहित्य के इतिहास के बीच सम्बन्ध स्थापित किया है। अपने सैद्धांतिक काम के शुरु में उन्होंने साहित्य के इतिहास की अप्रतिष्ठित स्थिति में सुधार करने के प्रयास किये या दूसरे शब्दों में कहा जाए तो उस पर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। 1960 में उन्होंने जर्मनी में साहित्य की विद्वता की ऐतिहासिक प्रकृति को विद्वानों के द्वारा नजरअंदाज करते हुए देखा। साथ ही उन्होंने यह भी देखा कि आलोचक, विद्वान या शोधार्थी मनोविश्लेषणात्मक, अर्थ-विज्ञान और सौन्दर्यपरकता आदि से सम्बंधित अनेक पद्धतियों पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। जौस का उद्देश्य था कि साहित्यिक अध्ययन के माध्यम से साहित्य के इतिहास की आलोचना को पुनःस्थापित किया जाए। इसी सन्दर्भ के अंतर्गत उन्होंने अभिग्रहण सिद्धांत (Reception Theory) की

घोषणा की। “फ्रेडरिक शिलर नामक एक इतिहासकार ने जेना (Jena) में 1789 में एक भाषण दिया था। जिसका शीर्षक था ‘What is and for what purpose does one study history’। शिलर के भाषण का दूसरा अभिप्राय इतिहास और वर्तमान के बीच एक सम्बन्ध स्थापित करना था। जिसमें प्राचीन कलाकृति और तत्कालीन प्रसंगों के बीच सम्बन्ध स्थापित हो सके। उनके इस भाषण में कुछ बदलाव कर जर्मनी के दक्षिणी क्षेत्र में स्थित कॉन्स्टेंस (German-Konstanz) नामक एक विश्वविद्यालय में अप्रैल 1967 में जौस ने औपचारिक लोकार्पण करते हुए ‘What is and for what purpose does one study literary history’ नामक शीर्षक का प्रयोग किया। इस शीर्षक में उन्होंने अपनी ओर से केवल ‘literary’ शब्द जोड़ दिया था।”<sup>339</sup> इस बदलाव के आधार पर उन्होंने अपने आगामी शोधकर्ताओं के लिए दो मार्ग खोल दिए। पहला यह कि इस शीर्षक ने मृतप्राय हो चुके साहित्य को फिर से पुनर्जीवित करने की ओर मार्गदर्शन किया। यहाँ मृतप्राय से तात्पर्य उन लोगों के साहित्य से है जिन्हें वर्तमान में साहित्य में कोई स्थान नहीं दिया गया या लोग उन्हें भूल गए हैं। उनका मानना था कि तत्कालीन साहित्य के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करते हुए पौराणिक साहित्य सीमांकित हो गया है। इस प्रकार तत्कालीन साहित्य के विवेचन में ऐतिहासिक साहित्य या जो साहित्य इतिहास में लिखा जा चुका है, का अंत हो रहा है। फ्रेडरिक शिलर ने जेना में यह भाषण फ्रांस की क्रांति से पहले दिया था। इस प्रकार अनुमान के आधार पर यही कहा जा सकता है कि फ्रेडरिक का भी अर्थ यही रहा होगा कि फ्रांस की क्रांति का अभिप्राय पुराने साहित्य और इतिहास का मर जाना था। क्योंकि यह क्रांति एक नये इतिहास और नये साहित्य की रचना करने वाली थी या को जन्म देने वाली थी।

---

<sup>339</sup> Holub, Robert C., *Reception Theory: A Critical Introduction*, London, Methuen, 1984, p -53-54

दूसरा, जौस का मानना है कि “साहित्यिक विद्वानों और उनके अनुदेशन के बीच इतिहास में लिखे हुए साहित्य का सम्बन्ध स्थापित होना आवश्यक है। नहीं तो एक दिन वह उनके शिक्षणशास्त्र की परिधि से बाहर चला जाएगा।”<sup>340</sup> इससे उनका उद्देश्य पुरानी पड़ चुकी साहित्य की परम्परा को फिर से प्रासंगिक बनाना था। उसे पुनर्जीवित करना उनका उद्देश्य नहीं था। उसे केंद्र में लाकर उसे पुनःस्थापित करना था। इसके लिए केवल पाठकों की प्रतिक्रियाएं ही नहीं उनके और उस आलोच्य साहित्य के बीच सम्बन्ध स्थापित होना आवश्यक था।

पहले ऐतिहासिक साहित्य की आलोचना केवल कुछ ही आधारों पर की जाती थी। उसका सामान्य अभिप्राय क्या है, उसे किस शैली में लिखा गया है आदि कुछ प्रकार के वर्गों में बांटकर उसके उपयोग को एक कालक्रम में बाँध दिया जाता था। अन्य प्रकार से ऐतिहासिक साहित्य को समझने का अर्थ यही था कि जो प्रचलित लेखक उपस्थित रहे हैं उनके जीवन और साहित्य के बारे में केवल कुछ निबंध लिख दिए जाते थे। जौस का मानना है कि इस प्रकार के साहित्यिक विश्लेषण से साहित्य का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है। इसीलिए जौस ने अभिग्रहण सिद्धांत के आधार पर ही साहित्य का अध्ययन करने पर जोर दिया है।

अभिग्रहण सिद्धांत के ऐतिहासिक पक्ष को समझा जाए तो 1960 में यह जर्मनी की साहित्यिक, सामाजिक और बौद्धिक प्रतिक्रिया का परिणाम है। ‘अभिग्रहण सिद्धांत’ को ‘कॉन्स्टेंस स्कूल’ में एक विशिष्ट प्रकार से समझा जाता है। जिसमें यह कहा जाता है कि यह साहित्यिक अध्ययन का पुनःप्रचलन करता है। पूर्वी-जर्मन शोधकर्ताओं ने लेखक संबंधी प्रवृत्ति की ओर इशारा करते हुए उसे मार्क्सवाद से जोड़ा है। जो उत्पादन और उपभोग की प्रवृत्ति पर आधारित है। जर्मनी में अभिग्रहण का प्रभाव सबसे अधिक प्रभावशाली दिखाई देता है। जर्मनी में साहित्य को समझने के

---

<sup>340</sup> Do, p-52

लिए अपनाया गया यह तरीका अपने आप में दक्ष और भिन्न था। 1967 और 1969 में हंस रोबर्ट जौस ने इस सिद्धांत को निश्चित रूप से अभिव्यक्त किया था।

हर युग में भिन्न साहित्य होता है और उसे पढ़ने वाले भिन्न पाठक भी होते हैं। प्रत्येक युग में पाठकों की साहित्य को पढ़ने की रुचि में बदलाव आते रहते हैं। साहित्य को लिखने के लिए लेखक उससे प्रेम करता है। फिर पाठक जब उसे पढ़ता है तो वह भी लेखक के प्रेम में मग्न हो जाता है। साहित्य की इस गहनता से कोई भी प्रेम करे बिना कैसे रह सकता है। इसी प्रेम से आलोचना का भी विकास होता है। आलोचना जो अभिग्रहण का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। अभिग्रहण का तात्पर्य किसी भी लेखक की रचना या रचनाओं को लेकर उनकी आलोचना का अध्ययन करना है। भारत में रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को लेकर पाठकों की क्या प्रतिक्रिया रही उस पर आलोचकों ने क्या लिखा है, उसका अध्ययन इस अध्याय में किया जायेगा। आलोच्य लेखक के उपन्यासों को किस भाषा के पाठक अधिक पढ़ना चाहते थे? भारत के साथ ही अन्य देशों की कितनी भाषाओं में इनके अनुवाद हुए? यदि प्राप्त हो पाए तो कितनी संख्या या अनुपात में उनकी अनूदित प्रतियां बिकी थीं? साथ ही यदि सूची प्राप्त हो जाए तो किस देश के कितने पुस्तकालयों में इनके उपन्यासों की प्रतियां उपलब्ध थीं? अर्थात् जितने अधिक इनके उपन्यास पढ़े गए, बिके और पुस्तकालयों से जारी हुए आदि के आधार पर इनके उपन्यासों के अभिग्रहण का निर्धारण किया जा सकता है। उनके उपन्यासों पर विचारकों और आलोचकों की क्या प्रतिक्रिया रही इसका भी अध्ययन आगे किया जाएगा। अनूदित दृष्टि से इस शोध कार्य की समीक्षा करना ही एकमात्र उद्देश्य नहीं है। उनके उपन्यासों को पढ़कर पाठकों ने जो प्रतिक्रिया दी और उन प्रतिक्रियाओं के विषय में अनेक आलोचकों ने क्या कहा यह इसका विषय है। इनके उपन्यास समाज के सच को लेकर लोगों के बीच चेतना फैलाने में सफल

रहे। उसी शैली को हिंदी के कुछ लेखकों ने भी ग्रहण किया। इस प्रक्रिया में सबसे पहले रेनॉल्ड्स के द्वारा रचित मूल और अनूदित उपन्यासों की सूची इस प्रकार है-

- द यूथफुल इम्पोस्टर (1835)
- पिकविक अब्रॉड; और द टूर इन फ्रांस (1837-8)
- अल्फ्रेड; और दी एडवेंचर्स ऑफ़ ऐ फ्रेंच जेंटलमैन (1838)
- ग्रेस डार्लिंग; और द हीरोइन ऑफ़ दी फ़र्न आइलैंड (1839)
- रोबर्ट मकैयर इन इंग्लैंड (वैकल्पिक शीर्षक: डी फ्रेंच बेंडिट इन लंडन) (1839)
- दी मॉडर्न लिटरेचर ऑफ़ फ्रांस (1839) गैर-काल्पनिक
- दी स्टीम पैकेट: ऐ टेल ऑफ़ दी रिवर एंड दी ओशीयन (1840)
- मास्टर टिमोथीज बुककेस (1842)
- दी मिस्ट्रीज ऑफ़ लंडन (1844-48) - साप्ताहिक श्रृंखला
- फाउस्ट: ऐ रोमैंसे ऑफ़ दी सीक्रेट ट्रिब्यूनल (1847)
- वैगनर, दी वेह्यर वुल्फ (1846-7)
- दी डेज ऑफ़ होगर्थ; और दी मिस्ट्रीज ऑफ़ लंडन (1847-48)
- दी कोरल आइलैंड, और दी हैरीडीटेरी कर्स (इसकी चोरी कर बाद में दी मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ नैप्लस के शीर्षक से बेचा गया था) (1848)
- दी मिस्ट्रीज ऑफ़ लंडन (1848-56) - साप्ताहिक श्रृंखला
- दी पिकसी; और दी अनबैपटाईज्ड चाइल्ड (1848)
- दी ब्रॉज़ स्टेच्यु; और दी वर्जिस किस (1849-50)
- दी सीमस्ट्रैस; ऐ डोमेस्टिक टेल (वैकल्पिक शीर्षक: दी वाइट स्लेवज ऑफ़ इंग्लैंड) (1851)
- पोप जोआना, दी फीमेल पॉटिफ (1851)
- केनेथ, ऐ टेल ऑफ़ हाइलैंड्स (1851-2)



- दी नेक्रोमेंसर (1851-2)
- मैरी प्राइस; और दी मेमोइर्स ऑफ़ ऐ सर्वेट गर्ल (1852)
- दी मैसाक्रे ऑफ़ ग्लेंकोए, ऐ हिस्टोरिकल टेल (1852-3)
- दी सोल्जर्स वाइफ (वैक्लपिक शीर्षक: दी कैट'ओ नाइन टेल्स)(1852-3)
- दी राईहाउस प्लाट; और रुथ, दी कांस्पिरेटर्स डॉटर (1853-4)
- जोसफ विल्मोट; और दी मेमोइर्स ऑफ़ ऐ मैनसर्वेट (1853-4)
- रोज़ा लम्बर्ट; और दी मेमोइर्स ऑफ़ अन अनफोर्चुनेट वुमन (वैक्लपिक शीर्षक: दी मेमोइर्स ऑफ़ ऐ क्लेर्गिमें डॉटर ) (1854-5)
- एग्नेस; और ब्यूटी एंड प्लेज़र (1854-5)
- एलेन परसी; और दी मेमोइर्स ऑफ़ एन एक्ट्रेस (1854-5)
- मे मिडल्टन; और दी हिस्ट्री ऑफ़ ऐ फाचर्यून (1854-5)
- लक्स ऑफ़ दी हैरम (1855)
- ओमर, ऐ टेल ऑफ़ दी वॉर (1855-6)
- लीला; और दी स्टार ऑफ़ मिन्गेलिया (1856)
- दी इम्प्रेस युजीन्स बौदोइर (1856)
- मार्गरेट; दी डिस्कार्डेड क्वीन(1856-7)
- दी यंग डचेज (एलेन पर्सी का अगला भाग) (1856-7)
- कैननबरी हाउस; और दी कुईस प्रोफेसी (1857-8)
- मैरी, क्वीन ऑफ़ स्काट्स (1858-9)

रेनॉल्ड्स के बहुत से उपन्यासों का अनुवाद भारत के विभिन्न प्रदेशों में हुआ था। जिनकी सूचना मुझे अनेक स्रोतों से प्राप्त हुई है कहीं पर व्यक्तिगत रूप से जाकर तो कभी किसी पुस्तक से इसके अलावा इन्टरनेट की भी सहायता मैंने ली है।

सहायक स्रोतों का नाम लेना मैं आवश्यक समझती हूँ क्योंकि उनकी भूमिका के बिना मैं यह पाठ पूरा नहीं कर पाती। उनके नाम इस प्रकार हैं

- 1) नेशनल बिबलियोग्राफी ऑफ़ इंडियन लिटरेचर
- 2) साउथ एशियन यूनियन कैटलॉग
- 3) मारवाड़ी पुस्तकालय, चांदनी चौक, दिल्ली
- 4) डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ़ इंडिया
- 5) बनस्थली पुस्तकालय (ऑनलाइन)
- 6) नेशनल लाइब्रेरी ऑफ़ इंडिया, कलकत्ता
- 7) नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
- 8) बड़ा बाज़ार पुस्तकालय, कलकत्ता

यह सूची मुझे अनेक भाषाओं में लिखी हुई प्राप्त हुई है जिसका लिप्यन्तरण मैंने पाठ और विषय की मांग के अनुसार देवनागरी में कर दिया है। इस प्राप्त सूची में एक कमी यह है कि किस मूल ग्रन्थ से अनुवाद हुआ और कितनी भाषाओं में हुआ है यह कुछ अनूदित उपन्यासों के साथ नहीं दिया गया है। इसीलिए निर्धारित करना मुश्किल है। परन्तु कहीं-कहीं पर सूचना भी दी गयी है। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि शीर्षकों को देखकर अनुमान अवश्य लगाया जा सकता है कि किस विशेष उपन्यास का अनुवाद हुआ होगा। सबसे पहले उर्दू भाषा में अनूदित उपन्यासों की सूची इस प्रकार है:-

## उर्दू

- क. अजमत अली हसरत लखनवी ने रेनॉल्ड्स के एक उपन्यास का अनुवाद 'विलायती परिस्तान' के नाम से किया है। जो लाहौर (वर्तमान में पाकिस्तान में है) से महादेव प्रसाद ने छापा था। इसका प्रकाशन 1917 में हुआ था।
- ख. नूर इलाही मुहम्मद उम्र ने रेनॉल्ड्स के एक उपन्यास का अनुवाद 'मौजूदा लन्दन के असरार' के नाम से किया है। जिसे लाहौर (वर्तमान में पाकिस्तान में है) के शेख मुबारक अली ने प्रकाशित किया था। इसका प्रकाशन 1925 में हुआ था।
- ग. कर्मतुल्लाह ने रेनॉल्ड्स के एक उपन्यास का अनुवाद 'शाम-ऐ-घुर्बत' के नाम से किया था। जिसे लाहौर (वर्तमान में पाकिस्तान में है) के जे एस संत सिंह ने प्रकाशित किया था। इसका प्रकाशन वर्ष नहीं दिया गया है।
- घ. सज्जाद हुसैन ने रेनॉल्ड्स के एक उपन्यास का अनुवाद 'धोखा या तिलिस्मी फानूस' के नाम से किया था। जो लखनऊ के नवल किशोर से प्रकाशित हुआ था। इसका प्रकाशन वर्ष 1925 है।
- ङ. उन्नीसवीं सदी में पंडित विशम्भर नाथ शर्मा ने रेनॉल्ड्स के 'सीमस्ट्रेस' नामक उपन्यास का अनुवाद 'फसाना-ऐ-सुज़ान-ऐ-इश्क'<sup>341</sup> के नाम से उर्दू में किया था। यह अनूदित उपन्यास लखनऊ से प्रकाशित हुआ था। कौन-से प्रकाशक ने इसे प्रकाशित किया इसकी सूचना प्राप्त नहीं हुई है। रेनॉल्ड्स के इस उपन्यास का अनुवाद 1891 में हुआ था।
- च. तीरथ राम फिरोज़पुरी ने रेनॉल्ड्स के एक उपन्यास का अनुवाद 'नज़राह-ऐ-परिस्तान' के नाम किया है। जो देहरादून के लाल ब्रड्स से प्रकाशित हुआ था। इसका प्रकाशन 1924 में हुआ था।

341

<http://sauc.uchicago.edu/yaz.php?qt=simple&host%5B%5D=localhost%3A9999%2Fsauc&fields%5B%5D=keyword&term=British+Library+OIOC+VT+482&groupsof=10&action=Search>

छ. 'शमी जवानी' का अनुवाद नौबत रॉय ने उर्दू में किया। इसका प्रकाशन 1938 में हुआ था।

### तमिल

क. रेनॉल्ड्स के 'एग्नस या ब्यूटी प्लेज़र' का अनुवाद भी हुआ था। इसका शीर्षक नहीं दिया गया है। यह उपन्यास सी कृष्णस्वामी अय्यर ने 1919-1923 के बीच मद्रास से प्रकाशित किया था।

### तेलगु

क. 'पुरंजया/ प्रख्याति गनिका रेयनालास्तु दोरावारी केन्न्त अनुनावाला नुन्दी पुरानामु सुब्बरामय्यागारिस नन्धिकारिम्पाम्बदिये' उपन्यास का यह नाम मुझे तमिल भाषा में प्राप्त हुआ है। जिसका अर्थ न समझ पाने के कारण मैंने यह नाम देवनागरी में ही लिप्यन्तरित कर दिया है। इसका अनुवाद राजमाहेंद्रवारामु ने किया था। जिसका प्रकाशन वर्ष 1917 में श्रीमनोरमा मुद्रक्सरासाला से हुआ था।

ख. रेयनाल्दासु कवी विरासितामु; 'वेदमुदी सेसागिरिरावु' आंग्लाभासानुन्दी तेलिगिन्सिनादी; सम्पदितामु सिवासंकरासास्त्री नामक उपन्यास है। जिसका अनुवाद राजमाहेंद्रवारामु ने किया था। 1924 में इसका प्रकाशन अद्वेपल्ली लक्सनास्वामी नायडू से हुआ था। यहाँ भी मूल उपन्यास का नाम नहीं दिया गया है।

ग. इसके बाद अन्य उपन्यास 'फस्तु' नाम से लिखा गया है। जिसका अनुवाद सिवासंकरासास्त्री और वेदुमुदीसेसगिरिरावु ने किया है।

घ. रेनॉल्ड्स के उपन्यास 'दी मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन' का अनुवाद 'लंदनू रहस्यमुलु' के नाम से हुआ है। इस ग्रन्थ का सम्पादन पिंगली नगेंद्रारारवु ने 1907में किया था। इन्होंने रेनॉल्ड्स के ग्रन्थ 'दी मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन' को आंगल महाकाव्य का नाम दिया है। यह ग्रन्थ कथारत्नाकर ग्रंथमाला, मसिलिपत्तानामु से दो भागों में प्रकाशित हुआ। इसका प्रकाशन वर्ष 1924 है।

- ड. 'अन्तापुरामी' नाम से रेनॉल्ड्स के एक उपन्यास का अनुवाद हुआ है जो अदीपल्ली आर मुंदरी से 1949-1957 में प्रकाशित हुआ था।
- च. 'मेरी रानी' नाम से रेनॉल्ड्स के एक उपन्यास का अनुवाद हुआ है जिसके अनुवादक मोसालीकान्ति संजिवारावू हैं। यह अदीपल्ली आर मुंदरी से 1949 में प्रकाशित हुआ था। उपर्युक्त दिए गए नाम 'मेरी रानी' में एक शंका उत्पन्न हो रही है। वह यह है कि 'मेरी रानी' नाम हिंदी में लिखा गया है। इसीलिए एक प्रश्न यह भी उत्पन्न होता है कि ये नाम तेलुगु का है भी या नहीं।
- छ. रेनॉल्ड्स के एक उपन्यास का अनुवाद 'मृणाली' नाम से हुआ है। यह उपन्यास राजामाहेंद्रवारावू ने श्री मनोरमा मुद्रक्सरासाला से प्रकाशित किया था। इसका प्रकाशन वर्ष नहीं दिया गया है। इस उपन्यास का अनुवाद गद्देपल्ली, सूर्यानारायाणा सरमा ने 1889 में किया था।
- ज. रेनॉल्ड्स के एक उपन्यास का अनुवाद 'अर्विन्दा' के नाम से हुआ है। 1916 में इसका प्रकाशन स्केप एंड कंपनी, कोकानाडा से हुआ था। इस उपन्यास का अनुवाद वेंकटलक्ष्मीनार्सिम्हारावु विन्जामुरी कोगंती लामिनरसिम्हाकार्युलू ने किया था।
- झ. तेलगु में अनूदित दूसरे उपन्यास की सूचना मुझे प्राप्त हुई है। अनूदित नकर पाने के कारण जैसा मुझे इन्टरनेट से प्राप्त हुआ है मैंने वैसा ही इसे लिख दिया है। जिसमें केवल एक नाम लिखा है। "पुरानामु सुब्बराम्य्या" (जिस रूप में लिखा है उसी रूप में प्राप्त हुआ था) यहाँ पर इस उपन्यास का नाम नहीं दिया गया है। मूल उपन्यास रेनॉल्ड्स का ही है।

### हिंदी

- क. 'लव्स ऑफ़ दी हैरम' का अनुवाद दो अनुवादकों ने भिन्न नामों से किया है। पहला नाम 'अनंग रंग' भाग 3 है। इसके अनुवादक चुन्नी लाल खत्री हैं। इस अनूदित उपन्यास का प्रकाशन लहरी प्रेस, वाराणसी से 1908 में हुआ। दूसरा अनुवाद 'रंगमहल'

- भाग 2 है। इसके अनुवादक गंगा प्रसाद गुप्त हैं जिन्होंने लहरी प्रेस वाराणसी से 1904 में इसका प्रकाशन किया था।
- ख. 'लीला और दी स्टार ऑफ़ मिन्योलिया' (1856) का अनुवाद दो भिन्न प्रेसों से प्रकाशित हुआ है। इन दो प्रेसों में इन्हें दो भिन्न शीर्षकों से प्रकाशित किया गया था। पहला अनुवाद 'अलादीन और लैला' नाम से भारत जीवन प्रेस, वाराणसी से प्रकाशित हुआ था। जिसमें अनुवादक का नाम उपलब्ध नहीं है। दूसरा नाम 'प्रवीण पथिक अथवा अलादीन और लैला' है। इसके अनुवादक देवी प्रसाद खजांची हैं। इसके 2 संस्करण, लहरी प्रेस वाराणसी से 1910 में निकले थे।
- ग. 'दी यंग फिशरमैन' का अनुवाद गंगा प्रसाद गुप्त ने किया था जो दो भिन्न शीर्षकों में उपलब्ध हुआ है। पहला है 'किले की रानी' जिसका अनुवाद गंगा प्रसाद गुप्त ने किया है। इसका प्रकाशन 1915 में उपन्यास कार्यालय, वाराणसी से हुआ था। इसी उपन्यास का दूसरा शीर्षक है 'किसान की बेटी'। इस उपन्यास का अनुवाद गंगा प्रसाद गुप्त ने किया था, जो 1931 में लहरी बुक डीपो, वाराणसी से प्रकाशित हुआ था। सम्भावना है कि यह उपन्यास दो खण्डों में विभाजित हो।
- घ. 'वर्जीनिया' का अनुवाद 'गुप्त रहस्य' के नाम से हुआ है। इसके अनुवादक रूपनारायण शर्मा हैं। उपन्यास बहार, वाराणसी से यह उपन्यास प्रकाशित हुआ था।
- ङ. 'जोसफ विल्मोट' का अनुवाद इसी नाम से हुआ है। इसका अनुवाद करने वाले अनुवादक यशोदानंदन खत्री तथा चतुर्भुज औदीच्य हैं। ये 5 खंडों में अनूदित किया गया है। इसका प्रकाशन भारत मित्र प्रेस कलकत्ता से 1905-1907 के बीच हुआ था। दूसरा अनुवाद 'दुर्जन अथवा एक दुराचारी की दुर्दशा' के नाम से हुआ था। इसके अनुवादक जैनेंद्र किशोर हैं। इस अनूदित उपन्यास का प्रकाशन उपन्यास बहार कार्यालय से हुआ था।

- च. 'फाउस्ट: ऐ रोमेंसे ऑफ़ दी सीक्रेट ट्रिब्यूनल' 1847 में लिखा गया था। इसका अनुवाद 'नरपिशाच' के नाम से हुआ है। यह 4 भागों में उपलब्ध है। इसके अनुवादक श्री हरी कृष्ण जौहर हैं। इसका अनुवाद भारत जीवन प्रेस, कलकत्ता से 1901-1904 के बीच हुआ है।
- छ. 'रोज़ा लम्बर्ट और दी मेमायर्स ऑफ़ एन अनफोर्च्युनेट वुमन' का अनुवाद 'पतन की ओर' शीर्षक से हुआ है। इसके अनुवादक जयंत कुमार हैं। यह अनूदित उपन्यास चिंगारी प्रकाशन, वाराणसी से प्रकाशित हुआ था। यह दूसरे शीर्षक 'पतन की सीमा' नाम से भी अनूदित किया गया था। इसके अनुवादक सजल कुमार हैं। यह अनुवाद चिंगारी प्रकाशन, वाराणसी से 1956 में प्रकाशित हुआ था।
- ज. 'दी ब्रॉज़ स्टेचू' और 'दी विर्जिस किस' का अनुवाद 'पीतल की मूर्ति' के नाम से हुआ है। यह बर्मन्न् प्रकाशन कलकत्ता से 1917 में प्रकाशित हुआ था।
- झ. 'दी मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन' का अनुवाद 'रंगमहल रहस्य' के नाम से हुआ था। इसके अनुवादक रामानंद द्विवेदी और एम् पी सेठ हैं। लहरी प्रेस वाराणसी के मिर्ज़ापुर से 1914 में यह प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास श्रृंखला का एक और अनुवाद चन्द्रशेखर पाठक ने किया था। इसका शीर्षक अनुवादक ने 'रहस्य भेद' रखा है। इसके 3 भाग दुर्गा प्रेस कलकत्ता से 1918 में प्रकाशित हुए थे। 'दी मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन' का अनुवाद करने वाले अन्य कुछ और अनुवादक भी हैं। ठाकुर प्रसाद खत्री ने 1907 में इसका अनुवाद 'लन्दन रहस्य' के नाम से दो खण्डों का में किया था। इसी शीर्षक से अनुवाद करने वाले अन्य अनुवादक भी थे। जिनमें से एक का नाम विश्वनाथ प्रसाद मुखर्जी है। इन्होंने चार खण्डों में इस उपन्यास को अनूदित किया है। जो चिंगारी प्रकाशन, वाराणसी से प्रकाशित हुआ था। 'दी मिस्ट्रीज ऑफ़ लन्दन' का प्रकाशन 1907 में टी आर चंद्रन, मद्रास में भी हुआ था। इसके बाद अनुवादक सदानंद शुक्ल का नाम आता है। आर एल वर्मन्न् कम्पनी कलकत्ता से

इनके अनूदित उपन्यास प्रकाशित हुए थे दिल्ली के चांदनी चौक स्थित मारवाड़ी पुस्तकालय की पुस्तक सूची में 'लन्दन रहस्य' (अनिश्चित खंड) लिखा है। लेकिन उपलब्ध कुछ नहीं हुआ है।

- ज. 'लैला' का अनुवाद सी माधवन पिल्लई ने किया है। इसका प्रकाशन साहित्य प्रवर्तार सी एस से 1960 में हुआ था।
- ट. 'पतन की सीमा' अनूदित उपन्यास का प्रकाशन 1956 में चिंगारी प्रकाशन वाराणसी से हुआ था।
- ठ. 'पीतल की मूर्ती' के नाम से रेनॉल्ड्स के एक उपन्यास का अनुवाद हुआ है। यह अनुवाद 1917 में हिंदी में हुआ था।
- ड. 'खूनी तलवार' नाम से रेनॉल्ड्स के एक उपन्यास का अनुवाद तीरथराम फिरोज़पुरी ने हिंदी में किया था।

### बांग्ला

- क. 'बिलायती गुप्त कथा' नाम से रेनॉल्ड्स के 'रोबर्ट मकेयर' नामक उपन्यास का रूपांतरण हुआ था। यह रूपांतरण पनाकन्ना राय चौधरी ने बांग्ला भाषा में किया है। इसका प्रकाशन 1893 में न्यू ईडन प्रेस कलकत्ता से हुआ है।
- ख. 'बिलायती रहस्य एगनएसे' के नाम से रेनॉल्ड्स के 'एगनस' नामक उपन्यास का रूपांतरण किया गया था। यह रूपांतरण नवकुमार दत्ता ने बांग्ला भाषा में किया गया था। इसका प्रकाशन 1905 में साहित्य प्रचार कार्यालय, कलकत्ता से हुआ है।
- ग. 'राबर्ता मयकेयर वा इमालादे दस्यु' नाम से रेनॉल्ड्स के 'रोबर्ट मकेयर' नामक उपन्यास का अनुवाद हुआ है। यह अनुवाद क्षेत्रमोहन घोष ने बांग्ला भाषा से किया था। इसका प्रकाशन 1907 में इंडियन पेट्रियट प्रेस कलकत्ता से हुआ था।



- घ. रानी उजिनीरा बैथाका नाम से रेनॉल्ड्स के एम्प्रेस युर्जीस बौदिओर नामक उपन्यास का अनुवाद हुआ है। यह अनुवाद भुवनचन्द्र मुखोपाध्याय ने किया था। इसका प्रकाशन 1924 में वसुमती साहित्य मंदिर कलकत्ता से हुआ था।
- ड. 'रानी कृष्णकामिनी' नाम से रेनॉल्ड्स के 'यंग डचेस' नामक उपन्यास का अनुवाद हुआ है। यह अनुवाद कालीप्रसन्न चाटोपाध्याय ने किया था। इसका प्रकाशन 1889 में कलकत्ता से हुआ था।
- च. 'लंदन रहस्य' नाम से रेनॉल्ड्स के 'मिस्ट्रीज ऑफ लंडन' नामक उपन्यास का अनुवाद हुआ है। यह अनुवाद बांग्ला भाषा से हुआ है। इसका प्रकाशन 1885 में उचित वक्ता प्रेस कलकत्ता से हुआ था। इसके दो खण्ड हैं।
- छ. 'सैनिक बंधु' नाम से रेनॉल्ड्स के 'दी सोल्जर्स वाइफ' नामक उपन्यास का अनुवाद हुआ है। इसके दो संस्करण हैं। यह अनुवाद कालीप्रसन्न चाटोपाध्याय ने बांग्ला भाषा में किया था। इसका संपादन सावित्राप्रसन्ना चाटोपाध्याय हैं। इसका प्रकाशन 1920 में कर मजुमदार कलकत्ता से हुआ था।
- ज. 'दी सोल्जर्स वाइफ' नाम से रेनॉल्ड्स का एक उपन्यास एस सी औड्डी ने 1927 में कलकत्ता में छापा था। यह नवीन संस्करण था।
- झ. 'फस्ता' नाम से रेनॉल्ड्स के एक उपन्यास का अनुवाद हुआ है। इसका अनुवाद 1892 में विपिनविहारी वासु ने किया था।
- ञ. 'हरीदासेर गुप्त कथा' के नाम से भुवनचन्द्र मुखोपाध्याय ने 'जोसेफ विल्मोट' का रूपांतरण किया था। इसका प्रकाशन कलकत्ता में 1903 में हुआ था।
- ट. 'बिलायती गुप्त कथा' का प्रकाशन 1889 में हुआ था। इसके मूल ग्रन्थ का नाम उपलब्ध नहीं है।

### मलयालम

- क. 'लोकजेतावू' नाम से रेनॉल्ड्स के एक उपन्यास का अनुवाद हुआ है जो सेंट जोसेफ प्रेस, मन्नानम से 1970 में प्रकाशित हुआ था।
- ख. 'मुत्तुमनिकल' नाम से रेनॉल्ड्स के एक उपन्यास का अनुवाद हुआ है जो दीपिका बुक हाउस कोट्टयम से 1974 में प्रकाशित हुआ था।
- ग. 'मिन्नामिन्नुकल' नाम से रेनॉल्ड्स के एक उपन्यास का अनुवाद हुआ है जो दीपिका बुक हाउस कोट्टयम से 1974 में प्रकाशित हुआ था।
- घ. 'मिस्ट्रीज ऑफ लंडन' का 'त्तारातलाइले रहस्यानल' नाम से अनुवाद एम् एस मणि ने किया था। 1956-1964 के बीच इसका प्रकाशन विद्यारम्भ प्रेस एंड बुक डीपो मुल्लाकल से हुआ था।

### मराठी

- क. रेनॉल्ड्स के एक उपन्यास का अनुवाद 'गोसामतिला सौंदर्य स्त्रियाँ' नाम से हुआ था। इसके अनुवादक वालाचंद्रा रामचंद्रा हैं। इसका प्रकाशन 1916 में तात्या नेमिन्नाथा पांगला बॉम्बे से हुआ है।
- ख. 'लंडन येथील बड्या लोकांची गुप्त कृत्ये' गोष्ठ 3 री (2), का प्रकाशन राजेन्द्र रावजी शहा, पंढरपुर से हुआ था।
- ग. 'वित्तासामंदिरा' नाम से रेनॉल्ड्स के एक उपन्यास का अनुवाद हुआ है जो दामोदर समिवतरमोअनि मंडिता बोम्बे से 1912 में प्रकाशित हुआ था।

### पंजाबी

- क. रेनॉल्ड्स के उपन्यास न केवल उर्दू और तेलुगु में ही प्रकाशित हो रहे थे बल्कि पंजाबी में भी इनके उपन्यासों के अनुवाद प्राप्त हुए हैं। रेनॉल्ड्स के एक उपन्यास का अनुवाद बलवंत सिंह सय्यद ने किया था। जिसकी माइक्रोफॉर्म प्रति अमृतसर में उपलब्ध है। इस उपन्यास के अनूदित संस्करण का नाम मुझे उपलब्ध नहीं हुआ है।

लेकिन इसके विषय में ऐसा एक विवरण उपलब्ध है “अबोला पंछी जारजा दबालिऊ एमा रैनाल्दासु दा उहा रंगीन नवला जिसा ने अंग्रेजी साहिता व्हिच खलका मचा दित्ता”<sup>342</sup> रेनॉल्ड्स के रंगीन उपन्यासों ने अंग्रेजी साहित्य में तहलका मचा दिया था। यह उपन्यास 1977 में अमृतसर के सिताला साहित्य भवन से प्रकाशित हुआ था इस उपन्यास की एक प्रति माइक्रोफिल्म के रूप में कांग्रेस के नयी दिल्ली कार्यालय के पुस्तकालय में भी उपलब्ध है।

पंजाबी में अनूदित हुए इस उपन्यास की प्रति शिकागो में भी ‘सेंटर फॉर रिसर्च लाइब्रेरीज’ में 1998 में भी उपलब्ध हुई थी।

### अंग्रेजी

#### भारत में प्रकाशित रेनॉल्ड्स के मूल उपन्यास

- क. ‘ग्रेस डार्लिंग: दी हीरोइन ऑफ दी फर्न आइलैंड’ का प्रकाशन 1960 में बॉम्बे लिटिल बुक्स से हुआ था।
- ख. ‘मिस्ट्रीज ऑफ दी कोर्ट ऑफ लंडन’ का प्रकाशन दी मॉडर्न पब्लिशिंग कंपनी कलकत्ता से 1850 में हुआ था। एम् एस मणि इसके अनुवादक हैं।

#### विदेश में प्रकाशित और भारत में उपलब्ध रेनॉल्ड्स के मूल उपन्यास

- क. ‘मैरी प्राइज़: ऑफ दी मेमायर्स ऑफ ऐ सर्वेंट मेड’ (इलस्ट्रेटेड विद फिफ्टी टू एन्ग्रविंग्स बाय एफ. गिल्बर्ट)। इसका प्रकाशन लन्दन के जॉन डिक्स ने किया था।
- ख. ‘कैननबरी हाउस: और दी क्वींस प्रोफेसी’ (विद इलस्ट्रेशन बाय ई.एच. कोर्बोल्ड) नामक उपन्यास का प्रकाशन लन्दन के जॉन डिक्स ने किया था।
- ग. ‘दी चाइल्ड ऑफ वॉटरलू और दी होरोर्स ऑफ दी बैटलफील्ड’ नामक उपन्यास का प्रकाशन फिलाडेल्फिया में टी.बी. पीटरसन ने किया था।

342

<http://sauc.uchicago.edu/yaz.php?qt=simple&host%5B%5D=localhost%3A9999%2Fsauc&fields%5B%5D=keyword&term=British+Library+OIOC+VT+482&groupsof=10&action=Search>

- घ. 'सिप्रिना: और दी सीक्रेट्स ऑफ़ ऐ पिक्चर गैलरी' इसका प्रकाशन फिलाडेल्फिया में टी.बी. पीटरसन ने किया था।
- ङ. 'दी डेज ऑफ़ होगर्थ और दी मिस्ट्रीज ऑफ़ दी ओल्ड लंडन' (विद ब्यूटीफुल एन्ग्रविंग्स) नमक उपन्यास का प्रकाशन लन्दन के जॉन डिक्स ने किया था।
- च. 'एलेन परसी: मेमयार्स ऑफ़ एन एक्ट्रेस' (विद फिफ्टी टू एन्ग्रविंग्स) का प्रकाशन लन्दन के जॉन डिक्स ने किया था।
- छ. 'दी एम्प्रेस ऑफ़ दी यूजीन बौदिओ' का इसका प्रकाशन लन्दन के जॉन डिक्स ने किया था।
- ढ. 'मे मिड्डलटन: दी हिस्ट्री ऑफ़ ऐ फार्च्यून' का प्रकाशन लन्दन के जॉन डिक्स ने किया था।
- ण. 'दी मसाक्रे ऑफ़ ग्लीकोर्ड' (ब्यूटिफुली इलस्ट्रेटेड बाय एडवर्ड कोर्बोल्ड), इसका प्रकाशन लन्दन के जॉन डिक्स ने किया था।
- त. 'दी मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन', फर्स्ट सीरीज़ (1850-1856) का प्रकाशन लन्दन के जॉन डिक्स ने किया था।
- थ. 'दी नेक्रोमॅंसर रोमॅंस' का प्रकाशन लन्दन के जॉन डिक्स ने किया था।
- द. 'ओमर: ऐ टेल ऑफ़ वार' (ब्यूटिफुली इलस्ट्रेटेड बाय एडवर्ड कोर्बोल्ड) का प्रकाशन लन्दन के जॉन डिक्स ने किया था।
- ध. 'दी मकेयेल: आर दी फ्रेंच बैंडिट इन इंग्लैंड' (विद ब्यूटिफुल वुड एन्ग्रविंग्स दरबान बी हेनरी एनेले) का प्रकाशन लन्दन के जॉन डिक्स ने किया था।
- प. 'दी राई हाउस प्लाट: और दी रुथ', दी कांस्पिरेटर्स का प्रकाशन लन्दन के जॉन डिक्स ने किया था।
- फ. 'दी सीमस्ट्रेस: और दी वाइट स्लेव ऑफ़ इंग्लैंड' (विद 15 इलस्ट्रेशन्स ड्रान बाय हेनरी एनेले) का प्रकाशन लन्दन के जॉन डिक्स ने किया था।

- ब. 'दी सोल्जर्स वाइफ' (विद 25 इलस्ट्रेशन्स ड्रान बाय डब्ल्यू एच थ्वैटस) का प्रकाशन लन्दन के जॉन डिक्स ने किया था।
- भ. 'पिकविक अब्रॉड' का प्रकाशन हेनरी जी बोहन ने 1864 में किया था।
- म. 'दी कोरल आइलैंड, और दी हैरीडीटेरी कर्ज' (ब्यूटीफुली इलस्ट्रेटेड बाय हेनरी अनेले) का प्रकाशन लन्दन के जॉन डिक्स ने किया था।
- य. 'दी पैरीसाइड: और दी यूथ्स करियर इन क्राइम' का प्रकाशन लन्दन के जॉन डिक्स ने किया था।
- र. 'वैगनर, दी वेह्यर वुल्फ: ऐ रोमेंस' (विद इलस्ट्रेटेड बाय हेनरी अनेले) का प्रकाशन लन्दन के जॉन डिक्स ने 1872 में किया था।
- ल. 'दी यंग डचेस: और मेमायर्स ऑफ ऐ लेडी ऑफ क्वालिटी अ सीक्वल टू "एलेन परसी"' का प्रकाशन लन्दन के जॉन डिक्स ने 1872 में किया था।

इससे भी अधिक रेनॉल्ड्स के उपन्यास एक बड़ी संख्या में लोगों तक पहुंचे हैं। उपर्युक्त विवरण स्वयं इनके विषय में स्पष्ट करता है कि रेनॉल्ड्स की लोकप्रियता क्षणभंगुर नहीं थी। जिन देशों में उनके उपन्यास सबसे अधिक बिकते थे वे मेनचेस्टर, स्कॉटलैंड, लाइसेस्टर सहित अनेक देशों में बिकते थे। जिस समय 'मिस्ट्रीज ऑफ दी कोर्ट ऑफ लंडन' पैनी संकलन के रूप में छप रहा था उस समय भी एक हफ्ते में ही उसकी 40,000 प्रतियां बिक गयी थीं। एक उपन्यास के रूप में छपने से पहले इनके पैनी संकलन की लाखों प्रतियां छप चुकी थीं। इसके बाद फ्रेंच, जर्मन, इतालवी, स्पेनिश भाषाओं में इनके उपन्यास बड़ी संख्या में पढ़े गये। रेनॉल्ड्स हमेशा ही पाठकों के पसंदीदा उपन्यासकार बने रहे। अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में भी इनकी मांग बढ़ गयी थी। जर्मन भाषा में हुए इनके अनुवादों ने पाठकों की नज़र में अपना एक प्रिय और अनुकूल स्थान बना लिया था। इसके अलावा रूस में भी प्राधिकरण ने उनके उपन्यासों को छापना गैरकानूनी घोषित कर दिया था। इसीलिए रूस की ब्लैक

मार्किट में इनके उपन्यास वर्षों तक चोरी छिपे बिकते रहे। अटलांटिक महासागर के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक उनके उपन्यासों ने लोगों के बीच कई वर्षों तक अपना प्रभाव भी बनाये रखा। 1857 में फिलाडेल्फिया में भी एक ग्रन्थ के रूप में “जॉर्ज डब्ल्यू एम् रेनॉल्ड्स ग्रेट वर्क्स” के नाम से उनके उपन्यास छप रहे थे। इतना ही नहीं लन्दन जर्नल और लन्दन मिसलेनी ये दो ऐसी सस्ती पत्रिकाएँ थीं जिन्हें वहाँ का मजदूर वर्ग अपने मनोरंजन के लिए पढ़ता था। इस ग्रन्थ में उनके चालीस उपन्यासों का संकलन था। जिसकी कीमत 50 डॉलर और 1 सेंट थी। इनके निधन पर एक पुस्तक विक्रेता ने इन्हें “अपने समय का सबसे अधिक बिकने वाला उपन्यासकार कहा था।”<sup>343</sup>

अंग्रेजी साहित्य में भी रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को स्थान प्राप्त नहीं था। इस विषय में भी कुछ तथ्य उपलब्ध हुए हैं।

रेनॉल्ड्स लोकप्रिय लेखक अवश्य थे लेकिन वे विवादित लेखक भी थे। इसीलिए इक्कीसवीं सदी तक भी रेनॉल्ड्स को और उनके उपन्यासों को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता था। ‘दी ऑक्सफ़ोर्ड कम्पैनियन टू इंग्लिश लिटरेचर’ का द्वितीय संस्करण जो वर्ष 2000 में प्रकाशित हुआ था। उसमें भी इनके विषय में केवल दो ही स्थानों पर ही चर्चा की गयी है। इस पुस्तक की एडिटर मारग्रेट डैब्रिल ने भी जी डब्ल्यू एम् रेनॉल्ड्स के विषय में विस्तार से कोई उल्लेख इस ग्रन्थ के संकलन में नहीं किया है।

<sup>343</sup> [https://books.google.co.in/books?id=P5lilajF-kAC&pg=PA87&lpg=PA87&dq=mysteries+in+g+w+m+reynolds+novels&source=bl&ots=R4hifbgAOb&sig=vUeLDSxxPeQ\\_Vncytp\\_1fpBRqVM&hl=en&sa=X&ved=0ahUKEwiAipzhst3RAhULLY8KHWXEDQ04FBD0AQg0MAY#v=one&q=mysteries%20in%20g%20w%20m%20reynolds%20novels&f=false \(21-03-2017\) \(11:40\)](https://books.google.co.in/books?id=P5lilajF-kAC&pg=PA87&lpg=PA87&dq=mysteries+in+g+w+m+reynolds+novels&source=bl&ots=R4hifbgAOb&sig=vUeLDSxxPeQ_Vncytp_1fpBRqVM&hl=en&sa=X&ved=0ahUKEwiAipzhst3RAhULLY8KHWXEDQ04FBD0AQg0MAY#v=one&q=mysteries%20in%20g%20w%20m%20reynolds%20novels&f=false%20(21-03-2017)%20(11:40))

लेकिन एंड्रयू सांडर्स के ग्रन्थ 'दी शोर्ट ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इंग्लिश लिटरेचर'<sup>344</sup>, में दो जगह दो वाक्य मिलते हैं, जिनकी पृ. संख्या 439 और 469 है। "दी शोर्ट ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इंग्लिश लिटरेचर" के पृष्ठ 262 पर भी रेनॉल्ड्स के उपन्यासों के विषय में कुछ इस प्रकार का उल्लेख है "फ्रेंच लेखक यूजीन स्यु के आपराधिक उपन्यासों का प्रभाव उनका अनुकरण करने वाले जी डब्ल्यू एम् रेनॉल्ड्स (1814-79) के उपन्यासों में दिखता है। सनसनीखेज घटनाओं और आपराधिक उपन्यासों का लोगों के बीच लोकप्रिय होना एक-दूसरे से सम्बंधित है।"<sup>345</sup> इस प्रकार एंड्रयू का भी मानना है कि यूजीन का प्रभाव रेनॉल्ड्स के उपन्यासों पर था। इनके लिए 'हिस्ट्री ऑफ इंग्लिश लिटरेचर' में लिखा है कि "रेनॉल्ड्स, डिकेन्स और विल्कि कॉलिंग्स ऐसे लेखक थे जो अपने साहित्य में समाज के छिपे हुए सच को उजागर करते हैं। 1880 और 1890 के समाज में ऐसी बहुतसी जटिलताएं थीं, जिनकी कल्पना भी लोगों ने नहीं की थी। इन जटिलताओं को प्रकाश में लाने वाले रेनॉल्ड्स ही थे।"<sup>346</sup>

भारतीय पाठकों ने भी उनके उपन्यासों को बहुत अधिक सराहा था प्रो. गोपाल राय का कहना है कि "900 ईस्वी के बाद हिंदी में भी रेनॉल्ड्स के उपन्यास भारी संख्या में अनूदित-प्रकाशित हुए। 1910 ई. तक उनके लायला, फाउस्ट और राई हाउस प्लाट, लक्स ऑफ द हरम, जोसफ विल्मोट, मिस्ट्रीज़ ऑफ द कोर्ट ऑफ लन्दन, उम्रपाशा, आदि बहुखंडी उपन्यासों के अनुवाद हिंदी में प्रकाशित और पाठकों के बीच लोकप्रिय हो चुके थे। ध्यातव्य है कि रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को अंग्रेजी साहित्य में

<sup>344</sup> Sanders, Andrew, *History of English Literature*, Newyork, Oxford University Press, Third edition, 1996

<sup>345</sup> Sanders, Andrew, *History of English Literature*, Newyork, Oxford University Press, Third edition, 2005, p- 262

<sup>346</sup> Do, p- 281

कोई मान्यता प्राप्त नहीं थी। हिंदी में उनके उपन्यास तत्कालीन पाठकों की रहस्य, रोमांच और काम-वर्णनों में रुचि कारण लोकप्रिय हुए थे।<sup>347</sup>

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को भर ही उनकी लोकप्रियता का कारण नहीं था। बल्कि वे समस्याओं के समुद्र में हिंदी के पाठकों के लिए कश्ती का काम कर रहे थे। इसके अतिरिक्त उनके लेखन को स्वीकार करना भी कुछ मूल हिंदी उपन्यासों के प्रतिफल के रूप में सामने आया था। रेनॉल्ड्स के उपन्यास इतने अधिक प्रचलित होने का कारण यही था कि उनके उपन्यासों में न केवल उनके चरित्र का ही प्रतिनिधित्व देखने की मिलता था बल्कि वे उस समाज का भी प्रतिनिधित्व करते थे जिसमें वे रहते थे। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का भारत में अभिग्रहण कैसे हुआ यह समझने के लिए भिन्न आलोचकों के विचारों को समझना आवश्यक होगा। इनमें से पहली विदुषी का नाम फ्रेंचेस्का ओर्सिनी है।

## रेनॉल्ड्स के विषय में लिखने वाले आलोचकों के विचार

### फ्रेंचेस्का ओर्सिनी

जिस समय भारत में ब्रिटिश शासन था, उस समय ब्रिटिश शासक जहाज़ से तीन-चार महीने की यात्रा करके भारत पहुँचते थे। अंग्रेजों को उस लम्बी यात्रा के दौरान अपने मनोरंजन और खानपान की वस्तुएं भी साथ रखनी होती थीं। उस समय मनोरंजन के साधनों का मतलब अंग्रेजी भाषा में लिखे जाने वाले महत्वपूर्ण उपन्यासकारों के उपन्यास ही नहीं हुआ करते थे। बल्कि वे उपन्यास भी होते थे जिनसे मन बहलाया जा सकता था। इसी प्रक्रिया में उपन्यास भी भारत पहुँचे। अठारहवीं शताब्दी के अंत और उन्नीसवीं शताब्दी के शुरू में जो उपन्यास सस्ते और

<sup>347</sup> राय, प्रो. गोपाल, *हिन्दी उपन्यास का इतिहास*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2002, पृ-



सबसे अधिक बिकने वाले थे उन्हें यात्री अपने साथ ले आया करते थे। भारत में शिक्षा प्राप्त कर रहे लोगों तक ये उपन्यास ब्रिटिश अधिकारियों के माध्यम से पहुँचे इसी प्रक्रिया में बंगाल और कलकत्ता में प्रेसों और प्रकाशन कंपनियों की स्थापना भी की गयी।

फ्रेंचेस्का ओर्सिनी के अनुसार कलकत्ता की आर एल बर्मन कम्पनी ने उस समय अंग्रेजी के उपन्यास हिंदी में अनूदित करने के लिए कुछ अनुवादकों को अपने यहाँ काम पर (Hired Professional Translators) रखा था। जिनमें से एक अनुवादक सदानंद शुक्ल थे। फ्रेंचेस्का कहती हैं कि रेनॉल्ड्स के 'मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन' को उन्होंने 54 खंडों में अनूदित किया था। लेकिन गोपाल राय के 'हिंदी उपन्यास का इतिहास' में 'लन्दन रहस्य' के विषय में लिखा है कि "रेनॉल्ड्स के लन्दन रहस्य के कम से कम तैंतालीस खंड और उनके कई कई संस्करण प्रकाशित हुए थे।"<sup>348</sup> प्रत्येक विद्वान के रेनॉल्ड्स के अनूदित उपन्यासों के विषय में अपने-अपने मत हैं।

19 वीं सदी के व्यवसायिक छापेखानों ने मौखिक परम्परा में आने वाले कहानी और किस्सों के साथ बारहमासा के गीत और नाटकों को छापना शुरू कर दिया। इससे पहले साहित्य की इन विभिन्न विधाओं और शैलियों को गाकर, सामूहिक रूप से पढ़कर या मेलों आदि में ही सुनाया जाता था। जिनमें औरतों और आदमियों का इन सभी शैलियों का हिस्सा बनने का एक अलग तरीका होता था। महिलाओं के लिए 'आंतरिक मनोरंजन' और पुरुषों के लिए 'सार्वजनिक मनोरंजन' होता था। महिलाओं और पुरुषों का मनोरंजन भिन्न-भिन्न स्थानों पर हुआ करता था। महिलाएं पुरुषों की भूमिका में आती थीं और पुरुष महिलाओं की भूमिका में पुरुषों को हर प्रकार की आज़ादी थी लेकिन महिलाओं को नहीं थी। इसी को फ्रेंचेस्का ने 'फीमेल

<sup>348</sup> राय, प्रो. गोपाल, *हिन्दी उपन्यास का इतिहास*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2002, पृ-146

इनर डोमेन' तथा 'मेल पब्लिक डोमेन' का नाम दिया है।<sup>349</sup> रोज़मर्रा के त्यौहारों में गाना-बजाना लोगों के जीवन से आंतरिक रूप से जुड़ा हुआ था हाट- बाज़ार और आस पड़ोस के गाँवों और कस्बों में लोगों का मिलना आदि सभी कुछ इसमें सम्मिलित होता था। मनोरंजन की प्रथा पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग थीं। जो औपनिवेशिक बौद्धिकों को अक्सर यह सोचने के लिए मजबूर कर देती थीं कि पुरुषों और महिलाओं के मनोरंजन में क्या अंतर है? इस नीजी और सार्वजनिक के बीच इतनी गहरी खाई थी कि उसे आने वाले कई वर्षों तक नहीं भरा जा सकता था। पुरुष और स्त्री समाज के दो भिन्न ध्रुवों पर बैठे थे। एक ऐसा समाज जहां पर लिंग भेद और जाति प्रथा को ही प्रधान माना जाता था। ऐसे समाज में औपनिवेशकों द्वारा लाये गये बदलावों या उनके रहन-सहन तथा साहित्य को स्वीकार करना आसान न था। परन्तु प्रकाशन ने पुरुषों और स्त्रियों के मनोरंजन की इस सीमा को तोड़ दिया था। मनोरंजन के नाम पर छपने वाले ग्रन्थ उन्नीसवीं सदी में सुख की अनुभूति के लिए पढ़े जाते थे। इन ग्रंथों को पढ़ने के लिए यह निर्धारित नहीं था कि इन्हें स्त्री पढ़ सकती है या पुरुष। उस समय बहुत से परिवारों में उपन्यासों को पढ़ना अपराध भी माना जाता था। माता-पिता से उपन्यास पढ़ने की अनुमति मांगनी पड़ती थी। फ्रेंचेस्का के अनुसार "पुस्तकें उस समय सीमाओं को तोड़ने का प्रतीक बन गयी थीं। जो उन्नीसवीं सदी के बहुत से पुरुषों के लिए स्वीकार करना मुश्किल था।"<sup>350</sup>

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तर-भारत में साक्षरता का स्तर बहुत कम था। मनोरंजन की कला के अंतर्गत कहानीकार, गायक और नायक तथा नर्तकों के माध्यम से ही कहानियाँ सुनायी और दिखायी जाती थीं। इस सब गतिविधियों के लिए कोई विशेष स्थान नहीं होता था। इसमें कोठा या अभिजात वर्ग या कुलीन वर्ग के लोग

<sup>349</sup> Orsini, Frenchesca, *Print and Pleasure : Popular Literature and Entertaining Fictions in Colonial North India*, Ranikhet, Permanent Black, 2006, p- 24

<sup>350</sup> Do

एक ही स्थान पर एकत्रित होते थे। इन सब के लिए लोगों ने नीजी घर, मंदिर और गलियों तथा सड़कों आदि स्थानों को चुन रखा था। लोगों के मनोरंजन को ध्यान में रखते हुए जिन कहानियों को सुनाया जाता था उन्हें ही प्रकाशक प्रकाशित कर दिया करते थे। इस विषय में फ्रेंचेस्का भी कहती हैं कि “ऐसे में कैसे एक प्रकाशक उस जनता को ऐसे लिखित साहित्य की ओर आकर्षित कर सकता था। जो केवल दृश्यात्मक मनोरंजन के माध्यमों पर ही निर्भर थी।”<sup>351</sup> जिस प्रकार के मनोरंजन की समाज को आदत थी कैसे उनका मन कोई और साहित्य बहला सकता था।

आगे वे यह भी कहती हैं कि “शुरुआत में प्रकाशकों ने जिस प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित की वे केवल मनोरंजन के लिए थीं। रोजमर्रा के नाटक और नौटंकी से आगे बढ़कर अब पाठकों को मनोरंजक ग्रन्थ चाहिए थे। प्रकाशक भी अपना व्यवसाय बढ़ाना चाहते थे। इसीलिए रेनॉल्ड्स के उपन्यास भी अधिक प्रचलित हुए”<sup>352</sup> किसी तरह से व्यवसायिक प्रकाशकों ने लोगों को मनोरंजन से परिपूर्ण साहित्य परोसा। बीसवीं सदी के आरम्भ से ही इस प्रकार की परम्परा में बदलाव आ गया था। अब इस सदी में लोग बिना बोले चुपचाप पढ़ने (साइलेंट रीडिंग) लगे। पढ़ने की इस परम्परा से सबसे बड़ा बदलाव शुरू हुआ। किस्से और उपन्यास दोनों को ही अब इस प्रकार से पढ़ा जाने लगा था। यह शायद इस सदी का सबसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन था। पढ़ने की इस परम्परा को केवल छापे खाने की ही देन समझा जा सकता है। बीसवीं सदी के आरम्भ में साहित्य को समझने की परम्परा में जो बदलाव आये उसे फ्रेंचेस्का ओर्सिनी “प्लैजर ऑफ रीडिंग इन साइलेंट वे” कहती हैं। इस ‘साइलेंट वे ऑफ रीडिंग’<sup>353</sup> का हिस्सा बना रेनॉल्ड्स का साहित्य। जिसने लोगों के सोचने की दिशा में परिवर्तन कर दिया। इस दिशा में रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को सम्मिलित करना गलत

---

<sup>351</sup> Do, p- 9

<sup>352</sup> Do, p- 9

<sup>353</sup> Do, p- 21

न होगा। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को छुप कर पढ़ने की इस परम्परा ने रेनॉल्ड्स को भारत में लोकप्रिय बना दिया। जिसके कारण इनके उपन्यास पहले बांग्ला में फिर अन्य भाषाओं में अनूदित हुए। रेनॉल्ड्स के उपन्यास भारत की अनेक भाषाओं में अनूदित हुए जिससे सम्बंधित उनकी सूची इसी अध्याय के शुरुआत में दी गयी है।

भारत में शिक्षा के विकास और मनोरंजन के लिए आरम्भ में पठन सामग्री कम मात्रा में उपलब्ध थी। ऐसे में अंग्रेज़ जो साहित्य लेकर आये वही भारतीयों को उपलब्ध था और उसे वे पढ़ने भी लगे। जब कुछ लोग अंग्रेज़ी में उनके साहित्य को नहीं पढ़ पा रहे थे तो उनके अनुवाद हुए अंग्रेज़ शासक अपना साहित्य भारतीयों तक पहुँचाना भी चाहते थे इस प्रक्रिया में उन्होंने द्विभाषा और त्रिभाषा को जानने वाले लोगों को नौकरी पर रखा। जिस प्रकार अपने धर्म के प्रचार के लिए उन्होंने बाइबिल के अनुवाद कराए वैसे ही अपने साहित्य के प्रचार के लिए उन्होंने साहित्यिक ग्रंथों को भी अनूदित कराया। इन ग्रंथों में मनोरंजनात्मक साहित्य के साथ प्रचलित लेखकों के उपन्यास भी थे। भिन्न-भिन्न ग्रंथों का जैसे-जैसे प्रकाशन होता था वैसे ही पुस्तकों की मांग बढ़ती जाती थी। बांग्ला में अनूदित होने के बाद पाठकों की मांग हिंदी में भी बढ़ गयी। जैसे-जैसे पुस्तकों का व्यवसाय बढ़ने लगा लोग कुछ नया पढ़ने की मांग करने लगे। जिसमें समय के साथ उन्नति होती चली गयी।

रेनॉल्ड्स के लोकप्रिय होने का कारण यही था। जहाँ अनेक प्रकार के नाटक लोगों का मनोरंजन किया करते थे अब वही काम उपन्यासों ने करना शुरू कर दिया। पाठकों का मनोरंजन करने के लिए जासूसी और रहस्यात्मक उपन्यास एक वजह बन गये थे। पाठक किताबघरों या पुस्तकालयों से अक्सर रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को एक दिन के लिए जारी करवाया करते थे। जिनमें जी डब्ल्यू एम् रेनॉल्ड्स के अनूदित उपन्यास हिंदी, बांग्ला, उर्दू और गुजराती में भी उपलब्ध थे। लोगों की आदतों में इनके उपन्यासों को पढ़ना शुमार हो चुका था। लोग न केवल इनके उपन्यासों को

पढ़ रहे थे बल्कि जो लोग आर्थिक रूप से अच्छे थे वे इनके उपन्यासों को खरीद भी लेते थे। चार भाषाओं में किसी विदेश में उपलब्ध होना और पढ़ा जाना उनकी लोकप्रियता को दर्शाता है। सार्वजनिक पुस्तकालयों में लोगों के पढ़ने की आदत पुस्तकालयों की ओर उनका रुख अवश्य दर्शाती है। लेकिन किताबों को खरीदने की तरफ उनकी रुचि को अधिक नहीं दर्शाती हैं। इन सार्वजनिक पुस्तकालयों ने ही उपन्यासों को अपना मार्ग दिया। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों ने भी लोगों का मनोरंजन कर उनका समय व्यतीत (Timepass) करने के बीच अपना स्थान बनाया।

रेनॉल्ड्स के उपन्यास केवल टाइमपास ही नहीं थे, बल्कि लोग उनसे कुछ सीख भी रहे थे। *दी हिस्ट्री ऑफ बुक इन साउथ एशिया* में फ्रेंचेस्का कहती हैं कि “हमें यह कभी ज्ञात नहीं हो पायेगा कि भारतीय पाठकों ने रेनॉल्ड्स से क्या सीखा। हम केवल अनुमान के आधार पर ही खोज कर सकते हैं कि लोग उनसे क्या सीख रहे थे या क्या सीखना चाहते थे?”<sup>354</sup> भारतीयों का जीवन उनके उपन्यासों में आने वाले पात्रों से बहुत भिन्न था। लेकिन उन सभी में भारतीयों को अपने देश से जुड़ी मानसिकता और नैतिकता के दर्शन होते थे। इसी सन्दर्भ में यदि रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को देखा जाए तो उनके कथानक में नैतिकता, पाप-पुण्य, धर्म और प्रेम आदि सभी गुण देखने को मिल जाते हैं। इसी प्रकार के तत्वों के दर्शन भारतीयों को अपनी नीति कथाओं, धार्मिक कथाओं जैसे रामायण और महाभारत आदि में भी होते थे। फ्रेंचेस्का का कहना है कि “शकुन्तला की पूरी कथा या उनके अतिरिक्त अन्य कथाएँ जो महाभारत और रामायण के इर्द-गिर्द घूमती हैं वे हेमशा संयोग और अंतर्संबंधों से जुड़ी हुई होती हैं। ये सभी सम्बन्ध बार-बार ईश्वरीय शक्ति के होने का

---

354

<https://books.google.co.in/books?id=nBOoDQAAQBAJ&pg=PT410&lpg=PT410&dq=francesca+orsini+views+about+reynolds&source=bl&ots=Bzk5t9CfuQ&sig=HM7WO6o2e5eYAPYApcvcl3E-A7Q&hl=en&sa=X&ved=0ahUKewji4onr9bzSAhUGr48KHfhvAsgQ6AEIJDAC#v=onepage&q=francesca%20orsini%20views%20about%20reynolds&f=false>

और उसकी पुष्टि का प्रमाण देते हैं। भारतीय पाठकों को रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में ऐसा बहुत कुछ मिला है जो यह प्रभावी, प्रतीकात्मक और बाह्य रूप से बार-बार दिखाता है कि ऐसी कोई ईश्वरीय शक्ति विद्यमान है। इतना ही नहीं रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में ऐसे बहुत से सुपरिचित तत्व भी मिले हैं<sup>355</sup> प्राचीन काल से ही भारत के लोग महाभारत, रामायण और शकुन्तला को अधिक पसंद करते थे। रामायण और महाभारत तो हिन्दुओं के आदर्श धार्मिक ग्रन्थ थे इनमें पाप-पुण्य की घटनाओं का अचानक से घटना और उसका फल मिलना सम्बंधित होता था। इन सभी को पढ़ने की आदत हिंदी के पाठकों को थी। अनेक संयोग भी इनमें देखने को मिलते थे। इसीलिए रेनॉल्ड्स के संसार को हिंदी के पाठकों ने अपने बहुत करीब पाया। प्रिया जोशी ने भी रामायण और महाभारत के वर्णनों से रेनॉल्ड्स की कथावस्तु में आने वाली घटनाओं से समानता दिखायी है। इस विषय में फ्रेंचेस्का और प्रिया जोशी के विचार एक समान हैं। यही कारण था कि रेनॉल्ड्स के उपन्यास अधिक मात्रा पढ़े गये।

आधुनिक साहित्य की उपज में उपन्यास लिखे जाने लगे थे लोगों में न केवल इन्हें पढ़ने का चाव था बल्कि मनोरंजन पूर्ण उपन्यासों को पढ़ने का इन्हें जूनून भी हो गया था। इसका अर्थ फ्रेंचेस्का के अनुसार यह भी था कि लोग वास्तव में जो पढ़ना चाहते थे और जिस चीज़ की वे मांग कर रहे थे वह उन्हें रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में उपलब्ध हो गया था। साहित्य में लिखे जाने वाले केवल आदर्श पात्रों को ही वे नहीं पढ़ना चाहते थे। उस बुराई से भी सामना करना चाहते थे जो उनके समाज में व्याप्त थीं। साहित्य के माध्यम से अपने ही समाज के कमज़ोर हिस्से को भी देखने का भी उन्हें मौका मिला। इस प्रकार रेनॉल्ड्स के उपन्यासों ने लोगों के जीवन में अपना स्थान बनाया।

---

<sup>355</sup> Do

भारतीय पाठकों को इनके उपन्यास पढ़ना इतना अधिक प्रिय था कि इनके हजारों पृष्ठों को भी वे बिना ऊब के पढ़ जाया करते थे। ये उनके लिए सबसे अधिक प्रिय ब्रिटिश लेखक थे यह कहना तो सही नहीं होगा, परन्तु इन्होंने लोगों की मानसिक भूख शांत की यह अवश्य कहा जा सकता है। इस सन्दर्भ में फ्रेंचेस्का का कहना है कि “ब्रिटिश उपन्यासकार जी डब्ल्यू एम् रेनॉल्ड्स (1814-79) ने लोगों के बीच प्रचलित घटनाओं को प्रभावी रूप में परोसा है, जो न केवल उनका वास्तविक रूप वयक्त करते थे बल्कि उनके लिए सराहनीय भी थे। बड़ी संख्या में भारतीय पाठकों ने उन्हें पसंद किया। इस बात का प्रमाण भारतीय पुस्तकालयों में रखे इनके अनूदित और मूल ग्रन्थ हैं, जिनका उल्लेख वहां की पुस्तक सूची में उपलब्ध है”<sup>356</sup> रेनॉल्ड्स ने अपने उपन्यासों में कुछ लोकप्रिय विषयों को इस प्रकार चुना कि वे मनोरंजन के साथ जीवन के उदाहरण प्रस्तुत करते गए। जो केवल लोगों का मन ही ही नहीं बहलाते थे बल्कि एक बड़ी संख्या के लोगों को अपना पाठक बनाने की क्षमता भी रखते थे। पाठकों की सराहना बटोरने की और आलोचकों के विरोधों के बावजूद रोचक ढंग से अनेक उपन्यास प्रस्तुत करने की क्षमता भी उनमें थी।

फ्रेंचेस्का ओर्सिनी ने भारतीय पाठकों पर की जाने वाली अपनी टिप्पणी को बल देते हुए कहा है कि “मैं इस बात के लिए तर्क देना चाहती हूँ कि भारतीय पाठकों को रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में वह संसार बिना विरोधाभास और निंदा के मिला जिसमें वे निवास कर रहे थे।”<sup>357</sup> ब्रिटेन में रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को पढ़ने वाला पिछड़ा और प्रताड़ित वर्ग ही था। जो इनके उपन्यासों में आने वाले दयनीय पात्रों के हमेशा समर्थन में होता था। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में हमेशा काल्पनिक कट्टरपंथी राजनीती और उसकी प्रतिक्रिया में लोगों का असफल हो जाना ही दिखता है। अपने पात्रों को

---

<sup>356</sup> Do

<sup>357</sup> Do

तानाशाही के सामने उन्होंने हेमशा विफल होते हुए ही दिखाया। उन्होंने कुछ ऐसे विषय भी चुने जिनमें लोग अपने शासकों के सामने विवश हो जाते थे। यह विसंगति समाज में भरपूर मात्रा में भरी पड़ी थी। रेनॉल्ड्स ने अपने उपन्यासों का इसी विसंगति के साथ समापन भी किया है। उनके समाज की यह अवस्था पहले भी थी जिससे लोग परिचित तो थे। लेकिन कैसे इस समस्या का सामना किया जाये वे यह नहीं जानते थे। रेनॉल्ड्स ने उपन्यासों ने उनकी इस दयनीय दशा का वर्णन खुल कर किया और उन्हें समझ भी दी। ब्रिटेन का गरीब और पिछड़ा वर्ग भारत के गुलाम और प्रताड़ित वर्ग के ही समान था। जो आकर्षण का कारण बना।

उन्नीसवीं सदी और आरंभिक बीसवीं सदी के प्रारम्भ में भारत में क्रांति का स्तर उतना अधिक प्रबल नहीं था। लोगों की इस प्रताड़ित और शोचनीय अवस्था के बीच रेनॉल्ड्स के उपन्यासों ने लोगों को अपनी ओर खींचा। समाज के प्रति लेखक के दृष्टिकोण ने ही उन्हें भारत में लोकप्रिय बनाया। उनके उपन्यासों ने बुराई के प्रति प्रतिशोध और प्रतिफल दोनों को ही दिखाया। भारत में लोगों तक यह पहुंचा और उनके विरोधियों और दुश्मनों को एक रूप दिया। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में आये इस प्रकार के अंत ने उन्हें समाज की बहुतसी विसंगतियों पर सोचने की दिशा की ओर अग्रसर किया। स्वतंत्रता प्राप्ति की इच्छा ने लोगों को प्रेरित किया। फ्रेंचस्का का यह भी मानना है कि “ब्रिटिशों और भारतीयों दोनों के ही बीच रेनॉल्ड्स ने किसी प्रकार की क्रांति का संचार नहीं किया। रेनॉल्ड्स अकेले ऐसे मूलभूत उपन्यासकार नहीं थे जो इस यात्रा में भारतीयों का साथ दे रहे थे।”<sup>358</sup>

उनके कहने का अर्थ है कि “यदि कुछ लोग उन्हें मनोरंजन के लिये पढ़ रहे थे तो कुछ लोग निर्देशों के लिए भी पढ़ते थे।”<sup>359</sup> उनके उपन्यासों में उत्तर भारत के

---

<sup>358</sup> Do

<sup>359</sup> Do



हिंदी के पाठकों को प्रतीक रूप में वही मिला जिसे वे खोज रहे थे। सामाजिक गतिशीलता, प्रेम और परिवर्तन को नजरंदाज़ कर भारतीयों ने उनकी नैतिकता का सहगामी बन विलक्षण लेखन के दर्शन किये। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में यथार्थवादी विवरण और प्रभावी किस्से देखने को मिलते हैं। हिंदी के पाठकों ने उनके इस सन्देश को समझा साथ ही समाज की सच्चाई को उसमें खोजा। उनके उपन्यास केवल मनोरंजन का ही साधन नहीं बने। बल्कि समाज का दर्पण भी बने। लोकप्रिय दृष्टिकोण से लिखे हुए इन उपन्यासों को पुराने और नए साहित्य के रूपों को मिलाकर लिखा गया था। इनके उपन्यासों ने पुरानी और नवीन विधा को पहली बार लोगों के सामने रखा और लोगों ने उसे उतने ही रुचिकर ढंग से उन्हें अपनाया भी। उन्होंने यथार्थवादी दृष्टि को लोगों की सामने रखा। उस यथार्थवाद में कहीं-कहीं रुचिकर कल्पनाओं के भी दर्शन होते थे। पाठकों ने उपन्यासों के यथार्थवाद को पसंद किया। जिसने पाठकों की नयी उम्मीदों को बढ़ाया साथ ही दोनों के बीच एक सम्बन्ध स्थापित किया।

रेनॉल्ड्स के उपन्यास इतने अधिक प्रचलित इसीलिए हुए क्योंकि उस समय भारतीयों की रुचि में बदलाव आ रहा था। लोग ब्रिटिशों की गुलामी से छुटकारा पाना चाहते थे। साथ ही वे स्वयं के अस्तित्व की खोज में थे। उन्हें अपनी भावनाएं अभिव्यक्त करने के लिए एक माध्यम मिल गया था। जिसमें वे वाणी का प्रयोग तो नहीं कर रहे थे लेकिन उनकी इच्छाओं की पूर्ति अवश्य हो पा रही थी। दूसरा सांस्कृतिक बदलाव आने का कारण भारत का उपनिवेश बन जाना था। औपनिवेशिक भारत, उसकी संस्कृति और साहित्य में बदलाव, सब कुछ एक-दूसरे के साथ बदल रहा था। अपनी ही संस्कृति पर ब्रिटिशों की संस्कृति का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। रेनॉल्ड्स के विषय में लिखने वाली दूसरी विदुषी प्रिया जोशी हैं-

## प्रिया जोशी

प्रिया जोशी ने थोड़े भिन्न दृष्टिकोण से रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को देखा है। प्रिया जोशी का मानना है कि रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का भारत में आना ब्रिटिश शासन का परिमाण था। “ब्रिटिश शासक रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को भारत लेकर आये केवल यही उनके उपन्यासों के अभिग्रहण का कारण नहीं था। औपनिवेशिक भारत जो ब्रिटेन के शासकों का गुलाम था उसे अपनी पीढ़ा को समझने वाला लेखक मिल गया था। ब्रिटिश शासकों के लिए भारतीय कभी भी एक नागरिक नहीं थे केवल एक विषय थे।”<sup>360</sup> उस समय रेनॉल्ड्स को भारत का पीड़ित और प्रताड़ित मध्यवर्ग पढ़ रहा था। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को पढ़कर पाठक अपने समाज में होने वाली बुराइयों को गहरायी से परखने में सक्षम हो पाए। प्रिया जोशी कहती हैं कि “बंगाल में एक ‘प्रभाहिनी’ पत्रिका छपती थी। जिसमें रेनॉल्ड्स के ‘मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन’ का अनुवाद होता था। रेनॉल्ड्स का यह उपन्यास लन्दन में घटने वाली बुराइयों की ओर संकेत करता है।”<sup>361</sup> जब ‘मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन’ का अनुवाद बांग्ला भाषा में हो रहा था तो वह भी अप्रत्यक्ष रूप से बंगाल में घटने वाली बुराइयों की ओर ही संकेत कर रहा था। उस समय के बंगाल, महाराष्ट्र और उत्तर भारत सहित भारत के अन्य क्षेत्रों में समान सामाजिक और नैतिक विषमताएं भी देखने को मिलती हैं और समाज और स्तर की विषमताएं भारत में बिल्कुल वैसी ही मिलती हैं जैसी कि वे ब्रिटेन में थीं। “हिंदी के पाठकों ने जब अपने दायरे से बाहर निकल कर देखा तब उन्हें भी अपने औपनिवेशिक तंत्र के समान एक और तंत्र मिला। यह शासन तंत्र रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में था जो लन्दन के लोगों को पीड़ित कर रहा था। सच्चाई यह थी कि दोनों ही देशों के समूहों को प्रताड़ित करने वाला एक ही शासन था। यही

<sup>360</sup> Joshi, Priya, *In Another Country: Colonialism, Culture, and the English Novel in India*, Newyork, ColumbiaUniversity Press, 2002, p - 82

<sup>361</sup> Do

कारण था कि रेनॉल्ड्स के उपन्यास हिंदी के पाठकों के बीच कहीं विलुप्त नहीं हुए”<sup>362</sup> रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में पाठकों को वही पीड़ित समाज मिला जो लन्दन के शासक वर्ग से प्रताड़ित हो रहा था। दोनों ओर ये जो दबा और कुचला हुआ समाज था उसने भारतीयों की पीड़ा को शब्द दिए। एक जो लिख रहा था और दूसरा जिसे पढ़ा गया दोनों एक ही समाज में एक ही शक्तिशाली वर्ग के हिस्से थे। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में कोई विरोधाभासी प्रवृत्ति हिंदी के पाठकों को नहीं मिली। इसी प्रवृत्ति ने पाठकों को अधिक आकर्षित किया।

इस सन्दर्भ में प्रिया जी ने ऐनी हम्फ्रेज़ के शब्दों को भी उद्धृत किया है। जो रेनॉल्ड्स के उपन्यासों के लिए उनके ही समान विचार रखती हैं। वे कहती हैं, ऐनी हम्फ्रेज़ ने एक लेख “लोकप्रिय साहित्य और लोकप्रिय राजनीति” के नाम से लिखा है। जिसमें उनका मानना है कि रेनॉल्ड्स के उपन्यास रोमांस और कल्पना के मानक पर खरे नहीं उतरते हैं। इन तत्वों की कमी इनके उपन्यासों में मिलती है। इनके उपन्यासों में यथार्थवाद की राजनीति देखने को मिलती है। इनके उपन्यासों की आलोचना का कारण यही था कि इन्होंने मनोरंजन को यथार्थवाद के साथ परोसा जिसमें वास्तविकता के साथ समाज में फैली राजनीति भी शामिल थी। इनके उपन्यासों में पात्र राक्षसी प्रवृत्तियों के विरोध में रहते हैं साथ ही उस बुराई को परास्त करने की प्रक्रिया में वे बहतर नैतिकता वाले समाज का निर्माण करने का प्रयास दिखते हैं।”<sup>363</sup>

अब यहाँ पर एक बात महत्त्वपूर्ण है कि जिस बहतर समाज की कल्पना भारतीय कर रहे थे वही रेनॉल्ड्स ने भी अपने समाज के लिए वैसी ही कल्पना की थी। ब्रिटिशों के उस राक्षसी व्यवहार से और गुलामी से भारत भी छुटकारा पाना

---

<sup>362</sup> Do

<sup>363</sup> Do, p- 83

चाहता था। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों की लोकप्रियता केवल उनके यथार्थवादी वर्णन से ही नहीं हुई थी। उनके उपन्यासों में ऐसे तत्व भी मिलते हैं जो भारतीय पाठकों को उनकी अपनी स्थिति के समान लगते हैं। रेनॉल्ड्स अपने पाठकों की भावनाओं से अधिक गहरायी से जुड़े हुए हैं। लेखक ने उन संवेदनाओं के दर्शन ही नहीं कराये हैं उन पर टिप्पणी भी की है। साथ ही पाठकों को यह समझाने का प्रयास किया है कि वह अपने पात्रों की परेशानियों को समझ सकते हैं। रेनॉल्ड्स ने रोमांस पर आधारित अनेक उपन्यास लिखे परन्तु वे अपने मूल सिद्धांत का अर्थात् समाज में आने वाले सुधारवाद का प्रदर्शन करते चले हैं जिससे उनका तात्पर्य समाज में सुधार की अपेक्षा से था। वे चाहते थे कि यह सुधार कार्यान्वित हो, लोग समाज में घटने वाली अनेक बातों से अवगत हों, अनेक अत्याचारों का विरोध करने की क्षमता उनमें आये। उनके मूल विचार लोगों के जीवन की मांगों से मेल खाते थे। प्रिय जोशी कहती हैं कि “उन्होंने रोमांस, न्यू गेट कल्पना, गौथिक रोमांस पर आधारित उपन्यास लिखे। परन्तु इनके मूल विचारों ने इन्हें अधिक लोकप्रिय बना दिया था।”<sup>364</sup> जिसके कारण इनके उपन्यासों को अन्य लेखकों की रचनाओं की तुलना में अधिक पढ़ा जाने लगा।

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में एक ओर जहां शासक और पीड़ित वर्ग था वहीं दोनों वर्गों में होने वाले अपराधों की दुनिया भी विस्तार से दिखाई गयी है। रेनॉल्ड्स के ‘लन्दन रहस्य’ में संपन्न और गरीब दोनों ही वर्गों के लोग अपराध की दुनिया में शामिल हैं। संपन्न वर्ग के अपराध तो ढक जाते हैं जिसकी उन्हें कोई सज़ा भी नहीं मिलती है, लेकिन गरीब वर्ग को अपने छोटे-छोटे अपराधों की भी सज़ा मिलती है। वर्षों तक उन्हें जेल में बंद रखा जाता है। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में अत्यधिक अपराधपूर्ण स्थितियां देखने को मिलती हैं। ‘लन्दन रहस्य’ में प्रिया जोशी अपराध को केन्द्रित करते हुए कहती हैं कि “सकारात्मक और नकारात्मक की खाई केंद्र में है।

<sup>364</sup> Do, p – 77

अभिजात वर्ग के लोग किसी भी प्रकार के पाप कर सकते थे। लेकिन गरीबों को कुछ बोलने का भी अधिकार नहीं था। परन्तु गरीबों से कुछ भी पापहो जाने पर वे उन्हें अंधेरी कोठरी में कैद कर दिया करते थे। जंजीरों से बांधना तो आम बात थी।”<sup>365</sup> *लन्दन रहस्य* में जैसे मेलमथ के साथ किया गया। सभा में अपने विचार व्यक्त कर देने पर उसे देश निकाला दे दिया गया। *‘जोसफ विल्मोट’* में जोसफ को झूठी चोरी के इल्जाम में फंसाकर उसे गाड़ीघर में बंद कर दिया था। बलवान का कमज़ोर पर अत्याचार अनेक स्थानों पर देखने को मिलता है। रेनॉल्ड्स ने लगातार राक्षसी निष्ठुरता से व्यवहार करते हुए पात्रों का वर्णन किया है। लेखक इस बात पर ध्यान केन्द्रित करते हैं कि कैसे कुछ पात्र मजबूरी में आकर अपराध की दुनिया में आगे बढ़ते हैं। परन्तु ऐसे भी पात्रों को सम्मिलित किया है जो बुरी से बुरी परिस्थिति में भी अपराध करने की ओर आगे नहीं बढ़ते हैं। जोसेफ इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। नकारात्मक पात्रों को आगे चलकर इसकी सजा मिलती है। कहीं न कहीं ये वर्णन भारतीय पाठकों को यह विश्वास दिला रहा है कि भगवान हैं और अपराध करने वाले को उसकी सजा अवश्य मिलती है। इन सब में कहीं पर भी न्यायालय या पुलिस की कोई भूमिका नहीं होती थी। पाप-पुण्य के तराजू में तुलने पर पात्रों को उसका फल मिल ही जाता है। यही न्यायिक दृष्टिकोण पाठकों को आकर्षित करता है।

रेनॉल्ड्स को लन्दन के कामगार वर्ग के प्रति बहुत अधिक सहानुभूति थी यह केवल इंग्लैंड के लोगों के लिए ही नहीं बल्कि फ्रांस के लोगों के लिए भी थी। उनकी इस प्रजातान्त्रिक सोच के लिए ही लूइस जेम्स कहते हैं “वे समाज के प्रति जागरूक थे यह गुण उनके समय के लगभग किसी उपन्यासकार में नहीं था।”<sup>366</sup> उस समय के सभी लोकप्रिय उपन्यासों में जिस बात की कमी थी वह उनके उपन्यासों में पूरी हो रही थी, यह भी सच है। जितनी बारीकी और भावुकता और अनुभूति-सहानुभूति के

<sup>365</sup> Do, p- 76

<sup>366</sup> Do, P- 75

साथ उन्होंने अपने उपन्यासों को परोसा वह डिकेन्स भी नहीं कर पाए थे। साथ ही अपनी कल्पना के सहारे से अपने साहित्य को मनोरंजनात्मक भी उन्होंने बनाया। उन्होंने संपन्न परिवारों की परम्परा पर ही चोट नहीं की है, उनकी वास्तविकता से आम लोगों को परिचित कराया है। समाज के झूठ से पर्दा हटाया है। कमजोर वर्ग अपने साथ होने वाले अत्याचार के कारण ही अपराध को अपनाते हैं। वही अपराध कर संपन्न वर्ग बच जाता है। प्रिया जोशी के अनुसार लेखक के उपन्यासों में अमीरों की भूमिका “दी मोरल डंग हीप”<sup>367</sup> के जैसी रही है। जो नैतिक और अच्छे होने का ढोंग करते हैं। ऐसी ही भूमिका ब्रिटिश शासकों की भारत में थी।

भारतीय भाषाओं में अनूदित और लोकप्रिय होने के साथ उनके उपन्यासों का विरोध भी किया जा रहा था। जिसका कारण रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में आने वाले कामुकता से भरे प्रसंग थे। बहुत से विद्वानों ने उनके उपन्यासों को स्वीकार ही नहीं किया है। ऐसे में आलोचकों का रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को अश्लीलता की श्रेणी में रखा जाना स्वाभाविक था। परन्तु पाठकों के लिए ये कामुकता भरे प्रसंग मनोरंजन का हिस्सा बनने लगे थे। इस प्रकार के उपन्यासों को उन्होंने मन बहलाने का साधन समझ लिया था। लेकिन अनेक आलोचनाओं के बावजूद भी उनके उपन्यास लोकप्रिय होते गये। प्रिया जी कहती हैं कि “रेनॉल्ड्स एक अच्छे कथावाचक थे, जिससे आलोचक भी इन्कार नहीं करते हैं। रेनॉल्ड्स जानते थे कि उनके पाठकों की किस नस पर हाथ रख देने से वे उन्हें आकर्षित कर पाएंगे वे अक्सर कामुकता भरे प्रसंगों की ओर पाठकों को उत्तेजित दिया कर दिया करते थे और अक्सर ऐसे पोर्नोग्राफिक दृश्यों तक पहुँचकर उन्हें रोक दिया करते थे”<sup>368</sup> ऐसे किस्सों का बहुत से लोगों ने विरोध किया। भारत में ऐसा नहीं था कि लोगों के समक्ष ऐसे कामुकता से भरे प्रसंग पहली बार आये थे। भारतीय साहित्य का रीतिकाल तो इस प्रकार के छंदों और

---

<sup>367</sup> Do

<sup>368</sup> Do, p- 78

अलंकारों से भरा पड़ा है। लेकिन वह वर्णन अधिकतर काल्पनिक होता था जिसका वास्तविक जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं था। रेनॉल्ड्स ने वास्तविक जीवन में स्त्री-पुरुष के बीच घटने वाले इन्द्रियजन्य विषयों को पहली बार लोगों के सामने परोसा था। केवल कामुकता भरे प्रसंगों को पाठकों को दिखाना ही उनका उद्देश्य नहीं था।

उनके कामुकता से भरे प्रसंगों के सन्दर्भ में प्रिय जोशी ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। वे कहती हैं कि रेनॉल्ड्स द्वारा रचित '*Robert Macaire*' नामक उपन्यास का अनुवाद अम्बिका चरण गुप्त ने 'रोबट मकयेर' नाम से 1884 में किया था। प्रिया जोशी के हवाले से यह बात कही गयी है कि "अम्बिका चरण गुप्त जब इनके उपन्यास का अनुवाद करने चले तो उन्होंने सभी अश्लील प्रसंगों को छोड़ कर बाकी की कृति का अनुवाद कर दिया था"<sup>369</sup> अनुवाद करते समय अनुवादक ने इस बात का विशेष ध्यान रखा कि लोगों को उत्तेजित करने करने वाले प्रसंगों और चित्रों को इसमें नहीं जोड़ा जाएगा। प्रिया जोशी के हवाले से जब यह बात कही गयी तो उसमें हिंदी के पाठकों को कामुकता के प्रसंगों से दूर रखने की ओर इशारा किया गया है। ताकि उसका कोई दुष्प्रभाव उन पर न पड़े।

कामुकता से भरे प्रसंगों को दिखाने का मतलब यह भी नहीं था कि वे केवल उन पर ही अडिग रहते थे। इन सब दृश्यों को दिखाने का तात्पर्य भी पाठकों तक किसी संदेश को संचरित करना रहा होगा और वह था समाज का सच। कामुक वर्णन के चरम तक आकर अपने पात्रों को अलग कर देना प्रेम की विफलता को भी दर्शाता है। इनके उपन्यासों की कामुकता उस सम्बन्ध की ओर भी इशारा करती है जो केवल दैहिक हैं। हृदय से जुड़े हुए शारीरिक सम्बन्ध कम ही देखने को मिले हैं। उदाहरण के लिए अमेज़न, प्रिंस के पास आधी रात में आती है। वह प्रिंस के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाती है लेकिन केवल अपना उद्देश्य सिद्ध करने के लिए। दूसरा जोसफ और

---

<sup>369</sup> Do, p - 86

कालिंदी के बीच अक्सर ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं जिसमें वे एक दूसरे से बिना किसी शर्त के प्रेम करते हैं। उनका प्रेम चरम सीमा तक पहुँचता ही है और वे अलग हो जाते हैं। अलग होते ही जोसफ आनाबेल के प्रेम में तड़पने लगती है। कामुकता के प्रसंगों के सम्बन्ध में इस दृष्टिकोण और आलोचकों की आलोचनाओं से अलग हटकर एक और मत प्रिय जोशी का है। “कामुकता भरे प्रसंगों के अंत में आकर रेनॉल्ड्स औपचारिक रूप से अत्यंत नियंत्रित हो जाते हैं। वे कामुकता का वर्णन करते हुए चरम पर पहुँचकर अचानक से अपना रुख बदल लेते हैं। तीव्रता से वे उस पोर्नोग्राफिक प्रसंग से अलग हो जाते हैं, जिसे पकड़ने में इनके समकालीन लेखक थोड़े पीछे रह जाते हैं। उनके उपन्यासों पर हुई यह आलोचना बताती है कि कितने नियंत्रित और स्थिर हैं इनके प्रसंग।”<sup>370</sup> लेखक ने प्रेम की विफलता अधिक दिखाई है। भारत में स्त्री-पुरुष का प्रेम पहले शारीरिक नहीं मानसिक हुआ करता था। दूसरा शारीरिक सम्बन्ध विवाह के बाद ही संभव था। विशेषकर मध्यवर्ग और निम्नवर्ग में। रेनॉल्ड्स ने जो दैहिक प्रेम दिखाया है वह हिंदी के पाठकों ने नए दृष्टिकोण से देखा। ऐसा प्रेम जो भारत के लोगों बीच कम होता था। वे अपने प्रेमी से आत्मिक रूप से जुड़े होते थे। ऐसा वर्णन देखकर वे पारंपरिक प्रेम की सीमा को तोड़ने की एक नयी परिभाषा सीख रहे थे। यही कारण था कि आलोचकों ने उनके इस प्रकार के प्रसंगों की घोर निंदा की। लेकिन रेनॉल्ड्स पाठकों का पथ भ्रमित नहीं कर रहे थे।

रेनॉल्ड्स से प्रभावित होकर कुछ लोग उपन्यास भी लिख रहे थे जैसे रेनॉल्ड्स के उपन्यास ‘लन्दन रहस्य’ के सन्दर्भ में प्रिया जोशी कैलाश चन्द्र मुखर्जी का नाम उद्धृत करती हैं कि “वे स्वयं स्वीकार करते हैं कि उन्होंने एक उपन्यास लन्दन रहस्य की तर्ज पर लिखा था। जिसका शीर्षक था “उदासिनी राज कन्यावर गुप्त कथा” यह एक राजकुमारी के जीवन की गुप्त कथा है। ये कैलाश चन्द्र मुखर्जी द्वारा लिखी गयी

---

<sup>370</sup> Do, p -78



है जिसमें वे स्वयं कहते हैं कि “यह कृति रेनॉल्ड्स के लन्दन रहस्य पर आधारित है।”<sup>371</sup> रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में अधर्म से भरे अनेक काम होते दिखे हैं जिन्हें लन्दन की अँधेरी गलियों में अंजाम दिया जाता था। भारतीय कांसेप्ट के अनुसार समझा जाए तो इसे पापकरना कहा जाता है। कहीं पर शराब के ठेकों का उल्लेख है, कहीं पर नर्तकियां प्रिंस के सामने नग्न नृत्य कर रही हैं, कहीं एक नवजन्मा बच्चे को एक अपराधी के हाथों बेच दिया जाता है और कहीं पर ब्रेस जैसी स्त्रियाँ भोली-भाली लड़कियों को अपने जाल में फंसा कर उनसे वैश्यावृत्ति का धंधा करवाती हैं। ये सब ‘लन्दन रहस्य’ के कथानक के भाग हैं।

“रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में कुछ कमियाँ होते हुए भी उन्हें भारतीय दृष्टिकोण से पाठक पढ़ रहे थे वे उसका कारण यही था कि उसमें स्वयं सुधार के लिए बहुत से सन्देश निहित थे। उदासिनी राज कन्यावर गुप्त कथा के रचनाकार कैलाश चन्द्र मुखर्जी इस उपन्यास के विषय में व्याख्या करते हुए कहते हैं कि “यह रेनॉल्ड्स के मिस्ट्रीज़ ऑफ़ दी लन्दन की प्रकृति पर आधारित कार्य है... लेखक का कहना है कि भारतीय समाज में दुराचार और पापाचार भयंकर रूप से फैला हुआ है दुराचार करने वाले बनारस जैसे स्थानों में जगह पाते हैं। जितने भी भ्रष्ट लोग और पतित पादरी हैं उन सभी की निंदा रेनॉल्ड्स ने अपने उपन्यासों में की है। उसी के समकक्ष बुराई मैंने इस उपन्यास में दिखाई है।”<sup>372</sup> जितनी भी बुराई और दुराचार भारत में मौजूद था वे सब अपने पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए बनारस और पुरी जैसे स्थानों पर जाकर छुपा करते थे। ऐसा नहीं था कि ब्रिटिशों के आने के बाद ही भारत में अनेक अधार्मिक कृत्य होने लगे थे। ब्रिटिशों के आगमन से पहले भी लोग पापकर्म में संलिप्त थे। ऐसे ही विषयों और उपन्यासों में आने वाली समानताओं ने लोगों के मस्तिष्क को अपनी ओर खींचा।

<sup>371</sup> Do

<sup>372</sup> Ibid, p- 82

अंगरेज़ जाति ने न केवल भारतीयों के जीवन में ही कष्ट उत्पन्न किये बल्कि अपने लोगों को भी नहीं छोड़ा। इंग्लैंड में लोग किस तरह से इन बुराईयों के कारण सड़कों पर भूख से मर रहे हैं इसके लिए रेनॉल्ड्स का भी मानना है कि इंग्लैंड एक ऐसा देश है जो दुनिया में सबसे शक्तिशाली और संपन्न है लेकिन फिर भी वहां पर हृदय-विदारक और छुपे हुए अपराध होते हैं स्त्री-पुरुष सड़कों पर भूख मरते हैं। गरीब लोग अपराध इसीलिए करते हैं ताकि उन्हें रहने और खाने के लिए जेल या पागल खाना नसीब हो जाए। भारत में अंग्रेजों के शासन में भी लगभग इसी प्रकार की समस्याओं का सामना भारतीयों को करना पड़ा था। हिंसात्मक व्यवहार, समानता के साथ व्यवहार न करना, बिना किसी कारण के सज़ा देना और असहनीय व्यवहार करना आदि। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में भारतीयों को किसी विदेशी परम्परा और बाहरी संदेश का अनुभव नहीं हुआ जितना वे उन्हें पढ़ते गए उतना ही अपनापन उन्हें मिलता चला गया। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में समाज की बुराईयों के खिलाफ आवाज़ थी। ऊंच नीच के विरुद्ध वे अपने विचार सामने रखते थे। हमेशा ही उन्हें कमज़ोर वर्ग के हित में पाया गया। ब्रिटिशों के शासन के बाद भारतीय भी कमज़ोर वर्ग की श्रेणी में आने लगे थे। उनकी यही सोच उन्हें भारत में लोकप्रिय बना रही थी।

प्रिय जोशी के विचारों को समझा जाए तो स्वतंत्रता प्राप्ति की इस क्रांति में हथियारों से नहीं शब्दों से लोगों का समझाना आवश्यक था। उन्हें समझाने के लिए लेखक ने उदाहरणों का सहारा लिया। जिस संदेश आदि की तलाश भारतीय पाठक कर रहे थे रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को पढ़कर पाठकों को वही मिला जिसे वे ढूँढना चाहते थे। जिस तरह के तौर तरीके, आर्थिक जीवन और समझदारी को वे देखना चाहते थे वह सब आलोच्य लेखक की भिन्न कथावस्तुओं में उन्हें देखने को मिला। “न तो प्रैट न ही अन्य कोई स्पष्ट रूप से इस बात से अवगत करा सकता है कि ब्रिटेन का जो

साहित्य भारत पहुंचा उसने किस तरह से भारतीय पाठकों को अपनी ओर खींचा। कैसे ब्रिटेन के साहित्य ने भारतीय पाठकों की पहले से ही विद्यमान भावनाओं पर अपने विचार अंकित किये।<sup>373</sup> प्रिया जी का स्वयं मानना है कि उस समय जो साहित्य भारत लाया जा रहा था वह इस प्रकार भारतीयों की भावनाओं को भड़काने में आग का काम करेगा यह किसी को नहीं पता था।

भारत में रेनॉल्ड्स की लगातार लोकप्रियता का वर्णन करना कठिन है। मेरी जानकारी में कोई भी भारतीय पुस्तकालय भारत में उस समय ऐसा नहीं था जिसमें रेनॉल्ड्स के पैनी सीरील्स वहां की किताबों में सूचीबद्ध न हो। क्षेत्रीय प्रकाशकों या लन्दन के जॉन विक्सर्स के द्वारा प्रकाशित किताबें हर पुस्तकालय में मिल ही जाती थीं। एक लेखक जिसके उपन्यास भारत के अधिकतर पुस्तकालयों में उपलब्ध थे उसके लिए कैसे नकारात्मक विचार उत्पन्न हो सकते थे? किस आधार पर हम यह प्रश्न उठा सकते हैं कि वे समाज को सही सन्देश नहीं दे रहे थे। भारत में इनके उपन्यासों को लेकर जितने भी प्रश्न उठे उन सब में एक तथ्य अवश्य महत्त्वपूर्ण था कि इनकी कल्पनाएँ किसी व्यक्ति विशेष पर आधारित नहीं थीं। एक समाज की संस्कृति जो ब्रिटिशों की फैलाई राजनीति की गुलाम थी वह उससे स्वतंत्रता चाहती थी। उसी पीड़ा का समर्थन वे करते रहे और लोगों को सहानुभूति देते रहे

प्रिया जोशी कहती हैं कि उन्हें यह नहीं पता है कि भारत में रेनॉल्ड्स के उपन्यास कैसे आये पाठकों को कैसे प्राप्त हुए। वे कहती हैं - "मैं यह पहले ही कह चुकी हूँ कि सामाजिक सन्दर्भ में भारतीय पाठक रेनॉल्ड्स के उपन्यास पढ़ रहे थे वे परिस्थितियाँ ब्रिटिश पाठकों से भिन्न थीं। पर मैं इस बात पर भी जोर देना चाहूंगी कि दोनों के सन्दर्भ और परिवेश भिन्न थे और पूर्ववर्ती पाठकों से तत्कालीन पाठकों की संख्या भी भिन्न थी। रेनॉल्ड्स और अन्य ब्रिटिश साहित्यकारों के उपन्यासों को

---

<sup>373</sup> Do, p – 91

पढ़ने वाले भारतीय पाठक किसी एक वर्ग के नहीं थे जैसे ब्रिटेन के विशिष्ट वर्ग के पाठक थे। भारत का सम्पूर्ण समाज उन्हें पढ़ रहा था। यह उन्नीसवीं सदी के भारत में साक्षर हुए पाठकों की पढ़ने की रुचि को दिखाता है। बहुत कम संख्या में ही लोग अंग्रेजी के उपन्यास पढ़ते थे। अंग्रेजी के उपन्यास पढ़ने वालों में उच्च वर्ग के कुछ शिक्षित लोग तथा निम्न मध्यवर्ग का कुछ पेशेवर वर्ग भी था। अधिक संख्या में जो लोग उनके उपन्यासों को पढ़ रहे थे वे क्षेत्रीय भाषाओं के पाठक थे जो अंग्रेजी पाठकों के समान अनुभव कर रहे थे। रेनॉल्ड्स के उपन्यास औपनिवेशिक भारत की समस्याओं को पहचानने में उनके सहायक बने। विशेष रूप से देखा जाए तो रेनॉल्ड्स ने जिस प्रकार का साहित्य लोगों को परोसा है, उसमें भारतीयों और ब्रिटिशों के मित्र और दुश्मन एक ही थे।<sup>374</sup>

प्रिया जी के विचारों के बाद मिनाक्षी मुखर्जी के विचार आते हैं:-

### मिनाक्षी मुखर्जी

मिनाक्षी मुखर्जी ऐसी पहली विदुषी हैं जिन्होंने आरंभिक समय में लिखे जाने वाले उपन्यासों में अनेक प्रकार की उलझनों को पहचाना। उनका मानना था कि औपनिवेशिक भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियों के कारण ही भारत में बदलाव आये। वे उन कारणों की खोज करना चाहती थीं जो नयी शैली में साहित्य को लिखने के लिए उत्तरदायी रहे हैं। भिन्न-भिन्न भारतीय भाषाओं में जो बदलाव देखने को मिले वे सब इन्हीं नवीन कारणों से हुए इन बदलावों ने लोगों की विचारधारा को बदल कर रख दिया। मिनाक्षी जी का मानना है कि सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों ने साहित्यिक शैली को आकार देने में सहायता की है। उनकी धारणा है कि भारत में उपन्यास एक उधार की शैली नहीं था, बल्कि ब्रिटिश शासन द्वारा

<sup>374</sup> Joshi, Priya, *In Another Country: Colonialism, Culture, and the English Novel in India*, Newyork, Columbia University Press, 2002, p -88

उन्नीसवीं शताब्दी में शुरू की गई अंग्रेजी शिक्षा का एक सीधा परिणाम था - जो लंबे समय तक निर्विवाद बना रहे। हिंदी के साहित्यकारों को स्थानीय और अन्य संस्कृतियों के विदेशी साहित्य से लिए गये विचार प्रभावित करते रहा। नयी परिस्थितियों की बहुलता ने साहित्यकारों को भारत में सोचने और समझने की नयी दिशा और कारण दिए। लोगों के यथार्थ जीवन में क्या बीत रहा था, उपन्यासों को पढ़ने और जानने का शायद यही एक कारण था। ब्रिटिश उपन्यासों में उस समय जो लिखा जा रहा था वह समाज का सच था।

औपनिवेशिक भारत की यह विडंबना थी कि वे उपन्यास लिखने के लिए ब्रिटिश सभ्यता के निचले स्तर के ही उपन्यास देखा करते थे। यह भी सत्य था कि इस प्रकार के तीसरी श्रेणी के उपन्यास भारत में अधिक बिका करते थे। उस समय जो भारतीय उपन्यास पढ़ रहे थे वे मनोरंजन के लिए पढ़ते थे। अपनी लेखन प्रेरणा भी लेखक ऐसे ही उपन्यासों में ढूंढते थे। उच्च स्तर के लेखकों से अधिक प्रचलित साधारण से लेखकों के उपन्यास हो जाया करते थे। “उन्होंने विक्टोरियाकाल के बेस्ट सेलर जी डब्ल्यू एम् रेनॉल्ड्स द्वारा रचित दी सीमस्ट्रेस को अपना आदर्श बना उपन्यासों की रचना की थी।”<sup>375</sup>

मराठी के पहले उपन्यासकार हरी नारायण आप्टे थे। जिन्होंने यह समझा कि मूल उपन्यास लिखने से अच्छा ही है कि रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को अनूदित किया जाए। उन्होंने रेनॉल्ड्स का ‘*The Seamstress*’ नामक उपन्यास अनूदित किया था। उनके शब्दों को मिनाक्षी मुखर्जी ने रेखांकित किया है “वे स्वयं कहते हैं कि मैं हरिनारायण आप्टे मराठी का पहला प्रमुख साहित्यकार हूँ। मैंने सोचा मूल उपन्यास लिखने से बेहतर रेनॉल्ड्स के दी सीमस्ट्रेस को अनूदित करना ही अच्छा होगा।”<sup>376</sup>

<sup>375</sup> Mukherjee, Meenakshi, *Realism and Reality*, Oxford, Oxford University Press, 1999, p- 78

<sup>376</sup> Do, p - 78

आप्टे के इन शब्दों से ज्ञात होता है कि वे सस्ते बिकने वाले उपन्यासों को हीन कोटि या निम्न स्तर का नहीं समझते थे। इन उपन्यासों को पढ़ने के पीछे उनका केवल एक ही उद्देश्य था कि वे उनसे कुछ सीखना चाहते थे। विक्टोरियाकाल के ऐसे उपन्यासकारों से उन्होंने प्रेरणा ग्रहण की जिनको अंग्रेजी साहित्य में भी कोई स्थान प्राप्त नहीं हुआ था।

आधुनिक साहित्य मध्यवर्गीय समाज के बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक था। जो एक-दूसरे से आपस में विचार विमर्श करने के लिए विषय और मुद्दे लेकर आया और इस सदी में छपने वाले तमिल साहित्य की मुख्य धारा भी बना। मध्यवर्ग के पाठकों ने इस प्रकार के उपन्यासों को या उनमें लिखी कहानियों को उत्साह के साथ पढ़ना शुरू किया लेकिन बौद्धिक वर्ग के बहुत से लोग ऐसी भी थे जिन्होंने आधुनिक उपन्यासकारों का तिरस्कार भी किया था। मध्यकालीन विक्टोरिया युग का लोकप्रिय साहित्य, जिसे अंग्रेजी के विद्वानों ने साहित्य की श्रेणी में कभी नहीं गिना था। ऐसे ही साहित्यकारों में जी डब्ल्यू एम रेनॉल्ड्स का नाम भी आता है। इस प्रकार के साहित्य की विरोधी दृष्टि में रेनॉल्ड्स के उपन्यास हमेशा से ही चर्चा में रहे हैं। तमिल भाषा के आरंभिक उपन्यासकार इनकी उपन्यास शैली का अनुकरण करते दिखते हैं। न केवल इनकी शैली का ही अनुकरण किया गया बल्कि इनके उपन्यासों के अनुवाद और रूपांतरण भी हुए। मिनाक्षी जी का मानना है कि ये सभी रूपांतरण और अनुकरण तमिल के लेखकों ने चोरी छिपे किये थे। ऐसा बहुत से लेखक उस समय कर रहे थे। मिनाक्षी मुखर्जी ने तमिल उपन्यासकारों और रेनॉल्ड्स पर टिप्पणी करते हुए कुछ विचार प्रकट किये हैं। उनका कहना है कि “बाज़ार में जिस प्रकार की मांग हो रही थी और लोग जिस प्रकार का साहित्य पसंद कर रहे थे उसने वर्षों से चली आ रही परम्परा को तोड़ दिया था। तमिल साहित्य इस परम्परा में सबसे आगे था। औपनिवेशिकता से प्रभावित होकर तमिल साहित्य की किताबों को छापने के

तरीके में बदलाव आया। तमिल मध्यवर्ग का बौद्धिक समाज लगातार अंग्रेजी के उपन्यासों को पढ़ कर या उनसे प्रभावित होकर अपने लिए सतर्क हो गया था। साथ ही जिन उपन्यासों की लोकप्रियता थी उन्होंने तमिल पाठकों की मानसिकता पर गहरा प्रहार किया था। किस प्रकार का साहित्य छप रहा था, किस कथावस्तु के कारण वे इतने लोकप्रिय हुए साहित्य की ऐसी कौन-सी कहानियाँ थीं जिन्होंने पाठकों में पढ़ने की आदत का विकास किया। यह सब जानना आवश्यक हो गया था।<sup>377</sup>

तथाकथित रूप से वे यह भी कहती हैं कि “बहुत से तमिल लेखकों ने विक्टोरियाकालीन उपन्यासों का अनुकरण चोरी छिपे किया था। उस समय के जो भी उपन्यासकार इनका अनुकरण कर रहे थे उन्होंने कहीं पर भी रेनॉल्ड्स का उल्लेख नहीं किया था। वे लोग खुले आम ये उपन्यास लिखते थे जिनके पाठक भी बहुत अधिक थे।<sup>378</sup> मिनाक्षी मुखर्जी ने किसी लेखक का नाम न देते हुए कहा है कि उस समय इनके उपन्यासों का अनुकरण एक से अधिक तमिल लेखक कर रहे थे। तमिल भाषा में छपने वाली एक पत्रिका के अनुसार जिन भी लेखकों ने उस समय इंग्लैंड के लोकप्रिय साहित्य का अनुकरण किया या उसका अभिग्रहण किया उनके उपन्यास सफलता को कम ही प्राप्त हुए। परन्तु इन्होंने उन लोगों के लिए अच्छे उद्धरण स्थापित किये जो उपन्यास लिखने का प्रयास कर रहे थे।

लोगों के बीच ऐसी मान्यता प्रचलित थी कि रेनॉल्ड्स के उपन्यास पढ़ने से इस देश की आध्यात्मिक प्रवृत्ति को नुकसान होगा। इससे भी अधिक विद्वानों का यह मानना था कि रेनॉल्ड्स के उपन्यासों ने पाठकों में कामुक भावना का प्रचार किया। बार-बार इनके उपन्यासों पर लोगों का परागमन, परास्त्रीगमन और व्याभिचार और गंदे प्रसंगों तथा अय्याशियों के प्रसंगों से भरे होने का आरोप लगता था। साथ ही इनके उपन्यासों पर ये भी आरोप लगाये गए कि ये लोगों को ऐसे घिनौने प्रसंगों की

<sup>377</sup> Mukehrjee, Meenakshi (Ed.), *Early Novels in India*, New Delhi, Sahitya Akademi, 2002, p - 86

<sup>378</sup> Do, p - 86

ओर उकसाते हैं। इतने अधिक आरोप लग जाने के पश्चात अब लोग इनके उपन्यासों को खुले आम नहीं पढ़ सकते थे। अब इन्हें पढ़ने का तरीका ढूँढा गया। जिस सन्दर्भ में मिनाक्षी जी कहती हैं कि “रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को पढ़ने के लिए छुप कर पढ़ने का तरीका ही लोगों के बीच प्रचलित हुआ। पहला लोग इनके उपन्यासों को सस्ती दुकानों से खरीद लेते थे। दूसरा विकल्प यह होता था कि वे पुस्तकालयों के कोनों में बैठकर अपने घर वालों तथा मित्रों से छुप कर उपन्यास पढ़ा करते थे। मिनाक्षी जी का यह भी मत है कि भारत में के जिन घरों में स्त्रियों को घर के भीतर परदे में रखा जाता था, उन घरों में इस प्रकार के उपन्यास पढ़ना मना था। जिन आलोचकों ने इनके उपन्यासों की आलोचना की उनके लिए सबसे अधिक डरने वाली बात यह थी कि ऐसे उपन्यासों का भारतीय महिलाओं पर क्या असर होगा। केवल महिलाएं ही नहीं, युवा पीढ़ी का भी जो देश का भविष्य थे।”<sup>379</sup> रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को अश्लीलता की श्रेणी में रखने में आलोचकों ने समय नहीं लगाया। इन सब के पीछे वे एक बात भूल गये थे कि रेनॉल्ड्स इन उपन्यासों के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत कर रहे थे जिसके पीछे लोगों में क्रांति पैदा करने का उनका कोई उद्देश्य नहीं था। जैसे-जैसे वे लिखते चले गये वैसे-वैसे उनके उपन्यासों की मांग बढ़ती गयी। यदि लेखक समाज की रूचि को ध्यान में रखकर उपन्यास लिखने लगा तो वह अपनी कला के साथ अन्याय करेगा। लोगों ने जो भी इनके उपन्यासों में देखा वह वर्ग विशेष के समस्याओं के लिए नहीं लिखा गया था। पाठकों के देखने का अपना नज़रिया ही पाठकों को प्रभावित करता गया।

---

<sup>379</sup> Do, p – 87



## रेनॉल्ड्स के उपन्यासों से प्रभावित होने वाले हिन्दी के उपन्यासकार

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को लेकर उत्पन्न होने वाली लोगों की रुचि कोई साधारण बात नहीं थी। न केवल अनूदित उपन्यास पढ़ने तक ही हिन्दी के पाठक सीमित थे। वे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से भी उनसे प्रभावित हो रहे थे। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों से प्रभावित होकर ही हिन्दी के पाठकों में उपन्यास लेखन की इच्छा का उद्भव हुआ, ऐसा तो नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि उस समय अंग्रेजी के अन्य उपन्यासकारों के उपन्यास भी पाठक पढ़ रहे थे। लेकिन इस बात को भी नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता है कि उस समय सबसे अधिक अनुवाद जिस ब्रिटिश उपन्यासकार की रचनाओं के हुए वे जी डब्ल्यू एम् रेनॉल्ड्स ही थे। इन्हें न केवल ब्रिटेन में बल्कि भारत में भी सबसे अधिक पढ़ा गया। उपन्यास पढ़ने और लिखने की प्रक्रिया में कुछ आरंभिक उपन्यासकार व रचनाकार भी उनसे प्रभावित हो रहे थे। जिनमें से हिन्दी के कुछ उपन्यासकारों पर निम्नलिखित रूप से रेनॉल्ड्स का प्रभाव नज़र आता है:

### किशोरी लाल गोस्वामी जी

शुरूआती दौर में जब हिन्दी साहित्य में उपन्यास की विधा सही ढंग से विकसित नहीं हो पायी थी, उस समय भी गद्य में लिखी गयी कुछ रचनाओं को उपन्यासों की श्रेणी में ही रखा जाता था। ऐसे में जो रचनाएँ तलिस्मि और ऐय्यारी के किस्सों से भरी होती थीं लोग उन्हें ही पढ़ना पसंद करते थे। इसी बीच किशोरीलाल गोस्वामी ने ऐतिहासिक विषयों पर आधारित उपन्यासों को लिखना आरंभ किया। किशोरीलाल गोस्वामी जी का जीवनकाल केवल हिन्दी साहित्य की सेवा में ही बीता है। इन्हें हिन्दी का पहला ऐतिहासिक उपन्यासकार माना जाता है। इनके उपन्यास केवल ऐतिहासिकता से सम्बंधित हैं। इनके उपन्यासों का सामाजिकता से कोई

सम्बन्ध नहीं है। इनके ऐतिहासिक उपन्यासों में रोमानी प्रवृत्ति अधिक मिलती है। इनके उपन्यासों में एक ओर हिंदुत्व और उनके इतिहास का वर्णन देखने को मिलता है तो दूसरी ओर मनोरंजन के नाम पर अश्लीलता का समावेश भी है। ऐतिहासिकता की नयी दिशा में लिखे जाने वाले इन उपन्यासों का रूप जल्दी से लोगों को स्वीकार्य नहीं हुआ।

“गोस्वामी जी के ऐतिहासिक उपन्यासों पर रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का प्रभाव भी लक्षित होता है। 1890 के आसपास रेनॉल्ड्स के उपन्यास उर्दू में प्रकाशित होने लगे थे। 1900 ईस्वी के बाद हिंदी में रेनॉल्ड्स के उपन्यास भी भारी संख्या में अनूदित-प्रकाशित हुए। 1910 ई. तक उसके लायला, फाउस्ट और राई हाउस प्लाट, लक्स ऑफ़ द हरम, जोसफ विल्मोट, मिस्ट्रीज़ ऑफ़ द कोर्ट ऑफ़ लन्दन, उमरपाशा, आदि बहुखंडी उपन्यासों के अनुवाद हिंदी में प्रकाशित और पाठकों के बीच लोकप्रिय हो चुके थे। ध्यातव्य है कि रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को अंग्रेजी साहित्य में कोई मान्यता प्राप्त नहीं है।”<sup>380</sup>

तिलिस्म और एय्यारी से अलग हटकर गोस्वामी जी ने उपन्यास लिखे थे, फिर भी वे तत्कालीन पाठकों के बीच लोकप्रिय हो गये, इसका सबसे बड़ा कारण तत्कालीन पाठकों की रहस्य, रोमांच और काम-वर्णनों में रुचि थी। “ज्ञानचंद जैन के अनुसार किशोरीलाल गोस्वामी जी उपन्यास लेखन में रेनॉल्ड्स को अपना गुरु मानते थे। जैन साहब ने तारा पर रेनॉल्ड्स के ‘लन्दन रहस्य’ की ‘गहरी छाया’ देखी है, यद्यपि हिंदी में उसका अनुवाद तारा (1902) के बाद, 1907 ई. के लगभग प्रकाशित हुआ था।

---

<sup>380</sup> राय, प्रो. गोपाल, *हिंदी उपन्यास का इतिहास*, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, राजकमल प्रकाशन, 2002, नयी दिल्ली, पृ- 85-86

गोस्वामी जी के उपन्यास 'तारा' पर रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का प्रभाव है इसका कहीं पर विस्तार से वर्णन प्राप्त नहीं हुआ है। लेकिन तारा के सन्दर्भ में गोपाल राय की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत की जा सकती हैं "इन विवरणों से मुस्लिम बादशाहों और शहजादों-शहजादियों की विलासप्रियता, कपटाचरण तथा अंतःपुरी षड्यंत्रों का पता चलता है, जिनका अतिरंजित वर्णन गोस्वामी जी के ऐतिहासिक रोमांसों में मिलता है।"<sup>381</sup> 'तारा' उपन्यास पर रेनॉल्ड्स का कितना प्रभाव है इसका कहीं पर विस्तार से उल्लेख नहीं मिला है। गोपाल राय जी ने इस उपन्यास को गोस्वामी जी का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना है। इसके पीछे का कारण यही रहा होगा कि गोस्वामी जी ने 'तारा' की कथा को रहस्य और चमत्कार के साथ रोचक तरीके से आगे बढ़ाया है। इस उपन्यास में रेनॉल्ड्स के ही समान वे पाठकों का मार्गदर्शन भी करते हुए चलते हैं। किस्सागो की भूमिका वे इस उपन्यास में निभाते हैं और पाठकों को बार-बार संबोधित करना अपना कर्तव्य समझते हैं। इनके इस उपन्यास में एक-एक करके रहस्य खुलते जाते हैं जो रेनॉल्ड्स की कथा से समानता रखते हैं।

गोस्वामी जी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास 'लखनऊ की कब्र व शाही महलसरा' पर रेनॉल्ड्स का प्रभाव दिखता है। यह उपन्यास सात भागों में लिखा गया है। यह गाजिउददीन हैदर और नसीरुद्दीन हैदर पर आधारित है। उनके उपन्यास में नसीरुद्दीन हैदर और उनके पिता के सामन्ती समाज का पतन दिखाया गया है। इस उपन्यास में गोस्वामी जी ने नवाबों और उनकी बेगमों के अय्याशी भरे जीवन का चित्रण किया है। गोस्वामी जी के उपन्यासों में लिखा है कि महल के जशनों में जिन स्त्रियों को नाचने के लिए बुलाया जाता था उन्हें परियों के नाम से संबोधित किया जाता था। इनके महलों में समय-समय पर अय्याशी भरे जशन होते थे। समान वर्णन रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में भी देखने को मिला है जिसमें प्रिंस रीजेंट की अय्याशियां का चित्रण है।

---

<sup>381</sup> वही, पृ- 81

एक बार देश के शासक के साथ सभा में बैठने का यश प्राप्त करते ही वे लोग विलासी जीवन में ही व्यस्त हो जाते थे। इनमें न केवल पुरुष ही शामिल नहीं थे स्त्रियाँ भी इन अय्याशियों का हिस्सा थीं। जलसों में मनोरंजन के नाम पर स्त्री पुरुष एक-दूसरे को शारीरिक रूप से आकर्षित करने के लिए भाग लेते थे। थिएटर में नाटक की थीम ऐसी रखी जाती थी जिनमें अत्यंत कामुक दृश्यों का होना अनिवार्य था। महल में रहने वाले अधिकारियों की पत्नियां नाटक में प्रिंस के साथ भाग लिया करती थीं। महल में कुछ अधिकारियों की पत्नियां ऐसी भी थीं जिनके प्रिंस के साथ शारीरिक सम्बन्ध भी थे। उनके पति को यह ज्ञात होने पर भी वे इस बात का कोई विरोध नहीं करते थे। साथ ही महल में अपनी पत्नियों को छोड़ अन्य औरतों के साथ जमघट भी लगाए रखते थे। कोई सामान्य वर्ग का व्यक्ति तो इस प्रकार के जलसों में यदि गलती से बैठ भी जाए तो शर्म के कारण वहां से उठ कर चला जाएगा। उदाहरण के लिए जब जैसोलीन प्रिंस से रानी केरोलाइन के बारे में बात करने के लिए गया था तब इस जलसे का टिकट उसे प्रिंस की बहन अमीलिया से प्राप्त हुई थी।

‘लखनऊ की कब्र व शाही महलसरा’ उपन्यास के सन्दर्भ में बद्रीदास जी का भी कहना है कि “आलोच्यकाल में अंग्रेजी-उपन्यास का प्रभाव मुख्यतः रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का प्रभाव है। ‘लन्दन-रहस्य’ के आदर्श पर अनेक रहस्यमूलक उपन्यास लिखे गये। किशोरीलाल गोस्वामी लिखित ‘लखनऊ की कब्र’ उसकी अच्छी नकल है। रेनोल्ड्स के नग्न यथार्थवाद, घटना -वैचित्र्य और प्रेमभाव से गंभीर लेखक भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके जासूसी उपन्यास की विधि और कला अंग्रेजी की विशिष्ट देन है।”<sup>382</sup>

जिस प्रकार का चित्रण गोस्वामी जी ने किया है, वह रेनॉल्ड्स से प्रभावित लगता है। इस चित्रण के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि उन्होंने जिन

<sup>382</sup> बद्रीदास, हिंदी उपन्यास पृष्ठभूमि और परम्परा, कानपुर, ग्रंथम, 1966, पृ- 430

शासकों पर आधारित काल्पनिक चित्रण किया है वह प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से उनके इस उपन्यास पर रेनॉल्ड्स के साहित्य का अभिग्रहण प्रदर्शित करते हैं। रेनॉल्ड्स ने जैसे 'लन्दन रहस्य' में ऐतिहासिक तत्वों को महत्त्व दिया है वैसे ही किशोरीलाल गोस्वामी ने 'लखनऊ की कब्र' में भी दिया है। हालाँकि गोपाल राय का कहना है कि "गोस्वामी जी ने शाही दरबार तथा शाही महलसरा के चित्रण के लिए विलियम नाइटिन की किताब *ए प्राइवेट लाइफ ऑफ़ एन ईस्टर्न किंग* से सहायता ली थी।"<sup>383</sup> परन्तु यदि हम यह मान भी लें तो यह नहीं कहा जा सकता है कि इनके लिखे इस उपन्यास पर रेनॉल्ड्स के उपन्यासों के अभिग्रहण का प्रभाव बिल्कुल भी नहीं था।

गोस्वामी जी के उपन्यासों पर खत्री जी और रेनॉल्ड्स का प्रभाव नज़र आता है। इसकी पुष्टि गोपाल राय करते हुए कहते हैं कि "उपन्यास की कसौटी पर परखें तो खत्री जी के उपन्यास भी रोमांस ही हैं। गोस्वामी जी के ऐतिहासिक उपन्यासों पर खत्री जी तथा रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का प्रभाव भी स्पष्ट है।"<sup>384</sup> इंग्लैंड के महाराज के महल में भी लोग एक बार 'पीयर' (उच्चाधिकारी) की पदवी प्राप्त करने के बाद अय्याशी से भरा जीवन व्यतीत करते थे। इस सन्दर्भ में गोपाल राय का कहना है कि "गोस्वामी जी के उपन्यासों पर रेनॉल्ड्स के प्रभाव को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। जिस प्रकार से उनमें बलात्कार, पाशविक दुराचार, हत्या, नग्न रति व्यापार आदि का चित्रण किया गया है और जिसकी चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने 'समालोचक' के अगस्त 1903 अंक में तीखी आलोचना की थी, वह रेनॉल्ड्स से प्रभावित है। गोस्वामी जी के ये उपन्यास चुम्बन, आलिंगन और रतिक्रिया के नग्न वर्णनों से भरे हुए हैं। इस तरह के वर्णन केवल मुसलमान पात्रों के प्रेम प्रसंगों में ही मिलते हैं। उन्होंने

<sup>383</sup> राय, प्रो. गोपाल, *हिन्दी उपन्यास का इतिहास*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2002, पृ- 89-90

<sup>384</sup> वही, पृ- 90

काम-व्यापार वर्णनों को उत्तेजक बनाने का प्रयत्न किया है तथा बार-बार उनकी आवृत्ति भी की है।<sup>385</sup> इस प्रकार अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में कल्पना का समावेश कर उन्होंने उपन्यास लिखा क्योंकि वे रेनॉल्ड्स से प्रभावित थे। इसीलिए उनके समान चित्रण भी उनमें देखने को मिलता है।

गोस्वामी जी ने रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अध्ययन अवश्य किया था। उनके उपन्यासों का अभिग्रहण करने का ही परिणाम था कि वे रेनॉल्ड्स के समान ही कथानकों का चयन कर पा रहे थे।

### देवकीनंदन खत्री

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों के विषय में एक अन्य प्रश्न यह उठता है कि जब ये इतने अधिक विवादित लेखक थे तो भारत में ये इतने प्रचलित कैसे हुए किसी विशेष उद्देश्य से तो उनके उपन्यास भारत नहीं लाये गए थे। इस बात को फ्रेंचेस्का और प्रिया जोशी दोनों ही स्वीकार करती हैं कि वे नहीं जानती कि रेनॉल्ड्स के उपन्यास भारत कैसे आये। जो महत्त्वपूर्ण प्रश्न था वह यह कि रेनॉल्ड्स के उपन्यास इतने प्रचलित हुए कैसे? किन लोगों ने उनके अनुवाद किये और क्यों किये? क्या कारण था उसके पीछे? क्यों कुछ विद्वान या लेखक अपनी रचानाओं में यह बताते हैं कि 'मैंने रेनॉल्ड्स के ... उपन्यास पढ़े या इन उपन्यासों में और हिन्दी के कुछ उपन्यासकारों के बीच में कुछ समानताएं मिलती हैं? जैसा कि यह प्रचलित है और प्रदीप सक्सेना जी का भी कहना है कि उस समय रेनॉल्ड्स को अच्छे स्तर का लेखक नहीं माना जाता था। उनके उपन्यासों में लिखी हुई लन्दन के समाज की सच्चाई और वह सच जिसे दुनिया खुलेपन से स्वीकार नहीं कर सकती थी वो सब कुछ लिखा था। ऐसे में मैनेजर पाण्डेय और राजवाड़े ने भी इनके उपन्यासों को पढ़ने लायक नहीं

<sup>385</sup> राय, प्रो. गोपाल, *हिन्दी उपन्यास का इतिहास*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2002, पृ- 85-86

समझा था। तो क्यों इनके उपन्यास पढ़े जाते थे उसके पीछे का कारण क्या था यह प्रश्न उत्पन्न होता है?

प्रदीप सक्सेना का कहना है कि वे वर्षों तक इनकी कृतियों को खोजते रहे फिर कहीं जाकर बदायूं गुरुकुल के पुस्तकालय में इन्हें 'लन्दन रहस्य' प्राप्त हुआ संभवतः मैनेजर पाण्डेय जी के माध्यम से ही उन्हें रेनॉल्ड्स के बारे में जानकारी प्राप्त हुई हो। इसीलिए ने इन्हें 'रोनाल्ड' के नाम से संबोधित किया था। जब प्रदीप जी रेनॉल्ड्स के उपन्यासों की खोज करने निकले तो यह नाम उनके लिए कोई बाधा उत्पन्न नहीं कर पाया क्योंकि इनकी कृति 'दि मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन' ही थी। इनके प्रति उनकी जिज्ञासा इसीलिए बढ़ती गयी क्योंकि वे जानना चाहते थे कि रेनॉल्ड्स ने ऐसा क्या लिखा है जिससे सभी आलोचक उनसे घृणा करते हैं। इस प्रश्न के उत्तर की प्राप्ति के लिए उन्होंने जो खोज की थी उस विषय में थोड़े कम शब्दों में ही उन्होंने 'तिलिस्मी साहित्य का साम्राज्यवादी विरोधी चरित्र' नामक पुस्तक में तो विस्तार से तो चर्चा नहीं की है लेकिन कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदु अवश्य ही दिए हैं जो उनके उपन्यासों को समझने में सहायक बन पड़े हैं। सक्सेना जी उनके उपन्यासों के बारे में जानकारी देते हुए कहते हैं कि "अन्य भाषाओं में 'लन्दन रहस्य' के अनुवादों के आंकड़े मैं उपलब्ध नहीं कर सका। लेकिन मैंने "दि मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन' की मूल प्रति का जो एक खंड हासिल किया है उस पर वॉल्यूम नं. 4 दर्ज है और साथ ही 'वॉल्यूम सेकण्ड- सेकण्ड सीरीज भी दर्ज है जिससे यह साफ़ हो गया है कि यह कई सीरीज़ में था और हर सीरीज़ के अनेक उपखंड थे जो शीर्षक सहित लिखे गये थे।"<sup>386</sup> प्रदीप जी ने कुछ उपखंडों को शीर्षक सहित भी दिया है। जिसे वे परिच्छेद के नाम से अंकित करते हैं। कुछ नाम जो प्रदीप जी ने दिए हैं वे इस प्रकार हैं :-

<sup>386</sup> सक्सेना, प्रदीप, *तिलिस्मी साहित्य का साम्राज्यवादी विरोधी चरित्र*, दिल्ली, शिल्पायन, 2004, पृ - 191

चैप्टर 90 - दि यंग प्रिंसेस

चैप्टर 91 - दि सेलिस ट्रेजेडी

चैप्टर 92 - दि क्वीन

चैप्टर 93 - दि प्रिंसेस सोफिया एंड हर ब्रदर

चैप्टर 94 - दि विजिटर्स एट सेंट जेम्स<sup>387</sup>

खण्डों और परिच्छेदों की ऐसी समानता प्रदीप सक्सेना ने चंद्रकांता में भी देखी है। “चंद्रकांता की पद्धति में दो चीज़ें हैं भाग कौन सा और बयान कौन सा? सूचना है आरंभिक संस्करण में चित्र भी थे”<sup>388</sup> रेनॉल्ड्स के उपन्यास भी इसी प्रकार से खंडों और भागों में विभाजित हैं। देवकीनंदन खत्री ने रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अभिग्रहण कर चन्द्रकान्ता की रचना की होगी, ऐसा मेरा अनुमान है। जिस प्रकार चंद्रकांता में नए अध्याय की शुरुआत होती है वैसे ही रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में परिच्छेदों की शुरुआत हुई है। जैसे रेनॉल्ड्स ने अपने उपन्यासों को खण्डों में विभाजित किया है वैसे ही ‘चन्द्रकान्ता’ भी खण्डों में लिखी गयी है। इसके अलावा यदि ‘लन्दन रहस्य’ और ‘चन्द्रकान्ता’ के समानता देखी जाए तो “खंडों में विभाजन, अध्यायों की तरह बयान, सामंती वर्गों की लिप्सा और रक्तपात, वर्णन शैली और भाषा-प्रवाह, पतन का विरेचन यानी वस्तु और रूप की ऐसी कितनी ही एकतायें मुझे दिखाई दीं यहाँ तक की पाठकों को संबोधन करने की पूरी तकनीक भी रेनॉल्ड्स के यहाँ है”<sup>389</sup> न जाने ऐसी कितनी ही समानताएं दोनों ही उपन्यासों में देखने को मिलती हैं।

आज के समय में कलकत्ता के नेशनल लाइब्रेरी में भी रेनॉल्ड्स के मूल और अनूदित ग्रंथ उपलब्ध हैं, जिनकी सूची इस अध्याय के अगले भाग में मेंने दी है।

---

<sup>387</sup> ibid, वही, पृ- 192

<sup>388</sup> वही, पृ - 193

<sup>389</sup> वही, पृ - 198



इनके उपन्यासों की एक खासियत यह भी है कि इनके उपन्यासों में परिच्छेदों (सदानंद शुक्ल द्वारा प्रयोग किये गये इनके पाठों के नाम) से सम्बंधित चित्र बने हुए मिलते हैं जिसे सदानंद जी ने वैसे का वैसे ही मूल ग्रन्थ से ले लिया है। प्रदीप जी कहते हैं कि “कीड़ों ने चित्रों में निहित सौन्दर्य पर रहम किया है। ये 52 हैं इनकी पूरी सूची है। ये पुस्तक का जो प्रथम संस्करण है, 1855 में छपी है मेरे पास है और कागज़, स्याही और सौन्दर्य 150 वर्ष बाद भी सुरक्षित है इसी से मैं इसका पारायण कर सका।”<sup>390</sup> मनोरंजन की दृष्टि से देखा जाए तो ऐसे चित्र उन उपन्यासों के आकर्षण का कारण थे। प्रदीप जी का भी मानना है कि उनके सस्ते उपन्यासों के लोकप्रिय होने का एक कारण इन उपन्यासों में बेहतरीन और सचित्र चित्रों का सुदृढ़ रूप भी था। प्रदीप सक्सेना जी ने इनके उपन्यासों को छापने वाले प्रकाशकों की पूरी जानकारी भी दी है, अंग्रेजी के और हिंदी के भी। साथ ही इस प्रकार का विवरण भी है “संख्या 10 लन्दन रहस्य अर्थात् मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन दूसरा भाग पांचवा खंड सत्ताइस्वां परिच्छेद फाउंडलिंग।”<sup>391</sup> रेनॉल्ड्स के उपन्यास सस्ते और निम्न कोटि में गिने जाते थे। इसके लिए प्रदीप सक्सेना कहते हैं कि “रेनॉल्ड्स के बारे में जितनी स्तरीय पुस्तकें देखता जाता उसके सस्ते और पतनशील होने की पुष्टि होती जाती। उतना ही मुझे चंद्रकांता एवं संतति के सस्ते साहित्य में माने जाने का एक सहकारी अनुभव उसके किसी सहायत्री के होने का एहसास और तीव्र होता जाता।”<sup>392</sup>

यदि मैं अपनी शोध के अनुसार देखती हूँ तो मैंने भी इनके हिन्दी में अनूदित उपलब्ध ग्रंथों में चित्रों को देखा है। जो अंग्रेजी की मूल प्रति में जितने हैं उतनी ही संख्या में अनूदित उपन्यासों में भी उपलब्ध हैं। इनके अनुभव के साथ यदि मैं अपने

---

<sup>390</sup> वही, पृ -192

<sup>391</sup> Ibid, पृ – 192-193

<sup>392</sup> वही, पृ -190

अनुभव को साझा करूँ तो रेनॉल्ड्स के 'दि मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन' के हिंदी भाषा में अनूदित 'लन्दन रहस्य' के खंड मुझे बनारस की 'नागरी प्रचारिणी सभा' से प्राप्त हुए हैं जो आर एल बर्मन कम्पनी कलकत्ता से प्रकाशित हुए थे नागरी में भी ये बहुत अच्छी अवस्था में नहीं हैं जहाँ तक कीड़ों के खाने की बात है तो मझे ये थोड़ी अच्छी हालत में प्राप्त हुए थे जिनमें से केवल कुछ आगे-पीछे के पृष्ठ गायब हैं। उन ग्रंथों में प्राप्त चित्रों को मैंने इस शोध प्रबंध के अंत में पृष्ठ संख्या 365 पर दिया है। मूल प्रति प्राप्त होने के कुछ वर्ष बाद 'दि मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन' की अनूदित प्रतियां प्रदीप जी को भी प्राप्त हुई थीं। उन्होंने भी आर एल बर्मन प्रकाशक का उल्लेख किया है। वे कहते हैं कि "इससे इसके सस्तेपन या घोर लोकप्रिय होने पर मुहर लग जाती है कि इसके प्रकाशन की व्यवस्था बेहतरीन उत्पादन, सचित्र एवं सुदृढ़ रूप में, मि. रेनॉल्ड्स ने देवकीनंदन की तरह खुद ही की थी। इसका हिंदी अनुवाद उपलब्ध करने में फिर कई वर्ष लगे। साधनों को निरंतर झोंकने के बाद कुछ खंड बरामद हुए"<sup>393</sup> उन्होंने 1976 के आसपास इन किताबों को ढूँढा था। आर एल बर्मन कंपनी का उल्लेख फ्रेंचेस्का ने भी किया था। कलकत्ता की 'बड़ा बाज़ार लाइब्रेरी' में भी इनके कुछ मूल ग्रन्थ (अंग्रेजी) की फटी पुरानी हालत में उपलब्ध हैं। साथ ही इनके अनूदित ग्रंथों की सूची भी मुझे वहां से प्राप्त हुई है।

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में इतने अधिक तत्त्व विद्यमान हैं। जो एक समाज ही नहीं एक पूरी दुनिया की रचना एक ही कथावस्तु के भीतर कर जाते हैं इतने विषयों और तत्वों को एक सीमा में इतने संतुलन के साथ बाँधने की कला एक अच्छे साहित्यकार में ही हो सकती है। इतने सब तत्व एक उपन्यास की सीमा में मिल जाने पर रेनॉल्ड्स को घटिया स्तर का लेखक नहीं कहा जा सकता है। ऐसा भी नहीं कहा जा सकता है कि उनकी रचनाएँ साहित्य में स्थान पाने लायक नहीं हैं। "इससे

---

<sup>393</sup> वही, पृ -192

यह भ्रम दूर हो जाना चाहिए कि रेनॉल्ड्स कोई घटिया उपन्यासकार था। या देवकीनंदन की कला कोई आत्मवत स्वतंत्र और निम्नस्तरीय चीज़ थी।<sup>394</sup> जिस प्रकार कुछ आलोचक खत्री जी की आलोचना करते हैं तो कुछ उनके पक्ष में बात करते हैं। उसी के बिल्कुल विपरीत रेनॉल्ड्स की सभी जगह पश्चिम में और भारत में भी आलोचना ही देखी गयी है।

लेखक ने लन्दन जैसे समृद्ध शहर को भी इतनी बरीकी से सबके सामने पेश किया है कि उसकी एक-एक तस्वीर साफ़ हो गयी है। लन्दन के रंगबिरंगे समाज में जितना धन और ऐश्वर्य है उतनी ही बड़ी अपराध भरी दुनिया वहां पर मौजूद है। “पूरी कृति एक महान विरेचन से भरी हुई है”<sup>395</sup> रेनॉल्ड्स ने अपने उपन्यासों में हर एक वर्ग को आलोचना के कटघरे में लाकर खड़ा कर दिया है। कोई भी वर्ग ऐसा नहीं था जिसका उल्लेख उनके उपन्यासों में न मिलता हो। गरीब, अमीर, शाही परिवार, भीख मांगने वाले, चोर, डाकू, हत्यारे, वैश्यायें, कामगार वर्ग, गाँव में रहने वाले लोग, व्यापारी, आदर्श पुरुष, आदर्श स्त्रियाँ, आदर्श प्रेम की प्रतिमाएं आदि का उल्लेख उन्होंने किया है। गोपाल राय के ही समान प्रदीप जी का भी मानना है कि रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में केवल जासूसी या केवल अपराध भरी कथा ही नहीं थी। उसमें चोरी, दगा, विवाहेतर सम्बन्ध, यौन शोषण, यौन सम्बन्ध, कामुक प्रसंग, ऐय्यारी, अनमेल विवाह आदि को रेनॉल्ड्स ने अपने उपन्यासों में स्थान दिया है। ऐसे विषयों पर चर्चा किये जाने के कारण इनके उपन्यासों को घृणा की दृष्टि से देखा जाता था।

जब भारत में ये सभी उपन्यास पढ़े जा रहे थे तो उस समय जाति प्रथा का भारत में बहुत अधिक बोलबाला था। सुवर्ण जाति अपने को उच्च समझ कर नीची जाति के लोगों पर अत्याचार किया करती थी। शासन प्रक्रिया उन्हीं के हाथों में थी।

---

<sup>394</sup> वही, पृ - 198

<sup>395</sup> वही, पृ - 197

इसी प्रकार का वातावरण रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में भी प्रदर्शित हो रहा था। इसीलिए उनके साहित्य का अध्ययन करते हुए हिंदी भाषी लोगों ने उसे अपनी दृष्टि से अभिग्रहीत किया। क्योंकि उसमें उनके जीवन के विकास का वही चित्र था जो वास्तविक अवस्था में उनके जीवन से जुड़ा था। रेनॉल्ड्स से पहले ऐसा कोई लेखक ने ऐसा नहीं था जिसने वहां के सामन्ती परिवार के बुरे कर्मों के बारे में खुल कर लिखा हो। प्रदीप जी कहते हैं कि “उन्होंने शाही चरित्रों की बखिया उधेड़ डाली। सामन्ती पतनशीलता और पूँजीवाद खरीद फरोख्त के गर्हित दृश्य उन्होंने ऐसी निस्संगता से खींचे कि अंग्रेज़ सभ्यता इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती थी ऐसा मेरा मत बना है।”<sup>396</sup>

हिंदी के पाठक भी अब तक परियों, जादूगरों की ही कहानियाँ सुनते आए थे वे कुछ ऐसे किस्से और कहानियाँ सुनते थे जिनमें एक पात्र पहेली को सुलझा नायक बन जाता था। फिर बाद में बुरी संगति में पड़ वह असंगति की ओर बढ़ जाता था। ऐसे में उसकी पत्नी उसे सही मार्ग पर लाने के लिए अनेक बलिदान करती थी। उदाहरण के लिए सरशार का ‘फसाना-ए-आजाद’ नामक उपन्यास है। हिंदी में ऐसे किस्से फ़ारसी और उर्दू भाषा से ही आये थे लोग अपने मनोरंजन के लिए इन सब को पढ़ते थे। अधिक से अधिक इन्हें सुना जाता था। लेकिन रेनॉल्ड्स के उपन्यास एक ऐसी कथावस्तु को लेकर आये जो हिंदी के पाठक स्वयं कहना और सुनना चाहते थे। तत्कालीन समय में जब रेनॉल्ड्स के उपन्यास अनूदित हुए और उन्हें पढ़ने की प्रक्रिया शुरू हुई तब इसका विरोध हुआ जो लोग शिक्षित थे विशेषकर वे जो मध्यवर्गीय थे वे अपने घरों में ही छुप-छुप कर उपन्यास पढ़ा करते थे। इनके उपन्यास लोगों के लिए भिन्न सन्देश लेकर आये थे। रेनॉल्ड्स के ही समान देवकीनंदन खत्री पर भी बहुत से आलोचकों ने ऐसी ही टिप्पणियाँ की हैं। अधिकतर आलोचकों ने तो उन्हें सराहा ही नहीं।

---

<sup>396</sup> वही, पृ - 195

रेनॉल्ड्स के विषय में कोई आलोचना, लेख या किसी के विचार एकत्र करना मेरे लिए बहुत श्रमसाध्य कार्य रहा है। हिंदी तथा अंग्रेजी साहित्य तथा भाषा में इनके ऊपर लिखी गयी टिप्पणियाँ या लेख आदि बहुत कम मात्रा में उपलब्ध हो पाए हैं। रेनॉल्ड्स के विषय में मैनेजर पाण्डेय जी के विचार भी नकारात्मक ही रहे हैं। इनके विषय में प्रदीप सक्सेना कहते हैं “पाण्डेय जी ने इनका नाम रेनॉल्ड्स न लिखकर ‘रोनाल्ड’ लिखा है। इनके उपन्यास केवल अनूदित ही नहीं हो रहे थे अन्य लेखकों की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय भी हो गए थे। साहित्य में स्थान प्राप्त न होने के कारण रेनॉल्ड्स को बहुत अधिक लोग जानते भी नहीं हैं। पाण्डेय जी के अनुसार “बांग्ला, हिंदी, गुजराती और मराठी आदि भाषाओं में भी जी. डब्ल्यू. एम. रोनाल्ड के ‘लन्दन रहस्य’ के अनुवादों की धूम मची थी। रोनाल्ड उस समय सम्पूर्ण भारतीय भाषाओं में सर्वाधिक अनूदित और लोकप्रिय उपन्यासकार थे, जिन्हें अंग्रेजी में न तब किसी ने गंभीर लेखक माना और न आज उन्हें उपन्यासकार के रूप में कोई जानता है”<sup>397</sup> या अन्य शब्दों में कहा जाए तो ‘ऐसे उपन्यासों के अनुवाद से नए उपन्यासकारों की रचना भी प्रभावित हो रही थी।

रेनॉल्ड्स के विषय में बहुत से आलोचकों ने अपनी राय बिना विचारे ही दे दी। जिसका कारण उनके उपन्यासों में आने वाली नग्नता थी। जिस समय रेनॉल्ड्स के उपन्यास अनूदित हो रहे थे उस समय कामुकता भरी कहानियाँ लिखने वाले अन्य लेखक भी थे जिनका उद्देश्य किसी भी तरह से पाठकों को अपने लेखन की ओर आकर्षित करना होता था। लेकिन नग्नता का प्रदर्शन करने के पीछे रेनॉल्ड्स का यह उद्देश्य नहीं था समाज का सच आम लोगों के सामने लाना था। अपने पाठकों को निरीह और अबोध जानकार ही वे ऐसा वर्णन करते थे। यदि उन्हें पढ़ा ही नहीं गया था तो उन्हें समझने का प्रश्न कैसे उत्पन्न हो सकता था? इसी सन्दर्भ में अन्य

---

<sup>397</sup> वही, पृ - 190-191

समकालीन लेखकों से उनकी तुलना करते हुए प्रदीप जी ने भी कहा है “उसी प्रकार रेनॉल्ड्स को भी बिना पढ़े खतिया लतिया दिया गया है।”<sup>398</sup> किसी भी लेखक के बारे में तब तक कोई निर्णय नहीं बना लेना चाहिये जब तक कि हम उनकी रचनाएँ न पढ़ लें। जिन भी आलोचकों ने उनकी रचनाओं को पढ़ने लायक नहीं माना है, क्या उन्होंने वास्तव में उनकी रचनाओं को पढ़ा है? यदि गहराई से भी नहीं तो क्या सतही तौर पर पढ़ने और समझने पर भी उनके उपन्यासों को अस्वीकार किया जा सकता था? “मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या यह एक घटिया उपन्यासकार की दृष्टि हो सकती है? इतिहासाचार्य, राजवाड़े व मार्क्सवादी आलोचक मैनेजर पाण्डेय तथा उन सब की सम्मतियाँ जो इस कृति को और रचनाकार को घटिया कहते हैं वे अपने समर्थन में कोई प्रमाण पेश नहीं करते हैं।”<sup>399</sup>

रेनॉल्ड्स के विषय में मैनेजर पाण्डेय ने राजवाड़े के विचारों का समर्थन किया है। उनका कहना है कि रेनॉल्ड्स को सदा ही निम्न कोटि का लेखक माना गया है। उन्हें निम्न कोटि का लेखक क्यों माना गया है इस बात की खोज किये बिना ही या उनके उपन्यासों को पढ़े बिना ही उन्होंने यह बात कह दी है। अपनी बात की पुष्टि करने के लिए राजवाड़े कहते भी हैं कि “भारतीय यथार्थवादी उपन्यासों का मूल स्रोत ही विदेशी नहीं है बल्कि नमूने के तौर पर जिन उपन्यासों को चुना वे भी वहाँ के सामान्य स्तर के उपन्यास रहे हैं। जिन्हें विदेशों में यथार्थवादी उपन्यासों के मूल स्रोत कहा जा सकता है, ऐसे बेहतरीन उपन्यासों से प्रेरणा पाकर लिखने वाले शायद ही हैं। अंग्रेजी के उपन्यासकारों में हीन स्तर के रोनाल्ड के घटिया उपन्यासों का आस्वादन करने वाले माई के लाल अपने यहाँ अधिक हैं। बहुत हुआ तो कुछ लेखकों ने रोनाल्ड से परे छलांग लगाई और मुश्किल से पहुँचे तो मिसेज हेनरी वुड्सलाई

---

<sup>398</sup> वही, पृ - 195

<sup>399</sup> वही, पृ -197

रिटन जैसे सामान्य लेखकों तक ही।<sup>400</sup> मैनेजर पाण्डेय की इसी टिप्पणी को प्रदीप सक्सेना जी ने भी 'तिलिस्मी साहित्य का साम्राज्यवादी विरोधी चरित्र' नामक पुस्तक में पृष्ठ संख्या 191 पर उद्धृत किया है। इस पर भी कोई विशेष टिप्पणी न करते हुए मैनेजर पाण्डेय ने केवल इस विचार पर बात खत्म कर दी है कि उस समय लोगों के पास पढ़ने के लिए अच्छे उपन्यासकारों के उपन्यास उपलब्ध नहीं थे। क्या वास्तव में ऐसा ही था कि यदि कुछ अच्छे उपन्यासकार उपलब्ध होते तो लोग क्या लोग रेनॉल्ड्स को नहीं पढ़ते? ऐसा कह देने से ही उनकी इस धारणा की पुष्टि नहीं हो जाती है। उनका यह तर्क इतना अधिक मज़बूत नहीं है जो एक विवादित लेखक को इतना अधिक प्रचलित बना दे, कि उसके उपन्यासों की अनूदित प्रतियाँ भारत के कोने-कोने में उपलब्ध हों। क्या किसी अच्छे उपन्यास या रचना की उपलब्धि न होने पर यह मान कर संतोष रखा जा सकता है कि रेनॉल्ड्स को अत्यधिक पढ़े जाने का कारण यही था। अच्छे साहित्य की अनुपलब्धता उनके उपन्यासों को इतनी सारी देशी-विदेशी भाषाओं में अनूदित नहीं कर सकती थी?

रेनॉल्ड्स का जीवनकाल देवकीनंदन खत्री से कई वर्षों पहले का था। उनके उपन्यास खत्री जी के जन्म से पहले ही अस्तित्व में आ चुके थे। देवकीनंदन खत्री ने भी उनके उपन्यास पढ़े होंगे इसीलिए शायद 'चंद्रकांता' पर भी उनके उपन्यासों का प्रभाव माना जाता है।

प्रदीप सक्सेना जी ने रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का प्रभाव देवकीनंदन खत्री जी पर भी माना है। दोनों के उपन्यासों में कुछ समानतायें भी देखने को मिलती हैं। खत्री जी पर रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अभिग्रहण समझने से पहले हनुमान प्रसाद शुक्ल जी द्वारा उद्धृत रूथवेन की एक टिप्पणी को समझ लेना चाहिए। "अंतर्राष्ट्रीय सन्दर्भों में

---

<sup>400</sup> पाण्डेय, मैनेजर, साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका, चंडीगढ़ : हरियाणा, साहित्य अकादेमी, प्रथम संस्करण, 1989, पृ- 278-279

प्रभाव सूत्रों के तुलनात्मक विवेचन के बारे में सामान्यतः दो धारणाएं प्रचलित हैं : एक जहाँ शक्तिशाली व्यक्तित्व का प्रभाव बाढ़ की तरह होता है और जिसके फलस्वरूप उत्सर्जक के प्रभाव में डूबने वाले प्रापक लेखक की असहायता प्रकट होती है और दूसरा जहाँ प्रभाव सान की तरह प्रभाव ग्रहण करने वाले व्यक्ति की प्रतिभा को और चमका देता है (रूथवेन : 1979)<sup>401</sup> तो यहाँ पर रूथवेन की टिप्पणी से यह समझा जा सकता है कि रेनॉल्ड्स एक शक्तिशाली व्यक्तित्व के व्यक्ति थे जो उनके उपन्यासों में झलक रहा था और इस व्यक्तित्व का प्रभाव देवकीनंदन खत्री के उपन्यासों में भी नज़र आ रहा था। ऐसा नहीं था कि वे उसमें पूरी तरह से डूब चुके थे लेकिन उनके प्रयासों से उनकी प्रतिभा भी चमक गयी थी। गोपाल राय ने काशी प्रसाद जी पर भी रेनॉल्ड्स के हिंदी में अनूदित उन उपन्यासों के प्रभाव को स्वीकारा है। जो देवकीनंदन जी ने अनूदित किये थे। काशी प्रसाद जी ने भी शुरुआती दौर में जो उपन्यास लिखे थे वे 1899 में प्रकाशित होने वाली उपन्यास माला से प्रभावित दिखते हैं।

देवकीनंदन खत्री स्वयं इस बात को स्वीकार करते हैं कि उस समय हिंदी के पाठक, ग्राहक और लेखक सभी कम थे। “चंद्रकांता के आरम्भ के समय मुझे यह विश्वास न था कि उसका इतना अधिक प्रचार होगा, यह मनोविनोद के लिए लिखी गयी थी पर पीछे लोगों का अनुराग देखकर मेरा भी अनुराग हो गया और मैंने इन विचारों को जिनको मैं अभी तक प्रकाश नहीं कर पाया था फैलाने के लिए इस पुस्तक को द्वार बनाया और सरल भाषा में इन्हीं मामूली बातों को लिखा जिसमें मैं उस होनहार मंडली का प्रिय पात्र बन जाऊँ।”<sup>402</sup> इससे पहले हिंदी के क्षेत्र में बहुत से उपन्यास लिखे जा चुके थे लेकिन उनकी कथा भूमि केवल रसिक ही हुआ करती थी

<sup>401</sup> शुक्ल, हनुमानप्रसाद, *तुलनात्मक साहित्य: सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2015, पृ-84-85

<sup>402</sup> राय, प्रो. गोपाल, *हिन्दी उपन्यास का इतिहास*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2002, पृ-70



खत्री जी ने जो भूमि प्रदान की वह और किसी अन्य लेखक ने नहीं की थी। हिंदी साहित्य के आरम्भ में ऐसा भी था कि कोई पाठक उपलब्ध नहीं थे। लेकिन देवकीनंदन खत्री के उपन्यासों ने भी समाज को और समाज के हर एक वर्ग को उसी तरह प्रभावित किया जैसे रेनॉल्ड्स ने। उनके उपन्यास कालजयी कृति बन कर रह गए। साथ ही देवकीनंदन खत्री का पहला उपन्यास भी हिंदी साहित्य जगत में मूल्यवान रचना बन गया। उनके उपन्यास में तिलिस्म से आगे बढ़कर पूरे समाज को एक साथ एक ही धरातल पर खड़ा कर एक समान महत्त्व देने की इच्छा थी। आंधी की तरह पूरे समाज में उनके उपन्यास फैल गये। जिन्हें पढ़ने के लिए लोगों ने हिंदी भाषा की शिक्षा ली। देवकीनंदन और रेनॉल्ड्स के उपन्यासों की लोकप्रियता समानता के स्तर पर थी। रेनॉल्ड्स के उपन्यास भी थोड़े ही समय में पूरे समाज में लोकप्रिय हो गये। उन्होंने अपने उपन्यासों में एक विशिष्ट वर्ग को स्थान न देकर पूरे समाज को अपने उपन्यासों में स्थान दिया। राजा से लेकर भिखारी तक के सभी वर्गों के लोग इनके उपन्यासों में देखने को मिलते हैं। इसकी पुष्टि गोपाल राय करते हुए कहते हैं कि “उपन्यास की कसौटी पर परखें तो खत्री जी के उपन्यास भी रोमांस ही हैं। गोस्वामी जी के ऐतिहासिक उपन्यासों पर खत्री जी तथा रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का प्रभाव भी स्पष्ट है।”<sup>403</sup>

प्रदीप सक्सेना जी के अनुसार लन्दन की समृद्ध दिखाई देने वाली सभ्यता में बहुत बड़े-बड़े गड्डे थे। जो वहां रहने वाले लोगों के पापकर्मों से भरे थे। प्रदीप जी के अनुसार रेनॉल्ड्स ने जिस तरह बेबाकी से अपने उपन्यासों को लिखा है उससे बहुत से लोग नाराज़ हो गये। अंग्रेजी साहित्यकार, वहां के सभी उच्च वर्गीय समाज और साथ ही अंग्रेजी भाषा के आलोचकों को यह रास न आया और उन्होंने इनके ग्रंथों पर प्रश्न उठाये। वेश्याओं से भरी नगरी, राजमहल में रानी के ही खिलाफ महारानी का षड्यंत्र,

<sup>403</sup> राय, प्रो. गोपाल, *हिन्दी उपन्यास का इतिहास*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2002, पृ-90

राजकुमारियों का पतन, धर्मध्वजियों का धर्म के नाम पर गिरिजाघरों में लड़कियों और औरतों के साथ सम्बन्ध बनाना, छोटे-छोटे कारणों के लिए किसी की भी हत्या कर देना, अपने प्रेमी को जहर देना, नौकरों का मालिक के प्रति बेईमान होना, राजमहल में कोई पद प्राप्त करने पर महाराज की पुरानी गलतियों के सबूत पेश करना आदि। इन सब घटनाओं में और चंद्रकांता की कथा में समानता लाते हुए प्रदीप सक्सेना जी कहते हैं कि “ठीक इसी तरह भारतीय समाज का जो अंग सड़ गया था, जिसका पतन हो रहा था, जो वेश्याओं, छप्पन तरह के भोगों, षड्यंत्रों, ठगगी, लूट, हत्या वगैरह में लिपटा हुआ था वह समाज चंद्रकांता का नायक है। वास्तविक नायक। जाता हुआ भारत और आता हुआ भारत जहाँ पूँजी की आमद नहीं थी, उसका दोहन था। जहाँ समृद्धि थी नहीं उसे आना था। जहाँ स्वप्न और आदर्श न मरे थे न बने थे। सिर्फ सुगबुगाहट थी। तीव्रता नहीं। नदी के तल की ऊष्मा जैसी सामाजिक गति। वर्गों के निर्माण की प्रक्रिया जहाँ जोर पकड़ रही थी। उनमें सुस्पष्ट विभाजन नहीं थे।”<sup>404</sup> इन्हीं सब तत्वों को एकत्रित करते हुए जब देवकीनंदन जी ने उपन्यास लिखे तो वे भारतीय समाज का दर्पण बन गये।

रतननाथ दर सरशार और देवकीनन्दन खत्री दोनों ने ही रेनॉल्ड्स के उपन्यास पढ़े थे और वे उनसे प्रभावित भी हुए थे। रेनॉल्ड्स, देवकीनंदन खत्री और रतननाथ के बीच लेखन परिस्थितियों की समानता को फ्रेंचस्का ने अंकित किया है। वे कहती हैं कि देवकीनंदन खत्री ने व्यावहारिक शिक्षा ग्रहण की और दास्तानों से प्रभावित हुए जिस प्रकार रेनॉल्ड्स के उपन्यास व्यावसायिक रूप से छपे उसी प्रकार ‘चंद्रकांता’ और ‘चंद्रकांता संतति’ भी लहरी प्रेस बनारस से छपी। उस समय उपन्यास अखबारों में धारावाहिक के रूप में छपते थे। रतननाथ दर सरशार का ‘फसाना-ए-आजाद’ और देवकीनंदन खत्री का ‘चंद्रकांता’ और ‘चंद्रकांता संतति’ व्यावसायिक

<sup>404</sup> सक्सेना, प्रदीप, *तिलिस्मी साहित्य का साम्राज्यवादी विरोधी चरित्र*, दिल्ली, शिल्पायन, 2004, *ibid*, पृ - 198

बाज़ार के लिए ही लिखे गए थे। बाज़ार के लिए लिखने का तात्पर्य धन कमाने के लिए लिख रहे थे। यही समानता रेनॉल्ड्स की परिस्थितियों में भी थीं। वे भी धन प्राप्ति की आशा से ही लिख रहे थे। रेनॉल्ड्स ने भी आर्थिक रूप से निचले स्तर पर आ जाने के बाद ही एक प्रकाशक के लिये लिखना आरम्भ किया था जिससे कि उन्हें आर्थिक सहायता मिल सके। बाद में वे जॉन विक्कर्स से जुड़ गए जहाँ उन्होंने 'लन्दन रहस्य' और आदि उपन्यासों को बाज़ार में बेचने के लिए ही लिखा था। यही कार्य देवकीनंदन खत्री और रतननाथ दर सरशार ने भी किया था। केवल उपन्यास लिखना ही उनका उद्देश्य नहीं था। व्यवसाय के लिए उपन्यास लिखना उनका उद्देश्य था।

चंद्रकांता के लिखे जाने से पहले उन्हें यह नहीं मालूम था कि उनकी इतनी अधिक प्रतियां बिक सकती हैं। समान रूप से रेनॉल्ड्स को भी अंदाजा नहीं था कि उनका लन्दन रहस्य बाज़ार में उनकी मांग को इस प्रकार बढ़ा देगा। जब चंद्रकांता बिकनी शुरू हुई तो उन्हें उसके अन्य संस्करण भी निकाल डाले। इस बात की पुष्टि करते हुए फ्रेंचेस्का कहती हैं कि "रतननाथ दर सरशार और देवकीनंदन खत्री दोनों ने ही औपचारिक शिक्षा ग्रहण की थी। रेनॉल्ड्स के उपन्यास, सरशार का फ़साना-ऐ-आज़ाद और खत्री जी का चंद्रकांता ये सभी प्रिंट मीडिया के व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए लिखे गए थे। फ़साना-ऐ-आज़ाद (1878-85) उर्दू के प्रतिदिन छपने वाले अखबार में धारावाहिक के रूप में छपता था। इस बीच सरशार अवध अखबार के सम्पादक भी रहे। दूसरी ओर देखा जाए तो चंद्रकांता ने लहरी प्रेस बनारस की प्रकाशक कंपनी के व्यवसाय में वृद्धि की। दोनों ही पेशेवर उपन्यासकार थे। उपन्यासों को लिखने की शुरुआत उन्होंने पहले कथा-साहित्य से की फिर उन्हें खण्डों में भी छापा। आज़ाद और चंद्रकांता दोनों ने मिलकर सामाजिक बदलाव लाने में मनोरंजन और साहित्य का सम्मिलित रूप परोसा। प्राचीन मनोरंजन, और साहित्य गल्प और

कविताओं से सम्बंधित था लेकिन नया मनोरंजन उपन्यास के सौन्दर्य और नवीन कथाओं से सम्बंधित है।<sup>405</sup>

चंद्रकांता के बारे में प्रदीप सक्सेना का विचार है कि “इस कृति का मूल्यांकन शुद्ध साहित्यिक प्रतिमानों से संभव नहीं है क्योंकि यह उस नवस्फुटित यथार्थवादी दौर का महाकाव्य है, जब भारत की नींद टूटती है। अंगड़ाकर खड़ा होता है देश और आँखे फाड़-फाड़कर चारों ओर देखता है। अपनी दशा पर सोचता है। अपनी मुट्टियाँ तानता है। जग जाता है। चंद्रकांता दो युगों के उस संधिस्थल पर खड़ी है, जहाँ से एक युग ढह रहा है और दूसरा उभर रहा है। एक जा रहा है - दूसरा आ रहा है। तब फिर यह कृति दयनीय महानता की नहीं - उस नयी सुबह की पहली दास्तान है, जिसमें उस समय के भारत की अंगड़ाइयाँ सुरक्षित हैं।”<sup>406</sup>

चंद्रकांता पर अन्य रचनाओं का प्रभाव है। उर्दू और हिंदी की कुछ रचनाएँ पढ़ने के बाद देवकीनंदन खत्री ने उन सब रचनाओं का समन्वय कर ‘चंद्रकांता’ की रचना की थी जिसका प्रभाव उनके अन्य उपन्यासों पर भी पड़ा होगा। इस बात की पुष्टि लक्ष्मी सागर वाष्णीय के ‘खत्री स्मृति ग्रन्थ’ में लिखी एक टिप्पणी से होती है “फैजी का तिलिस्मे होशरुबाउर्दू में अनुवादित होकर बहुत लोकप्रिय हो गया था। उधर श्री देवकीनंदन की शिक्षा उर्दू-फारसी से ही आरम्भ हुई थी अतः विश्वास किया जा सकता है कि अन्य समकालीन उर्दू-दां व्यक्तियों के तरह उन्होंने भी उक्त ग्रन्थ अवश्य पढ़ा होगा और अपने एय्यारी व तिलिस्मी उपन्यासों के लिए प्रेरणा यहीं से प्राप्त की होगी।”<sup>407</sup> जिसे प्रदीप सक्सेना ने अपनी रचना ‘तिलिस्मी-साहित्य का साम्राज्यवादी विरोधी चरित्र’ में रेखांकित किया है। जो इस प्रकार है “उन्होंने मनोरंजनार्थ कही गयी लोककथाओं, फारसी कथाओं, अपने देश की पंचतंत्र वाली

<sup>405</sup> Orsini, Frenchesca, *Print and Pleasure : Popular Literature and Entertaining Fictions in Colonial North India*, Ranikhet, Permanent Black, 2006, p- 162

<sup>406</sup> सक्सेना, प्रदीप, *तिलिस्मी साहित्य का साम्राज्यवादी विरोधी चरित्र*, दिल्ली, शिल्पायन, 2004, ibid, पृ - 31

<sup>407</sup> वही, ibid, पृ -188

कथाओं और अंग्रेजी के माध्यम द्वारा रेनॉल्ड्स की परम्परा का अत्यंत सुन्दर ढंग से समन्वय कर हिंदी-उपन्यास साहित्य को समृद्ध बनाया है।<sup>408</sup> वे यह नहीं कहते हैं कि किसी एक विशेष रचना या भाषा से प्रभावित होकर वे हिंदी साहित्य को समृद्ध कर रहे थे। उनका कहने का तात्पर्य है कि किसी रचना का प्रभाव कभी भी स्थूल रूप से किसी पाठक पर देखने को नहीं मिलता है। देवकीनंदन जी के साहित्य को लेकर लोगों का जो दृष्टिकोण रहा है उसके लिए कोई स्थूल विचार कायम नहीं कर सकते हैं। किसी विशेष लेखक की रचना का क्या-क्या प्रभाव पाठकों पर पड़ा या उन्होंने कैसे उसको समझा और अपनाया यह सिद्ध तो नहीं किया जा सकता है। लेकिन समानताओं और विशेषताओं के आधार पर यह अवश्य कहा जा सकता है कि खत्री जी के साहित्य पर रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अभिग्रहण लक्षित होता है। इसका प्रमाण लेखक स्वयं तब तक दे सकते हैं जब तक कि वे जीवित हैं।

जब चंद्रकांता की रचना हुई तो उस पर अनेक आलोचकों ने अपने मत दिए। बहुत से आलोचकों का यह भी मानना था कि उस पर संस्कृत, उर्दू और फ़ारसी के ग्रंथों का मिला जुला प्रभाव है। लेकिन कोई भी इस बात की पुष्टि नहीं कर पाया था। इस सन्दर्भ में फ्लेचर के विचार समझ लेना आवश्यक है उनका कहना है कि “यदि हम प्रापक को ऋणी प्रमाणित कर सकें तो उससे उत्सर्जक का थोड़ा ही परिचय मिलता है लेकिन प्रापक की मनोशरीरी दृष्टि के बारे में हमें विस्तार से पता लग पाता है और उसकी सृजन प्रक्रिया से भी हम परिचित हो पाते हैं (1970 : 115) यदि हम एक दफा यह पता लगा सकें कि निराला की कविता में ऐसे बहुत से तत्त्व हैं जो रवीन्द्र की कविता से मेल खाते हैं। तो हम यह प्रमाणित कर सकेंगे कि निराला बांग्ला रचनाकारों की काव्य स्थितियों एवं चरित्रों को स्वीकारते थे तथा उन्हें उद्धृत करते थे तथा निराला पर रवीन्द्र के माध्यम से उपनिषद् का प्रभाव पड़ा था। इस

<sup>408</sup> वही, ibid, पृ- 190

तरह रवीन्द्र को उत्सर्जक तथा निराला को प्रापक प्रमाणित करने पर भी इस प्रकार का अध्ययन रवीन्द्र की अपेक्षा निराला की काव्य प्रतिभा को ज्यादा उजागर करेगा क्योंकि यह पद्यति यान्त्रिक ढंग से मात्र तथ्यों का हवाल नहीं देगी, बल्कि गहरायी से रवीन्द्र की पृष्ठभूमि पर निराला की सृजन प्रक्रिया की आलोचना करेगी<sup>409</sup>

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों की ओर आकृष्ट होकर उनका अभिग्रहण करना स्वाभाविक था। देवकीनंदन खत्री ने रेनॉल्ड्स के अनूदित उपन्यासों को प्रकाशित करने के लिए 'उपन्यास माला' का आरम्भ भी उनके उपन्यासों से प्रभावित होकर ही किया था। जिसका प्रभाव उनके लेखन पर भी नज़र आता है। एक और उल्लेखनीय बात यह है कि "जनवरी 1899 तक रेनॉल्ड्स के उपन्यासों के हिंदी अनुवाद प्रकाशित नहीं हुए थे। इस दशक में देवकीनंदन खत्री का ध्यान रेनॉल्ड्स के उपन्यासों की तरफ आकृष्ट हुआ और उन्होंने केवल उनके ही अनुवाद प्रकाशित करने के लिए 'उपन्यास माला' नामक 'सचित्र मासिक पत्रिका' का प्रकाशन आरम्भ किया था। पर इस माला का कोई भी अंक उपलब्ध न होने के कारण यह कहना कठिन है रेनॉल्ड्स के कौन-से उपन्यास इसके अंतर्गत प्रकाशित हुए थे। उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर रेनॉल्ड्स के 'लायला' और 'स्टार ऑफ़ मिन्गरेलिया' का 'प्रवीण पथिक' अथवा 'अलादीन और लैला' शीर्षक अनुवाद 1899 ई में प्रकाशित हुआ था। इस बात की पूरी संभावना है कि यह उपन्यास 'उपन्यास माला' में 1899 के पहले धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ हो जिसे काशी प्रसाद खत्री जी ने देखा हो। यह भी संभव है कि काशी प्रसाद जी ने रेनॉल्ड्स के उपन्यासों के उर्दू अनुवादों का सन्दर्भ दिया हो काशी प्रसाद जी ने

<sup>409</sup> शुक्ल, हनुमानप्रसाद, *तुलनात्मक साहित्य: सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2015, पृ-85-86

अपने लेख में जो बातें लिखी थीं वे बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक के उपन्यासों पर पूरी तरह से लागू होती हैं”<sup>410</sup>

## गंगा प्रसाद गुप्त और जयराम दास गुप्त

रेनॉल्ड्स के उपन्यासकारों के अभिग्रहण की श्रृंखला में केवल देवकीनंदन खत्री और गोस्वामी जी का ही नाम नहीं आता है। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अन्य समकालीन लेखक भी उनकी लेखन कला और परम्परा को अपना रहे थे। जिनमें से दो प्रचलित नाम गंगा प्रसाद गुप्त और जयराम दास गुप्त के हैं।

गंगा प्रसाद गुप्त हिंदी साहित्य के एक अच्छे उपन्यासकार रहे हैं। उन्होंने पाठकों की रुचि को ध्यान में रखते हुए प्रेम और कौतुहल से भरे चित्रण अपने उपन्यासों में किये हैं। भारत में उस समय हिन्दुओं और मुस्लिमों के बीच धर्म के कारण अनेक अंतर आ गये थे। दोनों ही धर्म के लोग एक-दूसरे को पसंद नहीं करते थे। इन्हीं दोनों धर्मों को केंद्र बनाकर गुप्त जी ने उपन्यास लिखे। गुप्त जी ने अपने उपन्यासों में हिन्दू पात्रों के व्यवहार को मुस्लिमों पात्रों की तुलना में उन्नत दिखाया है। इनके कथानक में मुसलमान पात्र अधिकतर क्रूर और कपटी ही मिलते हैं। कथा के साथ साथ उपन्यासकार अपने पात्रों के चरित्र का निर्धारण करते चलते हैं। उनकी विशेषताएं और कमियाँ दर्शाते हैं। किसी घटना के अच्छे और बुरे होने की चर्चा भी उनमें मिलती है। ऐसा वर्णन रेनॉल्ड्स के उपन्यासों से समानता रखता है। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों के विषय के समान ही गोपाल राय का कहना है कि “तत्कालीन सामान्य पाठकों की रुचि को ध्यान में रखते हुए कथाओं को कृत्रिम रूप से सुखान्त बनाया

<sup>410</sup> राय, प्रो. गोपाल, *हिन्दी उपन्यास का इतिहास*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2002, पृ- 80-81

गया है। श्रृंगार चित्रण में भी अपरिष्कृत युवा पाठकों की रुचि को ध्यान में रखा गया है।<sup>411</sup>

इतना ही नहीं रेनॉल्ड्स के ही समान प्रसाद जी भी पाठकों के लिये कथावाचक के रूप में साथ चलते हैं। वे स्वयं उस पर क्या सोचते हैं वे यह भी बताते हैं। अपने विचार उस घटना पर व्यक्त करते हैं। इससे पाठक को यह ज्ञात होता है कि लेखक उन घटनाओं के विषय में क्या विचार रखते हैं। जिस समाज का दर्पण दिखाने का वे प्रयास कर रहे हैं उसमें घटने वाले घटनाएं उनके मन मस्तिष्क पर क्या असर डालती हैं, यह बताने के लिए वे रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अनुकरण करते चलते हैं।

भाषा में अरबी-फारसी के शब्दों का भरपूर प्रयोग मिलता है। गोस्वामी जी की तरह संस्कृत शब्दावली का प्रयोग वे नहीं करते हैं। आम बोलचाल की शब्दावली का अधिक से अधिक प्रयोग किया है, “इस प्रकार गंगा प्रसाद गुप्त ने किशोरीलाल गोस्वामी का अनुकरण ही किया है, मौलिकता उनमें बहुत कम है”<sup>412</sup> अप्रत्यक्ष रूप से किशोरीलाल गोस्वामी रेनॉल्ड्स के उपन्यासों और गंगा प्रसाद किशोरीलाल जी के उपन्यासों से का अभिग्रहण करते दिखते हैं।

दूसरे उपन्यासकार हैं, जयराम दास गुप्त। इन्होंने रोमांस, युद्ध और प्रेम पर अनेक उपन्यास लिखे हैं। जयराम दास गुप्त ने जब उपन्यास लेखन आरम्भ किया तो दो वर्षों में नूरजहाँ वा संसार सुन्दरी, पूना में हलचल वा वनवासी कुमार, वीर पत्नी, कुंवर सिंह सेनापति वीर जयमल वा कृष्णकांता तथा हम्मीर नामक छः उपन्यास ऐतिहासिक कथावस्तु को आधार बनाकर लिख डाले। ऐतिहासिक रूपरेखा को आधार बनाकर उन्होंने अपने उपन्यासों का निर्माण किया था। इनके उपन्यासों में कोई नयापन नहीं दिखता है। जयराम दास अपने शासकों की वीरता से बहुत अधिक

<sup>411</sup> राय, प्रो. गोपाल, *हिंदी उपन्यास का इतिहास*, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, राजकमल प्रकाशन, 2002, नयी दिल्ली, पृ- 92

<sup>412</sup> वही, पृ- 93



प्रभावित थे। इन्होंने अपने उपन्यासों में प्राचीन शासकों के सन्दर्भ ही में आदिकाल के समान वीर गाथा और रीतिकाल के समान श्रृंगार वर्णन किया है। उन्होंने अपने शासकों से जुड़े नग्न चित्रण, अतिरंजित करिश्मे और ऐय्यारों के किस्से तथा प्रेम आदि को भरपूर मात्रा में दिखाया है। इनके इस प्रकार के वर्णनों में जिस ऐतिहासिक उद्देश्य को ये दर्शाना चाहते थे वह कहीं खो गया सा लगता है। उपन्यास में पाठकों की रुचि बढ़ाने के लिए उन्होंने जिन घटनाओं का उल्लेख किया है वे सत्य प्रतीत होती हैं। पाठकों के मनोरंजन को ध्यान में रखकर ही जयराम दास ने भी नायक और नायिका के प्रेम का भी चित्रण किया है। इन्होंने भी अपने पाठकों को बार-बार उसी प्रकार संबोधित किया है, जिस प्रकार रेनॉल्ड्स करते रहे थे। इनके उपन्यासों के विषय में गोपाल राय कहते हैं कि “गुप्त जी उपन्यास को केवल मनोरंजन का साधन नहीं, वरन यथार्थ का चित्र प्रस्तुत करने वाला साहित्य रूप मानते हैं”<sup>413</sup> उस समय न तो लिखने के लिए बहुत अधिक विषय उपलब्ध थे और न ही लोगों की रुचि उपर्युक्त के अलावा अन्य विषयों में थी। यही कारण रहा होगा कि दोनों ने ऐतिहासिकता को विषय बनाया।

एक प्रदेश का पाठक अक्सर अपने साहित्य में वह नहीं खोज पाता है जिसकी उसको ललक होती है। वहीं कुछ खोने और पाने की सम्भावना अक्सर अन्य देश के साहित्य में पूरी हो जाती है। उपनिवेशकाल के दौरान भी यही हुआ पाठक और नवीन लेखक जो दूँढ रहे थे वही उन्हें रेनॉल्ड्स के साहित्य में मिल गया। पश्चिमी आधुनिकतावादी आन्दोलन ने हिंदी साहित्य को नयी दिशा दी। इतना ही नहीं हनुमान प्रसाद शुक्ल का कहना है कि “भारतीय साहित्यों, विशेषकर संस्कृत ने भी अंग्रेजी तथा यूरोपीय साहित्य को नयी दिशा दी, जिसे रेमंड श्वाफ जैसे फ्रेंच आलोचक ने

---

<sup>413</sup> वही, पृ - 92

यूरोप का दूसरा पुनर्जागरण कहाँ<sup>414</sup> अनूदित साहित्य की इस प्रक्रिया में लोगों को वह मिला जिसकी वे तलाश कर रहे थे। अपने जीवन के जिस सच को वे ढूँढना चाहते थे। जयराम दास के विषय में गोपाल राय का कहना है कि “जयराम दास गुप्त गंगा प्रसाद गुप्त की तुलना में देवकीनंदन खत्री और रेनॉल्ड्स से अधिक प्रभावित हैं। इन्होंने भी अपरिष्कृत तथा अल्पयोग्यता संपन्न पाठकों की रुचि को ध्यान में रखकर ही अपने उपन्यास लिखे थे।”<sup>415</sup> इनके उपन्यासों में किस्से और गल्प की मिली जुली विधा मिली जिससे वे संतुष्ट थे। इसी संतुष्टि ने भारत में रेनॉल्ड्स के उपन्यासों की मांग और ख्याति को बढ़ा दिया। न केवल उत्तरी भारत में ही उनके उपन्यास अनूदित हो रहे थे बल्कि देश के अन्य हिस्सों में भी उनकी तुलना अब दूसरे उपन्यासकारों से की जाने लगी थी। लोगों ने उनका अध्ययन किया और उन्हें अपने ही देश के लेखकों के समान स्वीकार करते चले गये। परन्तु कुछ आलोचकों ने उनकी अवहेलना भी की।

इसे दूसरे शब्दों में तुलनात्मक अध्ययन भी कहते हैं। इसके लिए हनुमान प्रसाद शुक्ल कहते हैं कि भारत में उपन्यास के आगमन के उदाहरण से पता चलता है कि प्रभाव अध्ययन के क्षेत्र में विधाओं के तुलनात्मक अध्ययन के साथ रचनाओं तथा लेखकों को अन्य भाषा क्षेत्रों में मिली ख्याति या यश को शामिल किया जा सकता है। इस प्रकार प्रभाव अध्ययन तथा स्वीकरण के बीच अतिव्याप्ति (ओवरलेपिंग) चलती रहती है।<sup>416</sup> इस ऐसे भी समझा जा सकता है।

“होता यह है कि एक विचार किसी दूसरे लेखक के मन में अंतर्निष्ठ हो जाता है। समय आने पर अपने मूल स्रोत से दूर जाकर दूसरे चैनलों में प्रवाहित होने

<sup>414</sup> शुक्ल, हनुमानप्रसाद, *तुलनात्मक साहित्य: सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2015, पृ-131

<sup>415</sup> राय, प्रो. गोपाल, *हिन्दी उपन्यास का इतिहास*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2002, पृ-93

<sup>416</sup> शुक्ल, हनुमानप्रसाद, *तुलनात्मक साहित्य: सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2015, पृ-131

लगता है। प्लेटो के विचारों का मिल्टन के साहित्य में इसी प्रकार अवतरण होता है। अधिकतर एक लेखक के दूसरे पाठक पर प्रभाव को इसके दुक्के अवतरणों में खोजना उचित नहीं लगता है, क्योंकि उद्धरणों की श्रृंखला की बजाय सम्पूर्ण रचना के भाव के पाठक तक पहुँचने की अधिक सम्भावना रहती है।<sup>417</sup>

भारत में रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को पढ़ते हुए लोगों ने अपने वास्तविक जीवन का अनुभव किया था। अनूदित रचनाएं पढ़ते समय लोगों के सामने उपन्यासों की घटनाएं एक रंगमंच के समान घटित हो रही थीं। भारतीय पाठकों के संसार को देखने और परखने का जो तरीका था वही रेनॉल्ड्स का भी था। उनके साहित्य में पाठकों को वही संसार देखने को मिला जिसे वे स्वयं जी रहे थे। बिना किसी विवाद के उन सब घटनाओं का अनुभव कर पा रहे थे। जिस कमज़ोर अर्थव्यवस्था के ऊपर ब्रिटिश समाज अत्याचार कर रहा था उसके साथ होने वाले न्याय और अन्याय को ही पाठकों ने आकर्षित किया। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को पाठकों ने इसीलिए पसंद किया क्योंकि वे उसी दिशा में एक ओर चले जा रहे थे जिस दिशा में पाठक सोचना चाहते थे। पाठकों की कल्पनाओं या इच्छाओं के अनुरूप वे उनके सहगामी बनकर उनके साथ चलते रहे। उनका कथानक और पाठकों का जीवन एक समान था। इस क्रम में अगला नाम किशोरीलाल जी का आता है।

## प्रेमचन्द

प्रेमचंद युग से पहले अंग्रेजी या अन्य भाषाओं में लिखे उपन्यासों से प्रेरित होकर लेखक उपन्यास लिखते थे। उस समय हिंदी साहित्य का खाली पड़ा हुआ कोश मनोरंजन, तिलिस्म, एय्यारी, उपदेश, आदर्श, धर्म, नीति, समाज सुधार जैसे तत्वों से भरा पड़ा था। प्रेमचंद ने ही हिंदी के उपन्यासों को प्रौढ़ता प्रदान की। कल्पना और यथार्थ के बीच संतुलन बनाते हुए हिंदी उपन्यासों को एक आदर्श उपन्यास की गरिमा

<sup>417</sup> वही, पृ- 131

का रूप दिया। देखा जाए तो हिंदी के पाठकों में असाधारण वृद्धि प्रेमचंद के आने के बाद हुई। प्रेमचंद ने यथार्थ भूमि को आधार बनाकर जो उपन्यास लिखे वह रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में आये यथार्थ से समानता रखते हैं। प्रेमचंद अपने से पूर्व हिंदी के उपन्यासकारों से प्रभावित नहीं थे ऐसा भी नहीं कहा जा सकता है, अंशतः प्रभाव तो उनका भी था। वे उनके अनुगामी भी थे ऐसा कहना असंगत भी न होगा।

प्रेमचंद की माँ की मृत्यु हो जाने के बाद वे उनके पिता के साथ नए शहर में चले गए थे। उनके पिता ने कुछ समय के बाद दूसरा विवाह कर लिया। नवाब ने इस नयी माँ का बड़े प्रेम से स्वागत किया। लेकिन इस नयी माँ से उन्हें अपनी माँ के जैसा प्रेम नहीं मिला था। इसीलिए अब नवाब भी अपने मन की शांति अन्य चीजों में ढूँढने लगे। उनको किताबें पढ़ने का बहुत शौक था। जिन किताबों को वे बचपन में पढ़ रहे थे उनका प्रभाव उनके भावी जीवन पर पड़ना स्वाभाविक था। तिलिस्म और एय्यारी की कथाएँ वे अपनी दादी से सुना करते थे। बाद में जब तिलिस्म से भरी किताबें उनको उपलब्ध हुईं तो उन्हें और विस्तार से पढ़ने का मौका उन्हें मिला। उनके बचपन में ही “गुल्ली डंडे और मटरगश्ती की जगह तिलिस्म और एय्यारी की मोटी- मोटी किताबों ने ले ली, ऐसी एक ‘पूरी एनसायक्लोपीडिया समझ लीजिये’<sup>418</sup> उन्होंने अपने शुरुआती शिक्षा के दौर में इतनी किताबें पढ़ ली जितनी की कोई तेरह वर्ष का व्यक्ति शायद ही पढ़ पाया होगा। “यह मौलाना फैजल के ‘तिलिस्म होशरुबा’ की तारीफ़ है जिसके पचीसों हजार पन्ने तेरह साल के नवाब ने दो तीन बरस के दौरान पढ़े और भी न जाने कितना कुछ चाट डाला जैसे रेनॉल्ड्स के ‘मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन’ की पचीसों किताबों के उर्दू तर्जुमे मौलान सज्जाद हुसैन की ‘हास्य-कृतियाँ’, ‘उमराव जान अदा’ के लेखक मिर्जा रुसवा और रतननाथ सरशार के ढेरों किस्से। उपन्यास खत्म हो गए तो पुराणों की बारी आयी। नवल किशोर प्रेस ने

<sup>418</sup> अमृ तराय, *कलम का सिपाही*, इलाहाबाद, हंस प्रकाशन, 1976, पृष्ठ- 26

बहुत से पुराणों के उर्दू अनुवाद छापे थे उन पर टूट पड़े।<sup>419</sup> प्रेमचन्द ने इतनी छोटी-सी उम्र में ही अनेक उपन्यास पढ़ डाले। जिनमें रेनॉल्ड्स के उपन्यास भी उसका एक हिस्सा थे।

‘मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन’, ‘उमराव जान अदा’ और ‘तिलिस्म होशरुबा’ को दो-चार वर्षों के भीतर पढ़ जाना उनके आकर्षण का प्रतीक है। उनके मित्र बाद में उन्हें किताबी कीड़ा बोलने लगे थे। 13-15 वर्ष का बालक यथार्थवाद से इतना अधिक प्रभावित था कि उसने तिलिस्म और एय्यारी को नहीं अपनाया। सामाजिकता की ओर उनका ध्यान गया। इस उम्र तक नवाब ने बहुत-सी किताबें पढ़ डाली थीं। या अमृत राय के शब्दों में कहा जाए तो “बड़े आश्चर्य की और काफी गहरे आशय की बात है कि तेरह साल का नवाब जब लिखने बैठा तो उसने तिलिस्म और एय्यारी की राह नहीं पकड़ी, बावजूद उन सैंकड़ों किताबों के जिन्हें वह घोल कर पी चुका था और निश्चय ही उसके दिमाग पर छायी रही होंगी।”<sup>420</sup> शायद यही वह रास्ता था जो जल्दी मिटने वाला न था। इस रास्ते ने उन्हें हिंदी साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण लेखक बना दिया। यह उनका वह शौक था जिसने भविष्य में उन्हें नवाबराय के स्थान पर प्रेमचन्द के नाम से विख्यात कर दिया।

प्रेमचंद के आगमन के पूर्व हिंदी उपन्यास अपने स्वरूप की तलाश कर रहा था। संभवतः उसे औपन्यासिक प्रतिभा की भी तलाश थी। प्रेमचंद के हिंदी में आगमन के साथ यह तलाश पूरी हो जाती है और हिंदी उपन्यास प्रौढ़ता की अवस्था में प्रवेश करता है। हिंदी साहित्य के आधुनिक इतिहास के बारे में लिखते हुए फ्रेंचेस्का कहती हैं, “चन्द्रकान्ता और उसी की शैली में लिखे जाने वाले सभी तिलिस्मी उपन्यासों को साहित्य की श्रेणी में नहीं रखा जा रहा था। इसीलिए उपन्यास कहने

<sup>419</sup> वही, पृ - 25

<sup>420</sup> वही, पृष्ठस. 27

वाली रचनाएँ कम थीं। उपन्यास के क्षेत्र में प्रगति प्रेमचंद के उपन्यासों से हुई। इनके यथार्थवादी दृष्टिकोण ने ही उपन्यासों को नयी पहचान दी। जो प्रेमचन्द पूर्व के उपन्यासों से लुप्त थे”<sup>421</sup> भारतीय उपन्यासों में यथार्थवाद आने से पहले चंद्रकांता और अन्य तिलिस्मी उपन्यासों ने लोगों का मनोरंजन तो किया। परन्तु मनोरंजन करने वाली उस रचना को उपन्यास नहीं माना गया। लेकिन उन्हें जिस संख्या में पढ़ा गया वह अपने आप में अद्भुत था। इसी कल्पना ने प्रेमचंद के उपन्यासों को सबसे अधिक पढ़ने की ओर आकर्षित किया।

### पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' जी प्रेमचंद के युग के एक महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार हैं। बनारसी दास चतुर्वेदी ने इनके उपन्यासों को 'घासलेटी' कहा है। रेनॉल्ड्स के समान ही इन्होंने भी अपने समाज के समकालीन और कटु-सत्य का उदघाटन किया। वैश्याओं का चित्रण करने में उन्होंने बिल्कुल भी छुपाव का भाव नहीं रखा है। प्रेम और प्रेम विवाह का भी खुला वर्णन करते वे नज़र आते हैं। 'उग्र' जी ने भी रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अभिग्रहण किया है। जिस प्रकार रेनॉल्ड्स की एक उपन्यास शृंखला 'लन्दन रहस्य' के नाम से प्रकाशित होती थी। वैसे ही उग्र जी ने भी 1925 में 'कलकत्ता रहस्य' के नाम से कलकत्ता में एक उपन्यास माला का प्रकाशन आरम्भ किया था। दोनों के शीर्षक एक समान हैं और चर्चा से ज्ञात होता है कि दोनों के विषय भी समान ही थे। गोपाल राय के अनुसार हालाँकि यह पुस्तक उपलब्ध नहीं हुई है। लेकिन इस पुस्तक के बारे में चर्चा अवश्य सुनने को मिलती है। "इस शृंखला का एक अंश जो प्राप्त हुआ 'मालेम्स्त मारवाड़ी खंड' है, जो बाद में 'कडी में कोयला' (1955) शीर्षक से प्रकाशित हुआ, जिससे इस उपन्यास की प्रकृति का अनुमान किया

<sup>421</sup> Orsini, Frenchesca, *Print and Pleasure : Popular Literature and Entertaining Fictions in Colonial North India*, Ranikhet, Permanent Black, 2006, p -198

जा सकता है। 'मतवाला' के 21 नवम्बर 1925 के अंक में प्रकाशित एक विज्ञापन के अनुसार *कलकत्ता रहस्य* में यहाँ (कलकत्ता में) होने वाले एक से एक बढ़कर आश्चर्यपूर्ण, रोमंचारी, करुण और वीभत्स आदि रसों से पूर्ण तथा चित्ताकर्षक सच्ची घटनाओं का बड़ा ही सुन्दर खाका खींचा गया है। कलकत्ता के अच्छे और बुरे, बड़े और छोटे, ऊँचे और नीचे, अमीर और गरीब सभी प्रकार के आदमियों के चित्र चित्रित किये गए हैं।<sup>422</sup> रेनॉल्ड्स ने अपने उपन्यासों में शृंगार वर्णन के साथ ही घटनाओं का चित्रण भी भरपूर किया है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो रति प्रसंगों का वर्णन और उनके उपन्यासों में घटनायें भी अधिक मिलती हैं। शीर्षक से समानता रखने वाले उपन्यास '*कलकत्ता रहस्य*' को लिखते हुए लेखक का उद्देश्य अपने पाठकों के लिए रहस्यात्मक कथा को लिख करके उनमें उत्सुकता को बढ़ाना था। केवल कलकत्ता का चित्र देखकर ही उसकी चर्चा कर देना उनका उद्देश्य नहीं था बल्कि उसके उस ढके हुए कुरूप पक्ष को भी उन्होंने उभारा है। उनके उपन्यास का उद्देश्य भी पाठकों को कलकत्ता के सच से, उसके आसपास के वातावरण से परिचित कराना था। यही उद्देश्य रेनॉल्ड्स के '*लन्दन रहस्य*' का भी था। समाज के यथार्थ को उजागर करने का प्रयास शायद ही उस समय कोई लेखक कर सकता था। रेनॉल्ड्स ने भी अपने समय के परम्परागत लेखन को पीछे छोड़ उनमें गिने जाने वाले मूल्यों को चुनौती दी। अपने वर्तमान समाज को ही उपन्यास में स्थान दिया है।

“लन्दन रहस्य की लोकप्रियता से प्रेरित होकर, उसके अनुकरण पर शेखावटी रहस्य, लखनऊ रहस्य, जेल रहस्य, भारत रहस्य, रमणी रहस्य, वारांगना रहस्य, वेश्या रहस्य आदि रोमानी कथा पुस्तकें लिखी गयी थीं।<sup>423</sup> इन कथा पुस्तकों का केवल नाम ही दिया गया है। इस विषय में कोई वर्णन उपलब्ध नहीं है। लेकिन

<sup>422</sup> राय, प्रो. गोपाल, *हिन्दी उपन्यास का इतिहास*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2002, पृ-145-146

<sup>423</sup> वही, पृ - 146

निम्नलिखित शीर्षकों में 'रहस्य' शब्द आ जाने से यह ज्ञात अवश्य होता है कि इन उपन्यासों के लेखन में 'लन्दन रहस्य' का प्रभाव अवश्य पड़ा होगा।

ठाकुर प्रसाद खत्री ने रेनॉल्ड्स के 'लन्दन रहस्य' में आने वाले एक खंड का अनुवाद 1906 में किया था। यह ज्ञात नहीं हुआ कि किस खंड का अनुवाद किया था दूसरे थे सदानंद शुक्ल उन्होंने 28 भागों का अनुवाद 'लन्दन रहस्य' के नाम से किया था जो 1913 से प्रकाशित होने लगा था। "रेनोल्ड्स के अन्य उपन्यास भी अनूदित हुए परन्तु 'लन्दन रहस्य' का अत्यधिक प्रचार हुआ जहां अनेक आलोचकों ने उसकी भत्सर्ना और उपेक्षा की, वहां कुछ समर्थ लेखकों और उपन्यासकारों ने उसकी सराहना भी की है। मनोरंजक कथा, सजीव चरित्रांकन, भावात्मक वातावरण, यथार्थ चित्रण और विलक्षण वर्णन-शैली के कारण यह उपन्यास विविध वर्गों के पाठकों को आकृष्ट करने में सफल हुआ लन्दन के समाज का, खास कर उच्चवर्ग का, जैसा नग्न चित्र इसमें है वैसा शायद ही किसी अंग्रेजी उपन्यास में हो। इसका प्रधान आकर्षण यथार्थवाद था जैसा कि गहमरी जी ने लिखा था : जमाने में जो रहा है उसका निन्दित भाग व्याप्त होने पर भी छिपा देना उसमें होता तो मिस्टर रेनोल्ड इंग्लैंड से ही नहीं बल्कि दुनिया भर से निकल दिए जाते<sup>424</sup>

इनके अतिरिक्त बांग्ला उपन्यासकारों में एक पेयरी चन्द मिश्रा भी थे। ये बंगाल के महत्त्वपूर्ण उपन्यासकारों में रहे हैं। इनके पुत्र चुन्नीलाल मित्र ने कोलिकातर नुकोच्री (Kolikatar Nukochuri) लिखा है। इनका यह उपन्यास रेनॉल्ड्स के 'मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन' पर आधारित था। परन्तु इसे अंग्रेजी में "Mysteries of Calcutta" के नाम से बुलाया गया। क्योंकि यह उपन्यास भी लन्दन रहस्य के समान उतना ही प्रचलित हुआ था।

<sup>424</sup> बदीदास, हिंदी उपन्यास पृष्ठभूमि और परम्परा, कानपुर, ग्रंथम, 1966, पृ- 427



## रेनॉल्ड्स के उपन्यासों से प्रभावित होने वाले उर्दू के उपन्यासकार

शुरुआत में भारत में जो उपन्यास लिखे गये वे लेखक की अपनी इच्छा और लेखन के उद्देश्य को दर्शाते हैं। प्रारंभिक लेखक ऐतिहासिक किस्सों पर उपन्यास लिखते थे और अपनी संस्कृति को ही उपन्यास का रूप दे दिया करते थे। बाद में उन्होंने ब्रिटिश साहित्य के यथार्थवादी उपन्यासों का अनुकरण करना शुरू कर दिया था। इसका कारण यही था कि भारतीय अपनी आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति में बदलाव देखने के लिए छटपटा रहे थे। ब्रिटिशों के लाये हुए उपन्यासों के माध्यम से उन्हें अपनी बात को अभिव्यक्त करने के लिए एक नया अवसर प्राप्त हुआ। उर्दू के प्रभावित होने वाले इन लेखकों में एक नाम रुसवा का भी था जो किसी क्रांति और विरोध से अपनी बात को अभिव्यक्त करने की इच्छा नहीं रखते थे। हालाँकि यह भी सत्य है कि रुसवा अपने समाज की सच्चाई को बहुत अधिक खुले शब्दों में बयान भी नहीं करना चाहते थे। परन्तु फिर भी उन्होंने उपन्यास को एक सहारा समझा। उनका साहित्य भी रेनॉल्ड्स से प्रभावित हुआ है। रेनॉल्ड्स के साहित्य का अभिग्रहण रुसवा के उपन्यासों पर नज़र आता है। “1899 में लिखा गया रुसवा का ‘उमराव जान अदा’ भी रेनॉल्ड्स के रोज़ा लम्बर्ट से प्रभावित होकर लिखा गया था।”<sup>425</sup> मिनाक्षी मुखर्जी ने स्पष्ट शब्दों में इसे अभिव्यक्त भी किया है।

मिर्ज़ा मुहम्मद हदी रुसवा ने भी रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अभिग्रहण कर उपन्यास लिखे। मिर्ज़ा मुहम्मद हदी रुसवा (1858-1931) का पहला और उर्दू भाषा का भी पहला उपन्यास ‘उमराओ जान अदा’ 1905 में लिखा गया था। प्राक्कथन के बाद पुनः मिनाक्षी जी इसका उल्लेख अध्यायों के बीच में करती हैं कि “तथाकथित रूप से उमराव जान अदा रेनॉल्ड्स के रोज़ा लम्बर्ट को आदर्श बना कर लिखा गया

<sup>425</sup> Mukehrjee, Meenakshi, *Early Novels in India*, New Delhi, SahityaAkademi, 2002, ibid, p – xi

था। जिसने उर्दू साहित्य की दिशा को ही परिवर्तित कर दिया था।<sup>426</sup> ये उर्दू के ऐसे पहले लेखक थे जिन्होंने उर्दू में प्रचलित दास्तानों की परम्परा को पीछे छोड़कर उपन्यास लिखा था। उमराव जान अदा लिखते हुए उन्होंने कल्पनाओं पर आधारित गद्य का त्याग कर तत्कालीन समय को ध्यान में रखा था। साथ ही उन्होंने अंग्रेजी के अन्य बहुत से उपन्यासों का अनुवाद भी उर्दू भाषा में किया था जिनका प्रभाव उनके लेखन पर पड़ा। उन्होंने उर्दू के पाठकों को एक नयी कला और एक नयी शैली से अवगत कराया। इस सुसंबद्ध शैली में उन्होंने अनेक उपन्यास भी लिखे।

हिंदी के अतिरिक्त उर्दू के भी कुछ उपन्यासकार थे जो रेनॉल्ड्स के उपन्यासों से प्रभावित थे और उनके उपन्यासों का अनुवाद कर रहे थे। जिनमें सबसे पहला नाम मुंशी तीरथराम फिरोज़पुरी का लिया जा सकता है।

### मुंशी तीरथराम फिरोज़पुरी

प्रो. सी एम नईम मुंशी जी से बहुत प्रभावित थे। अनुवादक के रूप में मुंशी तीरथराम फिरोज़पुरी जी का जीवन 1915 में शुरू हुआ जब लाहौर स्थित नौलखा के लाल ब्रदर्स ने उन्हें सम्पादक रखा। लाल ब्रदर्स ने 'तर्जुमन' नामक एक पत्रिका की शुरुआत की जिसमें मनोविज्ञान, विज्ञान और साहित्य के लेख छपते थे। वे न केवल इस पत्रिका का सम्पादन करते थे बल्कि अनुवाद के काम के लिए जिम्मेदार भी थे। उपर्युक्त लिखे विषयों का सम्पादन करने के साथ ही ये जी डब्ल्यू एम् रेनॉल्ड्स के विशाल उपन्यास 'मिस्ट्रीज ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन' का अनुवाद भी कर रहे थे।

प्रोफेसर सी एम नईम जिस समय वे शिक्षा प्राप्त कर रहे थे उस समय मंटो के लेखन की बहुत अधिक चर्चा चल रही थी। वे आगाह हश्र कश्मीरी से बहुत प्रभावित थे और उन्हें को उर्दू का शेक्सपियर कहते थे जिस काल में वे शिक्षा प्राप्त

---

<sup>426</sup> Do, p – 135

कर रहे थे उस काल में नईम जी को घर से बाहर जाने की अनुमति नहीं थी इसीलिए वे कभी आगाह जी के नाटक नहीं देख पाए न ही उनके नाटक पढ़ पाए। परन्तु वे कहते हैं कि “मैंने ‘मिस्ट्रीज़ ऑफ़ कोर्ट ऑफ़ लन्दन’ पढ़ा था। कहीं न कहीं नईम जी भी इनके उपन्यासों से प्रभावित हुए। मुंशी जी के बारे में बात करते हुए नईम जी दृढ़ता के साथ कहते हैं कि 40 से भी कम वर्षों में काम करने पर 155 से भी अधिक उपन्यास और 60,000 पृष्ठों से भी अधिक अनुवाद मुंशी जी ने कर डाले।”<sup>427</sup> इतने वृहद् स्तर पर किसी व्यक्ति का अनुवाद कार्य करना एक जीवनकाल में कैसे संभव हो सकता है।

आगे वे उनके अनूदित उपन्यासों पर चर्चा करते हुए वे कहते हैं कि “कोई भी अनुवादक अपनी रुचि के अनुसार ही अनुवाद करता है। लेबनाक के उपन्यासों ने उन्हें और अधिक उपन्यास अनूदित करने की प्रेरणा दी। इस प्रेरणा से उन्होंने रेनॉल्ड्स के उपन्यास ‘एग्नेस और दी ब्यूटी प्लेज़र’ का अनुवाद ‘गुरुर-ऐ-हुस्न’ के नाम से किया था। इस उपन्यास से उनके लोकप्रिय साहित्य में रुचि होने का ज्ञान होता है। साथ ही इस बात का भी कि उनका कार्य कितना अतुलनीय है। सी एम् नईम का कहना है कि उन्हें जो पुस्तक सूची प्राप्त हुई थी, उसमें मुंशी जी द्वारा रेनॉल्ड्स के लिखे चार उपन्यासों के अनुवाद की सूचना भी थी। लेकिन इनके नाम उन्होंने नहीं दिए हैं। “ये सभी मुंशी साहब द्वारा अनूदित किये गये हैं। इसमें उनके चार मुख्य उपन्यासों की सूची दी गयी है और चालीस अन्यो द्वारा लिखे गए उपन्यासों की सूची है।”<sup>428</sup> नईम जी के अनुसार रेनॉल्ड्स के चार उपन्यास बारह हजार पृष्ठों में लिखे गये थे अर्थात् हर एक उपन्यास कम से कम तीन हजार पृष्ठों का रहा होगा। इसके अतिरिक्त जो

<sup>427</sup> Comments Off on The Nonpareil Translator: Munshi Tirath Ram Firozepuri · Categories: [Archive](#), [Urdu Language and Literature](#) · Tags: [Firozepur](#), [Jasusi Adab](#), [Mystery Fiction](#), [Tirath Ram](#), [Translations in Urdu](#)

<sup>428</sup> Do

अन्य चालीस उपन्यास इस सूची में मिलते हैं वे सब कुल मिलाकर बारह हजार पृष्ठों के आस पास हैं। सी एम् नईम कहते हैं कि 1939 में जब 'गुरुर-ऐ-हुस्न' प्रकाशित हुआ था उस समय उसमें 3200 पृष्ठ थे मुंशी साहब ने बीस वर्षों में कम से कम 27000 पृष्ठों का अनुवाद किया होगा। इसका तात्पर्य मुंशी साहब ने अपने बीस वर्षों के पेशे में कितनी ही किताबें पढ़ीं और उनमें से कितनों के ही अनुवाद किये। जिसमें उर्दू और अग्रेज़ी दोनों भाषाओं का साहित्य शामिल था। उनकी संख्या क्या रही होगी इसका अनुमान तो कोई नहीं लगा सकता। रेनॉल्ड्स के जिन अनूदित उपन्यासों की सूची नहीं प्राप्त हुई है वे भी इनके 27000 पृष्ठों में शामिल हैं।

नईम जी के अनुसार कुल मिलाकर मुंशी साहब के अनुवाद सटीकता से अनूदित पाए गये हैं। अपनी कुछ किताबों में वे स्वयं को 'सहीह-निगार' कहते थे। जिसका अर्थ (सही-लेखन) है। मुंशी साहब स्वयं को शाही निगार बुलाते हैं। इस शब्द से उनका अर्थ यह था कि वे किसी भी लेखक पर अपने विचार लागू नहीं करते हैं "मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो किसी लेखक पर अपने विचार लागू कर उनसे ज्यादा अपने को काबिल समझता है। इस मामले में रेनॉल्ड्स साहब के विचारों को मैं किसी भी तरह से हानि पहुंचाने के प्रयास से बचा हूँ।"<sup>429</sup> रेनॉल्ड्स ने अपने उपन्यासों में जिस कहानी का निर्माण करने का प्रयास किया है, उसे पूरी स्वतंत्रता के साथ सामाजिक और राजनीतिक रूप से व्यक्त करने का प्रयास भी करते हैं। मुंशी साहब ने उनके उपन्यासों का स्वतंत्र रूप से संपादन किया है। उनके उपन्यासों में कुछ ऐसे किस्से आये जो बहुत वृहद हैं लेकिन उन्हें इस प्रकार लिखा गया है कि केन्द्रीय विचार में कोई भटकाव नहीं आया है। वह एक बहाव के समान बहता चला गया है। हालाँकि कुछ कहानियाँ रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में ऐसी आयी हैं कि जिन्हें मुंशी साहब ने अपने उपन्यासों का भी हिस्सा बनाया है। इस प्रकार दोनों की कथा रचना में

---

<sup>429</sup> Do

समानता देखने को मिली है। 'दी मिस्ट्रीज़ ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन' का अनुवाद करते हुए उनके उपन्यासों को "उदाहरण के लिए मिस्ट्रीज़ ऑफ़ लंडन और मिस्ट्रीज़ ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लंडन जैसे वृहद ग्रंथों को लिखते हुए रेनॉल्ड्स उन ग्रंथों में अनेक कहानियों को संलग्न कर दिया करते थे। ऐसे बड़े ग्रंथों का अनुवाद करते हुए भी मुंशी साहब उन ग्रंथों से उन छोटी कहानियों को निकालकर उनकी अलग पुस्तक बना दिया करते थे। इसका अर्थ यही हुआ कि अत्यधिक उदार भाव से संपादन करते हुए भी मुंशी साहब यह ध्यान रखते थे कि साहित्य के कथानक में कहीं विचलन नहीं आना चाहिए।"<sup>430</sup>

उनके उपन्यासों का अनुवाद करते हुए मुंशी जी ने कोई भी तिलिस्मी और एय्यारी भरे किस्से लिखते समय उसे अधिक साहित्यिक बनाने का प्रयास नहीं किया है। उसे घटनात्मक रूप से ही उदघाटित करने का प्रयास करते हुए वे नज़र आते हैं। इसका अर्थ यह भी था कि वे किसी भी तरह से मूल के संदेश को छेड़ना नहीं चाहते थे। वे नहीं चाहते थे कि मूल के संदेश में उनका अपना सन्देश मिल जाए इसके लिए बिल्कुल सतर्क अनुवादक की भूमिका का पालन करते हुए कथा के भाव के अनुसार उन्होंने पात्रों और उनके कार्यों का चित्रण किया है।

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों ने भारतीय उपन्यासों को एक ऐसी पराकाष्ठा पर लाकर खड़ा कर दिया था, जहाँ से वे ऐतिहासिक को छोड़कर सामाजिकता की ओर मुड़ गए। जिस ऐतिहासिक वैभव को वे वीर गाथा समझ कर उसका वर्णन किया करते थे। रेनॉल्ड्स ने उन्हें समाज का असली चेहरा दिखाया। उन्हें वास्तविकता से मिलवाया था। लेकिन रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में लिखे समाज के हर सच को जानने के लिए भारतीय पाठक उस समय तैयार नहीं थे। इसीलिए उसमें कुछ बदलाव करना अनुवादक का सामाजिक कर्तव्य था।

---

<sup>430</sup> Do

कामुकता से लोगों को बचाने और उनके दिमाग गंदे होने से रोकने के लिए मुंशी तीरथ राम फीरोज़पुरी ने कदम आगे बढ़ाए। वे नहीं चाहते थे कि लोगों पर इन उपन्यासों का नकारात्मक प्रभाव पड़े। इसीलिए अंग्रेजी भाषा के सर्वोच्च उपन्यासों को अनूदित करने और लोगों के सामने परोसने की जिम्मेदारी तीरथ राम जी ने स्वयं ली थी। नईम जी कहते हैं कि तीरथराम जी के उपन्यासों ने उन्हें समझ दी कि किस प्रकार से उपन्यासों को अनूदित करना है। सरशार के उपन्यासों ने उन्हें लिखने की शैली सिखाई। तीरथ राम जी के उपन्यासों ने उन्हें यह समझने की सीख दी अंग्रेजी साहित्य की कौन-सी नकारात्मकता भारतीयों के लिए छूत का रोग बनती जा रही थी। उन्हें यह सीख भी मिली कि किस साहित्य के किस हिस्से को छोड़ कर किसे अपनाना है।

## सी एम् नईम

1850 में ही उत्तरी भारत के छोटे और बड़े शहरों में लोगों के पढ़ने के लिए उर्दू भाषा में किताबों का प्रकाशन आरम्भ हो गया था। इनमें से कुछ छापेखाने ऐसे भी थे जो साप्ताहिक और द्विसाप्ताहिक किताबें छापते थे। इन किताबों को छापने से पहले प्रकाशक अखबारों में इनका विज्ञापन दे दिया करते थे। ऐसा करने के पीछे एक ही उद्देश्य कि था पाठकों को नयी किताबों की ओर आकर्षित किया जाये। उन्नीसवीं सदी में उर्दू भाषा का सबसे प्रसिद्ध प्रकाशन नवल किशोर प्रेस था। अन्य बहुत से शहरों में भी इनकी शाखाएं थीं। भारत में अपनी किताबों के प्रकाशन की पहली सूची नवल प्रेस ने ही निकाली थी। “इनकी पुस्तक सूची पहली बार 1874 में निकली जिसका पुनःसम्पादन 1896 में किया गया।”<sup>431</sup> इसमें अनूदित पुस्तकों की सूची भी

---

<sup>431</sup> <http://cmnaim.com/category/archive/Old Book Catalogs> Comments Off on Old Book Catalogs · Categories: [Archive](#), [Urdu Language and Literature](#) · Tags: [Book Catalogs](#), [Old Urdu Books](#), [Siddiq Book Depot](#), [Urdu](#), [Urdu Culture](#)

थी। फिर नाम आता है सिद्दीक बुक डीपो का, नईम जी को सिद्दीक बुक डिपो से जो सूची मिली थी उसमें दस उपन्यास तिलिस्म और चार उपन्यास जासूसी के थे। ये किताबें 1936 में मिली थीं। उनका यह भी कहना है कि सूची बनाने वाले को अच्छा ज्ञान था इसीलिए उसने भिन्न विषयों वाली पुस्तकों को भिन्न वर्ग की सूची में रखा था।

उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में उर्दू साहित्यकारों ने कुछ अनुवाद किये जो उर्दू साहित्य को लाभ पहुंचाने के लिए ही किये गए थे। कुछ अनुवाद ऐसे हुए जिन्होंने उर्दू साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई परन्तु यह भी सच है कि उर्दू साहित्य के निर्माण में जिन अनूदित उपन्यासों ने भूमिका अदा की उन्हें सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा गया। 1847 के बाद भारत में बहुत से पुस्तकालय धराशायी हुए जिसके कारण बहुत-सा उर्दू साहित्य नष्ट भी हो गया था। उस नष्ट हुए साहित्य की प्राप्ति न होने पर किसी पुस्तक के बारे में कोई पुख्ता जानकारी भी प्राप्त नहीं हो सकती थी।

इस बीच उन्हें अंग्रेजी के कुछ उपन्यासकारों के उपन्यास प्राप्त हुए थे जो अत्यधिक लोकप्रिय थे। उन्हें इंग्लैंड में तो स्थान प्राप्त था ही भारत की भिन्न भाषाओं ने उन्हें यहाँ भी लोकप्रिय बना दिया। “अंग्रेजी के दो उपन्यासकारों के उपन्यास 1890 से 1920 के बीच सबसे अधिक अनूदित हुए और सबसे अधिक पढ़े भी गये। ये दो उपन्यासकार रेनॉल्ड्स और मैरी कोरेली थे।”<sup>432</sup> रेनॉल्ड्स के तो लगभग 30 उपन्यास उर्दू भाषा में अनूदित हुए और कोरेली के कम से कम दर्जन भर उपन्यास उर्दू में अनूदित हुए थे। इस बात की पुष्टि स्वयं नईम जी ने की है। इन दोनों उपन्यासकारों के उपन्यासों का अनुवाद मिर्जा रुसवा, ज़फर अली खान और तीरथराम फिरोजपुरी कर रहे थे। इनके अनुवादों को सराहने वाले प्रेमचंद और सआदत

---

<sup>432</sup> वही

हसन मंटो थे। ये उपन्यास कितने अधिक लोकप्रिय थे इसके लिए या तो वापस उसी समय में जाना पड़ेगा या फिर कुछ मिले हुए तथ्यों के आधार पर ही इसका निर्धारण किया जा सकता है।

एक ओर जहाँ उपन्यासों को पढ़ने की अनुमति नहीं थी वहीं 'बाग-ओ-बहार' तथा 'मिरात-उल-उरुस' को शिक्षा का बढ़ावा देने के लिए पढ़ाया जाता था। जबकि शिक्षा और मनोरंजन के साहित्य में अंतर था। यह उपन्यास उनके पाठ्यक्रम में भी नहीं था। अब ये वे युवक थे जिन्हें किस्सों और दस्तानों से अलग कुछ पढ़ने के लिए मिल रहा था। ये वे पाठक थे जो अब कुछ नया पढ़ने के लिए तैयार थे। यह वह काल था जब भारत में रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को पढ़ने वाले अंग्रेज़ी के पाठक बहुत अधिक थे। जितना अधिक उन्हें पढ़ा गया उतना ही अधिक उनके उपन्यासों का उर्दू में भी अनुवाद हुआ। उर्दू भाषा में ये अनुवाद तेज़ी से बढ़ते हुए पाठकों के लिए हो रहे थे। औपनिवेशिक काल में बढ़ते हुए पाठकों की पढ़ने की आदत में इजाफा करने के लिए रेनॉल्ड्स के उपन्यास बहुत प्रभावी सिद्ध हुए फ्रेंचेस्का का भी कहना है कि "जी डब्ल्यू एम् रेनॉल्ड्स के उपन्यासों की लोकप्रियता अंग्रेज़ी में तो थी ही इन कुछ दशकों में इन्हें सबसे अधिक पढ़ा भी गया विशेषकर उर्दू में जिससे अचानक से पाठकों की संख्या में वृद्धि हो गयी। औपनिवेशिक दौर में जब शिक्षा के विकास पर जोर दिया गया तो उसने लोगों में पढ़ने की नयी आदत का विकास भी किया। इसी का परिणाम था कि रेनॉल्ड्स को पढ़ने वाले पाठकों की तेज़ी से वृद्धि हुई।"<sup>433</sup>

रेनॉल्ड्स के उपन्यास अंग्रेज़ों के स्वच्छन्द विचारों पर जो प्रभाव डाल रहे थे वही प्रभाव भारतीयों पर भी पड़ रहा था। राजा राममोहन राय ने 1920 में सती प्रथा के अंत की शुरुआत की थी। इस समय से जिस सुधारवाद की शुरुआत भारत में हुई

<sup>433</sup> Orsini, Frenchesca, *Print and Pleasure: Popular Literature and Entertaining Fictions in Colonial North India*, Ranikhet, Permanent Black, 2006, p- 162



थी उसे रेनॉल्ड्स के उपन्यासों से बल मिला। यदि प्रिया जोशी को समझने का प्रयास किया जाये तो रेनॉल्ड्स के उपन्यास एक प्रकार से भारतीयों का भी मार्गदर्शन कर रहे थे। रेनॉल्ड्स के उपन्यास भारतीयकृत रूप में लोगों की उन्नति के लिए, एक विशिष्ट जनसंख्या तक पहुँचो दो भिन्न परिवेशों, समाज और धारणाओं के होते हुए भी रेनॉल्ड्स ने पाठकों के जिन भावों की अभिव्यक्ति की वह स्मरणीय है। अनुवाद कला के ही कारण भिन्न परिवेश में लिखे उपन्यासों को लोग आत्मसात कर पाए।

पश्चिमी साहित्य का भारतीय साहित्य पर कितना अधिक प्रभाव पड़ा है। इस प्रश्न का उत्तर न तो काल विभाजन से प्राप्त हो सकता है और न ही उपन्यासों का वर्गीकरण कर देने से। इस केवल ऐसे ही समझा जा सकता है कि जब दुनिया के भिन्न ध्रुवों पर भिन्न परिस्थितियों में साहित्य रचना हो रही थी तो उस समय साहित्य में कितना अंतर था या कितनी समानता थी। इस प्रकार दो भिन्न भाषाओं में लिखे गये साहित्य का अंतर खोजना आसान हो जाएगा। मिनाक्षी मुखर्जी की इस बात से मैं भी सहमत हूँ कि जब किसी देश के एक काल विशेष में कोई साहित्य लिखा जाता है तो लेखक परिस्थिति विशेष से प्रभावित होता है। वैसे ही रेनॉल्ड्स के उपन्यास जो विक्टोरियाकाल में लिखे गये उसने भारत की गुलाम जनता को अपनी ओर आकर्षित किया। दोनों ओर समानता यही थी कि दोनों ही ओर ब्रिटिश शासक था। दोनों ही देश भिन्न सदियों में समान समस्या से जूझ रहे थे।

रेनॉल्ड्स ने उपन्यास क्यों लिखे थे? क्या कारण था? क्या वे सच में कोई सन्देश पाठकों को देना चाहते थे या स्वांतः सुखाय के लिए उपन्यास लिख रहे थे। इन सब प्रश्नों का उत्तर ढूँढने का प्रयास मैंने इस शोध में किया है। भारत में रेनॉल्ड्स को इतना अधिक क्यों पढ़ा गया? रेनॉल्ड्स के उपन्यास यथार्थ जीवन से जुड़े हुए थे जो भारत की काल्पनिक कथाओं जैसे बेतालपच्चीसी, लैला-मजनू और प्रेमी-प्रेमिका के आध्यात्मिक प्रेम से बहुत अलग थे। जिस प्रकार साहित्य को समाज

का दर्पण कहा जाता है, वैसे ही रेनॉल्ड्स के उपन्यास भी समाज का दर्पण थे। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में आने वाले पाप-पुण्य, धर्म-कर्म, अपराध-परिणाम, प्रेम-पीड़ा ये सभी तत्व थे और ये सभी तत्व कहीं न कहीं हिन्दुओं की पौराणिक भावनाओं से जुड़े हुए थे। अपने उपन्यासों में रेनॉल्ड्स ने जो उपदेश दिए हैं और गलत का विरोध कर सही का जो साथ दिया है वह हिंदी पाठकों की वर्तमान परिस्थिति से समानता रखता था जिसे वे अपनाते चले गये। प्रिया जी और मिनाक्षी जी ने भारतीय साहित्य पर इनके उपन्यासों का प्रभाव उजागर किया है। अनेक उपन्यासकारों ने आलोच्य लेखक के उपन्यासों की नकल कर अपने नाम से कैसे उपन्यास लिखे हैं। उन सब का ब्यौरा देते हुए अभिग्रहण को समझने का प्रयास किया गया है। अनेक विरोधों के बावजूद भी रेनॉल्ड्स के उपन्यास अनूदित हुए नकल किये गए और छापे गए। हिन्दू समाज में ऐसी अनेक वर्जनाएं विद्यमान थीं जिन पर बात करना भी पापसमझा जाता था। ऐसे विषयों का उल्लेख रेनॉल्ड्स ने अपने उपन्यासों में किया था, ऐसे में हिंदी के पाठकों को ऐसी वर्जनाओं के जड़ तक पहुंचकर उनके बारे में विचार करने का मौका मिला।

अनेक भाषाओं में अनूदित होने वाले इनके उपन्यासों की संख्या से ही इनके उपन्यासों के अभिग्रहण का अनुमान लगा पाना संभव हो सका। इनके उपन्यासों के इतने अधिक अनुवाद क्यों हुए? क्यों इतनी सहजता से इन्हें अपना लिया गया? इन सब प्रश्नों का उत्तर इस अध्याय के पहले भाग में स्पष्ट हो जाता है।

भारत में उपन्यास लिखने की परम्परा का विकास अनुवाद के माध्यम से हुआ। इसके साथ ही उपन्यास लिखने का आदर्श रूप को अपनाना भी अनुकरण के माध्यम से ही सम्भव हो पाया। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों से प्रभावित होकर हिंदी के अनेक उपन्यासकारों ने उपन्यास लिखे। देवकीनंदन खत्री और रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में तो बहुत अधिक समानता देखने को भी मिली है। इतना ही नहीं किशोरीलाल

गोस्वामी और प्रेमचन्द जैसे बड़े उपन्यासकारों ने भी इनके उपन्यासों का अभिग्रहण किया है। इनके लिखे उपन्यासों में रेनॉल्ड्स से मिलती-जुलती घटनाओं की झलक भी देखने को मिलती है। हिंदी के अन्य साहित्यकार भी इस श्रेणी में आते हैं। हिंदी के अनेक साहित्यकारों ने इन्हें देखा, सराहा इनकी शैली से प्रभावित हुए जिनमें से कुछ ने अपने उपन्यासों के शीर्षक भी रेनॉल्ड्स के उपन्यासों के समान ही रखे। संभवतः हिंदी का तत्कालीन साहित्य और भारत का प्राचीन साहित्य तत्कालीन मांग के अनुसार समृद्ध न हो पाने के कारण लोगों को अपनी भाषा में भी उपन्यास को लिखने के लिए अंग्रेज़ी के उपन्यास पढ़ने की आवश्यकता थी। इसके लिए मैनेजर पाण्डेय भारत में उपन्यास की किसी परम्परा के विकसित न होने को लेकर कहते हैं कि “इसीलिए पश्चिम में उपन्यास का जो रूप अंग्रेज़ों के माध्यम से सामने आया वही यहाँ उपन्यास रचना का आदर्श बन गया।”<sup>434</sup> भारत में यूरोप का वही साहित्य अधिकतर उपलब्ध होता था जो अंग्रेज़ी में लिखा जाता था। यथार्थवाद, रहस्य, रोमांस, तिलिस्म और जासूसी से भरे उपन्यास अनुवाद के माध्यम से अधिक प्रचलित हो रहे थे। इस प्रकार रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अभिग्रहण कर अपनी सृजन शक्ति का प्रयोग कर हिंदी के बहुत से उपन्यासकारों ने उपन्यास रचे

“विक्टर लांज साहित्य के भिन्न अभिग्रहणकर्ताओं के बीच अंतर करते हुए कहते हैं कि यह अंतर पहले से ही मौजूद रहता है। एक ही रचना भिन्न लोगों को भिन्न रूप से प्रभावित करती है। वे मौखिक और लिखित साहित्य के बीच भी अंतर करते हैं। वे इस बात को भी ध्यान में रखते हैं कि उन्नीसवीं सदी से पहले मौखिक और लिखित साहित्य में अंतर था। जिसमें अभिग्रहण को किसी पैमाने पर नहीं मापा जा सकता था। जब गद्य का विकास नहीं हुआ था उस समय किसी साहित्य को

<sup>434</sup> पाण्डेय, मैनेजर, *साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका*, चंडीगढ़ : हरियाणा, साहित्य अकादेमी, प्रथम संस्करण, 1989, चंडीगढ़, पृ-279

आधार बनाकर अभिग्रहण सिद्धांत को लागू नहीं किया जा सकता था। विक्टर लांज मानते हैं कि मौखिक साहित्य को सुनने और लिखित साहित्य को पढ़ने वाले लोगों की प्रतिक्रियां भिन्न होती हैं। इन दोनों के आधार पर साहित्य के अभिग्रहण को नहीं समझा जा सकता है। उन्नीसवीं सदी के आते-आते इन दोनों प्रकार के साहित्यों में कोई अंतर नहीं रहा था। इसके बाद जो भी बदलाव हुए वे सब एक क्रांति के रूप में उभर कर सामने आये। जिसमें एक तरफ सभी प्रकार के सामाजिक तत्व एक साथ मिले होते थे। दूसरी तरफ देखें तो शिक्षा का अद्वितीय स्वर भी उससे प्राप्त हुआ शिक्षा की यह भूमिका भारत के नागरिकों के जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण थी इससे पहले भी भारत में किस्सों, दास्तानों और मौखिक वीर कथाओं और कहानियों की परम्परा का प्रचलन था।<sup>435</sup>

लेकिन एक बात तो अवश्य है कि उपन्यास या उपन्यास जैसे किसी भी रूप को लिखने की प्रेरणा भारतीयों को अंग्रेजी के उपन्यासों से ही प्राप्त हुई साथ ही अंग्रेजी पढ़ा लिखा समाज भी विक्टोरिया काल के इन उपन्यासों और इनके अनुवादों को भारत या हिंदी भाषी पाठकों तक लाने में जिम्मेदार रहा है। “हालाँकि लुकास भी इस बात पर जोर देते हैं कि पाठकों पर जो प्रारम्भिक प्रभाव पड़ा वह भी प्राप्तकर्ता देश की साहित्यिक आवश्यकतायें रही होंगी।”<sup>436</sup>

जब अनुवाद निष्पक्ष दृष्टि से किया जाता है तो उसका मूल्यांकन भी वैसा ही होता है। भारत में रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अधिकतर अभिग्रहण अनुवाद के बाद ही संभव हो पाया। मूल अंग्रेजी में कम ही लोग इनके उपन्यासों को पढ़ पा रहे थे। लेखक, रचना और पाठक की बीच कि यह प्रक्रिया अनुवादक, रचना और पाठक के बीच की प्रक्रिया बन गयी। इस प्रकार रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में अभिव्यक्त अनुभव पाठकों की अनुभूति का हिस्सा बन गया।

<sup>435</sup> <http://www.dacoromanialitteraria.inst-puscariu.ro/pdf/02/10PAPADIMA.pdf>, p -140

<sup>436</sup> Mukherjee, Meenakshi, *Realism and Reality*, Oxford, Oxford University Press, 1999, p -13

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अभिग्रहण जब हिन्दी के कुछ आरंभिक उपन्यासकारों ने किया ऐसा नहीं था कि उन्हें उपन्यास लिखने की प्रेरणा रेनॉल्ड्स से ही मिली थी। लेकिन रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को पढ़ना और कुछ आलोचकों का यह कहना कि उनके खंड, कथावस्तु या कुछ घटनाएं रेनॉल्ड्स के साहित्य से समानता रखती हैं तो वह उनके उपन्यासों के अभिग्रहण की अभिव्यक्ति है।

देश-विदेश की अनेक वेबसाइट्स पर भारतीय भाषाओं में इनके उपन्यासों की जानकारी प्राप्त हुई है। उन सब की सूची देने का अर्थ यही था कि यदि उपन्यास अनूदित हुए हैं तो पढ़ने की मांग भी की गयी है। इस मांग की पूर्ती केवल एक नहीं अनेक भाषाओं में हुई है। केवल इसी एक मार्ग से पाठकों की प्रतिक्रिया का अनुमान लगाया जा सकता था। पाठकों की प्रतिक्रिया ही एक ऐसा रास्ता है जिससे अभिग्रहण को समझा जा सकता है।

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों के अभिग्रहण पर शोध करने के बाद जिस प्रकार के तथ्य एकत्र हुए उनसे यह तो ज्ञात होता है कि आलोच्य लेखक ने वृहद स्तर पर पाठकों के बीच अपना स्थान बनाया है। जिस प्रकार का सृजन उन्होंने किया है वह अन्य भाषा में अनूदित होने के बाद भी अपना आकर्षण नहीं खोता है। मूल से अनूदित होने की प्रक्रिया के बीच रचना के जिस मर्म तक लोग पहुंचे हैं उसमें भाषा की अपनी विशेषता रही है। तमिल, तेलुगु, पंजाबी, बांग्ला, हिंदी, उर्दू, मलयालम ने भिन्न सभ्यताओं के अंतराल को खत्म कर दिया। जहां एक ओर उनके उपन्यासों को मनोरंजन का साधन समझा जाता था वहीं बहुत से लेखकों ने उसे शिक्षा भी ली।

यह सत्य है कि रेनॉल्ड्स इस यात्रा में एकमात्र लेखक नहीं थे। ये उन लेखकों में से एक थे जिन्हें औपनिवेशिक काल में पढ़ा जा रहा था और उनकी रचना से प्रभावित पाठक मूल रचनाएँ भी लिखने लगे थे। एच प्रैट के अनुसार “जिस समय बंगाल की वेर्नाक्युलर लिटरेचर सोसाइटी बन रही थी उस समय वहां के अधिकारियों

को इस बात का अंदाजा भी नहीं था कि रेनॉल्ड्स वर्तमान समय के एक प्रभावशाली लेखक हैं और उनके लेखक को लोग इस प्रकार अपनाएंगे।”<sup>437</sup>

---

<sup>437</sup> Do, P - 90

## उपसंहार

रेनॉल्ड्स के उपन्यास विक्टोरियाकालीन समाज पर लिखे गये थे। उन्होंने अपने उपन्यासों में अपने समाज के केवल गुण दिखाना ही अपना उत्तरदायित्व नहीं समझा था। अपितु अपने समाज की समस्याओं के उस मूल तक से लोगों को अवगत कराया जिसे वे तत्कालीन समय में नहीं समझ पा रहे थे। उनके उपन्यास सम्पन्न वर्ग के खाली बैठे उन लोगों के लिए नहीं लिखे गये थे जिनके लिए उपन्यास या अन्य साहित्यिक कृतियाँ समय काटने का साधन थीं।

रेनॉल्ड्स के उपन्यासों की एक विशेषता यह है कि वे पाठक, साहित्य तथा समाज के त्रिकोणीय सम्बन्ध के बीच नज़र आते हैं। इस बंधन में वे अपने पाठकों को बांधे ही नहीं रखते हैं इस त्रिकोण के बीच आने वाली समस्याओं का कारण भी उन्हें बताते हैं। कैसे वे उन्हें समझें और कैसे उनका समाधान खोजा जा सकता है इसके लिए वे उन्हें बाध्य अवश्य कर देते हैं। अपने उपन्यासों में उन्होंने पात्रों को विपरीत स्थितियों में कमज़ोर पड़ते हुए दिखाया है। पाप और पुण्य के बीच सही और गलत की तुलना करते हुए उन्हें सही का चुनाव करना भी सिखाया है। उनके उपन्यासों में ब्रिटिश समाज की सच्चाई का विकराल रूप देखने को मिलता है। यही कारण था कि उनके उपन्यासों को हमेशा से ही दोगुना दर्ज का माना गया है। उनके उपन्यासों को 21 वीं सदी से पहले अंग्रेजी साहित्यकारों और आलोचकों ने कभी भी साहित्य में कोई स्थान नहीं दिया था। उनके उपन्यासों में अपने पाठकों के लिए अनेक संदेश मिलते हैं। तत्कालीन समय में ब्रिटेन को संसार का सबसे शक्तिशाली देश मानते हुए भी वे उसकी कमियाँ दिखाने में पीछे नहीं हटे हैं। इनके उपन्यासों का अनुवाद संसार के अनेक देशों में और उनकी अनेक भाषाओं में हुआ है इसी प्रकार हिंदी में भी उनके साहित्य का अनुवाद हुआ। मेरा शोध उनके अनूदित उपन्यासों पर

आधारित तो है, लेकिन इसमें केवल अनुवाद पर ही ध्यान नहीं दिया गया है। इसमें अनुवाद और अभिग्रहण दोनों को एक-दूसरे के समतुल्य माना गया है। आलोच्य लेखक के उपन्यासों का जैसा अभिग्रहण अंग्रेजी में हुआ, वैसा ही हिंदी के पाठक भी कर पाए हैं या नहीं इस शोध में अनुवाद के माध्यम से यह देखा गया है। अभिग्रहण का हिस्सा अनुवाद भी है जिसका अध्ययन प्राथमिक अध्यायों में मिलता है और शोध के अंतिम अध्याय में विस्तार से उनके उपन्यासों के अभिग्रहण पर अध्ययन किया गया है।

रेनॉल्ड्स के उपन्यास उस समय भारत में अनूदित हुए थे जिस समय मूल उपन्यासों की रचना भारत में न के बराबर थी। रेनॉल्ड्स अपनी लेखन कला का प्रदर्शन एक-एक घटना का वर्णन करते हुए किया है। घटनाओं के बीच पाठकों को रखकर उनकी संवेदना का हिस्सा वे स्वयं बने हैं। साधारण अंग्रेजी में उन्होंने अपने पात्रों के रूप वर्णन के साथ-साथ उनकी जीवन शैली का भी वर्णन सम्पूर्ण और रोचक रूप से किया है। उन्होंने नैतिकता, प्रेम, जासूसी, बलिदान, कानून, शासन, अत्याचार, शोषण, पागलपन, धर्म, परम्परा और अवैध संतानें, अवैध प्रेम सम्बन्ध सभी को कथावस्तु का हिस्सा बनाया है। इन सभी तत्वों को समाहित करते हुए रेनॉल्ड्स के उपन्यास अनेक खण्डों में लिखे गये थे जिसके बाद भी कथावस्तु कहीं बिखरी हुई नज़र नहीं आती है। जिसका अनुकरण करने का सतत प्रयास अनुवादक भी करते नज़र आते हैं।

अपने कथा-साहित्य में उन्होंने दिखाया है कि किस प्रकार लोगों में भावनाओं की कमी है। उनके उपन्यासों में आये पात्र अपने स्वार्थ के अलावा कुछ नहीं सोचते हैं। यह पात्रों की भौतिकतावादी मानसिकता को दर्शाता है। किसी भी व्यक्ति के जीवन का कोई मोल नहीं है। उसके उपयोगी होने और उसके संवेदनहीन होने के आधार पर ही उसके जीवन का महत्त्व है। अनुच्छेदों और खण्डों में पात्रों के जीवन में



आने वाले बदलाव की खुलती परतों को अनुवादकों ने अपने अनुभव के अनुसार तो नहीं परन्तु अपनी कला के अनुसार प्रदर्शित किया है। रेनॉल्ड्स के उपन्यास भौतिकतावाद पर आधारित हैं। जिसमें अधिकतर पात्र अमानवीय प्रवृत्ति के हैं उदाहरण के लिए जब किसी न्यू गेट जेल के अपराधी को फांसी होती थी तो उसको फांसी समाज के बीच चौराहे पर दी जाती थी। जिसे हजारों की संख्या में लोग देखने आते थे। यह उनके लिए मेले में जाने जैसा ही होता था। जिसे देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते थे और अमीर घराने के लोगों के लिए कोई ऊँचा स्थान ढूँढा जाता था जहाँ से वे सब देख सकें। संपन्न से लेकर निम्न वर्ग तक जितने भी वर्गों का वर्णन लेखक ने किया है उसका विश्लेषण कर अनुवादकों ने अपने सामर्थ्य का प्रदर्शन भाषिक और सांस्कृतिक स्तर पर कर दिया है।

उनके उपन्यासों के अभिग्रहण के मूल में भाषा का भी महत्त्व उतना ही है जितना कि कथा का है। अनुवाद में किसी रचना की अंतर्वस्तु से लेकर उसके व्यावहारिक पक्ष तक का अध्ययन महत्त्वपूर्ण होता है। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को अंग्रेजी में पढ़कर पाठकों या लेखकों ने जिस प्रकार की प्रतिक्रिया दी क्या वैसी ही हिंदी के पाठकों की भी थी? अनूदित उपन्यासों के सन्दर्भ में इसी प्रश्न के उत्तर खोजे गए हैं। जिस अनुभूति का सफ़र मूल पाठक कर रहे थे क्या वही अनुभूति लक्ष्यभाषी पाठकों ने भी की है? अनुवाद के माध्यम से भी क्या वही सन्देश हिंदी के पाठकों तक पहुँचा है जिसे अंग्रेजी के पाठक ग्रहण कर रहे थे? यह तीसरे अध्याय में विस्तार से विश्लेषित किया गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि अनुवाद करना आसान काम नहीं है। लेकिन किसी भी रचना का आस्वादन अपने पाठकों को कराने के लिए उसका संप्रेषणीय होना आवश्यक है।

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि रेनॉल्ड्स के उपन्यास साधारण और सामान्य लोगों के पढ़ने के लिए लिखे गए थे। उपन्यास लेखन करते हुए रेनॉल्ड्स कहीं पर भी

बौद्धिकता का प्रदर्शन करने के लिए जटिल अंग्रेजी का प्रयोग नहीं करते हैं। उसी के अनुसार अनुवादकों ने भी अनूदित उपन्यासों में सामान्य और साधारण शब्दों का प्रयोग किया है। तीसरे अध्याय में लेखक की जिस भाषा शैली का अनुसरण अनुवादकों ने किया है, उसमें किसी प्रकार की समस्या का सामना उन्हें नहीं करना पड़ा है। जहाँ पर भी मुझे यह लगा है कि अनुवादकों ने गलत अनुवाद किया है या संदर्भगत अनुवाद नहीं हुआ है वहाँ पर मैंने अपनी ओर से एक टिप्पणी भी दी है। सदानंद शुक्ल जी ने उर्दू शब्दवाली का तत्सम शब्दावली की तुलना में अधिक प्रयोग किया है। लेकिन जोसफ विल्मोट के अनुवादक न तो उर्दू शब्दावली का और न ही तत्सम शब्दावली का अधिक प्रयोग करते दिखते हैं। साधारण हिंदी का ही प्रयोग उन्होंने किया है। जिस समय के अनूदित उपन्यासों का मैंने अपने शोध के लिए चयन किया है उस समय उर्दू भाषा का प्रयोग बोलचाल और साहित्य दोनों ही में अधिक होता था। स्वाभाविक रूप से यह प्रयोग रेनॉल्ड्स के अनूदित उपन्यासों में दिखता है। इस प्रकार की शब्दावली का प्रयोग उपन्यासकार के सन्देश को गंभीरता प्रदान करता है। अर्थात् यह भाषा रेनॉल्ड्स के उपन्यासों का अभिग्रहण हिंदी में करने में सहायक सिद्ध हुई है।

इसके अतिरिक्त देशज शब्दों का प्रयोग भी अनुवादक पदों और वाक्यों में करते नज़र आये हैं। देशज शब्दों के प्रयोग से हिंदी के पाठक रेनॉल्ड्स के उपन्यास और उनके सन्देश के नज़दीक खुद को पाते हैं। इस प्रकार के प्रयोग पाठक को रचनाओं के विदेशी भूमि पर लिखे होने का एहसास नहीं होने देते हैं। इसके बाद शब्दों, पदों, नामों और स्थानों के नाम अनुवाद विज्ञान में आने वाले कुछ ऐसे प्रयोग होते हैं जिनका अनुवाद नहीं किया जा सकता है। ऐसे में केवल लिप्यन्तरण या लिप्यंकन कर ही अनुवादक ने अपने कार्य की पूर्ति कर दी है। इस प्रकार का प्रयोग कोई बाधा उत्पन्न नहीं कर रहा है। इसके बाद अनेक स्थानों पर यह भी देखा गया है

कि लेखकों ने मूल कृति का अनुवाद करने में कितना समतुल्य अनुवाद किया है तादात्म्य बैठाने के लिए अनुवादक ने किस प्रकार मूल के श्रृंखलाबद्ध वाक्यों को आगे पीछे कर हिंदी में उसे अर्थवान बनाया है। इस अध्याय में पाठपरक अनुवाद और यथार्थ घटना का अनुवाद आदि सभी शामिल हैं। जिस प्रकार अनुवादकों ने सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए अनुवाद किया है। इसे केवल अनुवाद ही नहीं पुनरुक्ति कहा जाना चाहिए।

अनुवाद में प्रयोग होने वाली भाषा के विषय में प्रोफेसर देव शंकर नवीन जी का कहना है कि “सच्चाई है कि अनुवाद सार्थक और प्रयोजनपूर्ण होता है पर यह भी सच्चाई है कि भाषा अथवा प्रतीक व्यवस्था भले बदल जाए, पर सही अर्थों में ‘अनुवाद’ में होती तो पुनरुक्ति ही है, अर्थात् किसी एक भाषा अथवा प्रतीक व्यवस्था में व्यक्त सन्देश दूसरी भाषा अथवा प्रतीक व्यवस्था में पुनर्व्यक्त होता है। इसी अर्थ में अनुवाद पुनरुक्ति लगता है। साहित्य में पुनरुक्ति बेशक एक दोष हो, निरर्थक हो पर अनुवाद में इस पुनरुक्ति की गरिमा बदल जाती है। भाष्यकारों का परम-चरम उद्देश्य वस्तुतः पाठ की जटिलता दूर करना और वृहत ग्राही समुदाय तक सरल भाषा में मूल सन्देश पहुँचाना होता है।”<sup>438</sup>

ब्रिटिश शासन के समय अंग्रेजी सभ्यता से भारत का रिश्ता बहुत गहरे तक जुड़ गया था। इस गहराई ने अपनी संस्कृति का बहुत अधिक असर भारतीयों की परम्परा पर भी डाला था। इसी संस्कृति का परिणाम अंग्रेजी उपन्यास भी थे। एक भिन्न सभ्यता में लिखे गये साहित्य का अनुवाद करने पर उसकी कुछ छवियाँ अनूदित साहित्य पर नज़र आती ही हैं। किसी देश विशेष के सांस्कृतिक परिवेश में बोले जाने वाले शब्द एक अर्थ का वहन करते हैं। दूसरे देश की संस्कृति में जब उन

<sup>438</sup> नवीन, देवीशंकर, अनुवाद अध्ययन का परिदृश्य, प्रथम संस्करण, सूचन एवं प्रसारण मंत्रालय, प्रकाशन विभाग, 2016, नई दिल्ली, पृ - 11

शब्दों को वैसे ही बोल दिया जाता तो वे दूसरी भाषा में वे किसी अर्थ या अवधारणा की ओर संकेत नहीं कर पाते हैं। कारण वे एक संस्कृति का हिस्सा होते हैं। खान-पान, त्यौहार, जलसे और धार्मिक मान्यताएं किसी भी देश की सांस्कृतिक पहचान होते हैं। जिस परिवेश के वे हिस्से होते हैं उससे भिन्न परिवेश में उन्हें कभी भी वैसा महत्त्व नहीं मिलता है। क्योंकि उनके समरूप अनुवाद तो किया जा सकता है, लेकिन समतुल्य नहीं। यदि उनका यथावत लिप्यन्तरण या लिप्यंकन कर दिया जाता है तो भी वे किसी अर्थ को वहन नहीं करते हैं। ऐसे में केवल पाद-टिप्पणी का सहारा ही लिया जा सकता है। उसके सांस्कृतिक पक्ष को बनाये रखने के लिए यही एक प्रभावी उपाय है। केवल प्रभावी ही नहीं है इससे लक्ष्यभाषी पाठक लेखक के संदेश की गंभीरता को भी समझ पाते हैं। जहाँ तक मैंने लन्दन रहस्य की श्रृंखला और जोसफ विल्मोट का अनुवाद देखा है अनुवादकों ने मुहावरों और लोकोक्तियों का भरपूर प्रयोग किया है।

आलोच्य लेखक के उपन्यास भारत में जिस संख्या में पढ़े गए वह कोई साधारण बात नहीं थी। रेनॉल्ड्स के उपन्यास जहां विश्व की अनेक भाषाओं में अनूदित हो रहे थे। वहीं उन्नीसवीं सदी के मध्य में उनके उपन्यासों का अनुवाद भारत की अनेक भाषाओं में भी हुआ। हिंदी में उनके जिन उपन्यासों का अनुवाद हुआ वह लोगों की बढ़ती हुई मांग के कारण ही हुआ ब्रिटिश शासन में जो लोग भारत में प्रताड़ित हो रहे थे रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में उन्होंने अपने समान वर्ग के प्रति सहानुभूति देखी। जो भारतीय समाज के लिए नहीं थी उस वर्ग के लिए थी जो ब्रिटिश शासकों के गुलाम थे। उस समय हिंदी के कुछ नव उदित लेखक भी थे जिन्होंने उनके उपन्यासों का अभिग्रहण किया। उनके अभिग्रहण का परिणाम उनकी रचनाओं में दिखता है। उसके लिए बहुत से आलोचकों ने भी दावा किया है। इसका विस्तार से उल्लेख इस शोध के पांचवे अध्याय में किया गया है।

जिनमें प्रभावित होने वाले विद्वानों के अलावा कुछ ऐसे विद्वानों का उल्लेख भी मैंने किया है जो उन पर शोध कर रहे थे। कहने का तात्पर्य है कि उन्हें क्यों इतना अधिक पढ़ा गया, उनके उपन्यासों के इतने अधिक अनुवाद क्यों हुए क्यों भारत के इतने अधिक पुस्तकालयों में अनेक भाषाओं में उनके अनूदित उपन्यास उपलब्ध हैं। क्यों इनको पढ़ा जा रहा था, यह सब कुछ सफलता के साथ मिनाक्षी मुखर्जी और फ्रेंचेस्का ओर्सिनी और प्रिया जोशी ने दिखाया है। पांचवे पाठ में जितना भी उल्लेख मिलता है वह इनके उपन्यासों के अभिग्रहण का निचोड़ है। न केवल हिंदी में ही भारत की अनेक भाषाओं और हिस्सों में भी उनके उपन्यासों के अभिग्रहण का प्रभाव मिलता है।

साहित्य को समझने के सन्दर्भ में जौस का भी मानना है कि “किसी भी साहित्यिक रचना या कार्य की दूसरों की रचना या के द्वारा लिखे गये साहित्य से तुलना नहीं करनी चाहिए। उसे केवल पाठकों के सामाजिक अनुभव के अनुसार ही समझा जाना चाहिए।”<sup>439</sup>

लिविऊ पपदामी ने भी साहित्य में आने वाले व्यवधानों के बारे में अपने विचार रखे हैं। वे कहते हैं कि “जे सी होलब ने कहा है कि जैसे डाक्यूमेंट्री साहित्य की सफलता और नाटक प्रदर्शन में दर्शकों के उलझाव से दर्शकों की प्रतिक्रिया पर ध्यान दिया जा सकता है, उसी तरह साहित्य को पढ़कर पाठकों ने क्या प्रतिक्रिया दी, इस प्रक्रिया की आलोचना भी सम्भव है। पाठकों की प्रतिक्रिया को साहित्य के परिवर्तन या भिन्न कृतियों में आने वाले बदलाव से नहीं समझा जा सकता है। पाठकों की प्रतिक्रिया का प्राधान्य यदि साहित्यिक कार्य में दिख जाए तो उसका विश्लेषण करना आसान हो जायेगा। अर्थात् उस कृति का अभिग्रहण कैसे हुआ यह समझना आसान हो जाता। कहने का तात्पर्य है कि रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को अधिक

<sup>439</sup> <http://www.dacoromanialitteraria.inst-puscariu.ro/pdf/02/10PAPADIMA.pdf>, p -140

पढ़ने के पीछे का कारण है कि वे सामाजिक सन्दर्भों के विषय में बात करते और उस पर टिप्पणी करते हुए नज़र आते हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में शोषण और अत्याचार का उल्लेख किया है। समाज की आर्थिक विसंगति को दिखाते हुए उनके कारण बताये हैं। इन सब समस्याओं का वर्णन करते हुए उनके प्रति संवेदना भी अभिव्यक्त की है। जो आक्रोश उनके उपन्यासों में अपने समाज को लेकर है वही हिंदी के उपन्यासकारों का भी है। रेनॉल्ड्स के उपन्यासों में उपलब्ध कुछ तत्वों ने उन्हें अपने ही देश में विवादित बना दिया था। लेकिन अनुवाद ने उन्हें लोकप्रियता दी। अठारहवीं शताब्दी में जिस लेखक के साहित्य को ब्रिटेन और भारत जैसे देशों के लोग छुप कर पढ़ते थे इक्कीसवीं सदी में आकर उनको मान्यता मिली। लन्दन और भारत जैसे देशों में आज कुछ नये शोध हो रहे हैं जो रेनॉल्ड्स के उपन्यासों को अन्य उपन्यासकारों के समान ही उच्च कोटि का सम्मान दे रहे हैं।

## ग्रंथानुक्रमणिका

### आधार ग्रन्थ

1. Reynolds, GWM, *Mysteries Of The Court Of London*, VoL.1,2,3,4, John Dicks, 1848-1856, London
2. सदानंद शुक्ल (अनुवादक), लन्दन रहस्य, खंड 1,2,3,4,5,6,7,8, आर एल वर्मन एंड क. प्रकाशन, 1870 -1874 , कलकत्ता
3. Reynolds, G.W.M., *Joseph Wilmot*, Vol.1, John Dicks, 1849, London
4. यशोदानंदन खत्री और चतुर्भुज औदीच्य (अनुवादक), भारत मित्र प्रेस कलकत्ता, 1862., कलकत्ता

### सन्दर्भ ग्रन्थ

#### अंग्रेजी

1. Bulke, Father Camil, *An English-Hindi Dictionary*, 2014, published by S. Chand Company Ltd.
2. Dalziel, *Margaret, Popular Fiction 100 Years Ago*, London, Cohen and West, 1957.
3. Holub, Robert C., *Reception Thoery: A Critical Introduction*, London, Methuen, 1984.
4. Joshi, Priya, *In Another Country: Colonialism, Culture, and the English Novel in India*, Newyork, Columbia University Press, 2002.
5. Mukehrjee, Meenakshi, *The Novel and Society in India*, Delhi, Oxford University Press, 1985.
6. Mukehrjee, Meenakshi, *Early Novels in India*, New Delhi, SahityaAkademi, 2002.
7. Mukherjee, Meenakshi, *Realism and Reality*, Oxford, Oxford University Press, 1999.

8. Orsini, Frenchesca, *Print and Pleasure: Popular Literature and Entertaining Fictions in Colonial North India*, Ranikhet, Permanent Black, 2006.
9. Sanders, Andrew, *History of English Literature*, Newyork, Oxford University Press, Third edition, 1996
10. Sanders, Andrew, *History of English Literature*, Newyork, Oxford University Press, Third edition, 2005.
11. Susan Bassenet and Andre Iefere (ed.), Translation, History, Culture - A Source Book, Routledge, 1992, London.
12. Susan Bassenet and Andre Iefere (ed.), Translation, History, Culture, Pinter Publishers, 1990, London.
13. Bennett, Susan, *Theatre Audiences : A theory of production and reception*, London: Newyork, Routledge, 1990
14. Watt, Ian, *The Rise of the Novel (1956): Realism and the novel form*, Delhi, Penguin books, 1972

## हिंदी

1. अग्रवाल, डॉ. कुसुम, *अनुवाद शिल्प समकालीन सन्दर्भ*, दिल्ली, साहित्य सहकार, 2008
2. अमृतराय, *कलम का सिपाही*, इलाहाबाद, हंस प्रकाशन, 1976,
3. एन ई विश्वनाथ अय्यर, *अनुवाद भाषाएँ-समस्याएं*, दिल्ली, ज्ञान गंगा, 1992
4. कुमार, डॉ. सुरेश, *अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा*, दरियागंज: नयी दिल्ली, वाणी प्रकाशन, पंचम संस्करण, 2007
5. गोस्वामी, कृष्ण कुमार, *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2008
6. गोस्वामी, कृष्ण कुमार, *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2002
7. जैन, निर्मला (संपादिका), *हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास*, नयी दिल्ली, नागरी प्रचारिणी सभा, द्वादश भाग, 1984
8. टंडन, पूरनचन्द तथा हरीश कुमार सेठी, *अनुवाद के विविध आयाम*, नयी दिल्ली , तक्षशिला प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1998
9. तिवारी, भोलानाथ, *अनुवाद विज्ञान*, दिल्ली, शब्दकार प्रकाशन, 1972,
10. डॉ. नगेन्द्र (संपा.), *अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत और अनुप्रयोग*, नयी दिल्ली, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय: दिल्ली विश्वविद्यालय, प्रथम संस्करण, 1993



- 11.भाटिया, डॉ. कैलाश चन्द्र, *अनुवाद कला सिद्धांत और प्रयोग*, नयी दिल्ली, लक्षशिला प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1985
- 12.बद्रीदास, *हिन्दी उपन्यास पृष्ठभूमि की परम्परा* कानपुर : ग्रंथम,1966
- 13.मधुरेश, *हिन्दी उपन्यास का विकास*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, 2014
- 14.मुदिराज, डॉ. शशी, *अनुवाद : मूल्य और मूल्यांकन* नागपुर, रुचिर प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1998
- 15.पाण्डेय, मैनेजर, *साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका*, चंडीगढ़ : हरियाणा, साहित्य अकादेमी, प्रथम संस्करण, 1989
- 16.शर्मा, प्रणव, *अनुवाद-विमर्श : एक अद्यतन दृष्टि*, दिल्ली, नीरज बुक सेंटर, 2015
- 17.राय, प्रो. गोपाल, *उपन्यास की संरचना*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2006
- 18.राय, प्रो. गोपाल, *हिन्दी उपन्यास का इतिहास*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2002
- 19.राय, प्रो. गोपाल, *हिन्दी उपन्यास कोश*, पटना, ग्रन्थ निकेतन, प्रथम संस्करण, 1968
- 20.शर्मा, विनय मोहन (सम्पादक), *हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास : अष्टम भाग*, वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, 1972
- 21.शर्मा, प्रो. राजमणि, *अनुवाद विज्ञान*, पंचकुला, हरियाणा साहित्य अकादेमी, 2004
- 22.शुक्ल, हनुमानप्रसाद, *तुलनात्मक साहित्य : सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य*, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2015
- 23.शंभुनाथ, *हिन्दी नवजागरण और संस्कृति*, कलकत्ता, आनंद प्रकाशन, 2004
- 24.सत्यकाम,*भारतीय उपन्यास की दिशायें*, नयी दिल्ली, सामयिक प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2012
- 25.सिंह, बच्चन, *आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, 2007
- 26.सिन्हा, रमण प्रसाद, *अनुवाद और रचना का उत्तरजीवन*, नयी दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2002
- 27.सिंघल, डॉ. सुरेश, *अनुवाद : संवेदना और सरोकार*, नयी दिल्ली, संजय प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2006
- 28.सेन, डॉ. सुकुमार, *बांग्ला साहित्य का इतिहास*, नयी दिल्ली, साहित्य अकादेमी, प्रथम संस्करण, 1978
- 29.सक्सेना, प्रदीप, *तिलिस्मी साहित्य का साम्राज्यवादी विरोधी चरित्र*, दिल्ली, शिल्पायन, 2004

## अंग्रेजी लेख

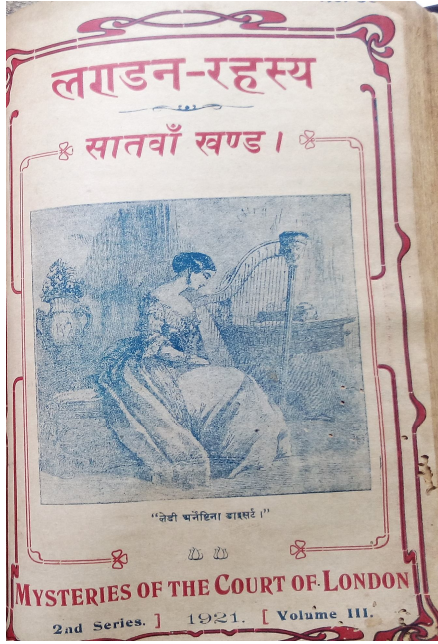
1. Carver, Stephen, *The man who wasn't Dickens: Aprofile of G.W.M. Reynolds*, 1818-1879

## इन्टरनेट सहायक ग्रन्थ

1. <http://books.google.co.in/books?id=bQA3Fy7gWpMC&pg=PA11&lpq=PA11&dq=g+w+m+reynolds+books&source=bl&ots=SmgPZaPBHv&sig=SvYHIZ-Ny5YvU8ZsTdutml83lo&hl=en&sa=X&ei=ACoZVKrYNdOxuAT21YKYDA&ved=0CHMQ6AEwDQ#v=onepage&q=g%20w%20m%20reynolds%20books&f=false> ( 10-08-2014) (23:15)
2. <https://archive.org/search.php?query=Joseph%20Wilmot%20AND%20mediatype%3Atexts> (10-08-2014) (13:52)
3. [https://www.google.co.in/search?ei=2DvdWuryL4m0vwSu5pTADw&q=umberto+eco+aberrant+decoding+to+describe+the+cae+whne+the+readers+interpretation+differs+from&oq=umberto+eco+aberrant+decoding+to+describe+the+cae+whne+the+readers+interpretation+differs+from&gs\\_l=psy-ab.3...33178.53390.0.53658.97.74.15.0.0.0.344.9906.0j41j15j1.57.0....0...1c.1.64.psy-ab..27.10.1267...0i22i30k1j0i22i10i30k1j33i160k1j33i21k1.0.AA4aqEGhBjg](https://www.google.co.in/search?ei=2DvdWuryL4m0vwSu5pTADw&q=umberto+eco+aberrant+decoding+to+describe+the+cae+whne+the+readers+interpretation+differs+from&oq=umberto+eco+aberrant+decoding+to+describe+the+cae+whne+the+readers+interpretation+differs+from&gs_l=psy-ab.3...33178.53390.0.53658.97.74.15.0.0.0.344.9906.0j41j15j1.57.0....0...1c.1.64.psy-ab..27.10.1267...0i22i30k1j0i22i10i30k1j33i160k1j33i21k1.0.AA4aqEGhBjg) (05-01-2017) (18:06)
4. <http://www.oxfordreference.com/view/10.1093/oi/authority.20110803100407730> (23-02-2017) (10:20)
5. <http://sauc.uchicago.edu/yaz.php?qt=simple&host%5B%5D=localhost%3A9999%2Fsauc&fields%5B%5D=keyword&term=British+Library+OIOC+VT+482&groupsof=10&action=Search> (06-06-2017) (17:26)
6. <https://books.google.co.in/books?id=P5lilaJF-kAC&pg=PA87&lpq=PA87&dq=mysteries+in+g+w+m+reynolds+novels&source=bl&ots=R4hifbgAOB&sig=vUeLDSxxPeQ Vncytp 1fpBRqVM&hl=en&sa=X&ved=0ahUKEwiAipzhst3RAhULLY8KHwxEDQ04FBD oAQg0MAY#v=one&q=mysteries%20in%20g%20w%20m%20reynolds%20novels&f=false> (21-03-2017) (11:40)

7. ([https://books.google.co.in/books?id=nBOoDQAAQBAJ&pg=PT410&pg=PT410&dq=francesca+orsini+views+about+reynolds&source=bl&ots=Bzk5t9CfuQ&sig=HM7WO6o2e5eYAPYApvcl3E-A\\_7Q&hl=en&sa=X&ved=0ahUKEWjj4onr9bzSAhUGr48KHfhvAsgQ6AEIJDAC#v=onepage&q=francesca%20orsini%20views%20about%20reynolds&f=false](https://books.google.co.in/books?id=nBOoDQAAQBAJ&pg=PT410&pg=PT410&dq=francesca+orsini+views+about+reynolds&source=bl&ots=Bzk5t9CfuQ&sig=HM7WO6o2e5eYAPYApvcl3E-A_7Q&hl=en&sa=X&ved=0ahUKEWjj4onr9bzSAhUGr48KHfhvAsgQ6AEIJDAC#v=onepage&q=francesca%20orsini%20views%20about%20reynolds&f=false)) (25-12-2016) (09:32)
8. [http://cmnaim.com/category/archive/Old Book Catalogs](http://cmnaim.com/category/archive/Old_Book_Catalogs) Comments Off on Old Book Catalogs · Categories: [Archive](#), [Urdu Language and Literature](#) · Tags: [Book Catalogs](#), [Old Urdu Books](#), [Siddiq Book Depot](#), [Urdu](#), [Urdu Culture](#) (12-July-2017)
9. [www.ashgate.com/default.aspx](http://www.ashgate.com/default.aspx) (25-11-2016) (10:22)
10. Comments Off on The Nonpareil Translator: Munshi Tirath Ram Firozepuri · Categories: [Archive](#), [Urdu Language and Literature](#) · Tags: [Firozepur](#), [Jasusi Adab](#), [Mystery Fiction](#), [Tirath Ram](#), [Translations in Urdu](#) (07-05-2016) (16:57)
11. <http://www.dacoromanialitteraria.inst-puscariu.ro/pdf/02/10PAPADIMA.pdf> (13-06-2017) (18:31)
12. [http://onlinebooks.library.upenn.edu/webbin/book/lookupname?key=Reynolds%2C%20George%20W.%20M.%20\(George%20William%20MacArthur%2C%201814-1879](http://onlinebooks.library.upenn.edu/webbin/book/lookupname?key=Reynolds%2C%20George%20W.%20M.%20(George%20William%20MacArthur%2C%201814-1879) (online books in volumes) (16-09-2016) (19:12)
13. <http://onlinebooks.library.upenn.edu/webbin/book/browse?type=author&key=reynolds&c=x> (08-12-2016) (13:25)
14. [https://gesteofrobinhood.com/2016/11/30/society-gets-the-criminals-it-deserves-the-resurrection-man-from-g-w-m-reynolds-the-mysteries-of-london-1844-45/#\\_edn7](https://gesteofrobinhood.com/2016/11/30/society-gets-the-criminals-it-deserves-the-resurrection-man-from-g-w-m-reynolds-the-mysteries-of-london-1844-45/#_edn7) (22-02-2017) (17:22)
15. <https://sites.google.com/site/alexisknoxgbbo00/victorian-prostitution---a-study/prostitution-in-victorian-literature> (24-02-2017) (22:47)
16. [Humpherys, Anne](#).added author [James, Louis, 1933](#)-title [G.W.M. Reynolds : nineteenth-century fiction, politics, and the press / edited by Anne Humpherys, Louis James](#).series title [The nineteenth century](#)series title [Nineteenth century \(Aldershot, England\)](#)imprint Aldershot, England ; Burlington, VT : Ashgate, c2008.isbn0754658546 (alk. paper) 9780754658542 (alk. paper)catalogue key6676743Includes bibliographical references (p. [273]-284) and index. (18-12-2016) (12:36)

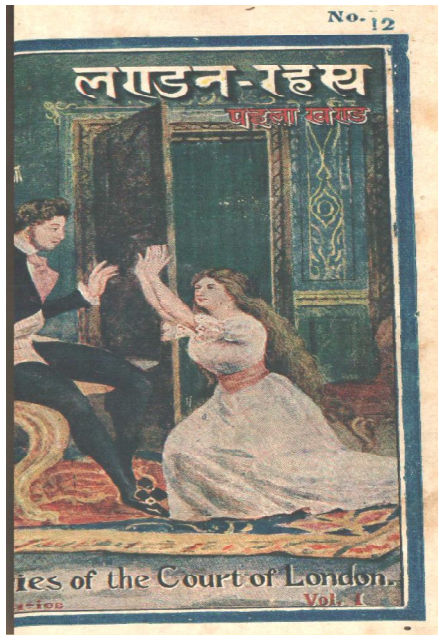
17. (<http://cmnaim.com/tag/the-mysteries-of-london/>) Tag: The Mysteries of London The “Magic-making” Mr. Reynolds (12-July-2017) (00:31)
18. <http://rosydisorder.blogspot.in/2012/03/servants-in-non-aristocratic-households.html> (08-04-2017) (19:51)
19. <http://literature.oxfordre.com/view/10.1093/acrefore/9780190201098.001.0001/acrefore-9780190201098-e-216#acrefore-9780190201098-e-216-note-89> (29-05-2017) (23:16)
20. [https://en.wikipedia.org/wiki/Aberrant\\_decoding](https://en.wikipedia.org/wiki/Aberrant_decoding) (02-06-2017) (12:08)
21. <https://ndl.iitkgp.ac.in/> (12-05-2015) (20:09)
22. <http://sauc.uchicago.edu/> (11-07-2017) (20:53)
23. <https://www.rekhta.org/urdu-dictionary/?lang=1&keyword>
24. <http://www.shabdkosh.com/>
25. <https://www.collinsdictionary.com/dictionary/english-hindi>



चित्र स. 1



चित्र स. 2



चित्र सं. 3



चित्र स. 4